साहित्य अकादेमी

(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)

वार्षिकी

2021-2022

साहित्य अकादेमी

(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)

वार्षिकी

2021-2022

अध्यक्ष : डॉ. चंद्रशेखर कंबार

उपाध्यक्ष : श्री माधव कौशिक

सचिव : डॉ. के. श्रीनिवासराव

अनुक्रम

साहित्य अकादेमी : संक्षिप्त परिचय 4

परियोजनाएँ एवं योजनाएँ 8

2021-2022 की प्रमुख गतिविधियाँ 12

पुरस्कार

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2021 15
साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2020 19
साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2021 23
साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2021 27

कार्यक्रम 31

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2020 अर्पण समारोह 33

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2020 अर्पण समारोह 38

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2021 अर्पण समारोह 40

संवत्सर व्याख्यान 41

साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता प्रदत्त 43

संगोष्ठियाँ, परिसंवाद, लेखक सम्मिलन आदि 46

वर्ष 2021-2022 में साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की सूची 124

वर्ष 2021-2022 में आयोजित कार्यकारी मंडल, सामान्य परिषद्,
वित्त समिति, क्षेत्रीय मंडलों तथा भाषा परामर्श मंडलों की बैठकें 153

पुस्तक प्रदर्शनियाँ / पुस्तक मेले 155

प्रकाशित पुस्तकें 158

वार्षिक लेखा 2021-2022 191

साहित्य अकादेमी

(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)

साहित्य अकादेमी भारत की एक प्रमुख साहित्यिक संस्था है, जो स्वयं द्वारा मान्यताप्रदत्त 24 भारतीय भाषाओं के साहित्य का संरक्षण एवं उन्हें प्रोत्साहन देती है। यह संस्था पूरे साल कार्यक्रमों का आयोजन भारतीय भाषाओं के लेखकों को पुरस्कार तथा महत्तर सदस्यताएँ प्रदान करती है तथा स्वयं द्वारा मान्यताप्रदत्त 24 भारतीय भाषाओं में पुस्तकें प्रकाशित करती है।

अकादेमी ने अपने छह दशकों से अधिक समय के गतिशील अस्तित्व द्वारा 24 भाषाओं में 7000 से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन किया है। अकादेमी मूल कृतियों के प्रकाशन के साथ ही अनुवाद, जिनमें—कथासाहित्य, कविता, नाटक तथा समालोचना भी शामिल हैं, के अलावा कालजयी, मध्यकालीन, पूर्व-आधुनिक तथा समकालीन साहित्य का भी प्रकाशन करती है। अकादेमी उत्कृष्ट बाल साहित्य को प्रोत्साहित करने में भी संलग्न है।

भारत में अकादेमी पुरस्कारों को सर्वाधिक प्रतिष्ठित साहित्यिक पुरस्कार माना जाता है। साहित्य अकादेमी पुरस्कार, अकादेमी द्वारा मान्यताप्रदत्त 24 भारतीय भाषाओं की उत्कृष्ट पुस्तक(कों) को प्रदान किया जाता है। भाषा सम्मान उन लेखकों/विद्वानों/संपादकों/संकलनकर्ताओं/कलाकारों/अनुवादकों को प्रदान किया जाता है, जिन्होंने उन भाषाओं के प्रचार-प्रसार एवं उन्हें समृद्ध करने के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया हो, जिन भाषाओं को साहित्य अकादेमी की औपचारिक मान्यता प्राप्त नहीं है तथा इसके अलावा जिन्होंने देश के कालजयी और मध्यकालीन साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया हो। अनुवाद पुरस्कार अकादेमी द्वारा मान्यताप्रदत्त 24 भारतीय भाषाओं के उत्कृष्ट अनुवादों को प्रदान किया जाता है, बाल साहित्य पुरस्कार 24 भाषाओं के उत्कृष्ट बाल साहित्य को प्रदान किया जाता है तथा युवा पुरस्कार 24 भाषाओं के उत्कृष्ट युवा भारतीय लेखकों को प्रदान किया जाता है। ये सारे पुरस्कार अकादेमी द्वारा प्रत्येक वर्ष प्रदान किए जाते हैं।

प्रत्येक वर्ष अकादेमी कम से कम 50 संगोष्ठियों एवं 100 से अधिक परिसंवादों का क्षेत्रीय, राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयोजन करती है तथा इसके अतिरिक्त 400 से अधिक साहित्यिक कार्यक्रमों, कार्यशालाओं तथा संवाद कार्यक्रमों का आयोजन भी करती है। अकादेमी के कुछ लोकप्रिय कार्यक्रम हैं—लेखक से भेंट (जिसमें कोई प्रख्यात लेखक अपने जीवन एवं कृतियों की चर्चा करता है), संवत्सर व्याख्यान (इसमें भारतीय साहित्य की गहन जानकारी रखनेवाला प्रख्यात लेखक/सृजनात्मक विचारक व्याख्यान देता है), कवि-अनुवादक (इस कार्यक्रम के अंतर्गत श्रोताओं को मूल एवं अनूदित—दोनों कविताओं को एक साथ सुनने का अवसर प्राप्त होता है), व्यक्ति एवं कृति (इसके अंतर्गत अंतः अनुशासनिक क्षेत्रों के लब्धप्रतिष्ठ व्यक्तियों को व्याख्यान हेतु आमंत्रित किया जाता है), कथासंधि (इस कार्यक्रम के अंतर्गत नव-लिखित उपन्यास या नई कहानियों का एकल पाठ होता है तथा उन पर चर्चा की जाती है), कविसंधि (इसमें काव्य-प्रेमियों को कवि/कवयित्री द्वारा एकल कविता-पाठ सुनने का अवसर प्राप्त होता है), लोक : विविध स्वर (यह कार्यक्रम लोक-साहित्य पर आधारित है, जिसमें व्याख्यानों के साथ-साथ प्रदर्शन भी सम्मिलित है), नारी चेतना (यह कार्यक्रम भारतीय

भाषाओं में लिखनेवाली महिला साहित्यकारों को एक मंच प्रदान करता है), युवा साहिती (इसमें विभिन्न भारतीय भाषाओं के युवा लेखकों को प्रोत्साहित किया जाता है), पूर्वोत्तरी (इस शृंखला में पूर्वोत्तर के लेखकों/साहित्यकारों को देश के विभिन्न प्रांतों में साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में रचना-पाठ हेतु आमंत्रित किया जाता है), ग्रामालोक (ग्रामीण अंचलों में साहित्यिक आयोजन) तथा अनुवाद कार्यशालाएँ (इसके अंतर्गत देश के विभिन्न प्रांतों के अनुवादकों को एक साथ आमंत्रित किया जाता है)। अकादेमी प्रत्येक वर्ष साहित्योत्सव का आयोजन करती है। अकादेमी अपने नई दिल्ली स्थित जनजातीय और वाचिक साहित्य केंद्र तथा अगरतला में स्थित वाचिक पूर्वोत्तर साहित्य केंद्र द्वारा देश में जनजातीय और वाचिक साहित्य को प्रोत्साहित करती है।

अकादेमी भारतीय साहित्य की सेवा करनेवाले प्रख्यात भारतीय लेखकों तथा विदेशी विद्वानों को फ़ेलोशिप भी प्रदान करती है। अकादेमी द्वारा आनंद कुमारस्वामी फ़ेलोशिप उन एशियाई देशों के विद्वानों को प्रदान की जाती है, जो भारत में अपनी पसंद की किसी साहित्यिक परियोजना पर कार्य करते हैं तथा प्रेमचंद फ़ेलोशिप सार्क (SAARC) देशों के उन सृजनात्मक लेखकों अथवा विद्वानों को प्रदान की जाती है, जो भारतीय साहित्य पर शोध करते हैं।

अकादेमी द्वारा भारतीय लेखकों पर विनिबंध, इनसाइक्लोपीडिया तथा संचयन जैसी प्रमुख परियोजनाओं का कार्य भी किया जाता है। हाल ही में संस्कृति मंत्रालय ने 'इंडियन लिटरेचर एब्रॉड' (ILA) नामक एक नई परियोजना अकादेमी को सौंपी है, जिसके अंतर्गत वैश्विक स्तर पर भारतीय साहित्य को प्रोत्साहित करने के लिए उसका विदेशी भाषाओं में अनुवाद कराया जाना है। इसके माध्यम से अकादेमी भारतीय साहित्यिक विरासत को प्रोत्साहित कर सकेगी तथा प्रमुख विदेशी भाषाओं में समकालीन भारतीय साहित्य का अनुवाद भी करा सकेगी। अकादेमी विभिन्न देशों के साथ सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों का भी आयोजन करती है, जिसके अंतर्गत प्रत्येक वर्ष कई लेखकों के प्रतिनिधिमंडल एक-दूसरे देशों में आयोजित होने वाले साहित्यिक कार्यक्रमों, पुस्तक मेलों तथा सम्मिलनों में भाग लेते हैं।

अध्यक्ष

साहित्य अकादेमी के पहले अध्यक्ष पंडित जवाहरलाल नेहरू थे। सन् 1963 में वह पुनः अध्यक्ष निर्वाचित हुए। मई 1964 में उनके निधन के बाद सामान्य परिषद् ने डॉ. एस. राधाकृष्णन् को अपना अध्यक्ष निर्वाचित किया। फ़रवरी 1968 में नवगठित परिषद् ने डॉ. ज़ाकिर हुसैन को साहित्य अकादेमी का अध्यक्ष निर्वाचित किया। मई 1969 में उनके निधन के पश्चात् परिषद् ने डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी को अध्यक्ष चुना। फ़रवरी 1973 में वह परिषद् द्वारा पुनः अध्यक्ष चुने गए। मई 1977 में उनकी मृत्यु के पश्चात् उपाध्यक्ष प्रो. के.आर. श्रीनिवास आयंगर साहित्य अकादेमी के कार्यवाहक अध्यक्ष बनाए गए। फ़रवरी 1978 में प्रो. उमाशंकर जोशी अध्यक्ष निर्वाचित हुए। फ़रवरी 1983 में प्रो. वी.के. गोकाक अध्यक्ष निर्वाचित हुए। फ़रवरी 1988 में डॉ. वीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 1993 में प्रो. यू.आर. अनंतमूर्ति अध्यक्ष चुने गए। 1998 में श्री रमाकांत रथ अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 2003 में प्रो. गोपीचंद नारंग अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 2008 में श्री सुनील गंगोपाध्याय अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 2013 में प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी को अकादेमी का अध्यक्ष चुना गया। सामान्य परिषद् को 2018-2022 के कार्यकाल के लिए पुनर्गठित किया गया तथा 2018 में डॉ. चंद्रशेखर कंबार अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

संविधान

साहित्य अकादेमी की स्थापना भारत सरकार के 15 दिसंबर 1952 के प्रस्ताव के अंतर्गत हुई, जिसमें अकादेमी का संविधान मूलतः अंतर्भुक्त था। अकादेमी एक स्वायत्त संस्था के रूप में कार्य करती है और अपने संविधान में आवश्यक संशोधन करने का अधिकार अकादेमी की सामान्य परिषद् में न्यस्त है। समय-समय पर इस अधिकार का प्रयोग भी किया जाता रहा है।

मान्यताप्रदत्त भाषाएँ

भारत के संविधान में परिगणित 22 भाषाओं के अतिरिक्त साहित्य अकादेमी अंग्रेज़ी और राजस्थानी को ऐसी भाषाओं के रूप में मान्यता प्रदान कर चुकी है, जिसमें उसका कार्यक्रम क्रियान्वित किया जा सकता है। इन 24 भारतीय भाषाओं में साहित्यिक कार्यक्रम लागू करने के लिए परामर्श मंडल गठित किए गए हैं। साहित्य अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त भाषाएँ हैं—असमिया, बाङ्ला, बर', डोगरी, अंग्रेज़ी, गुजराती, हिंदी, कन्नड, कश्मीरी, कोंकणी, मैथिली, मलयाळम्, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, ओड़िआ, पंजाबी, राजस्थानी, संस्कृत, संताली, सिंधी, तमिळ, तेलुगु और उर्दू।

संगठन

प्रधान कार्यालय : साहित्य अकादेमी का प्रधान कार्यालय रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110001 में स्थित है। यह भव्य भवन रवींद्रनाथ ठाकुर की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में सन् 1961 में निर्मित हुआ था। इसमें तीनों राष्ट्रीय अकादेमियाँ—संगीत नाटक अकादेमी, ललित कला अकादेमी और साहित्य अकादेमी स्थित हैं।

यह कार्यालय 11 भाषाओं यथा—डोगरी, अंग्रेज़ी, हिंदी, कश्मीरी, मैथिली, नेपाली, पंजाबी, राजस्थानी, संस्कृत, संताली और उर्दू के प्रकाशनों तथा कार्यक्रमों की देखरेख करता है।

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता : सन् 1956 में स्थापित और अब 4, डी.एल. खान रोड (एस.एस.के.एम. अस्पताल के निकट) कोलकाता-700025 में स्थित यह क्षेत्रीय कार्यालय असमिया, बाङ्ला, बर', मणिपुरी और ओड़िआ में अकादेमी के प्रकाशन और कार्यक्रमों की देखरेख करता है तथा इसके अलावा यह अन्य उत्तर-पूर्वी भाषाओं में भी कार्यक्रमों का संयोजन करता है। यहाँ पर एक पुस्तकालय भी है।

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळुरु : साहित्य अकादेमी के बेंगळुरु स्थित क्षेत्रीय कार्यालय की स्थापना 1990 में हुई। इस दक्षिणी क्षेत्रीय कार्यालय की मूलतः स्थापना 1959 में चेन्नै में हुई थी तथा बाद में इसे 1990 में सेंट्रल कॉलेज परिसर, यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी बिल्डिंग, डॉ. बी. आर. आंबेडकर वीथी, बेंगळुरु-560001 में स्थानांतरित कर दिया गया। यह क्षेत्रीय कार्यालय कन्नड, मलयाळम्, तमिळ और तेलुगु में अकादेमी के प्रकाशन और कार्यक्रमों की देखरेख करता है। यहाँ पर एक पुस्तकालय भी है।

चेन्नै कार्यालय : दक्षिणी क्षेत्रीय कार्यालय की स्थापना 1959 में चेन्नै में की गई थी तथा 1990 में उसे उप कार्यालय के रूप में परिवर्तित कर क्षेत्रीय कार्यालय को बेंगळुरु में स्थानांतरित कर दिया गया। चेन्नै उप कार्यालय तमिळ में अकादेमी के प्रकाशनों तथा कार्यक्रमों की देखरेख करता है तथा यह मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग्स (द्वितीय तल), 443 (304), अन्नासालइ, तेनामपेट, चेन्नै-600018 में स्थित है।

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई : सन् 1972 में स्थापित और 172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुंबई-400014 में स्थित यह कार्यालय गुजराती, कोंकणी, मराठी और सिंधी में अकादेमी के प्रकाशनों और कार्यक्रमों की देखरेख करता है। यहाँ पर एक पुस्तकालय भी है।

प्रकाशनों की बिक्री : साहित्य अकादेमी का बिक्री विभाग 'स्वाति', मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर स्थित है।

इसके अतिरिक्त अकादेमी के प्रकाशनों की बिक्री नई दिल्ली स्थित मुख्यालय और मुंबई, कोलकाता, बेंगळुरु और चेन्नै कार्यालयों तथा कश्मीरी गेट एवं विश्वविद्यालय मेट्रो स्टेशन स्थित बिक्री केंद्र से भी की जाती है। अकादेमी ने अपनी पुस्तकों का विक्रय अमेज़न (www.amazon.in) तथा साहित्य अकादेमी वेबसाइट (www.sahitya-akademi.gov.in) पर भी प्रारंभ कर दिया है।

पुस्तकालय : साहित्य अकादेमी का पुस्तकालय भारत के प्रमुख बहुभाषिक पुस्तकालयों में से एक है, यहाँ अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त 24 भाषाओं में विविध साहित्यिक और संबद्ध विषयों की पुस्तकें उपलब्ध हैं। क्षेत्रीय कार्यालयों के पुस्तकालयों को संबंधित क्षेत्रीय भाषाओं के केंद्रों के रूप में स्थापित किया गया है और उन क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण भाषा पुस्तकालयों के लिए यह संपर्क संस्था के रूप में कार्य करता है।

साहित्य अकादेमी वेबसाइट : साहित्य अकादेमी की वेबसाइट http://www.sahitya-akademi.gov.in में इसकी स्थापना, उद्देश्यों, साहित्य अकादेमी की भूमिका एवं उसके इतिहास के विवरण उपलब्ध हैं। इसके अलावा अकादेमी की पुस्तकों की संपूर्ण सूची, जिसमें महत्त्वपूर्ण प्रकाशनों का भाषानुसार विवरण उपलब्ध है, उसकी पत्रिकाओं, साहित्यिक गतिविधियाँ, विशेष परियोजनाओं के बारे में सूचनाएँ, अकादेमी पुरस्कार तथा महत्तर सदस्यता के विवरण, पुस्तकालय के बारे में सूचना तथा गत वर्षों में संस्था की उपलब्धियों का मूल्यांकन उपलब्ध है। अकादेमी वेबसाइट को नियमित रूप से द्विभाषी (हिंदी-अंग्रेज़ी) रूप में अद्यतन किया जाता है।

परियोजना एवं योजनाएँ

अभिलेखागार परियोजना

साहित्य के क्षेत्र में अभिलेखन के महत्त्व और उसकी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए साहित्य अकादेमी ने मार्च 1997 में भारतीय साहित्य के अभिलेखागार की एक परियोजना प्रारंभ की। जब अभिलेखागार पूरी तरह से बन जाएगा तो यह लेखकों और साहित्य से संबंधित महत्त्वपूर्ण सामग्री एकत्र और संरक्षित करेगा, जैसे कि पांडुलिपियाँ, चित्र, ऑडियो रिकार्डिंग, वीडियो रिकॉर्डिंग और प्रतिकृतियाँ (शबीह) आदि। पूरे भारतवर्ष में संस्थाओं और व्यक्तियों के पास उपलब्ध वीडियो फ़िल्म एवं फ़ुटेज, लेखकों की पांडुलिपियाँ, लेखकों के मध्य हुए रोचक पत्राचार एवं साक्षात्कार और पाठ के उपलब्ध ऑडियो रिकॉर्डिंग को इकट्ठा कर यह भारतीय साहित्य के संग्रहालय के लिए एक ठोस आधार तैयार करेगा। अभिलेखागार में कुछ अत्यंत महत्त्वपूर्ण चित्रों को सीडी-रोम्स पर स्कैन करने और संरक्षित करने का कार्य शुरू कर दिया गया है। लगभग एक सौ चित्रों का चयन कर उन्हें पोर्टफ़ोलियो सीडी में संरक्षित किया गया है।

साहित्य अकादेमी ने फ़िल्मों, भारतीय लेखकों और उनके लेखन से संबंधित वीडियो रिकॉर्डिंग के अभिलेखागार की परियोजना पर कार्य प्रारंभ किया है। अकादेमी द्वारा महत्त्वपूर्ण लेखकों पर बनाई गई फ़िल्मों में उनके चित्रों, आवाज़ों, जीवन की महत्त्वपूर्ण प्रभावी घटनाओं, उनके विचारों और सृजनात्मक उपलब्धियों एवं समकालीन प्रतिक्रिया को अभिलेखित करने का प्रयास किया गया है। वीडियो फ़िल्मों का यह अभिलेखागार भविष्य के अनूठे भारतीय साहित्यिक संग्रहालय का एक नमूना होगा, जो आम पाठकों के लिए रुचिकर होगा और साहित्यिक अनुसंधानकर्ताओं और इतिहासकारों के लिए उपयोगी साबित होगा। ये फ़िल्में उन निर्देशकों द्वारा निर्मित की गई हैं, जो अपनी ही तरह के सृजनात्मक कलाकार हैं। अकादेमी द्वारा अब तक 154 लेखकों पर वीडियो फ़िल्में बनाई गई हैं। इनमें से कुछ फ़िल्मों की सीडी बिक्री के लिए भी उपलब्ध है।

अकादेमी से किए जाने वाले पत्राचार की समीक्षा की गई है तथा जवाहरलाल नेहरू, एस. राधाकृष्णन, कृष्ण कृपलानी, ज़ाकिर हुसैन, सी. राजगोपालाचारी एवं अन्य प्रख्यात व्यक्तियों के पत्रों को लैमिनेट कराकर संरक्षण हेतु पुस्तक रूप में तैयार किया गया है। समस्त मास्टर बीटा फ़िल्मों के डिजिटाइजेशन का कार्य पूर्ण हो चुका है। 2013 तक की ऑडियो टेप्स की प्रामाणिकता को जाँचने के उपरांत उनके क्रमांकन, शीर्षक एवं सूची बनाने का कार्य पूरा कर लिया गया है।

एक अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य के रूप में अकादेमी ने इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र (IGNCA) के साथ अपने अभिलेखागार के ऑडियो/वीडियो और अन्य सामग्रियों के डिजिटाइजेशन के लिए एक क़रार किया है। तदनुसार कार्य प्रगति पर है।

अनुवाद केंद्र

अनुवाद अकादेमी की गतिविधियों में से एक प्रमुख गतिविधि है। अकादेमी ने बेंगळुरु में अनुवाद केंद्र तथा कोलकाता में पूर्वी क्षेत्र अनुवाद केंद्र स्थापित किए हैं। ये केंद्र उन क्षेत्रों की भाषाओं से अंग्रेज़ी तथा अन्य भाषाओं में अनूदित पुस्तकों की विशेष शृंखला का प्रकाशन करेंगे।

इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन लिटरेचर

साहित्य अकादेमी की प्रमुख गतिविधियों में इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन लिटरेचर का निर्माण भी शामिल है। यह अपनी तरह की पहली योजना है, जिसमें भारत की 22 भाषाओं को शामिल किया गया है। अंग्रेज़ी में प्रस्तुत इस विश्वकोश से भारतीय साहित्य की अभिवृद्धि और विकास की व्यापक रूपरेखा सामने आई है। लेखकों, पुस्तकों और सामान्य विषयों पर लिखित प्रविष्टियों को संबद्ध परामर्श मंडलों द्वारा सुव्यवस्थित किया गया और एक संचालन समिति द्वारा अंतिम रूप दिया गया है। देशभर के सैकड़ों लेखकों ने विभिन्न विषयों पर प्रविष्टियाँ भेजी हैं। यह विश्वकोश, जिसे छह खंडों की परियोजना के रूप में नियोजित किया गया, प्रकाशित है। डिमाई क्वार्टो आकार के प्रत्येक खंड में लगभग 1000 पृष्ठ हैं।

इनसाइक्लोपीडिया के संशोधन का कार्य प्रो. के. अय्यप्प पणिक्कर के संपादन में शुरू किया गया था। वर्तमान में प्रो. इंद्रनाथ चौधुरी इस परियोजना के प्रधान संपादक के रूप में संबद्ध हैं। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय खंडों के संशोधित संस्करण प्रकाशित किए जा चुके हैं। चतुर्थ खंड का कार्य साहित्य अकादेमी क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता की देखरेख में हो रहा है।

हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन लिटरेचर

अकादेमी की इस परियोजना का उद्देश्य है—विभिन्न भाषाओं में और विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों के अंतर्गत विभिन्न कालों में भारत में साहित्यिक गतिविधियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करना। प्रो. शिशिर कुमार दास द्वारा लिखित सन् 500 से 1300, सन् 1800 से 1910 और सन् 1911 से 1956 तक के कालखंड को समेटने वाले तीन खंडों का प्रकाशन हो चुका है।

द्विभाषी शब्दकोश परियोजना

सन् 2004 में साहित्य अकादेमी ने कई द्विभाषी शब्दकोशों का संकलन तैयार करने हेतु एक परियोजना का शुभारंभ किया। प्रथम चरण में बाङ्ला-असमिया, बाङ्ला-ओड़िआ, बाङ्ला-मैथिली, बाङ्ला-मणिपुरी तथा बाङ्ला-संताली शब्दकोश लाने का निर्णय लिया गया। प्रत्येक शब्दकोश के लिए प्रख्यात विद्वानों, कोशकारों तथा विभिन्न भाषाओं के भाषा विशेषज्ञों का एक संपादक-मंडल तैयार किया गया है। पांडुलिपि तैयार करने एवं आगामी प्रकाशन संबंधी दिशा-निर्देश तथा उसकी निगरानी के लिए एक केंद्रीय संपादक मंडल का भी गठन किया गया।

यह पाया गया कि पूर्वोत्तर भारत की लगभग समस्त भाषाओं में अंग्रेज़ी के एकल तथा अंग्रेज़ी एवं अन्य भाषाओं के शब्दकोश तो कमोबेश उपलब्ध हैं, किंतु बाङ्ला-मणिपुरी अथवा मणिपुरी-असमिया आदि भाषाओं के शब्दकोश लगभग न के बराबर हैं। साहित्य अकादेमी पड़ोसी राज्यों के बीच आपसी संबंधों को और अधिक प्रगाढ़ करने के उद्देश्य से साहित्यिक कृतियों का अनुवाद एक भाषा से अन्य भाषाओं में करवा रही है। किंतु समुचित मात्रा में शब्दकोशों की अनुपलब्धता एक बाधा बन गई है तथा अनुवादकों के पास अनुवाद कार्य हेतु प्रामाणिक शब्दकोश नहीं हैं। इस परिस्थिति में साहित्य अकादेमी ने शब्दकोश निर्माण की परियोजना को प्रारंभ किया।

ये शब्दकोश औसत आकार के होंगे, जिनमें 40000-45000 शब्दों तथा वाक्यांशों की प्रविष्टि होगी। विवरण के अंतर्गत आई.पी.ए. (इंटरनेशनल फ़ोनेटिक एसोसिएशन) के अंतर्गत उच्चारण चिह्न, संस्कृत, अरबी आदि भाषा संबंधी स्रोत; शब्द-भेद, विस्तृत अर्थ (एक से अधिक, यदि आवश्यक हो तो) उदाहरण, व्युत्पत्ति आदि दिया जाना प्रस्तावित है। इस संपूर्ण परियोजना को दिशा-निर्देश प्रख्यात कोशकार प्रो. अशोक मुखोपाध्याय के दिशा-निर्देश में तैयार किया जा रहा है।

परियोजना के प्रथम द्विभाषी बाङ्ला-मैथिली शब्दकोश का 1 मई 2012 को लोकार्पण किया गया। बाङ्ला-संताली द्विभाषी शब्दकोश का लोकार्पण की 14 अगस्त 2012 को किया गया। बाङ्ला-मणिपुरी शब्दकोश प्रकाशित हो चुका है तथा बाङ्ला-असमिया शब्दकोश इसी वर्ष प्रकाशित होने की संभावना है। बाङ्ला-नेपाली, संताली-ओड़िआ, मैथिली-ओड़िआ तथा मैथिली-असमिया द्विभाषी शब्दकोशों के संकलन का कार्य प्रगति पर है।

जनजातीय तथा वाचिक साहित्य केंद्र

भारत के व्यापक जनजातीय एवं वाचिक साहित्य को संकलित, संरक्षित और प्रचारित-प्रसारित करने के उद्देश्य से साहित्य अकादेमी द्वारा दो केंद्रों की स्थापना की गई है, इंफाल में उत्तर-पूर्व वाचिक साहित्य केंद्र (NECOL) तथा नई दिल्ली में वाचिक एवं जनजातीय साहित्य केंद्र (COTLIT)।

उत्तर-पूर्व वाचिक साहित्य केंद्र की स्थापना का मुख्य उद्देश्य प्रकाशनों एवं रिकॉर्डिंग द्वारा पूर्वोत्तरी वाचिक भाषाओं के कार्यों एवं वहाँ के साहित्य को प्रोत्साहित करना है। यह केंद्र लोक उत्सव, आदिवासी भाषाओं में रचना-पाठ, साहित्य मंच, संगोष्ठी, परिसंवाद, कार्यशालाओं आदि का आयोजन करता रहता है। यह केंद्र पूर्वोत्तरी वाचिक साहित्य को अन्य मान्यता प्राप्त भारतीय भाषाओं में भी अनूदित करवाता है। यह केंद्र पूर्वोत्तरी जनजातीय भाषाओं को निरंतर कार्यक्रमों के आयोजनों द्वारा अन्य प्रमुख भारतीय भाषाओं से मिलाने का कार्य भी करता है। यहाँ से लेपचा, कॉकबोराक, मिसिंग, बोंगचेर, गारो तथा मोग भाषाओं से अंग्रेज़ी में कई अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं। वाचिक एवं जनजातीय साहित्य केंद्र (COTLIT) देशभर के वाचिक एवं जनजातीय साहित्य को संकलित, संरक्षित और प्रोत्साहित करने का कार्य विभिन्न कार्यक्रमों एवं प्रकाशनों के माध्यम से करता है। यह केंद्र वाचिक साहित्य के डिजिटल अभिलेख मंच 'स्वर सदन' के सृजन में भी सक्रियता से संलग्न है तथा पूर्वोत्तर क्षेत्र की विभिन्न प्रदर्शनियों में भी सहभागिता करता है।

पुस्तकालय

साहित्य अकादेमी पुस्तकालय 24 भाषाओं की पुस्तकों में साहित्य, समालोचना, दर्शनशास्त्र, इतिहास तथा उससे संबंधित विषयों की पुस्तकों के समृद्ध संग्रह के साथ अपनी तरह का अनूठा पुस्तकालय है। अकादेमी पुस्तकालय सक्रिय एवं प्रशंसक पाठकों (कुल 16,886 पंजीकृत सदस्य) द्वारा दिल्ली में सर्वाधिक प्रयोग किया जाने वाला पुस्तकालय है। वर्ष 2021-2022 में पुस्तकालय के 284 नए सदस्य बने हैं तथा 234 नई पुस्तकें पुस्तकालय हेतु ख़रीदी गईं। पुस्तकालय के प्रधान कार्यालय का कुल संग्रह 1.77 लाख से भी अधिक है तथा अकादेमी के समस्त क्षेत्रीय कार्यालयों के पुस्तकालयों को मिलाकर कुल 3,06,505 लाख (लगभग) पुस्तकें हैं।

पाठकों की सुविधा के लिए अकादेमी पुस्तकालय के वेब पेज को नया रूप दिया गया है। वेब ओपीएसी (WebOPAC) को अधिक यूज़र फ्रेंडली बनाने के लिए अनुकूलित किया गया है। पुस्तकालय ने 'सामग्री

आधारित पूर्ण पाठ खोज प्रणाली' की एक नई सेवा भी शुरू की है, जो संदर्भ उद्देश्य के लिए बहुत उपयोगी है। पाठकों तथा स्टॉफ़ सदस्यों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए डिजिटल लाइब्रेरी (साहित्य सागर) का भी निर्माण किया गया है। अब 24 भाषाओं की पुस्तकों का कैटलॉग को पूर्ण रूप से कंप्यूटरीकृत किया जा चुका है तथा वेब ओपैक के माध्यम से अकादेमी की वेबसाइट www.sahitya-akademi.gov.in पर आसानी से ऑनलाइन ढूँढ़ा जा सकता है। समस्त भाषाओं की पुस्तकों की ऑनलाइन कैटलॉगिंग का काम किया जा चुका है। इन खंडों के ऑटोमेशन होने के साथ पुस्तकालय कम समय में ग्रंथ-सूची उपलब्ध करा सकता है। 'हूज़'हू ऑफ़ इंडियन राइटर्स' जैसी महत्त्वपूर्ण परियोजना का कार्य पुस्तकालय स्टाफ़ द्वारा संपन्न किया जा चुका है तथा अकादेमी की वेबसाइट www.sahitya-akademi.gov.in/sahitya-akademi/SA Search System/sauser पर उपलब्ध है। 'क्रिटिकल इन्वेंट्री ऑफ़ नार्थ-ईस्टर्न ट्राइबल लिटरेचर' के द्वितीय खंड के संकलन का काम अभी चल रहा है, जिसे साहित्य अकादेमी द्वारा शीघ्र प्रकाशित किया जाएगा।

पुस्तकालय भारतीय साहित्य पर लिखित अंग्रेज़ी भाषा के आलेख, जो उसकी गृह पत्रिका में प्रकाशित हैं, के क्रमांकन का कार्य भी करता है। यह डाटाबेस पुस्तकालय के पाठकों के लिए भी उपलब्ध है।

पुस्तकालय ने पाठकों के लाभ को ध्यान में रखते हुए अपनी नई सेवा को जारी रखा है, जिसमें समाचार-पत्र की कतरनों, पुस्तक समीक्षाओं तथा ज्वलंत मुद्दों को प्रदर्शित किया जाता है।

क्षेत्रीय कार्यालयों के लिए प्रत्येक वर्ष नियमित रूप से पुस्तकें ख़रीदी की जाती हैं। क्षेत्रीय कार्यालयों कोलकाता, बेंगळूरु तथा मुंबई पुस्तकालयों ने अपने संग्रहण के रेट्रोकंवर्जन/कंप्यूटरीकरण का कार्य शुरू कर दिया है। इन पुस्तकालयों के कैटलॉग सिंगल विंडो वेब ओपैक (WebOPAC) के माध्यम से प्राप्य हैं, जो यूनियन कैटलॉग के रूप में पुस्तकों की स्थानानुसार उपलब्धता की सूचना प्रदान करते हैं।

कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न की समिति

पी.ओ.एस.एच. अधिनियम के प्रावधानों के अंतर्गत कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न के मामलों को देखने के लिए गठित समिति की बैठक प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली तथा क्षेत्रीय कार्यालयों मुंबई, कोलकाता तथा बेंगळुरु एवं उप-कार्यालय चेन्नै में भी हुई। संबंधित समिति की रिपोर्ट के अनुसार, इस संबंध में कोई शिकायत प्राप्त नहीं हुई है।

2021-2022 की प्रमुख गतिविधियाँ

- साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2020 प्रदत्त।
- साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2020 प्रदत्त।
- साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2021 प्रदत्त।
- साहित्य अकादेमी की मानद महत्तर सदस्यता प्रदत्त।
- 16 कार्यक्रमों के आयोजन के साथ साहित्योत्सव 2022 आयोजित।
- देशभर में कुल 578 कार्यक्रमों का आयोजन।
  - 13 'अस्मिता', 01 'आविष्कार', 08 'बाल साहिती', 07 'पुस्तक परिचर्चा', 55 'वृत्तचित्र प्रदर्शन' (दर्पण), 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' योजना के अंतर्गत 20, 'ग्रामालोक' के अंतर्गत 40, 'कवि अनुवादक' के अंतर्गत 4, 1 'विचार-विमर्श' कार्यक्रम, 9 'कविता-पाठ' कार्यक्रम, 2 'कहानी-पाठ' कार्यक्रम, 8 'कवि सम्मिलन', 'मुलाक़ात' शृंखला के अंतर्गत 19, 'युवा साहिती' शृंखला के अंतर्गत 19, 'कथासंधि' शृंखला के अंतर्गत 21, 'कविसंधि' शृंखला के अंतर्गत 21, 'साहित्य मंच' शृंखला के अंतर्गत 78, 'लोक : विविध स्वर' शृंखला के अंतर्गत 01, 'बहुभाषी सम्मिलन' के अंतर्गत 8, 3 'लेखक सम्मिलन', 34 'विविध कार्यक्रम', 3 'जनजातीय और वाचिक साहित्य' कार्यक्रम, 21 'नारी चेतना', 22 'मेरे झरोखे से', 3 'लेखक से भेंट', 6 'व्यक्ति और कृति', 'राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह 2021' के अंतर्गत 03 'साहित्य मंच', 'प्रवासी मंच' शृंखला के अंतर्गत 5, 33 संगोष्ठियाँ, 116 परिसंवाद, 04 अनुवाद कार्यशाला आदि विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रमों का समस्त भारत में आयोजन किया गया।
- 491 नई एवं पुनर्मुद्रित पुस्तकें प्रकाशित।
- वर्ष 2020-2021 में 58 पुस्तक प्रदर्शनियों/पुस्तक मेलों का आयोजन एवं सहभागिता।
- अकादेमी ने लगभग 2.16 करोड़ लाख रुपए की पुस्तकों की बिक्री की।
- साहित्य अकादेमी पुस्तकालयों में 1149 और नई पुस्तकें जुड़ीं।
- प्रख्यात भारतीय लेखकों पर 7 वृत्तचित्रों का निर्माण। साहित्य अकादेमी द्वारा निर्मित वृत्तचित्रों की कुल संख्या बढ़कर अब 162 हो गई।
- *इंडियन लिटरेचर* के 3 अंकों, *समकालीन भारतीय साहित्य* के 6 अंकों तथा *संस्कृत प्रतिभा* के 5 अंकों का प्रकाशन।

पुरस्कार

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2021

30 दिसंबर 2021 को नई दिल्ली में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में वर्ष 2021 के साहित्य अकादेमी पुरस्कार के लिए 24 भाषाओं में 24 पुस्तकों का चयन, संबद्ध भाषाओं में त्रिसदस्यीय निर्णायक मंडल की अनुशंसाओं के आधार पर किया गया। प्रक्रिया के अनुसार कार्यकारी मंडल ने पुरस्कारों की घोषणा निर्णायक मंडलों की सर्वसम्मत अथवा बहुमत संस्तुतियों के आधार पर की। संबद्ध भाषाओं में पुरस्कार उक्त वर्ष से तत्काल पूर्व के वर्ष से पहले के पाँच वर्षों में (अर्थात् 1 जनवरी 2015 से 31 दिसंबर 2019 के मध्य) प्रकाशित पुस्तकों पर दिया गया।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2021 से सम्मानित लेखक

असमिया : अनुराधा शर्मा पुजारी, ***इयात एखन अरण्य आसिल*** (उपन्यास)

बाङ्ला : ब्रात्य बसु, ***मीरजाफ़र ओ अन्यान्य नाटक*** (नाटक)

बर' : मोदाय गाहय (देवकांत रामचियारी), ***खर' सायाव आरो हिमालय*** (कविता-संग्रह)

डोगरी : राज राही, ***नमें टन्नल*** (कहानी-संग्रह)

अंग्रेज़ी : नमिता गोखले, ***थिंग्स टू लीव बिहाइंड*** (उपन्यास)

गुजराती : यज्ञेश दवे, ***गंधमंजूषा*** (कविता-संग्रह)

हिंदी : दया प्रकाश सिन्हा, ***सम्राट अशोक*** (नाटक)

कन्नड : डि.एस. नागभूषण, ***गाँधी कथन*** (जीवनी)

कश्मीरी : वली मुहम्मद असीर किश्तवारी, ***तवाज़ुन*** (समालोचना)

कोंकणी : संजीव वेरेंकार, ***रक्तचंदन*** (कविता-संग्रह)

मैथिली : जगदीश प्रसाद मंडल, ***पंगु*** (उपन्यास)

मलयाळम् : जॉर्ज ओणक्कूर, ***हृदयरागंगळ*** (आत्मकथा)

मणिपुरी : थॉकचॉम ईबॉहनबी सिंह, ***मणिपूरीदा पूंशि वारीगी साहित्य*** (कथेतर साहित्य)

मराठी : किरण गुरव, ***बाळूच्या अवस्थांतराची डायरी*** (कहानी-संग्रह)

नेपाली : छविलाल उपाध्याय, ***उषा-अनिरुद्ध*** (महाकाव्य)

ओड़िआ : हृषिकेश मल्लिक, ***सरियाईथिवा अपेरा*** (कविता-संग्रह)

पंजाबी : ख़ालिद हुसैन, ***सूलां दा सालण*** (कहानी-संग्रह)

राजस्थानी : मीठेश निर्मोही, ***मुगती*** (कविता-संग्रह)

संस्कृत : विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र 'विनय', ***सृजित शङ्खनादं किल*** (कविता-संग्रह)

संताली : निरंजन हाँसदा, ***मोने रेना : आड़ां*** (कहानी-संग्रह)

सिंधी : अर्जुन चावला, ***नेण निंडाखड़ा*** (कविता-संग्रह)

तमिऴ : अंबइ (सी.एस. लक्ष्मी), ***सिवप्पुक कुषुत्तुडन ओरु पच्चइप् परवइ*** (कहानी-संग्रह)

तेलुगु : गोरटि वेन्कन्ना, ***वल्लंकि ताळम्*** (कविता-संग्रह)

उर्दू : चंद्रभान ख़याल, ***ताज़ा हवा की ताबिशें*** (कविता-संग्रह)

अनुराधा शर्मा पुजारी

ब्रात्य बसु

मोदाय गाहाय

राज राही

नमिता गोखले

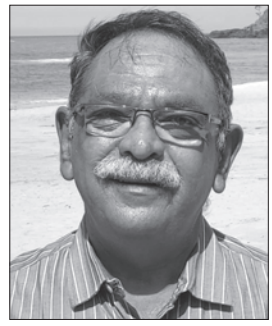

यज्ञेश दवे

दया प्रकाश सिन्हा

डि.एस. नागभूषण

वली मुहम्मद असीर किश्तवारी

संजीव वेरेंकार

जगदीश प्रसाद मंडल

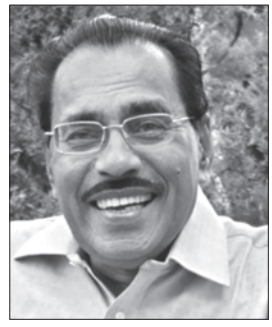

जॉर्ज् ओणक्कूर

थॉकचॉम ईबॉहनबी सिंह

किरण गुरव

छविलाल उपाध्याय

हृषिकेश मल्लिक

ख़ालिद हुसैन

मीठेश निर्मोही

विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र 'विनय'

निरंजन हाँसदा

अर्जुन चावला

अंबइ

गोरटि वेन्कन्ना

चंद्रभान ख़याल

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2021 के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया

1. डॉ. अनन्दा बार्मुदोई
2. डॉ. कमालुद्दीन अहमद
3. डॉ. पोना महंता

बाङ्ला

1. श्री रणजीत दास
2. प्रो. तपोधीर भट्टाचार्जी
3. श्री त्रिदिब चट्टोपाध्याय

बर'

1. श्री गोपीनाथ ब्रह्म
2. डॉ. नरेश्वर नार्जारी
3. श्री गोविंदा बसुमतारी

डोगरी

1. श्री ललित गुप्ता
2. श्री शैलेंदर सिंह
3. श्री शमशेर सिंह

अंग्रेज़ी

1. डॉ. हरीश त्रिवेदी
2. प्रो. सुप्रिया चौधुरी
3. श्री विवेक शानबाग

गुजराती

1. डॉ. महेश चंपकलाल
2. श्री चंद्रकांत टोपीवाला
3. सुश्री शरीफ़ा विजलीवाला

हिंदी

1. प्रो. चमनलाल गुप्त
2. प्रो. (डॉ.) दिविक रमेश
3. प्रो. जयप्रकाश

कन्नड

1. डॉ. अमरेश नुगाडोनी
2. श्री बोलवर मोहम्मद कुन्ही
3. डॉ. सबीहा भूमिगोड़ा

कश्मीरी

1. श्री प्रेमनाथ शाद
2. श्री गुलाम नबी ख़्याल
3. श्री अब्दुल अहद हाजिनी

कोंकणी

1. श्री दामोदर मावज़ो
2. श्री आर.एस. भास्कर
3. श्री तुकाराम रामा शेठ

मैथिली

1. डॉ. रूप नारायण चौधुरी
2. श्री रामनारायण सिंह
3. डॉ. बी.के. मिश्र

मलयाळम्

1. श्री के.पी. रामानुन्नी
2. डॉ. के.एस. रविकुमार
3. डॉ. एम. लीलावती

मणिपुरी

1. प्रो. अरमबम बिरेन सिंह
2. श्री एल. जयचंद्र सिंह
3. श्री युमलेमबम इबोमचा

मराठी

1. श्री सतीश आलेकर
2. श्री वसंत पाटणकर
3. डॉ. रविंद्र शोभने

नेपाली

1. श्री भूपेंद्र अधिकारी
2. श्रीमती बिंदया सुब्बा
3. श्री रूद्र पौडयाल

ओड़िआ

1. श्री तरुण कांति मिश्र
2. डॉ. बंशीधर सारंगी
3. प्रो. नीलाद्रि भूषण हरिचंदन

पंजाबी

1. प्रो. सुरजीत सिंह ली
2. डॉ. बलजिंदर कौर
3. डॉ. बलजीत कौर

राजस्थानी

1. श्री बृजरतन जोशी
2. श्री कृष्ण कुमार आशु
3. श्रीमती गीता सामौर

संस्कृत

1. डॉ. महावीर अग्रवाल
2. प्रो. रानी सदाशिव मूर्ति
3. डॉ. लीना रस्तोगी

संताली

1. श्री अर्जुन हेम्ब्रम
2. श्री जामदार किस्कू
3. श्री सूर्य सिंह बेसरा

सिंधी

1. श्री गोवर्धन शर्मा घायल
2. श्री खीमन यु. मुलाणी
3. सुश्री माया राही

तमिऴ

1. श्री के. मुथुकृष्णन
2. श्री इमायम
3. प्रो. रामगुरुनाथन

तेलुगु

1. डॉ. सी. मृणालिनी
2. श्री जी. श्रीराममूर्ति
3. डॉ. कात्यायनी विदमहे

उर्दू

1. प्रो. मोहम्मद ज़मां आज़ुर्दा
2. प्रो. सादिक़
3. प्रो. तारिक़ छात्री

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2020

18 सितंबर 2021 को नई दिल्ली में अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2020 के लिए 24 पुस्तकों के चयन को अनुमोदित किया गया। अनुवाद पुरस्कार के लिए पुस्तकों का चयन संबंधित भाषा में चयन समितियों की अनुशंसाओं के आधार पर किया गया। प्रक्रिया के अनुसार कार्यकारी मंडल ने पुरस्कारों की घोषणा निर्णायक मंडलों की सर्वसम्मत अथवा बहुमत संस्तुतियों के आधार पर की। संबद्ध भाषाओं में पुरस्कार उक्त वर्ष से तत्काल पहले के वर्ष के पहले के पाँच वर्षों में (अर्थात् 1 जनवरी 2014 से 31 दिसंबर 2018 के मध्य) प्रकाशित पुस्तकों पर दिया गया।

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2020 से सम्मानित अनुवादक

असमिया : दिगंत विश्व शर्मा, ***भारतीय संस्कृतिर भित्ति*** (*द रेनेसां इन इंडिया एंड अदर ऐस्सेज़ ऑफ़ इंडियन कल्चर*–अंग्रेज़ी, निबंध), श्री अरविंदो

बाङ्ला : पुष्पितो मुखोपाध्याय, ***ग़ालिब पत्राबली*** (*ख़ुतूत ए ग़ालिब*–उर्दू, मिर्ज़ा ग़ालिब के संकलित पत्र), ख़ालिक़ अंजुम

बर' : कामेश्वर ब्रह्म, ***गिबि भारतनि जारिमिन सिगांनिफ्राय ए.डि. 1300 सिम*** (*द पेंग्विन हिस्ट्री ऑफ़ अर्ली इंडिया : फ्रॉम द ओरिजिन्स टू ए डी 1300*–अंग्रेज़ी, इतिहास), रोमिला थापर

डोगरी : सुनीता भड़वाल, ***किश्तवाड़ : संस्कृति ते परंपरा : किश्तवाड़ दा सामाजिक ते सांस्कृतिक अध्ययन*** (*किश्तवाड़ : संस्कृति और परंपरा*–हिंदी, निबंध), शिव निर्मोही

अंग्रेज़ी : श्रीनाथ पेरूर, ***घाचर घोचर*** (*घाचर घोचर*–कन्नड, उपन्यास), विवेक शंभाग

गुजराती : काश्यपी महा, ***परितप्त लंकेश्वरी*** (*परितप्त लंकेश्वरी*–हिंदी, नाटक) मृदुला सिन्हा

हिंदी : टी.ई.एस. राघवन, ***तिरुक्कुरल*** (*तिरुक्कुरल*–तमिऴ, कविता), तिरुवल्लुवर

कन्नड : एस. नटराज बूदालु, ***सरहपाद*** (*अपभ्रंश देवनागरी सरहपाद*–संकलन (कार्य, दर्शन और दोहा))

कश्मीरी : शफ़क़त अल्ताफ़, ***अख हथ अख नज़्मे*** (*101 सेलेक्टड पोएम्स ऑफ़ रवींद्रनाथ टैगोर*–बाङ्ला, कविता), रवींद्रनाथ ठाकुर

कोंकणी : जयश्री शानभाग, ***स्वप्न सारस्वत*** (*स्वप्न सारस्वत*–कन्नड, उपन्यास), गोपालकृष्ण पै

मैथिली : (स्व.) जितेंद्र नारायण झा, ***चौपाड़ि*** (*चतुष्पाठी*–बाङ्ला, उपन्यास), स्वप्नमय चक्रवर्ती

मलयाळम् : सुधाकरन रामनतली, ***शिखरसूर्यन*** (*शिखर सूर्य*–कन्नड, उपन्यास), चंद्रशेखर कंबार

मणिपुरी : एच. श्यामसुंदर सिंह, ***अथूम-अहाव यानबा नूपा*** (*द वेंडर ऑफ़ स्वीट्स*–अंग्रेज़ी, उपन्यास), आर.के. नारायण

मराठी : सोनाली नवांगुळ, ***मध्यरात्रिनंतरचे तास*** (*इरंदम जामथिन कथाइ*–तमिऴ, उपन्यास), सलमा

नेपाली : भवानी अधिकारी, ***एउटा पिस्तौल एउटा कुन्द पुष्प*** (*पिस्तौल अमा कुन्द लेइ अमा*–मणिपुरी, कहानी), इलाङ्बम दिनॅमनी

ओड़िआ : मंजु मोदी, ***कल्याणी*** (*कल्याणी*–हिंदी, उपन्यास), जैनेंद्र कुमार

पंजाबी : मोहिंदर बेदी जैतो, ***रावी विरसा*** (*रावी विरसा*–हिंदी, उपन्यास), असग़र वजाहत

राजस्थानी : घनश्याम नाथ कच्छावा, ***घरबायरौ*** (*अघरी आत्मार काहिनी*–असमिया, उपन्यास), सैयद अब्दुल मलिक

संस्कृत : मंजूषा कुलकर्णी, ***प्रकाशमार्गाः*** (*प्रकाशवाटा*–मराठी, जीवनी), प्रकाश आमटे

संताली : चंद्र मोहन किस्कु, ***सिदो-कान्हु तिकिनाग होहोते*** (*सिदू-कान्हुर डाके*–बाङ्ला, उपन्यास), महाश्वेता देवी

सिंधी : संध्या कुंदनाणी, ***उहा लंबी ख़ामोशी*** (*दैट लांग साइलेंस*–अंग्रेज़ी, उपन्यास), शशि देशपांडे

तमिऴ : के. चेल्लप्पन, ***गोरा*** (*गोरा*–बाङ्ला, उपन्यास), रवींद्रनाथ ठाकुर

तेलुगु : रंगनाथ रामचंद्र राव, ***ओम नमो*** (*ओम नमो*–कन्नड, उपन्यास), शांतिनाथ देसाई

उर्दू : सबीहा अनवर, ***फ़िदा-ए-लखनऊ*** (*फ़िदा-ए-लखनऊ : टेल्स ऑफ़ द सिटी एंड इट्स पीपुल*–अंग्रेज़ी, कहानी), परवीन तलहा

दिगंत विश्व शर्मा

पुष्पितो मुखोपाध्याय

कामेश्वर ब्रह्म

सुनीता भड़वाल

श्रीनाथ पेरूर

काश्यपी महा

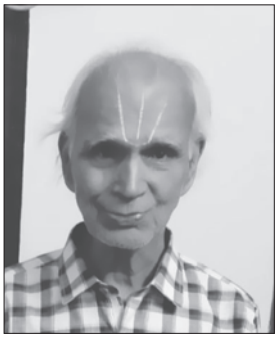

टी.ई.एस. राघवन

एस. नटराज बूदालु

शफ़क़त अल्ताफ़

जयश्री शानभाग

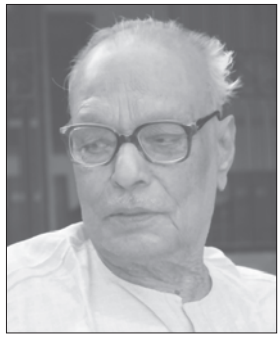

(स्व.) जितेंद्र नारायण झा

सुधाकरन रामनतली

एच. श्यामसुंदर सिंह

सोनाली नवांगुळ

भवानी अधिकारी

मंजु मोदी

मोहिंदर बेदी जैतो

घनश्याम नाथ कच्छावा

मंजूषा कुलकर्णी

चंद्र मोहन किस्कु

संध्या कुंदनाणी

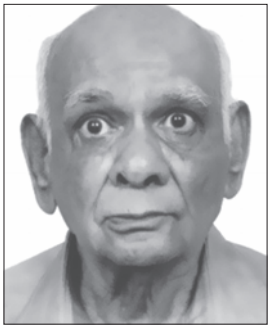

के. चेल्लप्पन

रंगनाथ रामचंद्र राव

सबीहा अनवर

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2020 के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया

1. श्रीमती मालिनी गोस्वामी
2. श्री रणजीत गोगोई
3. श्री अतनु भट्टाचार्य

बाङ्ला

1. श्री हिमाद्री लाहिड़ी
2. डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय
3. प्रो. (डॉ.) सुरभि बंद्योपाध्याय

बर'

1. श्री अरबिंदो उज़िर
2. श्री कालीचरण उज़िर
3. सुश्री दीपाली खेरकत्री

डोगरी

1. श्री इंद्रजीत केसर
2. सुश्री विजया ठाकुर
3. डॉ. रतनलाल शर्मा (बसोत्रा)

अंग्रेज़ी

1. प्रो. आलोक भल्ला
2. प्रो. इष्शिता चंदा
3. श्री निर्मलकांति भट्टाचार्य

गुजराती

1. श्री संजय श्रीपद भावे
2. डॉ. वर्षा दास
3. श्री निरंजन राज्यगुरु

हिंदी

1. डॉ. दामोदर खड़से
2. प्रो. जी. गोपीनाथ
3. प्रो. इंद्रनाथ चौधुरी

कन्नड

1. श्री चंद्रकांत पोकले
2. प्रो. लक्ष्मी चंद्रशेखर
3. प्रो. ओ.एल. नागभूषण स्वामी

कश्मीरी

1. प्रो. मो. ज़मां आजुर्दा
2. प्रो. शफ़ी शौक़
3. श्री सुलतान-उल-हक़-शोहीदी

कोंकणी

1. श्रीमती जयमाला दनैत
2. श्री कामत बमबोलकर श्रीधर पोंडा
3. श्री मेल्विन यूजिन रोड्रिग्स

मैथिली

1. श्री इंद्रकांत झा
2. डॉ. योगानंद झा
3. श्री तुलानंद मिश्र

मलयाळम्

1. डॉ. सी. गणेश
2. डॉ. एम. कृष्णनन् नंबूतिरी
3. डॉ. सोमन कदलुर

मणिपुरी

1. प्रो. आई.एस. काङ्जम (इबोहाल सिंह काङ्जम)
2. प्रो. तोइजम तम्पा देवी
3. डॉ. च. निशान निङ्तम्बा

मराठी

1. श्री बलवंत जेउरकर
2. डॉ. प्रतिमा इंगोले
3. डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे

नेपाली

1. श्री कमल थुलुंग
2. श्री लोकनाथ उपाध्याय
3. श्री थीरु प्रसाद शर्मा (थीरु प्रसाद नेपाल)

ओड़िआ

1. डॉ. वी.एस. जोगलेकर
2. डॉ. सूर्यमणि खुंटिया
3. प्रो. शंकरलाल पुरोहित

पंजाबी

1. सुश्री सुरिंदर नीर
2. डॉ. तरलोक बंधु
3. डॉ. करनजीत सिंह

राजस्थानी

1. डॉ. संजू श्रीमाली
2. श्री मनोज कुमार स्वामी
3. डॉ. सत्यनारायण

संस्कृत

1. प्रो. बालकृष्ण शर्मा
2. डॉ. आर. गणेश शतावधनी
3. प्रो. हरिदत्त शर्मा

संताली

1. श्रीमती जोबा मुर्मु
2. श्री खेरवाल सोरेन
3. श्री सुंदर मनोज हेम्ब्रम

सिंधी

1. डॉ. जेठो लालवाणी
2. सुश्री माया राही
3. श्री मोहन गेहानी

तमिऴ

1. डॉ. जे. मंजुला देवी
2. श्री पी. कृष्णास्वामी
3. डॉ. तिरुप्पुर कृष्णन्

तेलुगु

1. प्रो. जी.एस. मोहन
2. डॉ. पापिनेनी शिवशंकर
3. डॉ. अम्मांगी वेणुगोपाल

उर्दू

1. डॉ. अहमद सग़ीर
2. प्रो. एम. शाफ़े क़िदवई
3. डॉ. राजेश रेड्डी

साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2021

दिनांक 30 दिसंबर 2021 को नई दिल्ली में अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में बाल साहित्य पुरस्कार 2021 के लिए 22 लेखकों के चयन को अनुमोदित किया गया। यह अनुमोदन इस उद्देश्य के लिए गठित संबंधित भाषाओं की त्रि-सदस्यीय चयन समितियों की अनुशंसाओं के आधार पर किया गया। प्रक्रिया के अनुसार, कार्यकारी मंडल ने पुरस्कारों की घोषणा निर्णायक मंडलों की सर्वसम्मत अथवा बहुमत संस्तुतियों के आधार पर की। ये पुरस्कार उक्त वर्ष से तत्काल पहले के वर्ष के पूर्ववर्ती पाँच वर्षों (अर्थात् 1 जनवरी 2015 से 31 दिसंबर 2019 के मध्य) में प्रकाशित पुस्तकों पर दिए गए। इस वर्ष गुजराती और पंजाबी भाषाओं में पुरस्कार घोषित नहीं किए गए।

बाल साहित्य पुरस्कार 2021 से सम्मानित लेखक

असमिया : मृणाल चंद्र कलिता, ***बकुल फुलर दरे*** (उपन्यास)
बाङ्ला : सुनिर्मल चक्रवर्ती, ***बताकेस्टो बाबुर छाता*** (कहानी-संग्रह)
बर' : रत्नेश्वर नार्जारी, ***दिखुरा सल' बाथा*** (लोक कथाएँ)
डोगरी : नरसिंह देव जम्वाल, ***खड़क सिंह ते उसदा गुगलु*** (उपन्यास)
अंग्रेज़ी : अनीता वछराजानी, ***अमृता शेर-गिल : रिबेल विद ए पेंटब्रुश*** (जीवनी)
हिंदी : देवेंद्र मेवाड़ी, ***नाटक-नाटक में विज्ञान*** (नाटक-संग्रह)
कन्नड : बसु बेविनगिडद, ***ओडि होद हुडूग*** (उपन्यास)
कश्मीरी : मजीद मजाज़ी, ***फुलई गुलन हिज़*** (कहानी-संग्रह)
कोंकणी : सुमेधा कामत देसाय, ***सुमीचें कॉटंग्री*** (उपन्यास)
मैथिली : अनमोल झा, ***लागि जो फूल आकाश*** (कविता-संग्रह)
मलयाळम् : रघुनाथ पलेरी, ***अवर मूवरुम ओरु मळाविल्लुम*** (उपन्यास)
मणिपुरी : निङोम्मबम जदुमनि सिंह, ***अपुनबना पंगलनी*** (नाटक-संग्रह)
मराठी : संजय वाघ, ***जोकर बनला किंगमेकर*** (उपन्यास)
नेपाली : सुदर्शन अम्बटे, ***झ-याउँकिरी र जूनकिरी*** (कविता-संग्रह)
ओड़िआ : दिगराज ब्रह्म, ***गीता कहे मितरकथा*** (कविता-संग्रह)
राजस्थानी : कीर्ति शर्मा, ***पाणी रा रुखाळा*** (उपन्यास)
संस्कृत : आशा अग्रवाल, ***कथामाधुरी*** (कहानी-संग्रह)
संताली : शोभा हाँसदा, ***हालि मन*** (कविता-संग्रह)
सिंधी : किश्न खूबचंदानी 'रनजयाल', ***बार मन ठार*** (कविता-संग्रह)
तमिऴ : एम. मुरुगेश, ***अम्मावुक्कु मगल सोन्न उलगिन मुधल कधै*** (कहानी-संग्रह)
तेलुगु : देवराजु महाराजु, ***नेनु अंटे एवरु?*** (नाटक-संग्रह)
उर्दू : कौसर सिद्दिक़ी, ***चराग़ फूलों के*** (कविता-संग्रह)

* इस वर्ष गुजराती और पंजाबी भाषाओं में पुस्कार घोषित नहीं किए गए।

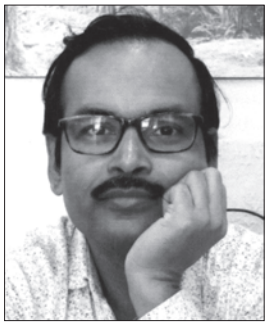

मृणाल चंद्र कलिता

सुनिर्मल चक्रवर्ती

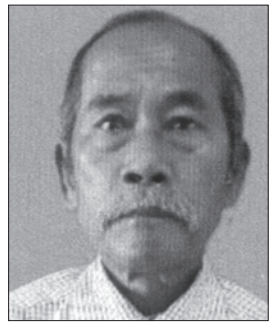

रत्नेश्वर नारजारि

नरसिंह देव जम्वाल

अनीता वछराजानी

देवेंद्र मेवाड़ी

बसु बेविनगिडद

मजीद मजाज़ी

सुमेधा कामत देसाय

अनमोल झा

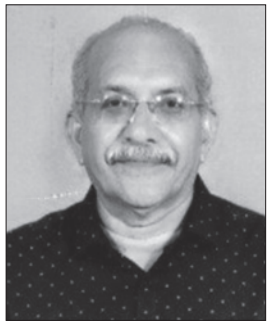

रघुनाथ पलेरी

निङोम्मबम जदुमनि सिंह

संजय वाघ

सुदर्शन अम्बटे

दिगराज ब्रह्म

कीर्ति शर्मा

आशा अग्रवाल

शोभा हाँसदा

किश्न खूबचंदाणी 'रनजयाल'

एम. मुरुगेश

देवराजु महाराजु

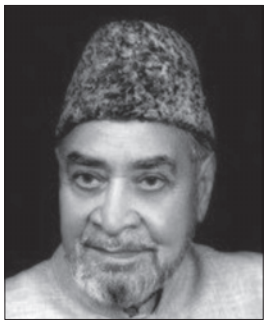

कौसर सिद्दीक़ी

साहित्य अकादेमी बाल पुरस्कार 2021 के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया

1. श्री विपुल ज्योति शइकिया
2. श्री दिलीप फूकन
3. डॉ. मालिनी

बाङ्ला

1. श्री भवानी प्रसाद मजूमदार
2. प्रो. पवित्र सरकार
3. श्री षष्ठीपद चट्टोपाध्याय

बर'

1. श्री जगदीश प्रसाद ब्रह्म
2. डॉ. संसूमा खुंगुर बर'
3. डॉ. स्वर्ण प्रभा चैनारी

डोगरी

1. श्री ध्यान सिंह
2. डॉ. निर्मल विनोद
3. डॉ. सुषमा शर्मा

अंग्रेज़ी

1. श्री चिनमॉय गुहा
2. सुश्री गीता धर्माराजन
3. डॉ. कावेरी नाम्बिसन

हिंदी

1. श्री प्रेम जन्मेजय
2. प्रो. ऋता शुक्ल
3. डॉ. सच्चिदानंद जोशी

कन्नड

1. प्रो. मालती पट्टनशेट्टी
2. श्री एस. दिवाकर
3. श्री टी.पी. अशोक

कश्मीरी

1. श्री बालमुकुंद वैष्णवी 'बाल कृष्ण संन्यासी'
2. श्री प्यारे हताश
3. श्री शहनाज़ रशीद

कोंकणी

1. श्री प्रसाद लोलीनकर
2. श्री शरतचंद्र शेनॉय
3. श्री वेंकटेश नायक

मैथिली

1. श्री वैद्यनाथ झा
2. श्री देवकांत मिश्र
3. श्री सत्यनारायण मेहता

मलयाळम्

1. डॉ. के.जी. पॉलसे
2. श्री मधुसूधनन जी.
3. श्री पी.के. गोपी

मणिपुरी

1. श्री पॉलेम नबचंद्र सिंह
2. श्री लंछंबा मेतेई
3. श्री सुधीर नारोईबम

मराठी

1. सुश्री माधुरी पुरंदरे
2. श्री श्रीकांत देशमुख
3. डॉ. विश्वास पाटिल धुले

नेपाली

1. श्री डंबर मणि प्रधान
2. श्री शंकर प्रधान
3. श्री सुभाष दीपक

ओड़िआ

1. श्री बिरेंद्र कुमार समंतराय
2. श्री गौरहरि दास
3. डॉ. मनोरमा बिस्वाल महापात्र

राजस्थानी

1. श्री भैरूलाल गर्ग
2. श्री मीठेश निर्मोही
3. डॉ. राज्यवर्धन सिंह रॉय

संस्कृत

1. श्री पेन्ना मधुसुदन
2. डॉ. संपदानंद मिश्र
3. डॉ. सुधिकांत भारद्वाज

संताली

1. डॉ. जतिंद्रनाथ बेसरा
2. श्री कुहुदुलार हांसदा
3. श्री शोभानाथ बेसरा

सिंधी

1. डॉ. बलदेव मतलाणी
2. श्री हरीश कर्मचंदाणी
3. डॉ. हुंदराज बलवाणि

तमिऴ

1. डॉ. बूमी सेल्वम
2. डॉ. देवी नचियाप्पन
3. डॉ. वाई. मणिकंदन

तेलुगु

1. डॉ. सी. भवानी देवी
2. श्री मधुरांतकम नरेंद्र
3. श्री सीता रामा राव

उर्दू

1. श्री जगदम्बा दुबे
2. श्री परवेज़ शहरयार
3. डॉ. शाइस्ता युसूफ़

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2021

30 दिसंबर 2021 को अगरतला में डॉ. चंद्रशेखर कंबार की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2021 के लिए 23 पुस्तकों के चयन को अनुमोदित किया गया। युवा पुरस्कार के लिए पुस्तकों का चयन संबंधित भाषा चयन समितियों की अनुशंसाओं के आधार पर किया गया। नियमानुसार, कार्यकारी मंडल ने निर्णायक समिति के सर्वसम्मत अथवा बहुमत से की गई संस्तुतियों के आधार पर पुरस्कार घोषित किए। ये पुरस्कार उन लेखकों की पुस्तकों को दिए जाते हैं, जिनकी उम्र पुरस्कार वर्ष की 1 जनवरी को 35 वर्ष अथवा उससे कम हो। इस वर्ष राजस्थानी भाषा में पुरस्कार घोषित नहीं किया गया।

युवा पुरस्कार 2021 से सम्मानित लेखक

असमिया : अभिजित बोरा, ***देउका कोबाई जे*** (कहानी-संग्रह)

बाङ्ला : गौरव चक्रवर्ती, ***श्रीमान सॉनेट*** (कविता-संग्रह)

बर' : गौतम दैमारि, ***जिउ गोनां सह'*** (काव्य-संग्रह)

डोगरी : अरुण अक्श देव, ***फंघ हौंसलें दे*** (कविता-संग्रह)

अंग्रेज़ी : मेधा मजूमदार, ***ए बर्निंग*** (उपन्यास)

गुजराती : दृष्टि सोनी, ***अ-माणस*** (उपन्यास)

हिंदी : हिमांशु बाजपेयी, ***क़िस्सा क़िस्सा लखनउवा : लखनऊ के अवामी क़िस्से*** (कहानी-संग्रह)

कन्नड : एच. लक्ष्मी नारायण स्वामी, ***तोगला चीलद कर्ण*** (कविता-संग्रह)

कश्मीरी : राज़ी ताहिर भगत, ***येलि आन फुट*** (कहानी-संग्रह)

कोंकणी : श्रद्धा गरड, ***काव्य परमळ*** (कविता-संग्रह)

मैथिली : अमित मिश्र, ***अंशु बनि पसरि जाएब*** (काव्य-संग्रह)

मलयाळम् : मोबिन मोहन, ***जकरंडा*** (उपन्यास)

मणिपुरी : लेनिन खुमनचा, ***मतमगी मंलान*** (कविता-संग्रह)

मराठी : प्रणव सखदेव, ***काळेकरडे स्ट्रोक्स*** (उपन्यास)

नेपाली : महेश दाहाल, ***अचल कुहिरो*** (निबंध-संग्रह)

ओड़िआ : देवब्रत दास, ***स्पर्श ओ अन्यान्य गल्प*** (कहानी-संग्रह)

पंजाबी : बीरदविंदर सिंह, ***पा दे पैलां*** (निबंध-संग्रह)

संस्कृत : श्वेतद्मा शतपथी, ***कथाकल्पलता*** (कहानी-संग्रह)

संताली : कुना हांसदा, ***सगई गनादे*** (उपन्यास)

सिंधी : राकेश शेवाणी, ***जिंदगिअ जा रंग*** (नाटक)

तमिऴ : कार्तिक बालसुब्रह्मण्यम, ***नच्चत्तिरवासिगल*** (उपन्यास)

तेलुगु : तगुल्ला गोपाल, ***दंडकडियम*** (कविता-संग्रह)

उर्दू : उमर फ़रहत, ***ज़मीन ज़ाद*** (कविता-संग्रह)

इस वर्ष राजस्थानी में पुरस्कार घोषित नहीं किया गया।

अभिजित बोरा

गौरव चक्रवर्ती

गौतम दैमारि

अरुण अक्श देव

मेघा मजूमदार

दृष्टि सोनी

हिमांशु बाजपेयी

एच. लक्ष्मीनारायण स्वामी

राज़ी ताहिर भगत

श्रद्धा गरड

अमित मिश्र

मोबिन मोहन

लेनिन खुमनचा

देबब्रत दास

कुना हांसदा

कार्तिक बालसुबह्मण्यम

प्रणव सखदेव

वीरदविंदर सिंह

राकेश शेवाणी

महेश दाहाल

श्वेतपद्मा शतपथी

तगुल्ला गोपाल

उमर फरहत

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2021 के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया

1. सुश्री नीलिमा ठाकुरिया हक
2. डॉ. जयंत माधव बोरा
3. श्री सत्यकाम बर्थाकुर

बाङ्ला

1. श्री अमरेंद्र चक्रवर्ती
2. सुश्री कृष्णा बासु
3. श्री दिलीप दास

बर'

1. श्री वीरूपक्षागिरी बसुमतारी
2. डॉ. मंगल सिंह हज़ोवारी
3. श्रीमती शांति बसुमतारी

डोगरी

1. श्री ओम गोस्वामी
2. श्रीमती रेखा ठाकुर
3. श्री संदीप दुबे

अंग्रेज़ी

1. प्रो. पंकज कुमार सिंह
2. श्रीमती नमिता गोखले
3. श्रीमती शर्मीला राय

गुजराती

1. श्री भरत मेहता
2. श्री परेश नायक
3. श्री हरीश मिनाश्रु 'स्मित्रण'

हिंदी

1. श्री भगवान सिंह
2. प्रो. दिलीप सिंह
3. प्रो. राजेंद्र कुमार

कन्नड

1. श्री जगदीश कोप्पा एन.
2. प्रो. कमला हम्पना
3. डॉ. विजयकुमारी एस. करिकल

कश्मीरी

1. श्री शांतिवीर कौल
2. प्रो. गुलशन मजीद
3. प्रो. शाद रमज़ान

कोंकणी

1. डॉ. प्रकाश वज्रिकर
2. श्री पुंडलिक एन. नायक
3. श्रीमती सुधा खारंगते

मैथिली

1. श्री ललन चौधरी
2. श्री मुरलीधर झा
3. श्री राजन कुमार सिंह

मलयाळम्

1. प्रो. ए. जी. ओलीना
2. श्री जयचंद्रन पूक्कारार्थर
3. डॉ. अनीता कुमारी

मणिपुरी

1. श्री विरेंद्रजीत नौरेम
2. श्री मलाम तोम्बा सिंह
3. डॉ. थंगजम मुनिन्द्रो सिंह

मराठी

1. श्री भास्कर चंद्रनशिव
2. श्री इंद्रजीत भालेराव
3. श्री नागनाथ कोतापल्ले

नेपाली

1. डॉ. गोगा अधिकारी
2. श्री प्रद्युम्न श्रेष्ठ
3. श्री उदय थुलुंग

ओड़िआ

1. डॉ. दीपक सामंतराव
2. डॉ. प्रतिभा राय
3. प्रो. सबिता प्रधान

पंजाबी

1. डॉ. जसविंदर सिंह
2. डॉ. एस.एस. संधा
3. प्रो. सोहिंदरबीर

संस्कृत

1. प्रो. भागीरथी नंदा
2. डॉ. गौतम भाई पटेल
3. डॉ. एस. सुदर्शन शर्मा

संताली

1. श्री बोयहा बिस्वनाथ टुडू
2. श्री बुधुराम मरांडी
3. श्री राम चन्द्र मुर्मू

सिंधी

1. श्री लक्ष्मण दुबे
2. डॉ. मोहिनी हिंगोराणी
3. प्रो. विम्मी सदरंगाणी

तमिऴ

1. श्री एन. अवदाइअप्पन
2. श्री सु. वेणुगोपाल
3. श्री ना.मु. तमिष़्मणि

तेलुगु

1. श्री दाटला देवदानम राजू
2. प्रो. के. आशा ज्योति
3. श्री खादिर बाबु

उर्दू

1. प्रो. असलम जमशेदपुरी
2. डॉ. फ़िरोज़ आलम
3. श्री शमोएल अहमद

कार्यक्रम

साहित्योत्सव 2022

साहित्य अकादेमी का 'साहित्योत्सव 2022' 10 मार्च 2022 को रवींद्र भवन परिसर, नई दिल्ली में प्रातः 10:00 बजे साहित्य अकादेमी प्रदर्शनी 2021 के उद्घाटन के साथ आरंभ हुआ। भारत सरकार के संस्कृति राज्य मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार और साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने माननीय संस्कृति राज्य मंत्री का स्वागत किया। संस्कृति राज्य मंत्री, अध्यक्ष, उपाध्यक्ष तथा साहित्य अकादेमी के कार्यकारी मंडल के सदस्यों और उपस्थित लेखकों तथा विद्वानों का स्वागत करते हुए, डॉ. के. श्रीनिवासराव ने साहित्य अकादेमी प्रदर्शनी 2021 की पृष्ठभूमि का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया तथा प्रदर्शनी की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डाला तथा वर्ष 2021 में साहित्य अकादेमी की महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों तथा कार्यक्रमों की संक्षेप में जानकारी दी। माननीय संस्कृति राज्य मंत्री ने फीता काटकर अकादेमी प्रदर्शनी 2021 का उद्घाटन किया तथा साहित्य अकादेमी के सप्ताह भर चलने वाले साहित्योत्सव 2022 का शुभारंभ किया।

संस्कृति मंत्रालय में संयुक्त सचिव श्रीमती उमा नंदूरी ने माननीय संस्कृति राज्य मंत्री श्री अर्जुन मेघवाल, साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव तथा अकादेमी की सामान्य परिषद् एवं कार्यकारी मंडल

प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए माननीय संस्कृति राज्य मंत्री श्री अर्जुन मेघवाल

के सदस्यों का स्वागत करते हुए 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के संबंध में साहित्य अकादेमी द्वारा भारत के विभिन्न हिस्सों में आयोजित गतिविधियों तथा क्रियाकलापों की सराहना की।

साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने माननीय मंत्री महोदय, अध्यक्ष तथा लेखकों का स्वागत करते हुए कहा कि साहित्य अकादेमी सबसे बड़े प्रकाशकों में से एक है तथा साहित्य अकादेमी का कार्यक्षेत्र तीन क्षेत्रों यथा - कार्यक्रमों, प्रकाशनों तथा पुरस्कारों तक फैला हुआ है। उन्होंने आगे कहा कि भारत क्या बोलता है, क्या सोचता है और उसकी संवेदनाएँ क्या हैं, यह सब इस प्रदर्शनी में देखा जा सकता है।

माननीय संस्कृति राज्य मंत्री श्री अर्जुन मेघवाल ने अपने व्याख्यान में कहा कि वर्षों, दशकों और सदियों से हम सुनते आ रहे हैं कि साहित्य समाज का दर्पण है। यह अब से नहीं है, किंतु यह तब से है जब से मनुष्य ने चेतना प्राप्त की है, जब से मनुष्य ने सोचना आरंभ किया है। मुद्रण के आविष्कार के बाद से, यह तेज़ हो गया है। इन सबके बावजूद साहित्य लिखनेवालों और साहित्य पढ़नेवालों में कमी आई है। उन्होंने मोबाइल लाइब्रेरी की आवश्यकता के बारे में भी बात की। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि युवा पीढ़ी को लक्षित कर, विशेषरूप से पुस्तकें लिखी जानी चाहिएँ। हमें समाज की आवश्कताओं के लिए कार्य करना चाहिए। वह हमसे क्या उम्मीद करता है। उन्होंने एक भारत श्रेष्ठ भारत की भी बात कही। अपने व्याख्यान का समापन करते हुए माननीय संस्कृति राज्य मंत्री ने कहा कि गाँधी जी, विवेकानंद तथा कई अन्य लेखकों ने कहा था कि इक्कीसवीं सदी भारत की होगी और हम इस दिशा में बहुत तेज़ी से आगे बढ़ रहे हैं।

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2020 अर्पण समारोह

17 अक्तूबर 2021, बेंगळूरु

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री अरुण कमल तथा पुरस्कार विजेताओं के साथ साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष एवं सचिव

भारत की प्रमुख साहित्यिक संस्था साहित्य अकादेमी ने 17 अक्तूबर 2021 को बेंगळूरु के भारतीय विद्या भवन सभागार में एक भव्य समारोह में 23 युवा भारतीय लेखकों को अपने युवा पुरस्कार से सम्मानित किया।

अपने स्वागत भाषण में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने समाज के प्रति युवाओं के मूल्य तथा वयस्क लोगों द्वारा मानव प्रयास के सभी क्षेत्रों में युवा प्रतिभाओं को संरक्षित एवं प्रोत्साहित करने की आवश्यकता पर चर्चा की। उन्होंने युवाओं में उत्पादकता तथा रचनात्मकता को किस प्रकार बढ़ाया जा सकता है तथा समस्त भाषाओं में युवा लेखकों को बढ़ावा देने तथा अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त सभी 24 भाषाओं में युवा लेखकों को प्रोत्साहित करने और बढ़ावा देने के लिए साहित्य अकादेमी की विभिन्न पहलों का संक्षेप में वर्णन किया।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में प्रख्यात कन्नड नाटककार, कवि तथा साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि युवा पुरस्कार प्रदान करने का मुख्य लक्ष्य कई भाषाओं में साहित्यिक कार्यों को प्रोत्साहित करना है जो इस देश का हिस्सा हैं। उन्होंने आशा व्यक्त की कि अकादेमी पुरस्कार भारत के युवा लेखकों को अपने लेखन में उच्च स्तर की उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करेंगे। उन्होंने अपने वक्तव्य में आगे कहा कि आत्म-संदेह और चुनौतियों पर क़ाबू पाते हुए, युवा लेखकों को परंपरा की भूमिका को नहीं भूलना चाहिए। उन्होंने स्वयं का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए बताया कि किस प्रकार उनकी मूल लोक परंपरा ने उनके विचारों तथा कल्पनाओं को आकार दिया।

हिंदी के प्रख्यात कवि, लेखक एवं समालोचक तथा समारोह के मुख्य अतिथि प्राफ़ेसर अरुण कमल ने अपने संबोधन में कहा कि लेखन की गुणवत्ता को आँकने के लिए आयु मानदंड नहीं हो सकती, क्योंकि दुनिया के अधिकांश युवा लेखक अपनी युवावस्था में अधिक पुरस्कार अर्जित करते हैं। उन्होंने आगे कहा कि

आज की दुनिया में युवा लेखक विभिन्न चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, विशेष रूप से समकालीन दुनिया के भौतिकवादी विकास से उत्पन्न चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। युवा लेखकों को विद्रोही साहित्य में भी भाषा की शुद्धता को बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए तथा इसके साथ ही उन्हें परंपराओं के योगदान पर भी विचार करना चाहिए।

24 पुरस्कारों में से 11 कवियों तथा 6 कहानीकारों ने कविता तथा कहानी के लिए 17 पुरस्कार अर्जित किए। अंग्रेज़ी में युवा पुरस्कार विजेता सुश्री याशिका दत्त अपरिहार्य कारणों से समारोह में भाग नहीं ले सकीं, जबकि गुजराती पुरस्कार विजेता श्री अभिमन्यु आचार्य के विदेश में होने के कारण, उनके स्थान पर उनके पिता श्री जितेंद्र आचार्य ने उनका पुरस्कार ग्रहण किया।

युवा पुरस्कार लेखक सम्मिलन

18 अक्तूबर 2021, बेंगळूरु

भारत की प्रमुख साहित्यिक संस्था साहित्य अकादेमी ने 18 अक्तूबर 2021 को भारतीय विद्या भवन सभागार, बेंगळूरु में 'युवा पुरस्कार लेखक सम्मिलन' कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में पुरस्कार विजेताओं ने आपने रचनात्मक अनुभवों को साझा किया। साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य प्रोफ़ेसर सरजू काटकर ने बैठक की अध्यक्षता की।

असमिया पुरस्कार विजेता श्री द्विजेन कुमार दास ने बताया कि किस प्रकार उनके मूल परिदृश्य की प्राकृतिक सुंदरता ने उन्हें कविता लिखने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा 'मैं लिखता हूँ क्योंकि मुझे एकांत पसंद है। मैं लिखता हूँ क्योंकि मैं अक्सर ख़ुद से बातें करता हूँ। मैं लिखता हूँ क्योंकि मुझे उस भाषा से प्यार है जिसमें मेरी माँ मौखिक संचार करती है। मुझे कविता के अलावा अपनी भावनाओं और कुंठाओं को हवा देने के लिए और कोई रास्ता नहीं मिलता है। इसलिए, मैं लिखता हूँ।''

बाङ्ला पुरस्कार विजेता श्री सायम बंद्योपाध्याय ने कहा, ''जब मैं लिखता हूँ या जब मैं लिखने का निर्णय करता हूँ, तब मैं पाठक के विचारशील बौद्धिक मस्तिष्क को मोहित करने के उद्देश्य से लिखता हूँ। मेरा लेखन या जो मैं लिखता हूँ वह एक प्रकार की यात्रा की संरचना है, जो पाठकों को साहित्यिक भ्रमण कराती है तथा उनके साथ रहती है।'' उन्होंने यह भी कहा कि उनकी पुरस्कृत कृति इसका सबसे बड़ा उदाहरण है।

बर' लेखक श्री निउटन के. बसुमतारी ने अपने भाषण में कहा कि ग्रामीण परिवेश और गाँव की स्थापना

प्रोफ़ेसर सरजू काटकर तथा अन्य पुरस्कार विजेता

ने उन्हें लेखक के रूप में विकसित होने के लिए प्रेरित किया। एक लेखक के रूप में, वह अपने लेखन के माध्यम से सामाजिक विकास और जीवन संवर्धन का संदेश देना पसंद करते हैं। उनकी वर्तमान युवा पुरस्कार से पुरस्कृत कृति *आबै-आबै आरो आं* गहरी संवेदनशीलता और दृढ़ संकल्प के साथ लिखा गया बर' कविता-संग्रह है, जो उनकी बचपन की स्मृतियों, प्रेम, सामाजिक जीवन और प्रकृति को सरल किंतु गीतात्मक भाषा में चित्रित करती है।

डोगरी पुरस्कार विजेता सुश्री गंगा शर्मा ने बताया कि उनके पिता, जो स्वयं कवि थे, ने उन्हें किस प्रकार गंभीरता से कविता लिखने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने अपने लेखन करियर के दौरान आने वाले उतार-चढ़ावों तथा अपनी पुरस्कृत कृति का विवरण प्रस्तुत करने के साथ-साथ अपनी दो कविताओं का पाठ भी प्रस्तुत किया, जिसकी श्रोताओं ने भूरी-भूरी प्रशंसा की।

गुजराती पुरस्कार विजेता श्री अभिमन्यु आचार्य का आलेख उनके पिता द्वारा प्रस्तुत किया गया। श्री आचार्य के आलेख में उनके लेखन के प्रारंभिक संघर्षों का उल्लेख था, तथा उसमें बताया गया था कि किस प्रकार श्री सुमन शाह तथा उनकी कार्यशालाओं ने उनके विश्व दृष्टिकोण को बदल दिया और उन्होंने विभिन्न विषयों को लिखना आरंभ कर दिया। उन्होंने कहा कि यह एक सतत प्रक्रिया है और प्रत्येक लेखक इससे गुज़रता है।

श्री अंकित नरवाल जिन्हें उनकी हिंदी साहित्यिक आलोचना कृति *यू.आर. अनंतमूर्ति : प्रतिरोध का विकल्प* के लिए साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2020 से सम्मानित किया गया है, ने कहा कि साहित्यिक आलोचना ने उन्हें हिंदी में साहित्यिक आलोचक के रूप में विकसित होने में मदद की, इसने उनके हिंदी साहित्यिक अध्ययन तथा अकादमिक के रूप में उनके शिक्षण हेतु सुविधा प्रदान की। इस पुस्तक में उन्होंने भारत के बारे में यू.आर. अनंतमूर्ति के दृष्टिकोण और विविधता में एकता की भारतीय विचारधारा पर चर्चा की है।

कन्नड पुरस्कार विजेता श्री के.एस. महादेवस्वामी ने बताया कि उनके दूरदराज के गाँव में पुस्तकें भी दुर्लभ थीं, महाकाव्यों ने उन्हें प्रभावित किया तथा उन्हें प्रेरित किया और जैसे-जैसे वह शहरी स्थानों की ओर बढ़े, उन्होंने अधिक-से-अधिक पढ़ना आरंभ किया। उन्होंने कहा कि हालाँकि उनके कहानी-संग्रह से बहुत कुछ पता चलता है, लेकिन फिर भी और अधिक साझा करने की आवश्यकता है।

कश्मीरी पुरस्कार विजेता श्री मुज़फ़्फ़र अहमद परे ने बताया कि गुलमर्ग की तलहटी के गाँव में शिक्षित होने के दौरान उन्हें अनेक संघर्षों का सामना करना पड़ा। उनके दोस्तों ने उनकी शिक्षा में अहम योगदान दिया एवं उन्हें समय-समय पर पुस्तकें उपलब्ध कराईं जिससे वे लेखन के प्रति प्रोत्साहित हुए। उन्होंने कहा कि उनका लेखन अभी शैशवावस्था के चरण में है और वह अपनी यात्रा में अपने पाठकों और समर्थकों के आभारी हैं।

कोंकणी पुरस्कार विजेता सुश्री संपदा कुंकळकार ने कहा कि लेखक के लिए लिखते समय पृथक होना बहुत महत्त्वपूर्ण है तथा उन्होंने प्रोफ़ेसर भैरप्पा से व्यास गुहा तक का हवाला प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि पहले वह अंग्रेज़ी में लेखन करती थीं तथा जबसे उन्होंने रवींद्र केलेकर की रचनाओं को पढ़ा है, तबसे उन्होंने कोंकणी में लेखन आरंभ किया। उन्होंने कहा कि अनुभव जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण है तथा पुरस्कृत कृति उनकी चार देशों में की गई यात्राओं से प्राप्त अनुभवों का संकलन है।

मैथिली लेखिका सुश्री सोनू कुमार झा ने कहा कि वह ऐसे परिवेश में पले-बढ़े हैं जहाँ साक्षरता के स्थान पर पैसों को अधिक महत्त्व दिया जाता है। इस प्रकार, उन्होंने पढ़ाई के साथ-साथ एल.आई.सी. एजेंट के रूप में कमाई करना आरंभ कर दिया। अपने परिवार और गुरु दमन कुमार झा की प्रेरणा से उन्होंने अपनी लिखाई-पढ़ाई जारी रखी। अपनी पुरस्कृत कृति *गस्सा,* जो सोलह कहानियों का संग्रह है, के माध्यम से आपने आधुनिक समाज में कलंक मान लिए गए टूटे परिवारों तथा विखंडन के दुष्परिणाम, भटकते युवा, आर्थिक गरीबी तथा उसके आगामी प्रभावों की ओर इशारा किया है। उन्होंने इस पुस्तक में महिलाओं की समस्याओं का भी उल्लेख किया है।

मलयाळम् पुरस्कार विजेता श्री अबिन जोसेफ़ ने कहा कि उन्होंने अपने जीवन में बहुत कठिनाइयों का सामना किया है इस कारण से वह हमेशा पाठकों के साथ आम लोगों के जीवन, उनके रोज़मर्रा के संघर्षों तथा उनके अस्तित्व को चित्रित करने का प्रयास करते हैं।

मणिपुरी पुरस्कार विजेता श्री रामेश्वर शारुंबम ने भारत में कृषि समुदायों की कठिनाइयों के बारे में विस्तार से चर्चा की और कहा कि उनका संबंध भी कृषि समुदाय से है। इस प्रकार उनके प्रतिमान को कृषि जीवन ने आकार दिया और इसलिए उनकी अभिव्यक्तियों में प्रकृति और प्राकृतिक जीवन की विशेषता है।

मराठी पुरस्कार विजेता श्री प्राजक्त देशमुख ने कहा कि उनकी पृष्ठभूमि रंगमंच से है और वह यह सम्मान प्राप्त कर प्रसन्न हैं। यह कलाकारों के लिए जश्न मनाने का अवसर है क्योंकि विगत दो वर्षों में महामारी के कारण समस्त रंगमंचों को बंद करना पड़ गया था। उन्होंने कहा कि वह गिरीश कर्नाड, विजय तेंदुलकर आदि कलाकारों द्वारा अर्जित बड़ी उपलब्धियों के बावजूद भी उनके नाटकों के साहित्यिक रूप को देखना अधिक पसंद करेंगे।

नेपाली पुरस्कार विजेता श्री अंजन बासकोटा ने अपने स्वयं के रचनात्मक लेखन पर पूर्वोत्तर के सुंदर परिदृश्य के प्रभाव पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि उनका सिद्धांत गरीबों और ज़रूरतमंदों की ओर से लिखना और उनकी आवाज़ बनना है।

ओड़िआ पुरस्कार विजेता श्री चंद्रशेखर होता ने बताया कि किस प्रकार उनके पिता ने उनके शुरुआती जीवन को प्रभावित किया तथा राजनीतिक सिद्धांत को पढ़ने से उनके क्षितिज को किस प्रकार विस्तार मिला। उनके लिए निबंध नीरस, लंबा, विवेकपूर्ण प्रवचन नहीं है। यह कहानी या कविता से कम नहीं है। यह प्यार, जीवन और संवेदनशीलता से भरा होता है और वह अपने आंतरिक विचारों को व्यक्त करके संतुष्टि प्राप्त करते हैं।

पंजाबी पुरस्कार विजेता श्री दीपक कुमार धलेवां ने कहा कि उनका लेखन उनके मस्तिष्क की परतों के साथ-साथ प्रत्येक व्यक्ति के मस्तिष्क की परतों को उजागर करने का प्रयास करता है। उन्होंने कहा कि दूसरों की कहानी बताना अपने जीवन की कहानी बयाँ करना है और सभी की यात्रा लगभग एक जैसी है, सुख-दुख से भरी हुई।

राजस्थानी पुरस्कार विजेता श्री महेन्द्र सिंह सिसोदिया 'छायण' ने कहा कि राजस्थानी लोक साहित्य की समृद्धि ने उन्हें लेखक बनने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने लोककथाओं से वर्णमाला सीखी। परंपरा, संस्कृति, सामाजिक लोकाचार, लोगों के जीवन और समकालीन आधुनिक समाज को उनके कविता-संग्रह *इण धरती रै ऊजळ आंगण* में चित्रित किया गया है। यह कृति मुक्त कविता शैली में गीतात्मक के साथ राजस्थानी लोक संस्कृति का उत्सव मनाती है।

संस्कृत पुरस्कार विजेता श्री ऋषिराज पाठक ने अपनी साहित्यिक यात्रा के विभिन्न चरणों, जीवन के उतार-चढ़ावों, संघर्षों तथा कई संबद्ध क्षेत्रों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि इतने संघर्ष के बाद निजी तौर पर तथा लेखक के रूप में यह पुरस्कार प्राप्त करना बेहद संतोषजनक है।

संताली लेखिका एवं कवयित्री अंजली किस्कु ने बताया कि वह अपने कॉलेज के दिनों में संताली पत्रिकाओं को पढ़ने के लिए प्रेरित हुईं। उन्होंने अपने पुरस्कृत संताली कविता-संग्रह *आंजले* में अपने समाज में व्याप्त कुप्रथाओं को उजागर किया है तथा अपने संताली समुदाय के विकास और महिलाओं की स्वतंत्रता की कल्पना की है। यह संग्रह आत्मबोध, प्रेम और स्वप्न, भाईचारे आदि की अभिव्यक्ति है।

सिंधी कथाकार, कवयित्री, अनुवादक सुश्री कोमल जगदीश दयालाणी को उनके सिंधी कहानी-संग्रह *काश!* के लिए युवा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। अपने भाषण में उन्होंने कहा कि सिंधी कविता, ग़ज़ल, कथा साहित्य तथा नाटक उनकी रुचि के क्षेत्र हैं। इन शैलियों ने उन्हें उनके कार्य के अलावा लेखन के लिए प्रेरित किया। इस कृति के माध्यम से वह आधुनिक दुनिया

में व्याप्त बुराइयों जैसे- नशीली दवाओं की लत, बाल शोषण आदि का वर्णन करती हैं। उनकी इस कृति में उनका ध्यान बाल मनोविज्ञान, बिगड़ते मानवीय मूल्यों पर भी है तथा वह आशा और मानवता का संदेश देती हैं।

तमिळ पुरस्कार विजेता श्री शक्ति ने बताया कि किस प्रकार भूमि, कृषि तथा लोक परंपरा ने उनके विचार और विश्व दृष्टिकोण को आकार दिया। उन्होंने महसूस किया कि गाँव में पैदा होने के कारण उनकी कविताओं में भूमि की उर्वरता, उसके विनाश, वहाँ के लोगों का प्यार तथा उनका जीवन विद्यमान है।

तेलुगु पुरस्कार विजेता सुश्री मानसा एंद्लुरी ने कहा कि साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार जैसे उच्च सम्मान को प्राप्त कर वह अत्यंत अभिभूत हैं।

उर्दू पुरस्कार विजेता श्री साक़िब फरीदी ने अपनी साहित्यिक यात्रा पर चर्चा करते हुए कहा कि उनके अनुभव में जैसे-जैसे वृद्धि होती गई उनके शिल्प में और अधिक सुधार आता गया। उन्होंने कहा कि अनुभव कविता में प्रयुक्त रूपकों, छवियों और उपमाओं को परिष्कृत करता है तथा इससे काव्य भाषा समृद्ध हो जाती है।

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2020 अर्पण समारोह

31 दिसंबर 2021, नई दिल्ली

श्री अर्जुन देव चरण तथा पुरस्कार विजेताओं के साथ साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष तथा सचिव

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2020 अर्पण समारोह का आयोजन 31 दिसंबर 2021 को नई दिल्ली स्थित साहित्य अकादेमी सभागार में आयोजित किया गया। उल्लेखनीय है कि यह समारोह पहले कमानी सभागार, कॉपरनिक्स मार्ग, नई दिल्ली में आयोजित होने वाला था, लेकिन कोविड -19 और ओमिक्रोन के प्रकोप तथा दिल्ली सरकार के नए दिशानिर्देशों के मद्देनज़र समारोह को वहाँ से स्थगित करना पड़ा। उसी दिन शाम 4:00 बजे रवींद्र भवन परिसर में पुरस्कार विजेताओं के स्वागत समारोह का आयोजन किया जाना था, किंतु उसे भी महामारी के चलते रद्द करना पड़ा।

प्रख्यात राजस्थानी विद्वान तथा राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के उपाध्यक्ष एवं समारोह के मुख्य अतिथि श्री अर्जुन देव चरण ने कहा कि अनुवाद एक अत्यंत जटिल उपक्रम है और इसमें पुनर्लेखन का रचनात्मक कार्य शामिल होता है।

पुरस्कार अर्पण समारोह की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने की। उन्होंने कहा कि देश के अनुवादकों को पुरस्कार प्रदान करने पर वे अत्यंत हर्षित हैं। आगे उन्होंने कहा कि अनुवाद उन्हें भारत की समृद्ध विविधता का अनुभव कराता है। अपने समापन वक्तव्य में साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने कहा कि अनुवादक एक भाषा में लिखी गई कृतियों को अन्य भाषओं और सांस्कृतिक दुनिया तक पहुँचाने और उन्हें समृद्ध बनाने का बहुत ही महान कार्य करते हैं।

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अनुवाद पुरस्कार विजेताओं के प्रशस्ति पत्र पढ़कर सुनाए।

वर्ष 2020 के अनुवाद पुरस्कार विजेता हैं—दिगंत विश्व शर्मा (असमिया), पुष्पितो मुखोपाध्याय (बङ्ला), कामेश्वर ब्रह्म (बर'), सुनीता भड़वाल (डोगरी), श्रीनाथ पेरूर (अंग्रेज़ी), काश्यपी महा (गुजराती), टी.ई.एस. राघवन (हिंदी), एस. नटराज बूदालु (कन्नड), शफ़क़त अल्ताफ़ (कश्मीरी), जयश्री शानभाग (कोंकणी), (स्वर्गीय) जितेंद्र नारायण झा (मैथिली),

सुधाकरन रामनतली (मलयाळम्), एच. श्यामसुंदर सिंह (मणिपुरी), सोनाली नवांगुळ (मराठी), भवानी अधिकारी (नेपाली), मंजू मोदी (ओड़िआ), मोहिंदर बेदी जैतो (पंजाबी), घनश्याम नाथ कच्छावा (राजस्थानी), मंजूषा कुलकर्णी (संस्कृत), चंद्र मोहन किस्कु (संताली), संध्या कुंदनाणी (सिंधी), के. चेल्लप्पन (तमिऴ), रंगनाथ रामचंद्र राव (तेलुगु) तथा सबीहा अनवर (उर्दू)।

लेखक सम्मिलन

31 दिसंबर 2021, नई दिल्ली

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए श्री माधव कौशिक

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2020 अर्पण समारोह के समापन दिवस पर अकादेमी सभागार में 'लेखक सम्मिलन' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अनुवाद पुरस्कार विजेताओं ने अपने रचनात्मक अनुवाद के अनुभवों को साझा किया। बैठक की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने की।

असमिया पुरस्कार विजेता श्री दिगंत विश्व शर्मा ने कहा कि अकादेमी से यह प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त करने के पश्चात् उनकी ज़िम्मेदारी और अधिक बढ़ गई है तथा उन्होंने यह भी कहा कि वे साहित्य के उत्कृष्ट कार्यों का ईमानदारी और गंभीरता के साथ अनुवाद करना जारी रखेंगे। सुश्री सुनीता भड़वाल ने डोगरी में पुरस्कृत कृति पर चर्चा की। उन्होंने किसी एक भाषा में व्यक्त विचारों और भावनाओं को दूसरी भाषा में व्यक्त करने में आने वाली कठिनाइयों पर अपने विचार व्यक्त किए। *धाचर धोचर* कृति के लिए अकादेमी पुरस्कार विजेता श्रीनाथ पेरूर ने बताया कि किस प्रकार अनुवाद के माध्यम से वे अपनी मातृभाषा के निकट आए, जिससे वे दूर जाने लगे थे।

परितप्त लंकेश्वरी उपन्यास के गुजराती अनुवाद पर चर्चा करते हुए, काश्यपी महा ने बताया कि किस प्रकार उपन्यासकार ने मंदोदरी को एक ऐसे चरित्र के रूप में प्रस्तुत किया है, जो सीता के समान मजबूत और पवित्र है। टी.ई.एस. राघवन, जिन्हें तमिऴ साहित्यिक कृति *तिरुक्कुरल* के हिंदी अनुवाद के लिए अनुवाद पुरस्कार से सम्मानित किया गया है, ने उनकी बेटी द्वारा पढ़े गए उनके भाषण में बताया कि किस प्रकार तिरुक्कुरल का आसुत ज्ञान हमें आधुनिक समय में स्वच्छ और अधिक शांतिपूर्ण दुनिया बनाने में सहायता कर सकता है। 'लेखक सम्मिलन' में अपने अनुभव साझा करने वाले अन्य पुरस्कार विजेता अनुवादकों में शामिल थे–एस. नटराजा बुदालु (कन्नड), शफ़क़त अल्ताफ़ (कश्मीरी), जयश्री शानभाग (कोंकणी), सुधाकरन रामनतलि (मलयाळम्), हेईखुजम श्यामसुंदर सिंह (मणिपुरी), सोनाली नवांगुळ (मराठी), भवानी अधिकारी (नेपाली), मंजू मोदी (ओड़िआ), मोहिंदर बेदी जैतो (पंजाबी), घनश्याम नाथ कच्छावा (राजस्थानी), मंजूषा कुलकर्णी (संस्कृत), चंद्र मोहन किस्कू (संताली), संध्या चंदर कुंदनाणी (सिंधी), के. चेल्लप्पन (तमिऴ), रंगनाथ रामचंद्र राव (तेलुगु) तथा सबीहा अनवर (उर्दू)।

साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि इस वैश्वीकृत दुनिया में अनुवादकों का भविष्य उज्ज्वल है। उन्होंने कार्यक्रम में उपस्थित समस्त प्रतिभागियों को धन्यवाद दिया।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2021 अर्पण समारोह

11 मार्च 2022, नई दिल्ली

मुख्य अतिथि प्रो. भालचंद्र नेमाडे तथा पुरस्कार विजेताओं के साथ साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष तथा सचिव

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार द्वारा पुरस्कृत साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2021 के विजेताओं में शामिल हैं—अनुराधा शर्मा पुजारी (असमिया), ब्रात्य बासु (बाङ्ला), मोदाय गाहाय (बर'), राज राही (डोगरी), नमिता गोखले (अंग्रेज़ी), यज्ञेश दवे (गुजराती), दया प्रकाश सिन्हा (हिंदी), डि.एस. नागभूषण (कन्नड), वली मुहम्मद असीर किश्तवारी (कश्मीरी), संजीव वेरेंकार (कोंकणी), जगदीश प्रसाद मंडल (मैथिली), जॉर्ज ओणक्कूर (मलयाळम्), थॉकचॉम ईबॉहनबी सिंह (मणिपुरी), किरण गुरव (मराठी), छविलाल उपाध्याय (नेपाली), हृषिकेश मल्लिक (ओड़िआ), ख़ालिद हुसैन (पंजाबी), मीठेश निर्मोही (राजस्थानी), विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र 'विनय' (संस्कृत), निरंजन हाँसदा (संताली), अर्जुन चावला (सिंधी), अंबइ (तमिळ्), गोरिट वकन्ना (तेलुगु) तथा चंद्रभान ख़याल (उर्दू)।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2021 शुक्रवार, 11 मार्च 2022 को सायं 5.30 बजे, कमानी सभागार, कॉपरनिक्स मार्ग, नई दिल्ली में साहित्योत्सव 2022 के अंतर्गत एक भव्य समारोह में वितरित किए गए। ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता प्रख्यात मराठी कथाकार, कवि तथा समालोचक प्रो. भालचंद्र नेमाडे समारोह के मुख्य अतिथि थे।

अंग्रेज़ी पुरस्कार विजेता नमिता गोखले तथा संताली पुरस्कार विजेता निरंजन हाँसदा के पुरस्कार उनके प्रतिनिधियों द्वारा प्राप्त किए गए तथा कन्नड पुरस्कार विजेता डि.एस. नागभूषण समारोह में उपस्थित नहीं हो सके।

समारोह की शुरुआत सुश्री अनघा के मधुर गायन से हुई। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने सभी एकत्रित साहित्यकारों तथा गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत करते हुए कहा कि यह वास्तव में लेखकों की साहित्यिक परंपराओं और विरासत को पुरस्कृत करने का अवसर है। उन्होंने कहा कि रचनात्मक लेखन दो वास्तविकताओं को समाहित करता है—भौतिक और आध्यात्मिक। इसके अलावा उन्होंने कहा कि कला का हर उत्कृष्ट साहित्यिक कार्य निश्चित रूप से साहित्यिक परंपराओं और सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों का समर्थन करता है।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई देते हुए कहा कि इस बार अकादेमी के महोत्सव का विषय भारतीय स्वतंत्रता संग्राम है। भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष का अध्ययन करना वास्तव में असाधारण है और कई क्षेत्रीय भाषाओं के भारतीय साहित्य ने इसे प्रतिबिंबित, प्रोत्साहित और महिमामंडित किया है।

प्रो. भालचंद्र नेमाडे ने अपने विद्वत्तापूर्ण संबोधन में यह स्पष्ट किया कि हमारी संस्कृति और भाषाओं की विविधता को यूनेस्को द्वारा एक मील का पत्थर के रूप में मान्यता दी जानी चाहिए। हम आज यहाँ विविधता का उत्सव मना रहे हैं और ऐसा करते हुए हमें गर्व महसूस करना चाहिए कि हम भारतीय साहित्य के उन 24 निर्माताओं के साथ हैं जो इन भाषाओं में साहित्य की इतनी शक्तिशाली साहित्यिक परंपराओं से संबंधित हैं।

साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. माधव कौशिक ने पुरस्कार विजेता लेखकों और उनके परिवार के सदस्यों को बधाई देते हुए समापन टिप्पणी की और कहा कि भारतीय रचनात्मक प्रतिभा और संवेदनाओं की सीमा का दायरा असीमित और कल्पना से परे है। उन्होंने कहा कि हमारा राष्ट्र रचनात्मक और सांस्कृतिक रूप से विविध तथा अजेय है।

संवत्सर व्याख्यान

14 मार्च 2022, नई दिल्ली

साहित्योत्सव 2022 के भाग के रूप में, संवत्सर व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन सोमवार, 14 मार्च 2022 को रवींद्र भवन परिसर में शाम 6 बजे आयोजित किया गया। अंग्रेज़ी के प्रतिष्ठित लेखक एवं संसद सदस्य डॉ. शशि थरूर ने *संवत्सर व्याख्यान* प्रस्तुत किया। प्रारंभ में, साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने डॉ. थरूर तथा श्रोताओं का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि हम भाग्यशाली हैं कि हमें कई महान व्यक्तित्वों से *संवत्सर व्याख्यान* सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। वास्तव में, इन महान व्यक्तित्वों ने विमर्श के नए मार्ग

मुख्य अतिथि डॉ. शशि थरूर को सम्मानित करते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष तथा साथ में हैं अकादेमी के सचिव

खोले हैं, कई लोगों को नए मार्गों पर चलने के लिए प्रेरित किया है तथा हमें और अधिक सीखने में मदद की है। डॉ. शशि थरूर ने *द ग्रेट इंडियन नॉवेल* लिखने का प्रयोजन, प्रेरणा तथा महाभारत की प्रासंगिकता के बारे में बात की।

कई धार्मिक ग्रंथों के विपरीत यह उपन्यास *महाभारत* कला का धर्मनिरपेक्ष साहित्यिक कार्य है। यह उपन्यास कई वास्तविकताओं को दर्शाता है और यह न केवल देश में बल्कि दुनियाभर में कई मौजूदा स्थितियों के लिए प्रासंगिक बना हुआ है। यह कृति भारत के बारे में है जो महान है। यह उत्कृष्ट कृति हमें बताती है कि हम महाकाव्य से क्या सीख सकते हैं, भारतीयता की वास्तविक प्रकृति, नैतिक पाठ जो व्यास के कार्यों से प्राप्त किए जा सकते हैं और व्यंग्यात्मक तरीके से कई संदर्भों का उपयोग किया जा सकता है। *महाभारत* एक ऐसा महाकाव्य है जो सदियों से प्रासंगिक बना हुआ है, भले ही कुछ अंश समकालीन समाजों से संबंधित न हों। देश के मूल के रूप में संस्कृतियों की विविधता और विविधता में एकता कुछ ऐसी है, जो भारत के हृदय में अंतर्निहित है तथा यह इस पुस्तक में परिलक्षित होता है।

डॉ. थरूर ने प्रतिबिंबित कई वास्तविकताओं तथा उन वास्तविकताओं की कई व्याख्याओं के बारे में भी बात की और बताया कि किस प्रकार उन्हें स्वीकारा तथा गले लगाया जा सकता है, यह महाकाव्य के केंद्र में है। यह एक ऐसी चीज़ है जिसे हम सभी को सीखना और जीना है। जीने के लिए केवल जीवित रहने को ही

जीवन नहीं कहते, बल्कि हमें जीवन को समृद्ध करना होगा, यह संदेश उन्होंने महाभारत से सीखा है। उन्होंने आगे कहा कि उनका उपन्यास *द ग्रेट इंडियन नॉवेल* इसकी समकालीन प्रासंगिकता को दोहराता है। उनके उपन्यास मनोरंजक में रूप में उपदेशात्मक रचनाएँ हैं। यह उपन्यास भारत की कई वास्तविकताओं को दर्शाता है। उनका उपन्यास उनके देश का प्रतिबिंब है जो केवल अंग्रेज़ी भाषा में लिखा गया है लेकिन यह पूरी तरह से भारतीय है। इस कृति में भारत के संदर्भ में प्रसिद्ध कृतियों के कई वाक्यों और संकेतों को शामिल किया गया है।

महाभारत पांडवों और कौरवों के बीच हस्तिनापुर राज्य के सिंहासन पर ऐतिहासिक राजवंशीय संघर्ष का वर्णन करने वाली एक महाकाव्य कथा है। यह कृति उभरते भारतीय लोकतंत्र की कहानी को समूहों और व्यक्तियों के बीच संघर्ष के रूप में उनके व्यक्तिगत और राजनीतिक इतिहास के माध्यम से निकटता से जोड़ती है। महाकाव्य यह बताता है कि जो यहाँ है वह कहीं और नहीं है और जो यहाँ नहीं है वह दुनिया में कहीं नहीं मिलेगा। आख़िर यह वास्तविकता की कहानी है। युगों से देश के सामने आने वाली चुनौतियों को समझने और उनका समाधान करने के लिए लेखकों द्वारा *महाभारत* को कई बार पुनर्निर्मित किया गया है।

अपनी बात को जारी रखते हुए उन्होंने कहा कि भारत को एक अविकसित देश के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए बल्कि एक अतिविकसित देश के रूप में क्षय के एक चरण के रूप में देखा जाना चाहिए। एक भारतीय लेखक को वास्तविकताओं की बहुलता और वास्तविकता की व्याख्याओं की बहुलता को पहचानना होगा। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि हम अपनी पहचान बताए बिना विकास नहीं कर सकते। हम अकेले रोटी से नहीं जी सकते, हमें संस्कृति चाहिए, जिसमें संगीत, नृत्य, कला तथा मिथक शामिल हों।

महत्तर सदस्यता प्रदत्त

जगद्गुरु रामानंदाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य, प्रतिष्ठित संस्कृत कवि, लेखक, दार्शनिक और आध्यात्मिक नेता को महत्तर सदस्यता प्रदत्त

13 मार्च 2022, नई दिल्ली

जगद्गुरु रामानंदाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य को महत्तर सदस्यता अर्पित करते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार, साथ में हैं अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक (दाईं ओर) तथा सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव (बाईं ओर)

साहित्य अकादेमी का सर्वोच्च सम्मान—साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता—प्रतिष्ठित संस्कृत कवि, लेखक, दार्शनिक तथा आध्यात्मिक नेता जगद्गुरु रामानंदाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य को शनिवार, 13 मार्च 2022 को रवींद्र भवन परिसर, नई दिल्ली में एक भव्य समारोह में प्रदान किया गया। यह समारोह अकादेमी के साहित्योत्सव 2022 का ही भाग था। महत्तर सदस्यता अर्पण समारोह के पश्चात् *संवाद* कार्यक्रम हुआ, जिसमें प्रख्यात विद्वानों श्री रमाकांत शुक्ल और श्री रामसलाही द्विवेदी ने जगद्गुरु रामानंदाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य के जीवन और कार्यों पर बात की। *संवाद* कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्कृत परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. अभिराज राजेंद्र मिश्र ने की। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने श्रोताओं तथा गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। उन्होंने इस अवसर पर जगद्गुरु रामानंदाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य पर तैयार किए गए प्रशस्ति पत्र का वाचन किया। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने जगद्गुरु रामानंदाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य को हार्दिक बधाई दी और औपचारिक रूप से भेंटस्वरूप ताम्रफलक प्रदान कर उन्हें साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता प्रदान की। अपने स्वीकृति वक्तव्य में, जगद्गुरु रामानंदाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य ने कहा कि पुराण और काव्य में एक

अंतर है जिसे हमें अच्छी तरह से समझने की आवश्यकता है। आगे उन्होंने कहा कि पुराण में सब कुछ पुराना है जबकि काव्य में सब कुछ नया और रमणीय है।

उन्होंने बताया कि उन्होंने चार महाकाव्य लिखे हैं। संस्कृत में कोई गीत महाकाव्य नहीं था, इसलिए उन्होंने एक गीत बनाया और संस्कृत में इस नई शैली की परंपरा शुरू की। उन्होंने कहा कि साहित्य अकादेमी ने उन्हें महत्तर सदस्यता प्रदान कर उनकी ज़िम्मेदारियों को और बढ़ा दिया है। उन्होंने अपने नए लेखों के बारे में भी जानकारी दी, जिसका प्रकाशन चल रहा है।

साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने अपने समापन वक्तव्य में कहा कि ऐसे दुर्लभ विद्वान और साहित्यकार को अपना सर्वोच्च सम्मान—साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता प्रदान करते हुए, वास्तव में, साहित्य अकादेमी स्वयं को सम्मानित महसूस कर रही है।

संवाद कार्यक्रम में प्रो. अभिराज राजेंद्र मिश्र ने कहा कि जगद्गुरु रामानंदाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य ने शास्त्रों को आम लोगों तक पहुँचाया है, जो वास्तव में जगद्गुरु का बड़ा महत्त्वपूर्ण योगदान है। श्री रमाकांत शुक्ल ने कहा कि जगद्गुरु ने विश्व में भारतीय दर्शन के प्रचार की महान पारिवारिक विरासत को जारी रखा है। श्री रामसलाही द्विवेदी ने कहा कि शास्त्रों को देखने के लिए जगद्गुरु का दृष्टिकोण विश्व के कल्याण से गहरा संबंध रखता है।

प्रख्यात तमिऴ लेखक और विद्वान इंदिरा पार्थसारथी को महत्तर सदस्यता प्रदत्त

29 मार्च 2022, चेन्नै

डॉ. इंदिरा पार्थसारथी को महत्तर सदस्यता अर्पित करते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार

साहित्य अकादेमी ने मंगलवार, 29 मार्च 2022 को चेन्नै में आयोजित एक भव्य समारोह में प्रख्यात तमिऴ लेखक और विद्वान इंदिरा पार्थसारथी को अपने सर्वोच्च सम्मान—साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता से सम्मानित किया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने उपस्थित श्रोताओं का स्वागत किया तथा प्रशस्ति पत्र का वाचन किया। उन्होंने कहा कि श्री पार्थसारथी एकमात्र तमिऴ लेखक हैं, जिन्होंने साहित्य अकादेमी और संगीत नाटक अकादेमी दोनों से पुरस्कार प्राप्त किए हैं। उनकी कई रचनाओं का अंग्रेज़ी के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं में भी अनुवाद किया गया है। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने औपचारिक रूप से डॉ. इंदिरा पार्थसारथी को ताम्रफलक, शॉल तथा फूलों का गुलदस्ता भेंट कर महत्तर सदस्यता प्रदान की। डॉ. कंबार ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में उल्लेख किया कि डॉ. पार्थसारथी 92 वर्ष की आयु में बेहतरीन लेखक

और विद्वान हैं, वे बहुत सक्रिय रहते हैं और सीखते रहते हैं। यह निश्चित है कि पार्थसारथी भारतीय साहित्य में एक अमर स्थान प्राप्त करेंगे।

इंदिरा पार्थसारथी ने उन्हें महत्तर सदस्यता प्रदान करने के लिए साहित्य अकादेमी का आभार व्यक्त किया और कहा कि वह एक भारतीय लेखक हैं; तमिऴ भाषा उनके साथ ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से जुड़ी हुई है। एक विशेष पौधे की भाँति जो किसी भी प्रकार की मिट्टी में उग सकता था, वह जहाँ भी रहे अपने लेखन को जारी रखने में सक्षम थे। उन्होंने 'प्रतिबद्धता' के बजाय 'ज़िम्मेदारी' शब्द को प्राथमिकता दी। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि प्रत्येक लेखक की व्यक्तिगत, सामाजिक और नैतिक ज़िम्मेदारी होनी चाहिए। लेखक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उसके पास साझा करने के योग्य तथा कहने के लिए कुछ है।

प्रस्तुति समारोह के बाद *संवाद* कार्यक्रम हुआ, जिसकी अध्यक्षता तमिऴ परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम ने की। अपने संबोधन में उन्होंने कहा की कि डॉ. पार्थसारथी एक सफल प्राफ़ेसर तथा लेखक का एक जीवंत उदाहरण हैं। उनके शुरुआती कार्यों में राजनीतिक आलोचना एक बुनियादी धागा था और इसे सामाजिक मुद्दों पर स्थानांतरित कर दिया गया। उनके नाटक 'रामानुजर' का रंगमंच में बहुत बड़ा योगदान है। उनके नाटकों के विषय 'यौन उत्पीड़न', 'पुरुष वर्चस्ववाद' और ऐसी ही अन्य सामाजिक बुराइयों जैसे विषयों से संबद्ध हैं।

डॉ. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम ने मानवीय भावनाओं पर अपने प्रतिबिंब के लिए विशेष रूप से नाटक 'औरंगज़ेब' का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि डॉ. पार्थसारथी को उनके नाटकों के लिए सदैव याद किया जाएगा।

डॉ. एम. राजेंद्रन ने अपने संबोधन में कहा कि डॉ. पार्थसारथी की रचनाओं में दिन-प्रतिदिन के मुद्दों के साथ पारंपरिक मूल्य, जमुना के साथ कावेरी नदी, दिल्ली के साथ कुंभकोणम शहर आदि को देखा जा सकता है। डॉ. एम. राजेंद्रन ने आगे कहा कि व्यंग्य की सूक्ष्म किरण उनकी रचनाओं का अद्वितीय चरित्र है। चर्चा में भाग लेते हुए श्री मालन ने बताया कि डॉ. पार्थसारथी ने तमिऴ लेखकों को साहित्य जगत में सदैव अपना सिर ऊँचा रखने का संदेश दिया है। वे पूरी तरह से दो अलग-अलग मुद्दों पर लिख सकते थे, जैसे—परंपरा और आधुनिक समाज पर; औरंगज़ेब के साथ-साथ अलवर पर, कीलवेनमनी पर जो एक सांप्रदायिक मुद्दा है, तथा पूर्वी यूरोपीय महाद्वीपीय मुद्दे पर। डॉ. राजेंद्रन ने पार्थसारथी की इस विचारधारा को सामने रखा कि स्वयं से मुक्ति ही शाश्वत सुख का मार्ग प्रशस्त करेगी।

पत्रकार डॉ. थिरुपुर कृष्णन ने नाटकीय विडंबना के तत्व की व्याख्या की, जो पार्थसारथी की रचनाओं का एक अनिवार्य चरित्र है। उन्होंने कहा कि भारतीय महाकाव्यों की भाँति उनकी रचनाएँ भी पाठकों को सदैव प्रेरित करती रहेंगी। डॉ. कृष्णन ने पार्थसारथी की पहचान एक शहरी लेखक के रूप में की, जिन्होंने मध्यम वर्ग से संबंधित समस्याओं पर आधरित कार्य किए हैं। उन्होंने कहा कि पार्थसारथी ने समकालीन राजनीतिक मुद्दों का समालोचनात्मक विश्लेषण किया, यहाँ तक कि कोई भी उनके उपन्यासों के पात्रों में राजनीतिक नेता की पहचान कर सकता है।

साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने कहा कि इंदिरा पार्थसारथी अपने लेखन के माध्यम से बोलते हैं, उन्होंने जोर देकर कहा कि उनके उपन्यासों ने भाषा की बाधाओं को पार कर लिया है। आगे उन्होंने कहा कि भाषा बाधा नहीं सेतु होनी चाहिए। उनकी प्रामाणिकता, पारदर्शिता, बौद्धिक उत्कृष्टता उनके सभी कार्यों में देखी जा सकती है। युवा पीढ़ी को उनके जीवन और लेखन से बहुत कुछ सीखना है। श्री माधव कौशिक ने कहा कि डॉ. पार्थसारथी पूर्ण 'साहित्यकार' तथा पूर्ण साहित्यिक व्यक्तित्व हैं। समारोह में विद्वानों, लेखकों, साहित्यकारों ने भाग लिया।

संगोष्ठियाँ, परिसंवाद, लेखक सम्मिलन आदि

'भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में पुस्तकों की भूमिका' विषय पर परिसंवाद (विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर)

23 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

कार्यक्रम का दृश्य

'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के अंतर्गत साहित्य अकादेमी ने 23 अप्रैल 2021 को अपनी वेबलाइन साहित्य शृंखला के अंतर्गत 'भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में पुस्तकों की भूमिका' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी के सचिव ने स्वागत भाषण में पुस्तकों के महत्त्व और भूमिका पर ज़ोर देते हुए कहा कि ऐसा माना जाता है कि पुस्तकों ने कई क्रांतियों को जन्म दिया है लेकिन भारतीय संदर्भ में पुस्तकों ने सामाजिक परिवर्तन को प्रेरणा दी है।

परिसंवाद का उद्घाटन करते हुए प्रख्यात कन्नड लेखक प्रो. एस.एल. भैरप्पा ने कहा कि स्वामी विवेकानंद के भाषणों की पुस्तक ने भारतीयों को भारतीय संस्कृति की जड़ों से अवगत कराया। बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय, रवींद्रनाथ ठाकुर, सुब्रह्मण्यम भारती के कार्यों का उल्लेख करते हुए उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन पर उनके प्रभाव को रेखांकित किया।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के अलावा, भारत में दो अत्यधिक महत्वपूर्ण आंदोलन हुए हैं, जिनके बारे में जागरूक करने की आवश्यकता है। पहला भक्ति आंदोलन और दूसरा पुस्तक प्रकाशन।

परिसंवाद में उद्घाटन व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए, कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. सिद्धलिंगय्या ने 19वीं शताब्दी के प्रारंभ से विभिन्न कन्नड लेखकों का नाम लिया और उनके कार्यों के प्रभाव और प्रेरणा पर प्रकाश डाला।

प्रसिद्ध हिंदी पत्रकार श्री बल्देव भाई शर्मा ने लोकमान्य बालगंगाधर तिलक की मराठी पुस्तक *गीता रहस्य* का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि जब माधवराव सप्रे द्वारा पुस्तक का हिंदी अनुवाद किया गया तो इसने भारतीय जनता में राष्ट्रीय चेतना जगाने का काम किया। उन्होंने सावरकर की पुस्तक *1857 इंडियन वॉर ऑफ़ इंडिपेंडस* का उल्लेख किया एवं राष्ट्रीय चेतना जगाने में उसकी भूमिका का भी उल्लेख किया।

प्रख्यात तमिळ लेखक और पत्रकार श्री मालन ने महात्मा गाँधी के आगमन के पूर्व और उनके आगमन के पश्चात् भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के परिदृश्य को प्रस्तुत किया।

प्रख्यात मलयाळम् लेखक श्री पॉल जकारिया ने परिवर्तन की प्रेरणा देने वाली पुस्तकों की बात की और यह भी कहा कि स्वतंत्रता आंदोलन परिवर्तन के लिए था। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के योगदान के बारे में विशेष रूप से बताया। उन्होंने वल्लथोल, नारायणन मेनन, केसरी बालकृष्णन आदि के कार्यों को भी उद्धृत किया।

प्रख्यात संस्कृत लेखक डॉ. एस.आर. लीला ने *श्रीमद्भागवद गीता*, सावरकर की पुस्तक *1857 इंडियन वॉर ऑफ़ इंडिपेंडस* और भीमराव अंबेडकर कृत *थॉट्स*

ऑन पाकिस्तान का भी उल्लेख किया और कहा कि इन पुस्तकों ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को व्यापक रूप से प्रेरित और प्रभावित किया।

प्रख्यात अंग्रेज़ी लेखिका प्रो. संजुक्ता दासगुप्ता ने रवींद्रनाथ ठाकुर कृत कविता *स्वदेश,* उपन्यास *गोरा* तथा *राष्ट्रवाद* पर उनके निबंधों को उद्धृत करते हुए अपने विचार व्यक्त किए।

प्रख्यात मराठी लेखक डॉ. शरण कुमार लिंबाले ने कहा कि पुस्तकों के बिना आज का समाज अपने वर्तमान स्वरूप में नहीं होता। पुस्तकों ने कई क्रांतियों को जन्म दिया है तथा पुस्तकों ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को प्रेरित और प्रभावित भी किया है।

प्रख्यात गुजराती लेखक प्रो. सितांशु यशश्चंद्र ने गुजराती लेखकों की तीन कृतियों का उल्लेख किया– नर्मद कृत *राज्यरंग,* गोवर्धनराम माधवराम त्रिपाठी कृत *सरस्वतीचंद्र* (चार खंडों में उपन्यास) तथा महात्मा गाँधी कृत हिंद स्वराज।

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

'अखिल भारतीय युवा लेखक सम्मिलन'

16 जून 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने बुधवार, 16 जून 2021 को अपनी वेबलाइन साहित्य शृंखला के अंतर्गत अखिल भारतीय युवा लेखकों की आभासी बैठक का आयोजन किया। श्री अमीश त्रिपाठी, मंत्री (संस्कृति), भारतीय उच्चायोग, यूनाइटिड किंगडम और निदेशक, नेहरू केंद्र, लंदन ने सम्मिलन का उद्घाटन किया तथा उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने की।

कार्यक्रम का दृश्य

कार्यक्रम के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने सभी प्रतिभागियों का हार्दिक स्वागत किया। अपने स्वागत भाषण में, डॉ. के. श्रीनिवासराव ने हर क्षेत्र में युवाओं की ऊर्जावान उपस्थिति और विभिन्न रचनात्मक क्षेत्रों की गतिविधियों को प्रोत्साहन देने के बारे में कहा। उन्होंने कहा कि युवाओं को आध्यात्मिक पथ पर भी देखा जा सकता है। उन्होंने में अपने वक्तव्य 24 भाषाओं में साहित्य अकादेमी के युवा साहित्य पुरस्कार और नवोदय योजना के बारे में भी बताया जिसके अंतर्गत साहित्य अकादेमी युवा लेखकों का प्रथम प्रकाशन प्रकाशित करती है। उन्होंने कहा कि साहित्य अकादेमी अधिक-से-अधिक भारतीय भाषाओं में युवा लेखकों को प्रोत्साहित करने के विचार का स्वागत करती है।

श्री अमीश त्रिपाठी ने अपने उद्घाटन व्याख्यान में कहा कि श्रेष्ठ लेखक बनने के लिए लेखक की पढ़ने में रूचि होनी चाहिए तथा जितना संभव हो सके उतनी भाषाओं का साहित्य पढ़ना चाहिए। इसके अलावा एक लेखक को अपने साहित्यिक कार्यों में दार्शनिक और गहन विचारों को भी रखना चाहिए जिससे समाज के कल्याण में सहायता हो। उन्होंने आगे कहा कि अभी भी पश्चिम में केवल लेखन से कमाई करना कठिन है। पैसा कमाने के लिए दूसरी नौकरी भी करनी पड़ती है और ऐसा करने में कोई शर्म की बात नहीं है। अंत में, उन्होंने इस ओर इशारा किया कि कोई भी पुस्तक स्वयं नहीं बिकती है, उसे बेचने के लिए उसकी अच्छी मार्केटिंग करनी पड़ती है। बशर्ते लेखन बिना किसी समझौते के होना चाहिए।

साहित्य अकादेमी अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने उद्घाटन सत्र के अपनी खुशी व्यक्त की और कहा कि कोविड 19 महामारी और इसके कारण हुए लॉकडाउन के दौरान भी लेखक एक साथ हैं, हालाँकि आभासी रूप से एक साथ हैं। उन्होंने गर्व से इस विचार को साझा

किया कि उनकी मूल संस्कृति रचनात्मक लेखन के लिए उनकी प्रमुख प्रेरणा है और वे हमेशा अपनी लोक जड़ों में वापस जाते हैं जो उनको अपने शब्दों में व्यक्त करने में सक्षम बनती है। उन्होंने आगे कहा कि इस बात को वह सभी युवा लेखकों के साथ साझा करते हैं, ताकि उन्हें अपनी जड़ों को खोजने के प्रयास करने का सुझाव दिया जा सके और यही रचनात्मक अभिव्यक्ति की नींव है।

वार्ता के पश्चात्, श्री रुजब मुशाहारी (बर'), श्री अनुज लुगुन (हिंदी), सुश्री स्मिता अमृतराय (कन्नड), श्री गोविंद मोपकर (कोंकणी), सुश्री सृष्टि पौड्याल (नेपाली), श्री राजकुमार मिश्र (संस्कृत) तथा श्री आदिल फ़राज़ (उर्दू) ने अपनी कविताओं का पाठ उनके हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र कहानी-पाठ का था तथा इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात बाङ्ला लेखिका सुश्री अनीता अग्निहोत्री ने की। श्री मोबिन मोहन (मलयाळम्), श्री गगनदीप शर्मा (पंजाबी), श्री दिलीप बेहरा (ओड़िआ) तथा सुश्री समीक्षा पेसवानी (सिंधी) ने इस सत्र में अपनी कहानियाँ प्रस्तुत कीं।

द्वितीय सत्र का शीर्षक 'मेरा पहला लेखकीय अनुभव' था। इस सत्र की अध्यक्षता सुश्री तमिशाची थंगापांडियन, प्रतिष्ठित तमिऴ कवि, गीतकार और लेखक, तथा संसद सदस्य (लोकसभा), ने की। श्री भास्कर ज्योति नाथ (असमिया), श्री तन्मय चक्रवर्ती (बाङ्ला), श्री अमित शंकर साहा (अंग्रेज़ी) और श्री प्राजक्त देशमुख (मराठी) ने इस सत्र में भाग लिया तथा अपने रचनात्मक अनुभव साझा किए।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात हिंदी कवि श्री अरुण कमल ने की। श्री रणबीर सिंह 'चिब' (डोगरी), खेवना देसाई (गुजराती), श्री निसार आज़म (कश्मीरी), श्री मैथिल प्रशांत (मैथिली), सुश्री राजकुमारी शारदारानी देवी (मणिपुरी), श्री महेंद्र सिंह सिसोदिया (राजस्थानी), श्री लालचंद सरेन (संताली), श्री सी. अरुणन (तमिऴ) और श्री बंडारी राजकुमार (तेलुगु) ने इस सत्र में हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवादों के साथ अपनी कविताओं का पाठ प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने किया।

'अखिल भारतीय महिला लेखिका सम्मिलन'

23 जून 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने 23 जून 2021 को आभासी मंच पर समस्त भारत की प्रख्यात महिला लेखिकाओं के साथ 'अखिल भारतीय महिला लेखिका सम्मिलन' का आयोजन किया। अपने स्वागत भाषण में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने संपूर्ण भारत में अलग-अलग समय, अंतरालों और स्थानों पर महिला लेखिकाओं के साथ-साथ विचारकों की ज्ञानवर्धक भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने श्रोताओं को 'अस्मिता' जैसे साहित्य अकादेमी के कार्यक्रमों की जानकारी दी, जो विशेष रूप से महिला लेखिकाओं को मंच प्रदान के लिए तैयार किए गए हैं। उद्घाटन व्याख्यान प्रख्यात हिंदी लेखिका श्रीमती ममता कालिया ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने की। श्रीमती कालिया ने पहले के समय में महिला लेखिकाओं की कृतियों के प्रकाशनों में आने वाली समस्याओं पर बात की। उन्होंने अतीत की महत्त्वपूर्ण महिला लेखिकाओं पर प्रकाश डाला, जिन्हें उस समय उनका हक़ सम्मान नहीं मिला, लेकिन अब उन्हें सारा विश्व सम्मान एवं स्नेह देता है। उन्होंने सदियों से महिला लेखिकाओं द्वारा लिखे गए हिंदी साहित्य के विकास पर भी चर्चा की। डॉ. कंबार ने परंपराओं और व्यक्तित्व के बारे में टी.एस. इलियट के विचारों पर बात की। साथ ही उन्होंने कई लेखकों

कार्यक्रम का दृश्य

में जुनून और व्यवसाय जैसे द्वि-आधारों की चेतना की कमी पर अफ़सोस जताया। उद्घाटन सत्र में सुश्री धीर्ज्यू ज्योति बसुमतारी (बर'), सुश्री चंपा शर्मा (डोगरी), सुश्री अनामिका (हिंदी), सुश्री ममता एस. गवस (कोंकणी), सुश्री जोबा मुर्मू (संताली), सुश्री जे. सुभद्रा (तेलुगु) और सुश्री मलका नसीम (उर्दू) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने समापन वक्तव्य प्रस्तुत किया तथा महिला लेखिकाओं के लेखन में प्रतिरोध और विद्रोह के स्वर को उजागर किया। उन्होंने कहा कि भारत में महिला लेखन में आत्मविश्वास और स्वतंत्रता की भावना समय के साथ बढ़ी क्योंकि उभरते हुए आख्यान बढ़ते रहे। उद्घाटन सत्र का संचालन साहित्य अकादेमी के संपादक (हिंदी) श्री अनुपम तिवारी ने किया।

प्रथम सत्र कहानी-पाठ का था, जिसमें सुश्री मिनी एम.बी. (मलयाळम्), सुश्री मंगल देसाई (मराठी), सुश्री जयंती रथ (ओड़िआ) तथा सुश्री मनीषा आर्य सोनी (राजस्थानी) जैसी प्रसिद्ध महिला लेखिकाओं ने अपनी-अपनी कहानियों का पाठ प्रस्तुत किया। प्रख्यात ओड़िआ लेखिका सुश्री परमिता सत्पथी ने इस सत्र का संचालन किया। सुश्री मिनी एम.बी. ने 'अहिल्या' शीर्षक नामक अपनी कहानी पढ़ी, सुश्री देसाई ने 'मास्टरपीस' नामक कहानी पढ़ी। सुश्री रथ की कहानी का शीर्षक था 'बेटी का पत्र' और सुश्री सोनी की कहानी का शीर्षक था 'जवाब दो सुधा'।

द्वितीय सत्र में सुश्री मित्रा फुकन (असमिया), सुश्री नैना डे (अंग्रेज़ी) तथा सुश्री तारिणी शुभदायिनी (कन्नड) जैसी प्रख्यात महिला लेखिकाओं ने 'लेखन : जुनून अथवा व्यवसाय' विषय पर बात की। इस सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध गुजराती लेखिका सुश्री वर्षा अडालजा ने की। सुश्री फुकन ने अपने भाषण में प्रतिबद्धता और विचार-विमर्श पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने सामाजिक विचारकों तथा सदियों से ज्ञान के उपदेशक के रूप में लेखकों की भूमिका पर आधारित अपना आलेख प्रस्तुत किया। सुश्री डे ने जीविका अर्जन के रूप में व्यवसायिक लेखन की विशेषताओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि इस संदर्भ में प्रायोजन एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा है। सुश्री शुभदायिनी ने अपने भाषण में जुनून और व्यावसायिकता की अन्योन्याश्रयता पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि जब जुनून शुरू होता है, व्यावसायिकता बेहतर होती है। सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने की।

अंतिम सत्र कविता-पाठ का था। इस सत्र में सुश्री मनीषा मुखर्जी (बाङ्ला), सुश्री नसीम शैफ़ई (कश्मीरी), सुश्री रिंकी झा (मैथिली), सुश्री मिसना चानू (मणिपुरी), सुश्री अमला छेत्री (नेपाली), सुश्री सिमरन अक्स (पंजाबी), सुश्री श्रुति कानिटकर (संस्कृत), सुश्री नीता लालवाणी (सिंधी) तथा सुश्री जे. मंजुला देवी (तमिऴ) ने अपनी कविताओं का पाठ प्रस्तुत किया। प्रख्यात अंग्रेज़ी लेखिका सुश्री ममंग दई ने सत्र का संचालन किया।

'पूर्वोत्तर तथा पश्चिमी लेखक सम्मिलन'

27 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने अपनी वेबलाइन साहित्य शृंखला के अंतर्गत आभासी मंच पर 'पूर्वोत्तर और पश्चिमी लेखक सम्मिलन' का आयोजन किया। इसमें सम्मिलन दोनों क्षेत्रों के 27 लेखकों ने भाग लिया। उद्घाटन सत्र में स्वागत भाषण देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव ने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम के आयोजन का उद्देश्य दो अलग-अलग क्षेत्रों के कवियों को एक दूसरे के क़रीब

कार्यक्रम का दृश्य

लाना है। यह दोनों क्षेत्रों की विभिन्न संस्कृतियों को आपस में जोड़ने का भी प्रयास है। लेखक सम्मिलन का उद्घाटन प्रख्यात असमिया लेखक प्रो. नगेन शइकिया ने किया। इस अवसर पर बोलते हुए उन्होंने कहा, ''मैं इस सभा में सूर्य कहाँ उगता है और कहाँ अस्त होता है, इसकी प्रतीकात्मक प्रकृति को महसूस करने में सक्षम हूँ। यह एक बहुत ही अनोखी कल्पना है जो बहुत ही रोचक और ज्ञानवर्धक भी है। भाषाओं की विविधता के बाद भी हर भाषा का साहित्य मानवता की आवाज़ है।'' साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि यह दो क्षेत्रों का मिलन है और इसमें अपार संभावनाएँ हैं। ये दोनों क्षेत्र ऐतिहासिक रूप से जुड़े हुए हैं और इस कार्यक्रम के माध्यम से ब्रिटिश उपनिवेश और स्वतंत्रता के बाद के भारत के साहित्य को जानना और समझना आसान होगा। उन्होंने आगे कहा कि यह जानना भी आवश्यक है कि वैश्वीकरण के दौर में हमारे गाँव और इसकी स्थानीय संस्कृति कैसे प्रभावित हो रही है। डॉ. कंबार ने इस तरह के आयोजनों को भाषाई विविधता का उत्सव बताते हुए उन्हें स्थानीय परंपराओं का संरक्षक बताया।

इसके बाद कविता-पाठ कार्यक्रम हुआ, जिसमें कौशिक किसलय (असमिया), गोपीनाथ ब्रह्म (बर'), डेज्मंड खर्माफ्लांग (अंग्रेज़ी-पूर्वोत्तर), हिमल पांड्या (गुजराती), पूर्णानंद चारी (कोंकणी), विनोद कुमार सिन्हा (मणिपुरी), प्रकाश होलकर (मराठी) तथा विनोद असुदानी (सिंधी) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। समस्त कवियों ने अपनी कविताओं को पहले अपनी मातृभाषा में प्रस्तुत किया और बाद में उनका अंग्रेज़ी अथवा हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किया। सत्र के अंत में साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने कहा कि दोनों भाषाओं और क्षेत्रों के कवियों की चिंता समान है। हर किसी का दिल ऐसे ही धड़कता है और उनकी मिट्टी की ख़ुशबू भी उनकी कविताओं में महसूस की जा सकती है। उन्होंने आगे कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम देश की रचनात्मक एकता को पाठकों तक ले जाने में मदद करते हैं।

कार्यक्रम का प्रथम सत्र कहानी-पाठ था, जिसकी अध्यक्षता एन. किरणकुमार ने की। इस सत्र में मीना खेरकत्री (बर'), एन. शिवदास (कोंकणी) ने अपनी-अपनी कहानियाँ प्रस्तुत कीं। द्वितीय सत्र का विषय था—'क्या कविता मर रही है?' प्रदीप आचार्य ने इस सत्र की अध्यक्षता की। सत्र में प्राणजीत बोरा (असमिया), दर्शिनी दादावाला (गुजराती), ख. प्रेमचंद सिंह (मणिपुरी) और नामदेव ताराचंदाणी (सिंधी) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। तृतीय और अंतिम सत्र कविता-पाठ का था, इस सत्र की अध्यक्षता वासदेव मोही ने की तथा दिगंत निबिर (असमिया), अकबर अहमद (बाङ्ला-पूर्वोत्तर), लंकेश्वर हाईनारी (बर'), उषाकिरण अत्राम (गोंडी), विवेक टेलर (गुजराती) ओ. मेमा देवी (मणिपुरी), किशोर कदम (मराठी), एस.डी. ढकाल (नेपाली-पूर्वोत्तर) तथा हिना अग्नानी (सिंधी) ने अपनी-अपनी कविताओं का पाठ प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी के उपसचिव कृष्णा किम्बहुने ने किया।

'सुब्रह्मण्यम भारती पर राष्ट्रीय संगोष्ठी'

24-25 सितंबर 2021, नई दिल्ली

भारत की प्रमुख साहित्यिक संस्था साहित्य अकादेमी ने भारत की आज़ादी के 75वें वर्ष के उपलक्ष्य में 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' शृंखला के अंतर्गत द्विदिवसीय 'सुब्रह्मण्यम भारती राष्ट्रीय संगोष्ठी' का आयोजन किया तथा महान कवि को उनकी 100वीं पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

स्वागत वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव

उद्घाटन सत्र में, साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के श्रीनिवासराव ने पुस्तकें भेंट कर प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा अपने स्वागत भाषण में उस समृद्ध विरासत के बारे में बात की जो सुब्रह्मण्यम भारती अपने लेखन के माध्यम से छोड़ गए हैं। उन्होंने कहा कि सुब्रह्मण्यम भारती भारत के प्रति बहुत भावुक थे और उनका सपना था कि भारत गौरव के पथ पर आगे बढ़े। संगोष्ठी में शामिल श्री मालन ने अपने आरंभिक वक्तव्य में सुब्रह्मण्यम भारती के जीवन के विभिन्न पहलुओं के बारे में बात की और उनके व्यक्तित्व की तुलना इंद्रधनुष से की। डॉ. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम ने अपने बीज-भाषण में मातृभूमि के प्रति सुब्रह्मण्यम भारती के योगदानों की चर्चा की, और बताया कि भारती ने गरीबी और अंतहीन दासता से मुक्ति के प्रति लोगों को शिक्षित किया तथा उत्कृष्ट साहित्यिक रचनाओं का निर्माण करने के लिए जादू की छड़ी के सामान अपनी कलम चलाते हुए मानवता के प्रति अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया।

प्रथम सत्र का विषय था—'भारती की भारत-दृष्टि'। डॉ. पी. राजा ने पुदुचेरी के ऐतिहासिक और भौगोलिक पहलुओं का वर्णन किया। डॉ. वाई.एस. राजन के आलेख का विषय था—'वैज्ञानिक सोच का निर्माण'। अपने आलेख में उन्होंने विज्ञान, प्रौद्योगिकी, उद्योग और अर्थशास्त्र के बीच आवश्यक संबंधों पर चर्चा की। श्री जे. साई दीपक के आलेख का विषय था—'सांप्रदायिक सौहार्द'। उनका आलेख दो खंडों में विभक्त था यथा—अंतर-सांप्रदायिक सौहार्द तथा अंतः-सांप्रदायिक सौहार्द। सुश्री उषा राजगोपालन ने अपने आलेख में कहा कि समाज सुधारक के रूप में सुब्रह्मण्यम भारती की कविताओं का महत्त्व शायद उनके अपने समय की तुलना में आज अधिक प्रासंगिक है। उन्होंने देश में एक ऐसे समाज की कल्पना की, जो औपनिवेशिक नियमों की बेड़ियों से मुक्त हो तथा वह एक नई शुरुआत के लिए तैयार हो।

द्वितीय सत्र का विषय था—'बेआवाज़ों की आवाज़'। डॉ. जी. उमा ने अपने आलेख में 20वीं और 21वीं सदी में भारत की महिलाओं की स्थिति पर चर्चा की, जिसमें उन्होंने कहा कि हमें समाज में महिलाओं की स्थिति को पुरुषों के बराबर लाने की आवश्यकता है। डॉ. पी. शिवकामी ने सुब्रह्मण्यम भारती के लेखन के प्रभाव के पर चर्चा की तथा उनकी कविताओं और कहानियों के दृष्टिकोण के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किए।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम ने की। इस सत्र का विषय था—'नवाचार और सृजन : भारती की प्रतिभा'। श्री तमिल सेल्वन ने 'सुब्रह्मण्यम भारती का कथा साहित्य' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया तथा श्री मालन ने 'सुब्रह्मण्यम भारती की पत्रकारिता' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। श्री तमिल सेल्वन ने कहा कि यद्यपि भारती ने स्वयं स्वीकार किया था कि वह पहले और अंतिम कवि हैं, लेकिन उन्होंने कथा की शैली में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। उन्होंने चेलप्पा को उद्धृत करते हुए कहा कि भारती कहानियाँ लिखने वाले प्रथम तमिळ लेखक थे। उन्होंने बताया कि भारती की कहानियों की संरचना, कथानक और समापन में नवाचार था तथा उन्होंने तमिळ कथा साहित्य के एक नए युग की शुरुआत की। उन्होंने छोटे, सरल वाक्यों के साथ कहानियाँ लिखीं, पात्रों को चित्रित करने के नए तरीक़े तैयार किए, नए रूपों की सृजना की, व्यंग्य में उत्कृष्ट, भूखंडों और ट्विस्ट का स्वच्छ चित्रण किया। साथ ही उन्होंने लोगों की भाषा में लिखा, पश्चिमी देशों में कहानी कहने की शैली और भारतीय शैलियों को मिलाकर एक नई शैली की शुरुआत की। उन्होंने भारती की कहानियों और निबंधों को विस्तार से उद्धृत किया। श्री मालन ने अपने आलेख में कहा कि भारती ने पत्रकारिता में उस वक़्त प्रवेश किया जब तमिळ पत्रकारिता अपने शुरुआती दौर में थी, पत्रकारिता एकमात्र करियर था, जिसे उन्होंने अपने जीवन में गंभीरता से आगे बढ़ाया और देखा कि अगर उन्होंने पत्रकारिता नहीं की होती, तो वे एक शिक्षक या इसी प्रकार की किसी अन्य नौकरी कर रहे होते। एक पत्रकार के रूप में भारती ने सूचना के महत्त्व और मूल्य को पहचाना और लड़ाई लड़ी। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि 20वीं शताब्दी में देश और दुनिया के विभिन्न हिस्सों में दैनिक समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के माध्यम से जानकारी उपलब्ध कराई

जाए। उन्होंने तकनीकी आविष्कारों और वैज्ञानिक खोजों के लिए नए तमिळ शब्द गढ़ने, समाचार पत्रों के लिए मुफ्त पूरक, समाज के विभिन्न वर्गों के लिए अलग-अलग सदस्यता आदि का बीड़ा उठाया। अपनी बात को जारी रखते हुए श्री मलिन ने कहा भारती ने ही भारत में सबसे पहले इस बात को प्रमुखता से उठाया कि यदि दैनिक समाचार पत्रों और पत्रिकाओं को जनता तक पहुँचना है और प्रासंगिक बने रहना है, तो उन्हें दैनिक आधार पर नवाचार करना होगा और प्रौद्योगिकी को अपनाना होगा। उन्होंने भारती के लेखन सहित विभिन्न स्रोतों का हवाला दिया और कई उदाहरण भी उद्धृत किए। डॉ. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम ने प्रस्तुत आलेखों पर टिप्पणी की और बताया कि किस प्रकार भारती अपने समय से बहुत आगे थे तथा किस प्रकार उन्होंने अपने जीवन के हर मोड़ पर नवाचार किया—न केवल कविता अथवा कहानी या पत्रकारिता में, बल्कि उन्होंने जीवन की समस्त गतिविधियों में भी निरंतर नवाचार किया। उन्होंने देश के विभिन्न हिस्सों में सुब्रह्मण्यम भारती की लोकप्रियता के बारे में बताने के लिए कई उदाहरण प्रस्तुत किए। इस कार्यक्रम में अन्य प्रतिभागियों और दर्शकों के साथ एक संक्षिप्त विचार-विमर्श सत्र भी आयोजित किया गया।

चतुर्थ सत्र का विषय था—'आदर्श तथा प्रेरणा स्रोत'। सत्र की अध्यक्षता ध्रुव ज्योति बोरा ने की। इस सत्र में तीन विद्वानों प्रो. संजुक्ता दासगुप्ता, प्रो. सदानंद मोरे तथा डॉ. मनमोहन सिंह ने 'टैगोर तथा सिस्टर निवेदिता', 'तिलक तथा शिवाजी' और 'गुरु गोविंद सिंह' विषयों पर क्रमशः अपने पर आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. बोरा ने कहा कि सुब्रह्मण्यम भारती के विचार और प्रभाव केवल तमिलनाडु या भारत तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि भारतीय उपमहाद्वीप की सीमाओं से परे हैं। उन्होंने कहा कि यह जानना भी अति विस्मयकारी होगा कि किस प्रकार महान विचार भाषा और संस्कृति की बाधाओं को पार करते हैं तथा न केवल भारती बल्कि अज़वार और नयनमारों के विचार भी पूर्वोत्तर तक पहुँच गए हैं। अपने आलेख में प्रो. संजुक्ता दासगुप्ता ने कहा कि भारती केवल कवि या पत्रकार नहीं थे, बल्कि वह एक सांस्कृतिक (ICON) थे, जो स्वतंत्रता आंदोलन की आग को प्रज्जवलित करने वाले अग्रदूतों में से एक थे। उन्होंने कहा कि कई महान हस्तियों ने जैसे—रवींद्रनाथ ठाकुर, स्वामी विवेकानंद तथा सिस्टर निवेदिता। भारती के जीवन को प्रभावित तथा सदा के लिए बदल के रख दिया, पहली दो हस्तियों के लेखन ने उन्हें अत्यंत प्रभावित किया तथा सिस्टर निवेदिता से बनारस में बैठक में भेंट के बाद उनके विचारों में बड़ा परिवर्तन आया। इन महान हस्तियों के प्रभाव ने भारती में रचनात्मकता और जुनून को जन्म दिया तथा उन्होंने कई अमर कविताओं का सृजन किया। अपने आलेख में प्रो. सदानंद मोरे ने इस बात पर प्रकाश डाला कि तिलक और छत्रपति शिवाजी ने भारती को किस प्रकार प्रभावित किया तथा इसके परिणामस्वरूप उस महान कवि में नए और भव्य राष्ट्रवादी विचारों का उदय हुआ। उन्होंने देश की उन परिस्थितियों का भी वर्णन किया जिनके कारण तिलक एक महान शक्ति बने और छत्रपति शिवाजी प्रेरणा स्रोत बने। यह भारती ही हैं जो भारत के सबसे दक्षिणी हिस्से तमिलनाडु में इन हस्तियों को जन-जन तक पहुँचाने में सफल रहे। डॉ. मनमोहन सिंह ने अपने आलेख में गुरु गोबिंद सिंह जी के राष्ट्र के प्रति योगदान तथा सुब्रह्मण्यम भारती पर उनके स्थायी प्रभाव की चर्चा की। उन्होंने दशम ग्रंथ से पाठ किया और बताया कि किस प्रकार उन्होंने अपनी पौराणिक कविताओं के माध्यम से जनता में स्वतंत्रता की भावना जागृत की। उन्होंने समझाया कि यह भावना ही सुब्रह्मण्यम भारती के देशभक्ति और राष्ट्रवादी गीतों को प्रतिबिंबित करती है।

समापन सत्र का विषय था—'भारती की आध्यात्मिक तड़प'। तीन प्रख्यात विद्वानों—एस. रघुनाथन, सुधा शेषाय्यन तथा पी. राजा ने 'शक्ति', 'कृष्ण' और 'प्रकृति' विषयों पर क्रमशः अपने आलेख प्रस्तुत किए। अपने आलेख में श्री एस. रघुनाथन ने भारती की अवधारणा और शक्ति, दिव्य माँ के विचार पर बात की, और बताया कि किस प्रकार यह उनके व्यक्तित्व और उनकी कविताओं के माध्यम से प्रकट होती है। उन्होंने शक्ति को हर वस्तु में, हर किसी में तथा हर स्थान पर

देखा तथा उस सर्वव्यापी धारणा ने भारती को ऊर्जा और शक्ति प्रदान की। उन्होंने भारती की कविताओं को उद्धृत करते हुए कहा कि सब कुछ शक्ति की व्यापक और समाहित दृष्टि के अंतर्गत आता है। उन्होंने कहा कि भारती में साहस था। अपने आलेख में डॉ. सुधा शेषाय्यन ने भारती और उनके कृष्ण के रिश्ते के बारे में बात की। उन्होंने पंजलि सबाथम और अन्य भक्ति गीतों के बजाय *कन्नन पाटू* पर अपने विचार प्रकट किए। उन्होंने बताया कि भारती ने भगवान कृष्ण के गीतों को अत्यंत ही भव्य तरीक़े से चित्रित किया है। भारती कृष्ण को अपने प्रिय, अपने बच्चे, अपने पिता, अपने मार्गदर्शक तथा ब्रह्मांड के भगवान के रूप में देखते थे तथा भारती की कविताएँ इन सभी दर्शनों को दर्शाती हैं। उन्होंने भारती की कविताओं के कुछ अंशों को भी उद्धृत किया। प्रो. पी. राजा ने अपने आलेख में भारती की रचनाओं में पांडिचेरी के प्राकृतिक रूप को किस प्रकार चित्रित किया है, पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। श्री राम बहादुर राय ने इस सत्र की अध्यक्षता की तथा उस पांडिचेरी की बात की जहाँ सुब्रह्मण्यम भारती रहते थे तथा उस स्थान की तुलना स्वर्ग से की। उन्होंने सुब्रह्मण्यम भारती की साहित्यिक खोजों की पृष्ठभूमि तथा आध्यात्मिकता और भारतीयता के प्रति उनके लेखकीय जुनून पर चर्चा की। उन्होंने कहा, ''सुब्रह्मण्यम भारती का व्यक्तित्व बहुआयामी है तथा हमें उनके लेखन के माध्यम से दिखाए गए मार्ग का अनुसरण करना चाहिए।'' डॉ. के. श्रीनिवासराव ने संगोष्ठी को सफल बनाने के लिए समस्त प्रतिभागियों को धन्यवाद प्रकट किया और कहा कि अकादेमी प्रत्येक भाषा में इस प्रकार की राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित करेगी।

'अखिल भारतीय महिला लेखक महोत्सव'

(अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर)
8 मार्च 2022, भुवनेश्वर

साहित्य अकादेमी ने 8 मार्च 2022 को 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के अंतर्गत गीत गोविंद सदन, भुवनेश्वर

स्वागत वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव

के सभागार में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 'अखिल भारतीय महिला लेखक महोत्सव' का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र पूर्वाह्न 10.30 बजे आरंभ हुआ। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने गणमान्य व्यक्तियों, डॉ. रमाकांत रथ, डॉ. प्रतिभा राय तथा डॉ. प्रतिभा सत्पथी का पुस्तकों तथा उत्तरिया भेंट कर उनका स्वागत किया।

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि महिलाओं में जीवन को बनाने और बनाए रखने की क्षमता होती है। बच्चे अपनी माँ से मातृभाषा सीखते हैं तथा इसके साथ ही वे अपनी माँ से संस्कृति, परंपरा आदि के बारे में भी सीखते हैं। महिलाओं के बिना कोई जीवन नहीं है और कोई संस्कृति नहीं है। साहित्य के क्षेत्र में महिला लेखिकाओं का योगदान उल्लेखनीय है। डॉ. राव ने भारत में महिलाओं के लेखन के इतिहास पर संक्षेप में प्रकाश डाला। ओड़िआ परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. बिजयानंद सिंह ने आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने ओडिशा की महिला लेखिकाओं और समाज के प्रति उनकी रचनात्मक भूमिका का संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत किया।

अपने उद्घाटन व्याख्यान भाषण में प्रख्यात ओड़िआ लेखिका डॉ. प्रतिभा राय ने कहा कि महिलाएँ अभी भी हाशिए पर हैं और कई मायनों में उपेक्षित हैं। नर और मादा में अब भी अंतर है। साहित्य पर लिंग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। एक पुरुष जब महिला चरित्र को चित्रित करता है तो वह नारीत्व को महसूस कर सकता है जबकि एक महिला जब किसी आदमी के बारे में वर्णन करती है तब वह उस आदमी की भावनाओं को महसूस

करती है। यही कारण है कि अर्धनारीश्वर विषय भारत में है। यदि कोई महिला लेखिका किसी साहसिक विषय पर लिखती है तो लोग कहते हैं कि वह पुरुष के रूप में लिख रही है। प्रारंभिक काल में महिला लेखिकाएँ पुरुष के छद्म नाम से लिखती थीं। इसका उदाहरण मैरियन इवांस हैं, जो जॉर्ज एलियट के नाम से लिख रही थीं। यह केवल एक महिला लेखक के प्रति समाज के गलत पूर्वाग्रह के कारण हुआ। हमारे ओडिशा ने भी कई महिला लेखकों को जन्म दिया है। साहित्य के प्रति उनका योगदान अतुलनीय है। आज की महिला लेखिका विभिन्न समसामयिक विषयों पर बहुत अच्छा लिख रही हैं। वे धारा के विरुद्ध तैर रही हैं।

कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि प्रख्यात ओड़िआ कवयित्री डॉ. प्रतिभा शतपथी ने कविता की कलात्मक यात्रा के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि कविता समाज की सच्चाई को दर्शाती है। यह परिवलित और रूपांतरित तरीक़े से व्यक्त की जाती है। काव्यात्मक संकेत कभी भी लुप्त नहीं होते। उन्होंने अपनी लोकप्रिय कविता 'मो झिया' (मेरी बेटी) का पाठ भी प्रस्तुत किया। कविता में महिला की बेटी का चित्रण है और यह भी बताया गया है कि माँ अपनी लड़की के बारे में क्या कहना चाहती है। यह कविता सुनकर श्रोता मंत्रमुग्ध हो गए।

प्रसिद्ध कवि तथा साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य डॉ. रमाकांत रथ ने बैठक की अध्यक्षता की। अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में उन्होंने कहा, ''हम महिला की वजह से लेखक हैं। मेरे जैसे लेखक महिलाओं के आभारी हैं। कोई अपने अनुभव और परिवेश से प्रभावित होकर लिख सकता है। लेखक पुरुष हो या महिला, लिंग कोई समस्या नहीं है, लेकिन भावनाओं और आवेगों के लिए शब्द खोजना बहुत मुश्किल है।''

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात संताली एवं ओड़िआ लेखिका डॉ. दमयंती बेसरा ने की। इस सत्र में सात कवियों ने अपनी कविताओं का पाठ प्रस्तुत किया। कवियों में रश्मि चौधरी (बर'), सरिता खजूरिया (डोगरी), जयश्री कंबार (कन्नड), चंद्रिका पडगाँवकर (कोंकणी), ममता दास (ओड़िआ), सीमा भाटी (राजस्थानी) तथा जोबा मुर्मू (संताली) शामिल थे। डॉ. बेसरा ने कविताओं का समाहार प्रस्तुत किया। अधिकांश कविताओं में स्त्री के दर्द तथा उन्नति का विभिन्न प्रकार से वर्णन किया गया।

द्वितीय सत्र 'महिला साहित्य में क्रांतिकारी परिवर्तन' विषय पर आधारित था। इस सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध अंग्रेज़ी विद्वान, आलोचक तथा अनुवादक प्रो. संजुक्ता दासगुप्ता ने की। नंदिता देवी (असमिया), दर्शिनी दादावाला (गुजराती), प्रमिला देवी (मलयाळम्), मोनालिसा जेना (ओड़िआ) अपनी प्रो. बिष्णुप्रिया ओटा (ओड़िआ) द्वारा प्रस्तुत किए गए। सत्र के अंत में प्रो. दासगुप्ता ने चर्चा का समाहार प्रस्तुत किया।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात ओड़िआ कहानीकार डॉ. यशोधरा मिश्रा ने की। सत्र में मनीषा कुलश्रेष्ठ (हिंदी), निर्मोही गिरीश फड़के (मराठी), जयंती रथ (ओड़िआ) तथा एम.एम. विनोदिनी (तेलुगु) ने अपनी कहानियों का पाठ प्रस्तुत किया। कहानियाँ मुख्य रूप से महिलाओं पर केंद्रित थीं और लैंगिक असमानता और पूर्वाग्रह की कई अनकही कहानियों को दर्शाने वाली थीं। विनोदिनी की कहानी में समाज के एक दलित चरित्र की दुर्दशा का वर्णन प्रस्तुत किया गया था। डॉ. मिश्रा ने शानदार और रचनात्मक तरीक़े से कहानियों के बारे में अपनी अध्यक्षीय टिप्पणी दी।

चतुर्थ और अंतिम सत्र कविता-पाठ का था। विभिन्न भाषाओं की दस कवयित्रियों ने अनुवाद के साथ अपनी कविताओं का पाठ प्रस्तुत किया।

बाङ्ला कवयित्री पायल सेनगुप्ता ने एक कविता पढ़ी, जिसमें उन्होंने छह सौ साल पहले की एक लड़की के बारे में बताया। कश्मीरी कवयित्री रुख़साना ज़बीन ने अपनी कविताओं (शायरी) द्वारा कार्यक्रम का समा बाँध दिया। सबिता झा सोनी (मैथिली) ने नारीवादी दृष्टिकोण और मिथिला की भूमि के प्रति प्रेम पर आधारित अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। ओड़िआ कवयित्री डॉ. सुभाश्री लेंका ने तीन कविताओं नारी, किछी बड़ा कथा नुहे (कोई बड़ी बात नहीं) तथा सोशा (प्यास) का पाठ प्रस्तुत किया। उन्होंने अपनी कविताओं में नारी

और प्रकृति के बीच के बंधन की सुंदरता को उकेरा। तमिळ कवयित्री कनिमोझी ने भी प्रकृति और स्त्री विषय पर अपनी कविताएँ पढ़ कर सुनाईं। नेपाली कवयित्री बसंती देवी पौडयाल की कविताओं ने रोमांटिक स्पर्श के साथ घर बनाने वाली महिला की कहानी प्रस्तुत की। पंजाबी कवयित्री सरबजीत कौर जस ने मज़बूत नारीवादी विचारधारा पर आधारित तथा अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। मणिपुरी कवयित्री बेबी सोराइसम की कविता में रोमांटिक भावनाओं और नारीवाद का मिश्रण था। नादिया मसंद (सिंधी) ने भी अपनी कविताओं का पाठ प्रस्तुत किया। युवा संस्कृत कवयित्री परम्बा श्री योगमाया ने आज के समाज के मिथक और संबंधित पात्रों पर आधारित अपनी कविताओं का पाठ प्रस्तुत किया। उनकी संस्कृत हाइकु और गीतात्मक कविता ने कार्यक्रम के अंत में समा बाँध दिया। कार्यक्रम के अंत में प्रख्यात आलोचक तथा साहित्य अकादेमी की ओड़िआ परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. प्रदीप्त कुमार पांडा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

'सत्यजीत राय जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी'

25-26 नवंबर 2021, कोलकाता

बीज-भाषण देते हुए श्री चिन्मय गुहा

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता के सभागार में 'सत्यजीत राय जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी' का उद्घाटन प्रख्यात फ़िल्मकार गौतम घोष ने किया। चिन्मय गुहा ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। श्री घोष ने अपने आलेख में समय प्रबंधन, अनुशासन और सत्यजीत राय के ज्ञान की खोज की इच्छा आदि विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए। साथ ही इस आलेख के माध्यम से उन्होंने युवा मस्तिष्क को कलात्मक और वैज्ञानिक रूप से शिक्षित करने का प्रयास किया। प्रो. चिन्मय गुहा ने फ़िल्मों में मानव व्यवहार पैटर्न के सरल, सूक्ष्म पहलुओं के चित्रण के बारे में विस्तार से बात की। उन्होंने सत्यजीत राय के कई दृश्यों का उल्लेख किया, जहाँ वे विचारोत्तेजक छवियों का उपयोग करते हैं और कैसे उन्होंने मानव दुनिया के साथ प्राकृतिक परिवेश को जोड़ा। दोनों वक्ताओं ने सत्यजीत राय के मानवतावादी दृष्टिकोण पर बल दिया। प्रो. गुहा ने राय की तकनीकों की तुलना अन्य महान फ़िल्मकारों से भी की। स्वागत भाषण साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने प्रस्तुत किया तथा आरंभिक भाषण साहित्य अकादेमी की बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक सुबोध सरकार ने प्रस्तुत किया। डॉ. राव ने राय की उत्कृष्ट कृतियों के उल्लेख के साथ अन्य महान भारतीय लेखकों का भी उल्लेख किया। उन्होंने लेखन की विभिन्न विधाओं के महत्त्व पर भी प्रकाश डाला, जिनका प्रयोग राय करते थे। उन्होंने युवा मस्तिष्क पर राय के लेखन के प्रभाव के बारे में चर्चा की तथा उनके संस्मरणों और आलोचनाओं ने साहित्यिक और आलोचनात्मक परंपराओं को किस प्रकार जन्म दिया आदि बातों पर भी प्रकाश डाला। डॉ. सरकार ने अपने व्याख्यान में राय की सिनेमैटोग्राफ़िक, जादुई तथा सटीक गद्य शैली के बारे में भी बताया, जिसने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने अपनी विज्ञान कथाओं और असामान्य कहानियों पर भी प्रकाश डाला। साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए श्रोताओं को बताया कि सत्यजीत राय ने स्वयं साहित्य अकादेमी का लोगो तैयार किया था। प्रथम सत्र में देबासिस देब, अभिजीत गुप्ता और अनिंद्य सेनगुप्ता ने कलाकार तथा अनुवादक के रूप में सत्यजीत राय विषय पर प्रकाश डाला। राय के चित्रण और फ़िल्मोग्राफ़ी के बारे में चर्चा करते हुए वक्ताओं के तर्कों के समर्थन के लिए वीडियो क्लिप और चित्रों को भी दिखाया गया। बैठक की अध्यक्षता संजय मुखोपाध्याय ने की।

द्वितीय सत्र में, आशिम शेखर पॉल, सिलादित्य सेन और पल्लव मुखोपाध्याय ने राय के फ़िल्म निर्देशन की नवीन तकनीकों, राय के फ़िल्म निर्माण पर साहित्य के प्रभाव और फ़िल्म निर्माण के प्रकारों पर बात की। सत्र की अध्यक्षता चिन्मय गुहा ने की। अध्यक्ष ने सत्र के अंत में प्रस्तुत आलेखों का समाहार प्रस्तुत किया। सत्र का संचालन साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश और कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मिहिर कुमार साहू ने किया। सत्र की समाप्ति के पश्चात्, फ़िल्म प्रभाग, भारत सरकार द्वारा निर्मित राय पर दो वृत्तचित्रों का प्रदर्शन किया गया।

26 नवंबर 2021 को साहित्य अकादेमी के सभागार में 'सत्यजीत राय जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी' के दूसरे दिन तृतीय सत्र की अध्यक्षता अशोक विश्वनाथन ने की। ओइंड्रिला हाजरा प्रतापन, चंडी मुखर्जी और रंजीत साहा ने इस सत्र में भाग लिया। ओइंद्रिला हाजरा प्रतापन ने *पराश पत्थर* के विशेष संदर्भ में राय की फ़िल्मों में दृश्यों और छवियों के माध्यम से बुद्धि और हास्य पर बात की। चंडी मुखर्जी ने सत्यजीत राय की कल्पना के अनुसार मनोरंजन मूल्य के महत्त्व पर बात की। उन्होंने राय के पिता और दादा द्वारा विनोदी लेखन की परंपरा पर भी प्रकाश डाला। रंजीत साहा ने राय के लेखन के हिंदी अनुवाद और रूपांतरण पर बात की। राय के उपन्यासों में व्यंग्य संवादों पर बात करते हुए, श्री मुखर्जी ने राय के विभिन्न लेखनों का उल्लेख किया और उन्होंने राय द्वारा कई दृश्यों के निर्माण की ओर भी ध्यान दिलाया, जिसने दर्शकों को ख़ूब गुदगुदाया। राय के लेखन के हिंदी अनुवाद पर बात करते हुए, प्रो. साहा ने उनके अनुवादों में से कई उदाहरण भी प्रस्तुत किए। उन्होंने विशेष रूप से युवाओं के लिए राय के लेखन का उल्लेख भी किया। वक्ताओं के भाषणों को सारांशित करते हुए, अध्यक्ष श्री विश्वनाथन ने राय की बुद्धि और हास्य पर पर प्रकाश डाला। चतुर्थ सत्र में रिद्धि गोस्वामी, उज्ज्वल चक्रवर्ती और मधुजा मुखर्जी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा एस.वी. रमन ने सत्र की अध्यक्षता। श्री गोस्वामी ने पटकथा के विकास पर बात की तथा उज्ज्वल चक्रवर्ती और मधुजा मुखर्जी ने एक फ़िल्म की संरचना के पीछे कार्य करने वाले तत्त्वों और *जलसागर* और *शतरंज के खिलाड़ी* फ़िल्मों के नृत्य और संगीत पैटर्न पर बात की। अपने *खेरोर खाता* में राय द्वारा लिखे गए अपु के प्रसिद्ध चरित्र की अवधारणा प्रस्तुत करते हुए राय की सूक्ष्म विवरणों की योजना का विश्लेषण प्रस्तुत किया। उन्होंने विशेष रूप से अपनी दो फ़िल्मों, *अपुर संसार* और *प्रतिद्वंद्वी* पर आधारित अपनी बात रखी। उज्ज्वल चक्रवर्ती ने राय की फ़िल्मों के विभिन्न दृश्यों का मनोरंजक विश्लेषण प्रस्तुत किया। उन्होंने उन दृश्यों के प्रभाव के गणितीय पैटर्न का विश्लेषण किया और उनकी तुलना कुछ अन्य प्रसिद्ध फ़िल्मों से की। राय की फिल्मों में प्रदर्शन की कलात्मक प्रस्तुति पर बात करते हुए, प्रो. मुखर्जी ने फ़िल्मों के कुछ वीडियो प्रस्तुत किए जो उनके तर्कों के पूरक के रूप में काम करते थे। वक्ताओं के भाषणों को सारांशित करते हुए, अध्यक्ष श्री रमन ने फ़िल्म बनाते समय राय की रणनीतियों पर बल दिया। समापन सत्र में कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मिहिर कुमार साहू ने सुश्री अपर्णा सेन का परिचय कराया। डॉ. साहू ने सुश्री सेन पर संक्षेप में बात की। समापन सत्र को प्रख्यात फ़िल्मी हस्ती सुश्री अपर्णा सेन ने संबोधित किया। उन्होंने सत्यजीत राय द्वारा निर्देशित चार फ़िल्मों में कार्य किया, जिसकी शुरुआत 1961 में त्रिपिटक *तीन कन्या* के तीसरे अध्याय से शुरू होती है। उन्होंने राय की फ़िल्म निर्माण की शैली के जादुई क्षणों के निर्माण पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने भारत में अंग्रेज़ी फ़िल्मों के उद्भव और राय ने उन्हें किस प्रकार प्रोत्साहित किया पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने राय की कई फ़िल्मों का विश्लेषण भी प्रस्तुत किया और कई फ़िल्मों के माध्यम से राय के पात्रों के निर्माण और विभिन्न संदर्भों में उन्हें कैसे विकसित किया गया आदि बिंदुओं पर बात की। उन्होंने सत्यजीत राय के साथ अपने व्यक्तिगत अनुभव पर भी संक्षेप में बात की। धन्यवाद प्रस्ताव साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने प्रस्तुत किया। डॉ. देवेश ने सुश्री सेन को धन्यवाद देते

हुए संगोष्ठी के सफल समापन पर प्रसन्नता व्यक्त की। अगले दिन श्याम बेनेगल द्वारा निर्देशित तथा फ़िल्म प्रभाग, भारत सरकार द्वारा सत्यजीत राय पर निर्मित फ़िल्म का प्रदर्शन किया गया।

'सुकुमारी भट्टाचार्य जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी'

22 दिसंबर 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने सुबोध सरकार, नृसिंह प्रसाद भादुड़ी, अरिंदम चक्रवर्ती, तापती मुखोपाध्याय, मोउ दासगुप्ता, दिधिति विश्वास चक्रवर्ती, बिजोया गोस्वामी और तपोधीर भट्टाचार्य जैसे प्रसिद्ध बाङ्ला लेखकों के साथ 22 दिसंबर 2021 को आभासी मंच के माध्यम से 'सुकुमारी भट्टाचार्य जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी' का आयोजन किया।

स्वागत भाषण साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने दिया। उन्होंने वक्ताओं का परिचय श्रोताओं से भी कराया। आरंभिक भाषण साहित्य अकादेमी की बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक सुबोध सरकार ने प्रस्तुत किया। उन्होंने सुकुमारी भट्टाचार्य को उत्कृष्ट भारतविद् के रूप में बताया। उन्होंने तार्किक और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से स्वयं की ओर खोज करने पर बल दिया। वह बहुभाषी थीं तथा उन्हें कई भाषाओं का ज्ञान था। उद्घाटन व्याख्यान डॉ. नृसिंह प्रसाद भादुड़ी ने प्रस्तुत किया। उन्होंने प्रोफ़ेसर सुकुमारी भट्टाचार्य के साथ उनके अनुभवों को श्रोताओं के साथ साझा किया। उन्होंने अपने छात्रों के साहित्यिक करियर के विकास में उनके योगदान की सराहना की। प्रोफ़ेसर

संगोष्ठी का दृश्य

भादुड़ी ने सुकुमारी भट्टाचार्य के ज्ञान के विशाल क्षेत्र पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर प्रोफ़ेसर अरिंदम चक्रवर्ती ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने सुकुमारी भट्टाचार्य के कई कार्यों का उल्लेख किया, विशेष रूप से वेदों पर किए गए। उनके कार्यों के बारे में बताया। उन्होंने गरीबी के मुद्दे पर ज़ोर दिया जैसा कि वैदिक प्रवचन में दर्शाया गया है। उन्होंने भूख के विभिन्न पहलुओं और विभिन्न आयामों में पर भी प्रकाश डाला। उद्घाटन सत्र के समापन भाषण में प्रोफ़ेसर तापती मुखोपाध्याय ने सुकुमारी भट्टाचार्य के जीवन पर संक्षेप में बात की। उन्होंने बताया कि सुकुमारी का जन्म ईसाई माता-पिता सारसी कुमार और संतबाला दत्ता के यहाँ कोलकाता में हुआ था। भट्टाचार्य जी ने अपनी स्कूली शिक्षा सेंट मार्गरेट स्कूल से प्राप्त की। उन्होंने प्रथम श्रेणी के साथ संस्कृत में स्नातक की उपाधि प्राप्त की थी तथा कलकत्ता विश्वविद्यालय में ईशान छात्रवृत्ति के लिए योग्य हो गईं, लेकिन ईसाई होने के कारण उन्हें छात्रवृत्ति की बंदोबस्ती नीति के अनुसार अपात्र समझा गया। इससे वह संस्कृत परास्नातक का अध्ययन न करने के लिए हतोत्साहित हुईं। उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से अंग्रेज़ी की पढ़ाई की। उन्होंने प्रो. अमल कुमार भट्टाचार्जी से शादी की तथा लेडी ब्रेबोर्न कॉलेज में अंग्रेज़ी के प्रो. के रूप में कार्य किया। वर्ष 1954 में, उन्होंने निजी तौर पर संस्कृत में परास्नातक की डिग्री हासिल की। बुद्धदेव बसु ने वर्ष 1957 में उन्हें तुलनात्मक साहित्य विभाग, जादवपुर विश्वविद्यालय में पढ़ाने के लिए आमंत्रित किया, जहाँ उन्होंने बाद में संस्कृत विभाग में प्रोफ़ेसर के रूप में भी कार्य किया। सुकुमारी भट्टाचार्य को संस्कृत, पाली, ग्रीक, फ्रेंच, जर्मन आदि भाषाओं का भी ज्ञान था। शैक्षणिक सत्र की अध्यक्षता प्रोफ़ेसर तपोधीर भट्टाचार्य ने की। इस सत्र में प्रो. मोउ दासगुप्ता, प्रो. दीधिति विश्वास चक्रवर्ती और प्रो. बिजोया गोस्वामी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. मोउ दासगुप्ता ने अपने विभिन्न लेखनों के महत्त्व, अपने शोध के विषयों तथा विभिन्न विषयों पर किए गए अपने लेखन के बारे में भी सविस्तार से बताया। प्रो. बिजोया गोस्वामी ने उनकी शिक्षाओं पर बात

की क्योंकि वह ख़ुद सुकुमारी भट्टाचार्य की छात्रा थीं। उन्होंने पौराणिक कथाओं पर चर्चा करते हुए सुकुमारी भट्टाचार्य के दृष्टिकोण पर भी प्रकाश डाला। प्रो. दिधिति विश्वास चक्रवर्ती ने सुकुमारी भट्टाचार्य के पुराण ग्रंथों पर बात की, विशेष रूप से *वेदे संगशोय ओ नास्तिक्य* पुस्तक पर। सभी वक्ताओं ने सुकुमारी भट्टाचार्य के जीवन और कार्यों के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में प्रोफ़ेसर तपोधीर भट्टाचार्य ने श्रोताओं को अपनी शिक्षिका सुकुमारी भट्टाचार्य के साथ किए गए व्यक्तिगत पत्राचार की जानकारी दी। उन्होंने सुकुमारी भट्टाचार्य के लेखन के विभिन्न पहलुओं पर भी प्रकाश डाला।

'मकरंद दवे जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी'

05 जनवरी 2022 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई ने 5 जनवरी 2022 को अपनी वेबलाइन साहित्य शृंखला के अंतर्गत 'मकरंद दवे जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी' का आयोजन किया।

संगोष्ठी की अध्यक्षता गुजराती परामर्श मंडल के संयोजक विनोद जोशी ने की। उद्घाटन सत्र में राजेश पंड्या ने कहा कि संतवाणी की परंपरा में मकरंद दवे प्रमुख कवि थे। उन्होंने कविताओं की विभिन्न विधाओं में लिखा तथा कई प्राचीन रचनाओं को नए रूपों में फिर से घड़ा। इस अवसर पर श्री दवे को गुजराती साहित्य में एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व बताते हुए विनोद जोशी ने अपनी कृतियों के कुछ उदाहरण भी प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी के चर्चा खंड में लेखक-आलोचक दीपक जोशी ने मकरंद दवे के पत्र-साहित्य पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। मकरंद दवे के साहित्य में आध्यात्मिकता पर मनोज रावल ने तथा मकरंद दवे की कविता में माधुर्य विषय पर निरंजन राजगुरु ने अपना आलेख प्रस्तुत किया।

अध्यक्षीय व्याख्यान में विनोद जोशी ने कहा कि मकरंद दवे ने मानवीय चेतना, रचनात्मकता और मानव जीवन में सत्य के ज्ञान की अभिव्यक्ति के बारे में लिखा है।

कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई के प्रभारी अधिकारी, डॉ. ओम प्रकाश नागर ने किया।

'स्वाधीनता संग्राम में लेखक' विषय पर संगोष्ठी

15 अगस्त 2021, नई दिल्ली

भारत के स्वाधीनता दिवस एवं 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के अवसर पर साहित्य अकादेमी के दिल्ली कार्यालय में 'स्वाधीनता संग्राम में लेखक' विषय पर 15 अगस्त 2021 को संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष एवं प्रख्यात कन्नड साहित्यकार डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने की। संगोष्ठी की शुरुआत में अपना स्वागत व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने कहा कि भारत साहित्य की भूमि है और साहित्य जन्म से लेकर मृत्यु तक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। न केवल पत्रकारिता और क्षेत्रीय भाषा साहित्य ने, बल्कि उनके साहित्यिक साहित्य ने भी स्वतंत्रता संग्राम में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' पर साहित्य अकादेमी द्वारा दो वर्षों के कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी देते हुए उन्होंने कहा कि अकादेमी इस अवसर पर कुछ विशेष पुस्तकें भी प्रकाशित करेगी। अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि स्वतंत्रता का साहित्य

स्वागत वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव

से गहरा संबंध है। आज भी पुस्तकें हमें जागरूक करने का श्रेष्ठ कार्य कर रही हैं।

मधु आचार्य 'आशावादी' (राजस्थानी), बलवंत जानी (गुजराती), रामवचन राय एवं उषा किरण खान (मैथिली और भोजपुरी), चंद्रभान ख्याल (उर्दू), राधावल्लभ त्रिपाठी (संस्कृत), सोमा बंद्योपाध्याय (बाङ्ला), आर. वेंकटेश (तमिऴ), दिनकर कुमार (असमिया), विजयानंद सिंह (ओड़िआ), हरिराम मीणा (आदिवासी साहित्य), राजेंद्र राव (हिंदी पत्रकारिता) ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान संबद्ध भाषाओं के पत्रकारों और लेखकों द्वारा अपनी-अपनी भाषाओं में निभाई गई महत्त्वपूर्ण भूमिकाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने यह भी कहा कि ऐसे कई नाम हैं जिन्हें हम आज भूल गए हैं। स्वतंत्रता संग्राम में पत्रकारिता की अहम भूमिका का ज़िक्र करते हुए तरुण विजय ने कहा कि भारतीय भाषाओं के साहित्य को आपस में जोड़ने में साहित्य अकादेमी अहम भूमिका निभा रही है।

जम्मू-कश्मीर और लद्दाख में स्वतंत्रता के लिए काम कर रहे पत्रकारों और लेखकों का ज़िक्र करते हुए दिनेश कुमार चौबे ने कहा कि इन क्षेत्रों के पत्रकारों और लेखकों की चर्चा कम होती है लेकिन हमें यहाँ पत्रकारों और लेखकों की भूमिका याद रखनी चाहिए।

इस अवसर पर साहित्य अकादेमी की राजभाषा पत्रिका *आलोक* का लोकार्पण भी किया गया।

साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने अपने समापन व्याख्यान में कहा कि देश जब गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था तब भी देश के साहसी लेखकों की कलम आज़ाद थी। कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने किया।

पुस्तक लोकार्पण : आधुनिक ईरानी कविताएँ

06 अक्तूबर 2021, नई दिल्ली

अकादेमी द्वारा प्रकाशित *आधुनिक ईरानी कविताएँ* का पुस्तक लोकार्पण साहित्य अकादेमी, रवीन्द्र भवन में आयोजित किया गया। साहित्य अकादेमी के

पुस्तक लोकार्पण का दृश्य

सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव, मोहम्मद अली रब्बानी, सांस्कृतिक परामर्शदाता, ईरान संस्कृति केंद्र, सईदा हुसैनजानी, निदेशक, अनुवाद विभाग, तेहरान, अली रज़ा काजवे, उप-सांस्कृतिक सलाहकार, ईरान संस्कृति हाउस, एनसीईआरटी के पूर्व अध्यक्ष, जे.एस. राजपूत, अखलाक अहन, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर और पुस्तक के अनुवादक अज़ीज़ महदी इस अवसर पर उपस्थित थे।

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने श्रोताओं का स्वागत किया और कहा कि भारत और ईरान प्राचीन समय से सांस्कृतिक संबंध साझा करते आ रहे हैं और कविता दोनों संस्कृतियों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उन्होंने यह भी विश्वास दिलाया कि साहित्य अकादेमी परस्पर-अनुवाद की इस शृंखला को जीवित रखेगी। ईरान संस्कृति केंद्र के सांस्कृतिक सलाहकार मोहम्मद अली रब्बानी ने कहा कि दो देशों को जानने का सबसे अच्छा तरीका साहित्य है। यह विभिन्न देशों के बीच संचार का सबसे अच्छा और सबसे सुंदर माध्यम है। अनुवाद के लिए ईरान और भारत के बीच दो हज़ार साल पुराने रिश्ते को याद करते हुए उन्होंने कामना की कि यह सिलसिला भविष्य में भी जारी रहे। अनुवाद केंद्र, तेहरान के निदेशक सईदा हुसैनजानी ने भी अपने विचार साझा किए। उन्होंने कविता की आवश्यकता पर बल दिया और अनुवाद विभाग, तेहरान द्वारा किए गए कार्यों पर प्रकाश डाला। अली रज़ा काजवे ने अनुवाद की आवश्यकता और ईरानी संस्कृति में कविता के महत्त्व

पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि ईरान में कला की समस्त विधाओं में कविता का प्रथम स्थान है। एनसीईआरटी के पूर्व अध्यक्ष जे.एस. राजपूत ने साथ रहने की कला को चित्रित करने में साहित्य की भूमिका के बारे में बताया। जेएनयू के प्रोफ़ेसर अखलाक अहन ने कहा कि यह पुस्तक विगत 100 वर्षों से ईरानी कविता का प्रतिनिधित्व करती है। इस संकलन में, लगभग 99 कवियों की कविताओं को चुना गया है। इस संकलन द्वारा हम उन मनोदशाओं के बारे में जान पाएँगे जिनमें कालजयी के साथ-साथ आधुनिक ईरानी कविताएँ भी लिखी गई हैं।

'युवाओं की नई दिशाएँ और आकांक्षाएँ' पर परिसंवाद

22 नवंबर 2021, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह के अवसर पर 'युवाओं की नई दिशाएँ और आकांक्षाएँ' पर परिसंवाद का आयोजन किया। प्रख्यात पत्रकार अनंत विजय, संजय द्विवेदी निदेशक, भारतीय जनसंचार संस्थान, बालेंदु शर्मा 'दधीच', तकनीशियन, पंकज चतुर्वेदी, संपादक एवं बाल साहित्यकार, कवि और कला समीक्षक, राजेश कुमार व्यास और गीताश्री, कहानीकार और पत्रकार, ने कार्यक्रम में भाग लिया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव का लिखित स्वागत भाषण, अकादेमी के हिंदी संपादक तथा कार्यक्रम संचालक अनुपम तिवारी ने पढ़कर सुनाया। उन्होंने कहा कि नई पीढ़ी में पढ़ने के प्रति रुचि जगाने के लिए नए तकनीकी साधनों की मदद से नए विषयों को पढ़ाया जाना चाहिए। राजेश कुमार व्यास ने कहा कि यद्यपि प्रौद्योगिकी के विभिन्न माध्यमों ने पाठ्यपुस्तकों को आसानी से उपलब्ध करा दिया है, यह कहना ग़लत होगा कि इसके कारण लोगों में पुस्तक पढ़ने की प्रवृत्ति खो गई है। उन्होंने अच्छी और सस्ती पुस्तकों के प्रकाशन और उत्पादन के लिए साहित्य अकादेमी और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की प्रशंसा की और कहा कि इसी प्रकार के प्रयास अन्य संस्थानों/प्रकाशकों द्वारा भी किए जाने चाहिए। प्रख्यात पत्रकार और निदेशक, आईआईएमसी, संजय द्विवेदी ने मुद्रित पुस्तकों की पहुँच बढ़ाने के लिए किए गए प्रयासों के पर बात की। उन्होंने भाषाई प्रकाशन के महत्त्व और पुस्तकालयों के रखरखाव में सुधार की आवश्यकता पर भी बल दिया।

बालेंदु शर्मा 'दधीच' ने कहा कि तकनीक के कारण नया पाठक वर्ग बना है और पढ़ने की आदतों में भी बदलाव आया है। उन्होंने मोबाइल और इंटरनेट के वर्चस्व के आँकड़े देते हुए कहा कि पुस्तकों की दुनिया अब आम पाठकों के लिए खुल गई है और इसका दायरा अब सीमित नहीं है। डिजिटल माध्यम पर उपलब्ध सामग्री सदैव रहेगी तथा वह निःशुल्क भी उपलब्ध है। इसलिए यह समय और देश की सीमाओं को पार कर जाता है।

प्रख्यात बाल साहित्यकार पंकज चतुर्वेदी ने बाल साहित्य के बारे में विस्तार से बात करते हुए कहा कि बच्चे भी तकनीक से अछूते नहीं हैं। उन्हें पुरानी कथा-कहानियों के अलावा कुछ नए प्रकार के पठन से परिचित कराया जाना चाहिए, ताकि वे पढ़ने के आनंद को समझ सकें। कथाकार और पत्रकार, श्रीमती गीताश्री ने कहा कि बेहतर बाल साहित्य के साथ-साथ हमें ग़ैर-कथा शैलियों को भी समृद्ध करने की आवश्यकता है। उन्होंने लेखकों से पाठक वर्ग बनाने का भी आग्रह किया। वरिष्ठ पत्रकार अनंत विजय ने कहा कि पुस्तकों में रुचि पैदा करने के लिए लेखकों को विषयों में विविधता लानी होगी और एक विशेष विचारधारा के अनुसार एजेंडा संचालित लेखन से बचना होगा। उन्होंने आगे कहा कि आज के लेखकों को अपने लेखन में युवाओं की आकांक्षाओं और स्वर को प्रतिबिंबित करना होगा, तभी एक नए पाठक वर्ग का उदय होगा।

'राघवाचार्य और बाबू कृष्णनंदन सिंह जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी'

27-28 अगस्त 2021, सहरसा

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली ने मैथिली विभाग, पी.जी. सेंटर, सहरसा के सहयोग से 27-28 अगस्त 2021 को पी.जी. सेंटर, सहरसा, बिहार में द्वि-दिवसीय 'राघवाचार्य और बाबू कृष्णनंदन सिंह जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी' का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ. एन. सुरेश बाबू ने अपने स्वागत वक्तव्य में साहित्य अकादेमी के साहित्य और उसके प्रचार-प्रसार में अमूल्य योगदान पर विस्तृत व्याख्यान दिया। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि कैसे राष्ट्र के साथ साहित्य और फलस्वरूप समाज के साथ राष्ट्र एक साथ जुड़े हैं। उन्होंने मैथिली साहित्य के विकास में साहित्य अकादेमी के योगदान पर भी प्रकाश डाला। साहित्य अकादेमी की मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक अशोक कुमार झा 'अविचल' ने अपने आरंभिक वक्तव्य में वर्तमान में मैथिली साहित्य की गतिविधियों, मैथिली साहित्य में साहित्य अकादेमी के योगदान तथा आगामी कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला। उद्घाटन व्याख्यान देते हुए कुलपति आर.के.पी. रमन ने साहित्य अकादेमी से मिथिला और मैथिली के लिए और अधिक कार्य करने का आग्रह किया। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि मैथिली भाषा दुनिया की सबसे मधुर भाषाओं में से एक है।

आरंभिक वक्तव्य देते हुए डॉ. अशोक कुमार झा 'अविचल'

रामानन्द झा 'रमन' ने अपने बीज-भाषण में राघवाचार्य और बाबू कृष्णदान सिंह के जीवन और साहित्य पर प्रकाश डाला तथा इन दो महान लेखकों पर और अधिक शोध करने की आवश्यकता पर बल दिया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि समकुलपति आभा सिंह ने भी अपने विचार प्रकट किए। अपने भाषण में विशिष्ट अतिथि बीना ठाकुर ने मैथिली साहित्य की प्राचीनता और श्रेष्ठता पर प्रकाश डाला। अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए रंजीत कुमार सिंह ने राघवाचार्य और बाबू कृष्णदान सिंह की साहित्यिक, सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना पर प्रकाश डाला। साहित्य अकादेमी की मैथिली परामर्श मंडल के सदस्य राम नरेश सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

कार्य सत्र में शंकर झा ने 'राघवाचार्य का व्यक्तित्व और समग्र रचना का महत्त्व' पर, नारायण झा ने 'राधवाचार्य के क्रांतिकारी गीतों में राष्ट्रीय चेतना का प्रतिबिंब' पर, राम दत्त सिंह ने 'बाबू कृष्णनंदन सिंह का जीवन और समग्र रचना का महत्व' पर, अरुण कुमार ने 'कल्पकारिका में मानव संवेदना' पर तथा लालपरी देवी ने 'सीता रामायण में मानवीय संवेदनशीलता' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। महेंद्र झा और केशकर ठाकुर ने क्रमशः दोनों सत्रों की अध्यक्षता की।

संगोष्ठी के दूसरे दिन प्रथम सत्र की अध्यक्षता कुलानंद झा ने की, जिन्होंने कविता के आधार पर राघवाचार्य की रचनाओं का मूल्यांकन प्रस्तुत किया तथा उन पर नए दृष्टिकोण से समग्र रूप से मूल्यांकन करने की आवश्यकता पर बल दिया। अतुलेश्वर झा ने 'मधुकनक कविता' पर, प्रशांत कुमार मनोज ने 'राघवाचार्य का मैथिली भाषा और साहित्य में योगदान' पर तथा कृष्ण मोहन ठाकुर 'चुन्नू' ने 'राघवाचार्य की कविता की सुंदरता' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

अंतिम और चतुर्थ सत्र में शिव प्रसाद यादव ने 'बनकुसुम की सुंदरता', रमाकांत चौधरी ने 'राघवाचार्य, राष्ट्रीय चेतना के वाहक' तथा नरेंद्र नाथ ने 'राघवाचार्य की कविता की सशक्त भाषा का आकलन' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। अध्यक्षीय वक्तव्य डी.एन.

शाह ने प्रस्तुत किया। रामनरेश सिंह ने समापन वक्तव्य प्रस्तुत किया।

डॉ. एन. सुरेश बाबू ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया तथा इस आयोजन को सफलतापूर्वक आयोजित करने में सभी का सहयोग देने के लिए उनकी सराहना की।

'बुद्धिधारी सिंह 'रमाकर' जन्म शतवार्षिकी' परिसंवाद

12 नवंबर 2021, मधुबनी

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली ने साहित्यिकी, सरिसब-पाहिए मधुबनी के सहयोग से 'बुद्धिधारी सिंह रमाकर जन्म शतवार्षिकी' विषय पर 12 नवंबर 2021 को सभागार, लक्ष्मीवती संस्कृत महाविद्यालय, सरिसब-पाहिए मधुबनी, बिहार में परिसंवाद का आयोजन किया।

यह कार्यक्रम दो सत्रों में विभक्त था। प्रथम सत्र में साहित्य अकादेमी की मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. अशोक कुमार झा 'अविचल' ने दीप प्रज्जवलन के पश्चात् गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। स्वागत वक्तव्य के साथ-साथ उन्होंने विषय प्रवर्तन भी किया। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों से आए प्रतिनिधियों का स्वागत किया तथा बुद्धिधारी सिंह रमाकर के सर्वांगीण व्यक्तित्व और निर्माण के बारे में जानकारी दी। उसके बाद, प्रसिद्ध मैथिली लेखक और साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता श्रीमती नीरजा रेणु ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने डॉ. रमाकर के व्यक्तित्व बहुआयामी रचनात्मकता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि प्रख्यात लेखिका डॉ. श्रुतिधारी सिंह थीं तथा डॉ. जगदीश मिश्र ने अध्यक्षीय व्याख्यान प्रस्तुत किया। अपने व्याख्यान में डॉ. मिश्र ने बताया कि पंडित रमाकर पारंपरिक के साथ-साथ आधुनिक अवधारणा के लेखक भी थे। अंत में, साहित्य अकादेमी की मैथिली परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. अजीत मिश्र ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध मैथिली लेखक डॉ. शिव शंकर श्रीनिवास ने की। इस सत्र में मैथिली के चार विद्वानों—डॉ. अरविंद झा, डॉ. फूलो पासवान, डॉ. आदित्यनाथ झा और डॉ. सत्येंद्र कुमार झा द्वारा आलेख प्रस्तुत किए गए। सभी ने अलग-अलग विषयों पर अपने व्याख्यान प्रस्तुत किए। डॉ. अरविन्द झा ने 'रमाकर : व्यक्तित्व और सृजन', डॉ. फूलो पासवान ने 'मैथिली के अद्वितीय लेखक रमाकर', डॉ. आदित्य नाथ झा ने 'महाकवि रमाकर तथा डॉ. सत्येंद्र कुमार झा ने 'मैथिली खंडकाव्य और रमाकर' विषयों पर क्रमशः अपने आलेख प्रस्तुत किए। रमाकर जी के समस्त पहलुओं पर इस परिसंवाद में चर्चा की गई। अंत में पं. विद्यानाथ झा ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

'सुधांशु शेखर चौधरी जन्म शतवार्षिकी' संगोष्ठी

26-27 फ़रवरी 2022, मुज़फ़्फ़रपुर

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली ने स्नातकोत्तर मैथिली विभाग, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुज़फ़्फ़रपुर और ललित नारायण तिरहुत महाविद्यालय, मुज़फ़्फ़रपुर के सहयोग से 26-27 फ़रवरी 2022 को द्विदिवसीय 'सुधांशु शेखर चौधरी जन्म शतवार्षिकी' संगोष्ठी का आयोजन

परिसंवाद का दृश्य

आरंभिक वक्तव्य देते हुए डॉ. अशोक कुमार झा 'अविचल'

किया। साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली के उपसचिव डॉ. एन. सुरेश बाबू ने औपचारिक रूप से गणमान्य व्यक्तियों, मीडियाकर्मियों तथा साहित्य प्रेमियों का स्वागत किया और उन्होंने सामाजिक संरचना में वैश्विक परिवर्तनों में मातृभाषा की रक्षा करने की आवश्यकता पर बल दिया। डॉ. बाबू ने साहित्यिक योगदान के माध्यम से समाज के उत्थान के लिए समकालीन धारणा की भूमिका पर भी प्रकाश डाला। साहित्य अकादेमी के मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. अशोक कुमार झा 'अविचल' ने उद्घाटन व्याख्यान प्रस्तुत किया तथा मिथिला संस्कृति और मैथिली साहित्य के संवर्धन में सुधांशु शेखर चौधरी के योगदान के बारे में बताया। प्रख्यात मैथिली लेखक प्रो. इंद्रकांत झा ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया तथा सुधांशु शेखर चौधरी के अद्वितीय योगदान पर प्रकाश डाला। बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुज़फ़्फ़रपुर के समकुलपति प्रो. रवींद्र कुमार ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। ललित नारायण तिरहुत महाविद्याय, मुज़फ़्फ़रपुर के प्राचार्य डॉ. संजय ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया तथा संगोष्ठी आयोजित करने के लिए साहित्य अकादेमी को विशेष रूप से धन्यवाद दिया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य, प्रख्यात रसायन वैज्ञानिक और मैथिली विद्वान प्रोफ़ेसर प्रेम मोहन मिश्र ने की। श्री संतोष कुमार झा ने 'सुधांशु शेखर चौधरी की संपादन कला वैशिष्ट्य', श्री बुचरू पासवान ने 'सफल निबंधकार सुधांशु शेखर चौधरी', प्रो. पंकज पराशर ने 'एकांकी विधा में सुधांशु शेखर चौधरी का योगदान' तथा श्री राजन कुमार सिंह ने 'सुधांशु शेखर चौधरी व्यक्तित्व और कृतित्व' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी की मैथिली परामर्श मंडल के सदस्य और सहरसा, बिहार के प्रख्यात मैथिली लेखक प्रो. रामनरेश सिंह ने की। साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता डॉ. मुरलीधर झा ने 'सुधांशु शेखर चौधरी के नाटकों में व्यक्त यथार्थवादी दृष्टिकोण' पर तथा श्री विजयेंद्र झा ने 'नाटककार के रूप में सुधांशु शेखर चौधरी' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी के दूसरे दिन तृतीय सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात मैथिली लेखक प्रो. इंदिरा झा ने की। बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय के प्रो. इंदुधर झा ने 'ई बतहा संसार कैर मनोवैज्ञानिक' पर, श्री रत्नकृष्ण झा ने 'सुधांशु शेखर चौधरी की आत्मकथा : हम साहित्यकार आ संपादक' पर, श्री हीरेंद्र कुमार झा ने 'सुधांशु शेखर चौधरी के नाटकों में यथार्थवादी दृष्टिकोण' पर तथा सुश्री कुमारी संध्या ने 'आधुनिक कसौटी पर सुधांशु शेखर चौधरी का कथा साहित्य' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध मैथिली विद्वान श्री लक्ष्मण झा 'सागर' ने की। श्री मंज़र सुलेमान ने 'सुधांशु शेखर चौधरी की कविता में समकालीन बोध' पर, श्री हितनाथ झा ने 'मैथिली शैली निर्धारण और सुधांशु शेखर चौधरी' तथा श्री उमेश मंडल ने 'सुधांशु शेखर चौधरी के उपन्यासों में चित्रित समाज' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। अंत में डॉ. अशोक कुमार झा 'अविचल' ने संगोष्ठी आयोजित करने की अनुमति देने के लिए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव को धन्यवाद दिया।

'टी. थोइबी देवी के जीवन और कार्य' जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी

29 नवंबर 2021, इंफ़ाल

साहित्य अकादेमी ने प्रसिद्ध मणिपुरी लेखकों और विद्वानों जैसे एन. किरणकुमार सिंह, पी. गुनिंद्रो, एच. बिहारी सिंह कुन्जो सिंह, एच. श्यामसुंदर सिंह, एन. विद्यासागर सिंह, के. शांतिबाला देवी, राजेन तोइजंबा, के. मेमटन देवी, थिंगनाम जोयश्री देवी, वाईखोम रोमेश और एन. अहनजाओ सिंह के साथ 29 नवंबर 2021 को जवाहरलाल नेहरू मणिपुर नृत्य अकादेमी इंफ़ाल के सभागार में 'टी. थोइबी देवी के जीवन और कार्य' विषय पर जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन किया।

संगोष्ठी का दृश्य

स्वागत भाषण साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रस्तुत किया। उन्होंने उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि प्रोफ़ेसर पी. गुनिंद्रो, कुलपति, मणिपुर संस्कृति विश्वविद्यालय, इंफ़ाल, का स्वागत किया। संगोष्ठी में प्रोफ़ेसर एच. बिहारी सिंह, अध्यक्ष, सांस्कृतिक मंच, मणिपुर और अन्य लेखक तथा विद्वान भी उपस्थित थे।

डॉ. के. श्रीनिवासराव ने कहा कि मानव इतिहास विभिन्न क्षेत्रों में लेखकों, विचारकों, दार्शनिकों और वैज्ञानिकों आदि द्वारा लाए गए परिवर्तनाँ के ज्वलंत उदाहरणों से भरा है। उन्होंने थोइबी देवी के बहुमुखी कार्यों के बारे में बताया। डॉ. राव ने कहा कि थोइबी ने अपने कार्यों से महिलाओं के लिए सकारात्मक विचारों और विकास के विचारों को प्रेरित किया। उन्होंने उल्लेख किया कि थोइबी देवी ने मानवता के महान पक्ष को चित्रित करके अपने विभिन्न कार्यों के माध्यम से लोगों के जीवन में कई बदलाव किए। उन्होंने इस बात की सराहना की कि उनके कार्य भारत की विविधता में एकता की गवाही देते हैं। उन्होंने अंग्रेज़ी में लिखने वाली युवा मणिपुरी महिलाओं की सराहना की। उन्होंने कहा कि मणिपुर की महिला लेखकों की वर्तमान उपलब्धियों में खेल्लमबम थोइबी का योगदान है, जिन्होंने आने वाली पीढ़ियों के लिए मार्ग प्रशस्त किया। डॉ. राव ने अपने दृढ़ विश्वास को व्यक्त करते हुए निष्कर्ष निकाला कि युवा महिलाओं को कुमारी तखेल्लंबम थोइबी की भावना को अवशोषित करने तथा उनके नक्शेक़दम पर चलने की आवश्यकता और ऐसा करके हम उन्हें सही मायने में श्रद्धांजलि देंगे। साहित्य अकादेमी की मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक श्री एन. किरणकुमार सिंह ने आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने मणिपुरी महिला लेखिकाओं की साहित्यिक दुनिया में थोइबी देवी को एक स्वर्ण स्तंभ के रूप में बताया। उन्होंने एक रूढ़िवादी मणिपुरी समाज में थोइबी के कष्टों, अत्याचारों और पीड़ाओं को याद किया और उन लड़ाईयों को याद किया जो उन्होंने बदलाव के लिए लड़ीं थीं। उन्होंने यह कहते हुए निष्कर्ष निकाला कि थोइबी देवी उन महिलाओं के समुदाय की पहली आवाज़ थीं जो मणिपुरी पितृसत्तात्मक समाज में एक शब्द भी नहीं बोल सकती थीं। श्री हुइरेम बिहारी सिंह ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि थोइबी के उपन्यास स्त्रीवादी तत्वों से भरे हुए थे, इसलिए यह आम लोगों के दिलों को स्पर्श कर सकता है। उद्घाटन सत्र का समापन सांस्कृतिक मंच, मणिपुर के महासचिव श्री क्षेत्री राजेन के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. ख. कुंजो सिंह ने की। डॉ. नाओरेम विद्यासागर सिंह ने थोइबी देवी के गीतों पर आलेख प्रस्तुत किया गया। अंतिम आलेख थोइबी देवी की कविता पर था। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. राजेन तोजांबा ने की। के. मेमटन देवी, थिंगनाम जोयश्री देवी, वैखोम रोमेश और एन. अहानजाओ ने क्रमशः थोइबी के उपन्यासों, कहानियों, समीक्षात्मक निबंधों तथा नाटकों पर आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. माया नेप्रम ने प्रसिद्ध मणिपुरी कथाकार ई. रजनीकांत सिंह के एक उपन्यास पर अपनी टिप्पणियाँ प्रस्तुत कीं। श्रोताओं की ओर से टी. सुनीतिबाला ने महान महिला लेखिका के आदर्श पर अपने विचार प्रस्तुत किए। धन्यवाद प्रस्ताव डॉ. वाईखोम रोमेश द्वारा प्रस्तावित किया गया।

'गुरु तेग बहादुर जी की 400वीं जयंती के अवसर पर राष्ट्रीय संगोष्ठी'

1-2 मई 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने 1-2 मई 2021 को गुरु तेग बहादुर जी की 400वीं जयंती के उपलक्ष्य में आभासी मंच के अंतर्गत राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। वेबिनार की शुरुआत सुश्री निवेदिता सिंह तथा मंडली द्वारा

संगोष्ठी का दृश्य

गुरबाणी के मधुर गायन के साथ हुई। अपने स्वागत भाषण में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने गुरु तेग बहादुर जी के मुख्य संदेश प्रेम, त्याग, एकता और शांति पर प्रकाश डाला। साहित्य अकादेमी की पंजाबी परामर्श मंडल की संयोजक डॉ. वनिता ने अपने आरंभिक वक्तव्य में गुरु तेग बहादुर जी द्वारा प्रतिपादित मूल्यों को आगे बढ़ाने के महत्त्व पर बल दिया तथा उन्होंने नौवें ग्रंथ के छंदों का पाठ भी प्रस्तुत किया। प्रख्यात लेखक, विद्वान और भारतीय उन्नत अध्ययन संस्थान, शिमला के अध्यक्ष तथा महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. कपिल कपूर ने अपने उद्घाटन व्याख्यान में प्राचीन भारत के आदि शंकर और गुरु नानक के माध्यम से आधुनिक काल तक भारत की दीर्घ और समृद्ध परंपरा को चित्रित किया। प्रो. कपिल कपूर ने गुरु तेग बहादुर जी की 400वीं जयंती के समारोह का नेतृत्व करने के लिए भारत के माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की प्रशंसा की। पंजाब सेंट्रल यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. जगबीर सिंह ने अपने बीज-भाषण में बताया कि गुरु तेग बहादुर जी ने अपने कार्यों के माध्यम से किस प्रकार लोगों के बीच राष्ट्रीय एकता के विचार को जन्म दिया। उन्होंने यह भी बताया कि गुरु तेग बहादुर का दर्शन *ऋग्वेद* से शुरू होने वाली महान भारतीय परंपरा का अभिन्न अंग है, जिसे गुरु नानक जी द्वारा जनता के लिए उपलब्ध कराया गया था और गुरु तेग बहादुर का दर्शन नानक की इस गौरवशाली परंपरा का हिस्सा है। गुरु तेग बहादुर ने इस एकता को सभी से प्यार करने और स्वीकार करने के लिए कहा, लेकिन अपनी भूमि और परंपरा पर गर्व करने और धर्म के लिए स्वयं का बलिदान देने के लिए तैयार रहने के लिए भी कहा। 'धर्म' सत्य और रत दोनों है। अपने दर्शन के माध्यम से गुरु तेग बहादुर जी ने व्यक्तियों को मुक्त किया और समाज को बदल दिया। पंजाबी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. जसपाल सिंह ने सत्र की अध्यक्षता की और अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में प्रतिभागियों की प्रस्तुतियों का सार प्रस्तुत किया और फिर अपने छंदों के माध्यम से गुरु तेग बहादुर जी के मूल दर्शन के प्रत्येक तत्त्व को समझाया। उन्होंने प्रासंगिक छंदों को पढ़ा और इस बात पर प्रकाश डाला कि किस प्रकार गुरु तेग बहादुर जी का संपूर्ण दर्शन और जीवन धर्म, प्रेम, शांति, एकता, साहस और बलिदान को बनाए रखने के लिए समर्पित था, धर्म का यह पालन, जो सार्वभौमिक है, जो प्रत्येक समाज के लिए आवश्यक है तथा इस प्रकार गुरु तेग बहादुर न केवल सिखों के लिए बल्कि पूरी मानवता के लिए एक संत हैं। पंजाबी परामर्श मंडल के सदस्य श्री लारविंदर सिंह ने सत्र का संचालन किया।

'दीवान सिंह जन्म शतवार्षिकी' पर परिसंवाद

30 मार्च 2022 (आभासी मंच)

दिनांक 30 मार्च 2022 को अपराह्न 2 बजे से सायं 4:30 बजे तक साहित्य अकादेमी की वेबलाइन साहित्य शृंखला के अंतर्गत आभासी मंच पर 'दीवान सिंह जन्म शतवार्षिकी' पर परिसंवाद का आयोजन किया गया। पंजाबी परामर्श मंडल की संयोजक डॉ. वनिता ने अपने आरंभिक व्याखान में कार्यक्रम की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की और कहा कि दीवान सिंह की जन्म शतवार्षिकी का वर्ष 2020 था, किंतु यह कार्यक्रम कोविड-19 के कारण केवल 2022 में ही संभव हो सका। उन्होंने कहा कि दीवान सिंह ने गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर से लेखन एवं शिक्षण की अपनी यात्रा आरंभ की, तथा उन्हें न केवल रचनात्मक लेखन के लिए, वरन् उन्हें पंजाबी साहित्य की लगभग प्रत्येक विधा में लेखन का

परिसंवाद का दृश्य

श्रेय जाता है। मंजीत सिंह ने बीज-भाषण में दीवान सिंह के व्यक्तित्व और रचनात्मक कार्यों पर विचार-विमर्श किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता सतिंदर सिंह ने की। अगले सत्र की अध्यक्षता मनमोहन ने की थी। इक़बाल कौर सौंध, बलजीत कौर, मनजिंदर सिंह और जगविंदर जोधा ने इस सत्र के दौरान अपने आलेख प्रस्तुत किए। समस्त आलेख वक्ताओं में से कोई दीवान सिंह का छात्र, सहकर्मी अथवा पाठक के रूप में उनसे जुड़ा हुआ था। कार्यक्रम का समापन साहित्य अकादेमी के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

'रामचंद्र मिश्र जन्म शतवार्षिकी' पर संगोष्ठी

26 दिसंबर 2021, नयागढ़, ओडिशा

साहित्य अकादेमी ने नाट्यकार रामचंद्र मिश्र स्मृति संसद के सहयोग से न्यायमूर्ति बी.आर. सारंगी, बिजॉय कुमार शतपथी, बिजयानंद सिंह, बिजय के. बेहरा, रमेश बेहरा, सोमनाथ बिसोई और सदाशिव दास प्रसिद्ध ओड़िआ लेखकों की उपस्थिति में 26 दिसंबर 2021 को गोबिंद

स्वागत वक्तव्य देते हुए डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश

भवन दासपल्ला, नयागढ़, ओडिशा में 'रामचंद्र मिश्र जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी' का आयोजन किया।

स्वागत भाषण साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने प्रस्तुत किया। उन्होंने वक्ताओं का परिचय श्रोताओं से करवाया। उद्घाटन व्याख्यान डॉ. बी.आर. सारंगी, माननीय न्यायाधीश, ओडिशा उच्च न्यायालय द्वारा प्रस्तुत किया गया। उन्होंने रामचंद्र मिश्र के जीवन पर संक्षेप में बात की। अपने बीज-भाषण प्रख्यात ओड़िआ नाटककार श्री बिजॉय कुमार शतपथी ने प्रस्तुत किया। इस सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी की ओड़िआ परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. बिजयानंद सिंह ने प्रस्तुत किया। उन्होंने रामचंद्र मिश्र के नाटकों पर आधारित आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने सामान्य रूप से ओड़िआ साहित्य के प्रति उनके योगदान की भी चर्चा की। उद्घाटन सत्र में धन्यवाद प्रस्ताव श्री शरत चंद्र बेहरा, उपाध्यक्ष, नाट्यकार रामचंद्र मिश्र स्मृति संसद ने प्रस्तुत किया। प्रथम सत्र में बिजय चौधरी, बैजयंती मिश्र और नगेन दास ने रामचंद्र मिश्र के जीवन और कार्यों पर आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र की अध्यक्षता रामचंद्र मिश्र ने की। श्री विश्वेश्वर मोहंती ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

द्वितीय सत्र में सदाशिव दास की अध्यक्षता में दीप्तिमयी बेहरा, रमेश बेहरा और सोमनाथ बिसोई ने रामचंद्र मिश्र की बहुआयामी गतिविधियों तथा उनके लेखन के साथ-साथ उनके नाटकों की विशिष्ट विशेषताओं पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री सुशांत कुमार पात्र ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

'कस्तूरी मुर्मू का जीवन और कार्य' विषय पर जन्म शतवार्षिकी परिसंवाद

28 जनवरी 2022 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने 28 जनवरी 2022 को आभासी मंच पर के.सी. टुडू, शोभा हाँसदा, योशदा मुर्मू, बिरोद हाँसदा और मदन मोहन सोरेन जैसे प्रसिद्ध संताली लेखकों और विद्वानों के साथ 'कस्तूरी मुर्मू का जीवन

परिसंवाद का दृश्य

और कार्य' विषय पर जन्म शतवार्षिकी परिसंवाद का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने स्वागत भाषण दिया। मंच पर श्री के.सी. टुडू, सुश्री शोभा हाँसदा, सुश्री योशदा मुर्मू और श्री बिरोद हाँसदा ने कस्तूरी मुर्मू के जीवन और कार्यों पर चर्चा की। उन्होंने कस्तूरी मुर्मू के महत्त्वपूर्ण लेखन तथा उनके लेखन को प्रभावित करने वाले मुद्दों पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने उनके जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं का भी उल्लेख किया जिन्होंने उनके लेखन करियर को भी प्रभावित किया। अंत में, साहित्य अकादेमी की संताली परामर्श मंडल के संयोजक श्री मदन मोहन सोरेन ने प्रतिभागियों के भाषणों का समाहार प्रस्तुत किया तथा संताली साहित्य के विकास में कस्तूरी मुर्मू के लेखन के महत्त्व का आकलन प्रस्तुत किया।

थी. जानकीरामन की जन्म शतवार्षिकी पर संगोष्ठी

5-6 अक्तूबर 2021, सालेम

साहित्य अकादेमी के उप-क्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै ने पेरियार विश्वविद्यालय के तमिऴ विभाग के सहयोग से 5-6 अक्तूबर 2021 को सालेम के पेरियार विश्वविद्यालय में प्रतिष्ठित तमिऴ लेखक 'थी. जानकीरामन की जन्म शतवार्षिकी' के उपलक्ष्य में द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के तमिऴ अपने उद्घाटन व्याख्यान में परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम ने थी. जानकीरामन की दुनिया के बारे में बताते हुए कहा कि किस प्रकार महिलाओं की

इस अवसर पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए डॉ. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम

मुक्ति और बच्चों पर उनके विचार अत्यधिक प्रगतिशील थे तथा उन्होंने थी. जानकीरामन के प्रतिमान की तुलना सुब्रह्मण्यम भारती से की। अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में पेरियार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर. जगन्नाथन ने थी. जानकीरामन के व्यक्तित्व के बारे में बात की और बताया कि किस प्रकार वर्तमान शोधकर्ता थी. जानकीरामन के प्रगतिशील विचारों से लाभ उठा सकते हैं। उन्होंने थी. जानकीरामन के लेखन की तुलना थिरुमूलर के थिरुमंथिराम से की। थी. जानकीरामन की पुत्री तथा संगोष्ठी की मुख्य अतिथि श्रीमती उमा शंकरी ने अपने पिता की स्मृतियों को याद किया, और बताया कि किस प्रकार उनके लेखन ने संपूर्ण जीवन को समाहित किया। आगे उन्होंने इस बात पर भी प्रकाश डाला कि किस प्रकार साहित्य लोगों को पीड़ा और संघर्षों से जूझने में मदद करता है। उन्होंने संगोष्ठी के आयोजन के लिए साहित्य अकादेमी को धन्यवाद दिया। पेरियार विश्वविद्यालय के तमिऴ विभाग प्रमुख डॉ. टी. पेरियासामी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। प्रथम सत्र का विषय था—'थी. जानकीरामन के उपन्यास'। तीन प्रख्यात विद्वानों—श्री के. मोहनरंगन, डॉ. सु. वेणुगोपाल तथा श्रीमती अमरंथा ने क्रमशः 'मोगामुल', 'सेम्बरुथी' तथा 'अनबे अरामुधे और अमृतम' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री मोहनरंगन का आलेख थी. जानकीरामन का मानव का उपचार लालसा और परिपक्व रिश्ते पर आधारित था। डॉ. सु. वेणुगोपाल का आलेख मनुष्यों

की महत्त्वाकांक्षा और थी. जानकीरामन के उपन्यासों में प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व पर आधारित था। श्रीमती अमरंथा का आलेख थी. जानकीरामन के उपन्यासों में दर्शाई गई सामाजिक समस्याओं पर आधारित था। द्वितीय सत्र का विषय था—'थी. जानकीरामन के उपन्यास और कहानियाँ'। दो प्रख्यात विद्वानों, डॉ. गोकुल प्रसाद और डॉ. जे. राजगोपाल ने थी. जानकीरामन के उपन्यास तथा थी. जानकीरामन की कहानियाँ विषयों पर क्रमशः अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता डॉ. एम. गोपालकृष्णन ने की। तृतीय सत्र का विषय था—'थी. जानकीरामन के बहुमुखी कार्य—I'। दो प्रख्यात विद्वानों, श्री रवि सुब्रह्मण्यम और श्री सरवन मणिकम ने 'थी. जानकीरामन के नाटक' और 'थी. जानकीरामन के यात्रा संस्मरण' विषयों पर क्रमशः अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता डॉ. कल्याणरामन ने की। चतुर्थ सत्र का विषय था—'थी. जानकीरामन के बहुमुखी कार्य—II'। श्री काला सुब्रह्मण्यम ने 'थी. जानकीरामन के अनुवाद' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। डॉ. पंचांगम, जिन्होंने सत्र की अध्यक्षता की ने 'थी. जानकीरामन के यात्रा वृत्तांत' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। डॉ. सिर्पी बालसुब्रमण्यम ने समापन सत्र की अध्यक्षता की उन्होंने कहा कि जानकीरामन तमिळ संस्कृति के प्रतीक थे, उनके लेखन ने तमिळ जीवन की संस्कृति को अधिकारपूर्वक समझ कर व्यक्त किया, वे एक मूल विचारक थे। डॉ. सिर्पी ने संगोष्ठी के आयोजन में साहित्य अकादेमी के साथ सहयोग करने के लिए कुलपति तथा तमिळ विभाग, पेरियार विश्वविद्यालय को भी धन्यवाद दिया। अपने समापन भाषण में डॉ. सु. वेणुगोपाल ने कहा कि थी. जानकीरामन के लेखन ने विश्व साहित्य में बड़ा योगदान दिया है। उन्होंने यह भी बताया कि किस प्रकार थी. जानकीरामन के लेखन ने अन्य भावनाओं की तुलना में सहानुभूति को अधिक चित्रित किया। डॉ. टी. पेरियासामी ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

'देवराकोंडा बालगंगाधर तिलक की जन्म शतवार्षिकी' पर संगोष्ठी

24 अक्तूबर 2021, तनुकु

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळुरु ने तिलक वेधिका, तनुकु के सहयोग से देवराकोंडा बालगंगाधर तिलक की जन्म शतवार्षिकी पर 24 अक्तूबर 2021 को पूर्वाह्न 10.00 बजे आई.एम.ए. हॉल, पॉलीटेक्निक कॉलेज के निकट, तनुकु में संगोष्ठी का आयोजन किया।

संगोष्ठी का आरंभ आई.एम.ए. हॉल में हुआ। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने लोगों का स्वागत करते हुए कहा कि तिलक ने अपनी कविताओं को अपनी *अमृतमकुरीसिना रात्री* के माध्यम से आम लोगों तक पहुँचाया।

उन्होंने कहा कि लोग कविताओं के माध्यम से व्यक्त किए गए समृद्ध काव्य अनुभव का हिस्सा बन सकते हैं। तिलक एक कवि, कहानीकार और नाटककार के रूप में, बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे; डॉ. राव ने आगे कहा कि तिलक को 1971 में मरणोपरांत साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। डॉ. राव ने तिलक की जन्म शतवार्षिकी का उत्सव मनाने पर हर्ष व्यक्त किया और आशा व्यक्त की कि इस प्रकार के कार्यक्रम युवाओं को कविता के प्रति आकृष्ट करेंगे।

प्रख्यात तेलुगु कवि और साहित्य अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक श्री के. शिवा रेड्डी ने कहा कि तिलक हृदय से रोमांटिक थे। तिलक ने जिस प्रकार से किसी वस्तु को हक़ीकत में लाने के लिए अपनी कल्पना और रचनात्मकता का प्रयोग किया वह अद्‌भुत था। रेड्डी ने कहा कि उनकी कविता में जीवन था जिसने पाठकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। श्री श्री के *महाप्रस्थानम* के बाद, तिलक ने अपनी *अमृतम्कुरीसिना रात्री* के माध्यम से पाठकों के काव्यात्मक अनुभव को पुनर्जीवित किया।

अतिथि वक्ता, साहित्य प्रेमी, श्री वात्सवयी वेंकट राजू ने कहा, ''1921 में मंडपका ग्राम में पैदा हुए तिलक देश के प्रसिद्ध कवि थे। वे धनी होने के बावजूद भी सादगी भरा जीवन व्यतीत करते थे।''

अपने बीज-भाषण में आंध्र प्रदेश सरकार के माध्यमिक शिक्षा आयुक्त, डॉ. वाडरेवु चिनवीरभद्रुडु ने कहा कि तिलक की कविता 'श्री श्री के साथ' तेलुगु में सबसे लोकप्रिय कविता है। जो कवि नहीं हैं वे भी तिलक के काव्य से जुड़ सकते हैं। चिनवीरभाद्रुडु ने कहा कि उनकी 'ना कवित्वमलो नेनु ब्रथुकुथा' उनकी पूरी दृष्टि को बतलाती है जबकि उनकी कविता 'त्रिमुरथुलु' दिखाती है कि उनकी काव्य संवेदनाएँ कहाँ हैं। आलोचकों ने उन्हें प्रगतिशील कहा। चिनवीरभद्रुडु ने कहा कि तिलक ने अपनी कविता में प्रेम, प्रगतिवाद, मानवतावाद का सामंजस्य स्थापित किया। उनकी कहानियाँ भी तिलक की संवेदनशीलता की तीव्र भावना को दर्शाती हैं। चिनवीरभद्रुडु ने कहा कि तिलक के कार्यों पर व्यापक पुस्तक प्रकाशित किया जाना अत्यंत आवश्यक है।

दोपहर के सत्र में संगोष्ठी में श्री कोप्पार्थी वेंकटरमण मूर्ति ने 'तिलक की कविता—एक विश्लेषण' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया और कहा कि, तिलक ने अपने वास्तविक जीवन की तुलना में एक कवि के रूप में लंबा जीवन जिया। उनका निधन 45 साल की उम्र में हुआ और उनके निधन को 55 साल हो चुके हैं। कोप्पार्थी ने कहा, ''तिलक के पास एक सामंजस्यपूर्ण दार्शनिक दृष्टिकोण था और वह विचार और भावना की समस्त धाराओं के पात्र थे। उसके आधार पर, उस समय से अबतक उनका इतना प्रभाव है। कोप्पार्थी ने कहा, तिलक की कविता के कारण ही लेखक अब कुछ हद तक अपने भीतर की ओर मुड़ रहे हैं।''

श्री नंदिनी सिद्ध रेड्डी ने 'तेलुगु कविता में तिलक का स्थान' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने आलेख में कहा कि तिलक की काव्य संवेदनशीलता और सुंदरता रोमांटिक और प्रगतिशील दोनों धाराओं को शामिल करती है। तिलक ने स्वयं काव्य में एक महान जागरूकता उत्पन्न की है। विश्वनाथ ने शायद ऐसी परंपरा को बनाए रखा जो विद्यमान नहीं थी; कृष्ण शास्त्री ऐसे प्रेमी के लिए तरस रहे होंगे जो वहाँ नहीं था; श्री श्री ने शायद एक और दुनिया का सपना देखा होगा जो कहीं निकट नहीं था; लेकिन, तिलक ने जीवन को विभिन्न आयामों में जिया और अनुभव किया हुआ बताया।

रेंटला श्री वेंकटेश्वर ने कहा कि, तिलक को कविता पसंद थी और उन्होंने पद्य के साथ-साथ गद्य भी लिखा। रेंटला ने कहा, *प्रभातमु संध्या*, तिलक के जीवनकाल में प्रकाशित एकमात्र पुस्तक थी, और यह आश्चर्य की बात है कि कैसे 16-17 वर्ष की आयु में तिलक परिपक्व विश्वदृष्टि को प्रतिपादित करने में सक्षम हुए। जीवन में भावनाओं का सरगम - करुणा, उदासी, चिंता, प्रेम और पूजा उनकी कविताओं में भर जाती है। रेंटला ने कहा कि तिलक सच्चे रोमांटिक कवियों में अंतिम थे।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध कवि रस राजू ने की। तिलक की कहानियों का विश्लेषण करते हुए सी. मृणालिनी ने उन्हें महान मानवतावादियों में से एक बताया और अपनी कहानियों में उन्होंने मानव की भ्रष्टता का चित्रण किया। उन्होंने यह भी कहा कि तिलक का विचार है कि कहानी कविता से बेहतर जीवन को चित्रित कर सकती है। वह न केवल अपनी कविताओं में बल्कि अपनी कहानियों में भी युद्ध-विरोधी थे। क्योंकि वे एक कवि थे, उनकी कहानियों में विषय-वस्तु को काव्यात्मक उपचार मिला। तिलक की कहानियों जैसे 'लीबिया एडारिलोए', 'अदामलो जनना', 'नल्लाजरला रोड्दू', 'वुरिचिवरा इलू', 'सुंदरी सुब्बाराव', 'देवुनिचुसिनावडु' पर बात करते हुए मृणालिनी ने कहा कि तिलक ने तथ्यों की प्राथमिकता को महत्त्व दिया। अपनी बात को जारी रखते हुए आगे मृणालिनी ने कहा कि उन्होंने मध्यवर्गीय जीवन के दोषों को चित्रित किया जिसमें आप जीने के बजाय केवल मौजूद हैं।

इसके बाद, वासिरेड्डी नवीन ने तिलक की कहानियों पर बात की। नवीन ने कहा कि उन्हें 'देवुन्नी चुसिनावडु' कहानी पसंद है और तिलक का लेखन उन्हें आकर्षित करता है। कांदिमल्ला संबाशिव राव ने तिलक के नाटकों पर अपने विचार प्रकट किए। संबाशिव राव ने कहा कि तिलक ने महसूस किया कि तेलुगु नाटक मध्यम चरण में थे और वह इसे एक पायदान ऊपर ले जाना चाहते थे, और इसलिए नाटक लिखना शुरू कर दिया।

तिलक ने दो नाटक और चार एकांकियाँ लिखी हैं। *सुप्तशिला, सालेपुरुगु, पोगा, इरुगु पोरुगु* जैसी उनकी कृतियाँ उन्हें पारखी के रूप में दर्शाती हैं। संबाशिव राव ने कहा कि हालांकि उन्होंने उन विषयों पर नाटक लिखे जिन्हें अभी तक छुआ नहीं गया था, उन्होंने कई प्रयोग किए तथा महत्त्वपूर्ण के नाटकों का सृजन किया। उन्होंने आगे कहा कि अगर आकाशवाणी के इतिहास में शीर्ष नाटकों की सूची हो तो, तिलक की *सुप्तशिला* शीर्ष पर होगी।

इसके बाद, कवि शिखामणि ने तिलक के पत्रों और निबंधों पर बात की। तिलक ने 74 पत्र तथा 7 निबंध लिखे। शिखामणि ने कहा कि उनके लिखे पत्रों और निबंधों में यह दर्शाते हैं। तिलक ने अपने विचारों को स्पष्टता और कुशाग्रता के साथ प्रस्तुत किया।

अपने समापन भाषण में डी.वी.एस.एस. वर्मा ने कहा, ''तिलक को समझने के लिए हमें स्वयं थोपी गई सीमाओं और स्वनिर्मित सिद्धांतों से छुटकारा पाना होगा। हमें तिलक के काम को व्यापक रूप से देखना होगा।'' आगे उन्होंने कहा कि वे तिलक की जन्मभूमि में, तिलक की जन्म शतवार्षिकी समारोह में शामिल होकर बेहद प्रसन्न हैं।

मद्दा श्रीनिवास ने दर्शकों का धन्यवाद किया। इस कार्यक्रम में तिलक पर तीन नई पुस्तकों का विमोचन किया गया। जबकि चिनवीरभद्रुडु ने कविसंध्या द्वारा प्रकाशित *अमृतवर्षिनी* का लोकार्पण किया। डॉ. के. श्रीनिवासराव ने नन्नय्या विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित *तिलक साहित्य भारती* और तंगिराला सुब्बा राव तथा अन्य द्वारा प्रकाशित श्री के. शिवा रेड्डी कृत *रसगंगाधारा तिलकम* का विमोचन किया।

'आर.सी. हिरेमठ की जन्म शतवार्षिकी' पर परिसंवाद

29 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु ने 29 जुलाई 2021 को अपराह्न 3.00 बजे वेबलाइन

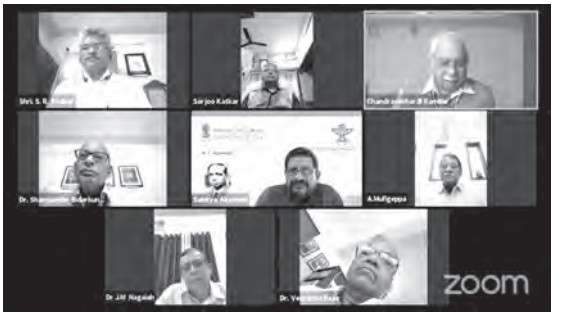

परिसंवाद का दृश्य

साहित्य शृंखला के अंतर्गत 'आर.सी. हिरेमठ की जन्म शतवार्षिकी' पर परिसंवाद का ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित किया। क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु के क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने श्रोताओं, वक्ताओं, उद्घाटनकर्ता तथा कार्यक्रम के अध्यक्ष का स्वागत किया तथा अकादेमी की गतिविधियों के बारे में विस्तारपूर्वक बताते हुए कहा कि अकादेमी प्रतिष्ठित भारतीय लेखकों के जीवन और लेखन को सम्मान देने के लिए उन पर जन्म शतवार्षिकी परिसंवाद अथवा संगोष्ठी आयोजित करती है। उन्होंने दर्शकों को बताया कि आर.सी. हिरेमठ का जन्म 15 जनवरी 1920 को कुरादगी, गडग, कर्नाटक, भारत में हुआ था। वह कन्नड के प्राफ़ेसर और कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़ के कुलपति थे। हिरेमठ 59वें कन्नड साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष थे। वह द्रविड़ भाषा विज्ञान संघ के संस्थापक सदस्य और त्रिवेंद्रम में इंटरनेशनल स्कूल ऑफ़ द्रविड़ भाषाविज्ञान (आईएसडीएल) के निदेशक थे। उनका काम रचनात्मक जैसे महत्त्वपूर्ण कार्यों से लेकर कई संपादकीय प्रकाशनों तक रहा है।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात कन्नड लेखक तथा साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने की। कन्नड परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. सरजू काटकर ने आरंभिक व्याख्यान प्रस्तुत किया। कन्नड विश्वविद्यालय, हम्पी के पूर्व कुलपति प्रो. ए. मुरीगेप्पा, कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे।

डॉ. सरजू काटकर ने अपने आरंभिक व्याख्यान में कहा कि आर.सी. हिरेमठ प्रतिष्ठित विद्वान, शिक्षक,

प्रशासक तथा कुलपति थे। वह उन विद्वानों में से एक थे, जिन्होंने कर्नाटक विश्वविद्यालय के कन्नड विभाग को देश में लोकप्रिय होने में मदद की।

डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कर्नाटक विश्वविद्यालय में अपने छात्र दिनों तथा एस.एस. भूस्नूरमठ, आर.सी. हिरेमठ और अपने अन्य शिक्षकों के साथ अपने परिचितों की स्मृतियों को साझा किया। आर.सी. हिरेमठ महान शिक्षक थे। वह एक महान कन्नड विद्वान टी.नम. श्री के समकालीन भी थे।

इस अवसर के विशिष्ट अतिथि प्रो. मुरीगेप्पा ने अपने व्याख्यान में आर.सी. हिरेमठ को अपने शिक्षक और संरक्षक के रूप में बताया और कहा कि उन्होंने उनसे कन्नड भाषाविज्ञान विषय की शिक्षा प्राप्त की है।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता जाने-माने कन्नड लेखक डॉ. श्यामसुंदर बिदारकुंडी ने की। उन्होंने कन्नड भाषाविज्ञान में आर.सी. हिरेमठ के योगदान के संदर्भ में 'कन्नड की संरचना' विषय पर आधारित अपना आलेख भी प्रस्तुत किया। डॉ. वीरन्ना राजुरा ने वचन साहित्य और आर.सी. हिरेमठ के विविध लेखन पर कन्नड में अपना आलेख प्रस्तुत किया। डॉ. शशिधर तोडकर ने आर.सी. हिरेमठ के रचनात्मक लेखन पर बात की। डॉ. जे.एम. नागइय्या ने आर.सी. हिरेमठ के शोध पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

'टा.रा.सु. की जन्म शतवार्षिकी' पर परिसंवाद

21 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु ने वेबलाइन साहित्य शृंखला के अंतर्गत 21 अगस्त 2021 को पूर्वाह्न 10.00 बजे 'टा. रा. सु. की जन्म शतवार्षिकी' पर परिसंवाद कार्यक्रम का आयोजन किया।

क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु के क्षेत्रीय सचिव श्री एस. पी. महालिंगेश्वर ने वेबलाइन के श्रोताओं, वक्ताओं, अतिथियों तथा कार्यक्रम के अध्यक्ष का स्वागत किया तथा अकादेमी की गतिविधियों के बारे में विस्तार से

परिसंवाद का दृश्य

बताया। उन्होंने श्रोताओं को टा. रा.सु. (टी.आर. सुब्बा राव) का परिचय देते हुए बताया कि उनका जन्म 21 अप्रैल 1920 को कर्नाटक राज्य के मालेबेन्नूर में हुआ था। उन्हें कन्नड़ साहित्य के 'नव्या आंदोलन' का अग्रदूत माना जाता है। उन्हें उनके उपन्यासों जैसे *दुर्गाष्टमना* के लिए जाना जाता है, जिसने उन्हें 1985 में मरणोपरांत साहित्य अकादेमी पुरस्कार अर्जित करवाया था।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात कन्नड लेखक तथा साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने की। साहित्य अकादेमी की कार्यकारी मंडल के सदस्य तथा अकादेमी के कन्नड़ परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. सरजू काटकर ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया।

डॉ. पद्मिनी नागराजू ने अपने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि टा.रा.सु. कृत *दुर्गाष्टमना* ऐतिहासिक कन्नड उपन्यास है, जिसे वर्ष 1985 में साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। यह एक अनुकरणीय उपन्यास है और यह उनकी अंतिम कृति थी।

डॉ. सरजू काटकर ने साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार के कुशल मार्गदर्शन में दिवंगत अनुभवी लेखकों की जन्म शतवार्षिकी के अवसर पर उनके जीवन और लेखन का प्रचार करने के लिए कार्यक्रम आयोजित करने में साहित्य अकादेमी के प्रयास की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि ऐसे कार्यक्रम युवा पीढ़ी को लिखने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। टा.रा.सु. की मातृभाषा तेलुगु थी। लेकिन कन्नड साहित्य में उनका योगदान हमेशा प्रशंसनीय है। उन्होंने लगभग 95 पुस्तक

लिखीं, जिनमें से अधिकांश उपन्यास थे। उनके लगभग 15 उपन्यासों पर चलचित्र बनाए गए थे।

डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि टा.रा.सु. विपुल कन्नड लेखक थे, जिन्होंने कन्नड़ भाषा और साहित्य में संस्कार (मनोवैज्ञानिक छाप) का योगदान दिया। वह कन्नड के पहले लेखक थे जिन्होंने अपने उपन्यासों में चेतना सिद्धांत की धारा को कुशलतापूर्वक प्रबंधित किया। गलगंनाथ, कृष्णमूर्ति पुराणिक, बसवराज कट्टिमणि, टा.रा.सु. और कन्नड में नवोदय और प्रगतिशीला आंदोलन के अन्य अग्रणी उपन्यासकारों ने कन्नड पाठकों या साहित्य प्रेमियों में पढ़ने की आदतों को पोषित किया।

डॉ. सी.एन. रामचंद्रन ने अपने विशिष्ट अतिथि के अपने संबोधन में कहा कि टा.रा.सु. कन्नड के लोकप्रिय उपन्यासकार, नाटककार, पत्रकार, वक्ता, स्वतंत्रता सेनानी तथा अनुवादक थे। अपने उपन्यासों में, उन्होंने मार्क्सवादी विचारधारा के दृष्टिकोण के साथ समस्त समकालीन सामाजिक-आर्थिक समस्याओं और मुद्दों पर लिखा।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध कन्नड, अंग्रेज़ी शिक्षाविद् और द्विभाषी अनुवादक डॉ. सी. नागन्ना ने की। उन्होंने कन्नड़ में 'टा.रा.सु. के जीवन का मनोरम दृश्य' पर अपना आलेख भी प्रस्तुत किया। प्रसिद्ध कन्नड़ लेखक तथा साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता डॉ. राघवेंद्र बी. पाटिल ने 'टा.रा.सु के सामाजिक उपन्यास' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। प्रसिद्ध कन्नड़ लेखक और फ़िल्म निर्देशक श्री बी.एल. वेणु ने 'टा.रा.सु. के ऐतिहासिक उपन्यास और सिनेमा में योगदान' पर चर्चा की। प्रसिद्ध कन्नड पत्रकार श्री एम.के. भास्कर राव ने 'पत्रकार के रूप में टा.रा.सु.' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। इसके साथ ही, क्षेत्रीय सचिव, श्री एस. पी. महालिंगेश्वर द्वारा प्रस्तावित धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

'एम. गोविंदन की जन्म शतवार्षिकी' पर परिसंवाद

29 सितंबर 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु ने 29 सितंबर 2021 को पूर्वाह्न 10.00 बजे वेबलाइन साहित्य शृंखला के अंतर्गत 'एम. गोविंदन की जन्म शतवार्षिकी' पर आभासी परिसंवाद कार्यक्रम का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत भाषण में प्रो. एम. थॉमस मैथ्यू, डॉ. एन. अजीत कुमार, श्री एल.वी. हरिकुमार, श्री अलंकोड लीलाकृष्णन तथा परिसंवाद में भाग लेने वाले अन्य सभी अतिथियों तथा वेबलाइन दर्शकों का अभिवादन किया। उन्होंने कहा कि भारत लेखन और साहित्य की भूमि है। इसकी साहित्यिक परंपराएँ और विविधताएँ अद्भुत हैं। जैव-सांस्कृतिक विविधता पूरे विश्व में भारत के लिए अद्वितीय है। केरल का सर्वश्रेष्ठ साहित्य भी आश्चर्यजनक है। अनुभवी मलयाळम् लेखक तथा सांस्कृतिक कार्यकर्ता एम. गोविंदन बरगद के वृक्ष की भाँति थे, जो साथी लेखकों को छाया प्रदान करते थे। एम.एन. रॉय के दर्शनशास्त्र ने उन्हें विशिष्ट व्यक्तित्व बना दिया। उन्होंने मलयाळम् लेखक पी. सच्चिदानंदन, जो आनंद के नाम से जाने-जाते हैं तथा अन्य युवा लेखकों का उत्साहवर्धन करने के साथ उन्हें प्रोत्साहित भी किया। एम. गोविंदन साहित्य में समग्रता के प्रतीक के रूप में खड़े हैं।

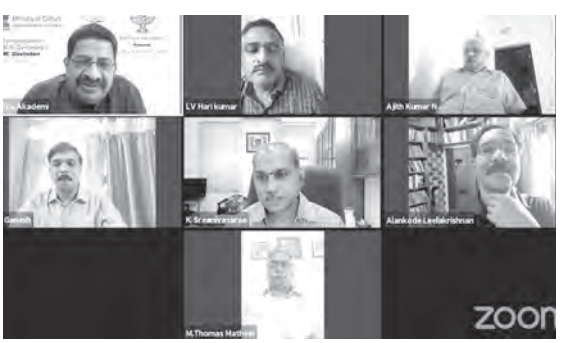

परिसंवाद का दृश्य

साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य श्री एल.वी. हरिकुमार ने अपने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि एक स्वायत्त संगठन के रूप में साहित्य अकादेमी भारतीय साहित्य को बढ़ावा देने के लिए कड़ी मेहनत कर रही है। उन्होंने मलयाळम् साहित्य और संस्कृति में एम. गोविंदन के योगदान को भी याद किया।

प्रख्यात मलयाळम् आलोचक प्रो. एम. थॉमस मैथ्यू ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि साहित्य अकादेमी द्वारा एम. गोविंदन जो एक महान दूरदर्शी लेखक थे, पर शताब्दी कार्यक्रम का आयोजन करना एक सराहनीय प्रयास है। गोविंदन के लेखन में मानवतावाद मुख्य विषय था। शक्ति का प्रयोग करते समय ऐसी संवेदनशीलता को याद रखना चाहिए। हर नेता को एम. गोविंदन के लेखन और उपदेशों के इस दृष्टिकोण को समझना चाहिए। इंसान में विश्वास और मानवता का सम्मान करना हर सरकार का आदर्श वाक्य होना चाहिए और यदि हम ऐसा कर पाते हैं तो यही मायने में ऐसे दूरदर्शी लेखक और विचारक को यह सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

साहित्य अकादेमी के सामान्य परिषद् तथा मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. एन. अजीत कुमार ने अध्यक्षीय व्याख्यान प्रस्तुत किया। कोविड-19 महामारी के कारण हम इस शताब्दी कार्यक्रम का आयोजन समय पर नहीं कर सके। इस देरी के लिए मुझे खेद है। मैं साहित्य अकादेमी को उसकी प्रतिबद्धता के लिए बधाई देता हूँ। ग्रामीण पहुँच और अन्य अल्पसंख्यक कार्यक्रम साहित्य अकादेमी के अनेक कार्यक्रमों के उदाहरण हैं। यह जन्म शतवार्षिकी परिसंवाद साहित्य अकादेमी का प्रतिष्ठित कार्यक्रम है। एम. गोविंदन की भाषा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता अद्भुत है।

प्रख्यात मलयाळम् लेखक श्री अलंकोड लीलाकृष्णन ने उद्घाटन सत्र के अंत में अपने समापन वक्तव्य में एम. गोविंदन द्वारा उनकी जन्मभूमि पोन्नानी, केरल को दिए गए उनके योगदानों पर प्रकाश डाला।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध मलयाळम् लेखक श्री साबू कोट्टुकल ने की। प्रसिद्ध मलयाळम् लेखक श्री के.वी. सजई ने एम. गोविंदन की काव्य भाषा की अवधारणा विषय पर मलयाळम् में अपना आलेख प्रस्तुत किया। विख्यात मलयाळम् लेखक तथा शिक्षाविद् डॉ. सी. गणेश ने 'द टंग्स ऑफ़ फ्रीडम एंड द नैक ऑफ़ ए डेनियर : एम. गोविंदन विज़न ऑन आर्ट' विषय पर मलयाळम् में अपना आलेख प्रस्तुत किया।

'एम.वी. वेंकटराम की जन्म शतवार्षिकी' पर परिसंवाद

3 दिसंबर 2021, डिंडीगुल

साहित्य अकादेमी के चेन्नै उप-क्षेत्रीय कार्यालय ने तमिळ्, भारतीय भाषा और ग्रामीण कला स्कूल, गाँधीग्राम ग्रामीण संस्थान (संभावित विश्वविध्यालय), डिंडीगुल के सहयोग से 3 दिसंबर 2021 को 'एम.वी. वेंकटराम की जन्म शतवार्षिकी' पर परिसंवाद का आयोजन किया।

गाँधीग्राम ग्रामीण संस्थान में आयोजित इस कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में, श्री टी.एस. चंद्रशेखर राजू, कार्यालय प्रभारी, साहित्य अकादेमी, चेन्नै ने स्वागत भाषण दिया तथा साहित्य अकादेमी की साहित्यिक पहल के बारे में बताया। जी.आर.आई. के कुलपति (प्रभारी) डॉ. टी.टी. रंगनाथन ने अध्यक्षीय व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने कार्यक्रम की मेजबानी के लिए साहित्य अकादेमी को धन्यवाद दिया तथा एम.वी. वेंकटराम के जीवन और साहित्यिक कार्यों के बारे में संक्षेप में बताया। साहित्य अकादेमी के तमिळ् परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम ने उद्घाटन व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने देश में प्रचलित विभिन्न साहित्यिक परंपराओं को एकीकृत करने के लिए साहित्य अकादेमी

उद्घाटन वक्तव्य देते हुए डॉ. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम

के प्रयासों की प्रशंसा की। उन्होंने उल्लेख किया कि एम.वी. वेंकटराम अद्वितीय, व्यक्तिवादी तथा अग्रणी लेखक थे जिन्हें किसी भी स्टीरियोटाइप लेखकों में शामिल नहीं किया जा सकता है। तमिऴ कवि और वृत्तचित्र फ़िल्म निर्माता श्री रवि सुब्रह्मण्यन ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने एम.वी. वेंकटराम को अपने पालक पिता के रूप में माना, जिन्होंने उनकी देखभाल की। उन्होंने एम.वी. वेंकटराम के साथ अपने साहित्यिक अनुभवों को भी साझा किया। जी.आर.आई. के विभागाध्यक्ष (तमिऴ), प्रो. ओ. मुथैया, प्रमुख ने समापन वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि एम.वी. वेंकटराम की गरीबी ने उन्हें साहित्यिक करियर बनाने से नहीं रोका। उन्होंने महसूस किया कि यह कार्यक्रम दिवंगत लेखक को उनके लेखन को नई तरह से फिर से पढ़ने तथा उनकी पुनःव्याख्या करने के लिए उपयुक्त श्रद्धांजलि है। डॉ. सु. वेणुगोपाल ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की तथा एम.वी. वेंकटराम की कहानियों पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि एम.वी. वेंकटराम के लेखन में उनकी साहित्यिक प्रतिभा झलकती है और वे अपनी साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से अमर रहते हैं। डॉ. सुनील कृष्णन ने एम.वी. वेंकटराम के उपन्यासों पर आधारित अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने एम.वी. वकटराम के उपन्यास *कुट्रम धंदानाई* पर चर्चा की और उल्लेख किया कि उनकी लेखन शैली गहन और सूक्ष्म थी, जिसने पाठकों के मन में रुचि जागृत की।

डॉ. कल्याणरमन ने द्वितीय सत्र की अध्यक्षता की तथा एम.वी. वेंकटराम के पुरस्कृत उपन्यास *काथुगल* पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। यह उपन्यास अपनी चेतना पर रहस्यमयी बुरी ताकतों के हमले से निपटने के लिए एक बुद्धिजीवी के संघर्ष को चित्रित करता है जो उसके कानों के भीतर सुनाई देने वाली विभिन्न ध्वनियों और मानवीय आवाज़ों का रूप लेता है। डॉ. पी. आनंदकुमार ने एम.वी. वेंकटराम के उपन्यास *नित्यकन्नी* पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। ययाति की बेटी महाभारत में एक कम-ज्ञात चरित्र है, वह पात्र एम.वी. वेंकटराम की कल्पना में मुख्य पात्र बन गई। उत्पीड़ित महिलाओं की आवाज़, पुराने दिनों की सोच और जटिलता को इस उपन्यास में चित्रित किया गया है। डॉ. कला सुब्रह्मण्यम ने तृतीय सत्र की अध्यक्षता की तथा एम.वी. वेंकटराम के उपन्यास *वेल्वी थी* पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने उपन्यास पर संक्षेप में चर्चा की और उल्लेख किया कि सुखद अंत के साथ यह संतोषजनक कृति थी। डॉ. एन. रथिनकुमार ने एम.वी. वेंकटराम के उपन्यास *अरुम्बु* पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। यह उपन्यास 4 अलग-अलग परिवारों के 4 पात्रों के जीवन के इर्द-गिर्द बुना गया है। हालाँकि यह एक बड़ा उपन्यास, इसे एम.वी. वेंकटराम की उल्लेखनीय कृति माना जाता है। डॉ. एन. मुरुगेसा पांडियन ने एम.वी. वेंकटराम की पुस्तक *एन इलाक्किया नानबर्गल* पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। यह पुस्तक पहले के तमिऴ लेखकों तथा एम.वी. वेंकटराम के अपने साथी लेखक मित्रों जैसे—थी. जानकीरामन, का.ना. सुब्रह्मण्यम, मौनी तथा अन्यों के साथ के अनुभवों का विवरण प्रस्तुत करती है। जी.आर.आई. के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. मुगल सलीम बेग ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

'संत कवि माधवदेव पर राष्ट्रीय संगोष्ठी'

26-27 नवंबर 2021, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने 26-27 नवंबर 2021 को नई दिल्ली में द्वि-दिवसीय 'संत कवि माधवदेव पर राष्ट्रीय संगोष्ठी' का आयोजन किया।

(बाएँ से दाएँ) एन.सुरेश बाबू, के. श्रीनिवासराव, ध्रुब ज्योति बोरा, प्रदीप ज्योति महंत तथा मालिनी गोस्वामी

उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा उनका परिचय प्रस्तुत किया एवं श्री माधवदेव के साहित्यिक योगदान के बारे में संक्षेप में बताया। अपने उद्घाटन व्याख्यान में प्रख्यात असमिया विद्वान डॉ. प्रदीप ज्योति महंत ने असमिया समाज पर श्री माधवदेव के कार्यों के प्रभाव के बारे में बात की और बताया कि श्री माधवदेव ने लंबे समय से खींची गई सामाजिक संरचनाओं को बदल कर उनमें सुधार किया। अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में साहित्य अकादेमी के असमिया परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. ध्रुब ज्योति बोरा ने संत कवि माधवदेव की स्थायी विरासत के बारे में बात की। अपने बीज-भाषण में डॉ. मालिनी गोस्वामी ने बताया कि किस प्रकार शंकरदेव और माधवदेव ने नृत्य, संगीत, नाटक और साहित्य के माध्यम से अपने धार्मिक-दार्शनिक विचारों का प्रचार किया। सत्र के दौरान श्रीमंत शंकरदेव पर हिंदी में लिखित विनिबंध का विमोचन भी किया गया। द्वि-दिवसीय संगोष्ठी के प्रथम सत्र में दो गणमान्य विद्वानों डॉ. उदयनाथ साहू और डॉ. राजेंद्र मेहता ने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. साहू ने बताया कि भक्ति आंदोलन 15वीं शताब्दी में सामाजिक आंदोलन में बदल गया था। डॉ. राजेंद्र मेहता ने अपनी प्रस्तुति में नरसिंह मेहता के जीवन और कार्यों की तुलना असम के उनके समकालीन माधवदेव से की। इस सत्र की अध्यक्षता न्यायमूर्ति मुकुंदकम शर्मा ने की, उन्होंने कहा कि श्री माधवदेव न केवल श्रीमंत शंकरदेव के समर्पित शिष्य थे, बल्कि उन्होंने रचनात्मक गतिविधियों के क्षेत्र में अनुकरणीय सेवा भी प्रदान की। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. शारोदी शइकिया ने की, जो प्रसिद्ध सत्रिया नृत्यांगना (असम का पारंपरिक नृत्य) हैं। इस सत्र में गुनाकर देव गोस्वामी, अर्शिया सेठी तथा अनिल शइकिया ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। गुनाकर के आलेख का शीर्षक था—'माधवदेव के झुमुरा नाटक की परंपरा और चरित्र'। 'माधवदेव के कार्यों में नृत्य और नृत्य क्षमता' शीर्षक वाले अपने आलेख में, अर्शिया सेठी ने कहा कि श्रीमंत शंकरदेव के नए विश्वास के सिद्धांतों के प्रति किसी की भक्ति माधवदेव से अधिक नहीं है। डॉ. अनिल शइकिया के 'माधवदेव के संगीत पर सारगर्भित रूपरेखा' विषयक आलेख ने इस बात पर प्रकाश डाला कि किस प्रकार माधवदेव के नाटकों में नृत्य, गीतों तथा लयबद्ध पद्धति ने प्रमुख भूमिका निभाई। संगोष्ठी के तृतीय सत्र में तीन प्रतिष्ठित विद्वानों डॉ. कार्बी डेका हाज़रिका, डॉ. ब्रजेंद्र त्रिपाठी तथा डॉ. वेंकट रमय्या गंपा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. प्रदीप ज्योति महंत ने की। डॉ. हाज़रिका ने नामघोष की सुंदरता और दर्शन पर प्रकाश डाला। अपने आलेख में डॉ. वेंकट रमय्या गंपा ने अखिल भारतीय भक्ति आंदोलन की दार्शनिक नींव पर चर्चा की। डॉ. ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने अपनी प्रस्तुति में उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन के प्रमुख पहलुओं पर प्रकाश डाला। चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता डॉ. हिरण्य कुमार दास ने की। इस सत्र में अरविंद राजखोवा, पीकूमणि दत्ता, संजीब शर्मा और तराली शर्मा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। अरविंद राजखोवा ने बताया कि किस प्रकार माधवदेव ने असम में यादृच्छिक सांस्कृतिक प्रथाओं को संस्थागत रूप दिया और उन्हें जीवंत बनाया। तराली शर्मा ने माधवदेव द्वारा लिखे गए कुछ प्रसिद्ध गीतों को गाया और बताया कि किस प्रकार संत माधवदेव ने मानव हाथों का वाद्य यंत्र के रूप में प्रयोग किया। डॉ. संजीब शर्मा के आलेख ने नामघर के विशेष संदर्भ में समुदाय में भक्ति की ज़मीनी प्रथाओं पर अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. पीकूमणि दत्ता ने असमिया समाज के वास्तविकीकरण में माधवदेव के योगदान पर चर्चा की। संगोष्ठी के अंतिम सत्र में रत्नुत्तमा दास, भास्कर ज्योति शर्मा तथा अरिंदम बॅरकटकी द्वारा आलेख प्रस्तुत किए गए तथा इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. कार्बी डेका हाज़रिका ने की। रत्नुत्तमा दास ने असमिया साहित्य में माधवदेव के योगदान पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। डॉ. भास्कर ज्योति शर्मा ने माधवदेव की रचनाओं के अनुवाद के संदर्भ में असम में भक्ति आंदोलन की भाषाई परंपरा के पहलुओं की पड़ताल की। अरिंदम बॅरकटकी ने असम में भक्ति आंदोलन की नींव रखने में माधवदेव

की भूमिका पर चर्चा की। डॉ. श्रीनिवासराव ने समस्त प्रतिभागियों को धन्यवाद दिया तथा उनसे अनुरोध किया कि वे अपने आलेख अकादेमी को भिजवाएँ जिससे कि इसे पुस्तक रूप में प्रकाशित किया जा सके।

'प्रेमचंद का कथेतर लेखन' विषय पर संगोष्ठी

24 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने अपनी वेबलाइन साहित्य शृंखला के अंतर्गत 24 अगस्त 2021 को 'प्रेमचंद का कथेतर लेखन' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया। केवल कुछ ही लेखन को हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों साहित्यिक दुनिया में समान लोकप्रियता प्राप्त है। मुंशी प्रेमचंद, जिन्हें 'उपन्यास सम्राट' के नाम से भी जाना जाता है, महान उपन्यासकार और कहानीकार के रूप में जाने जाते हैं। अंग्रेज़ी साहित्यिक परिदृश्य में उनकी लोकप्रियता अंग्रेज़ी अनुवाद में उनके काम की उपलब्धता के साथ बढ़ी है। लेकिन अक्सर जिस बात की अनदेखी की जाती है, वह यह है कि उपन्यासों और कहानियों के अलावा, प्रेमचंद का कथेतर लेखन की भी समान योग्यता वाला है तथा इस शैली के माध्यम से उन्होंने अपने विचारों को स्वतंत्र रूप से व्यक्त किया है। इस संगोष्ठी में यह दर्शाने की कोशिश की गई थी कि प्रेमचंद का कथेतर लेखन कितना समृद्ध और विविध है।

इस सत्र में प्रो. हरीश त्रिवेदी, प्रो. एम. असदुद्दीन, प्रो. मालती माथुर, प्रो. मिनी नंदा और डॉ. शोएब इकराम ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता प्रो. अमीना के. अंसारी ने की। प्रो. हरीश त्रिवेदी कुछ तकनीकी समस्या के कारण संगोष्ठी में शामिल नहीं हो सके। मुंशी प्रेमचंद के लेखन के विभिन्न पहलुओं से संबंधित चार आलेख प्रस्तुत किए गए। प्रथम वक्ता प्रो. एम. असदुद्दीन ने प्रेमचंद के कथा साहित्य और कथेतर कार्यों के बीच संबंध को बताया। इसके बाद उन्होंने सामाजिक समानता और सामाजिक सद्भाव की लेखक की विचारधारा पर प्रकाश डालते हुए उनके निबंध 'इस्लामिक सभ्यता' पर विस्तार से चर्चा की। प्रो. मालती माथुर ने प्रेमचंद और उनके समय की कुछ प्रसिद्ध हस्तियों जैसे जयशंकर प्रसाद, शिव सहाय, दया नारायण निगम आदि के बीच भेजे गए पत्रों और पत्राचार के बारे में बताया। इन पत्रों के माध्यम से हमें प्रेमचंद को एक व्यापारी के रूप में देखने की झलक मिलती है। प्रो. मिनी नंदा का आलेख प्रेमचंद के आदर्शवादी यथार्थवाद पर केंद्रित था, जो इसे उस समय के राजनीतिक और ऐतिहासिक उपक्रमों से जोड़ता है। उन्होंने प्रेमचंद के दुनियाभर के लेखकों से परिचित होने तथा उनके कृतियों को विशाल पाठक वर्ग द्वारा पढ़े जाने के दिलचस्प पहलुओं पर प्रकाश डाला। अंतिम वक्ता डॉ. शोएब इकराम ने शिक्षा पर प्रेमचंद के विचारों को प्रस्तुत किया जो उनके विभिन्न लेखों में परिलक्षित होते हैं। शिक्षा पर अपने लेखन के माध्यम से प्रेमचंद जिन विचारों की वकालत करते हैं, वे बहुत महत्त्वपूर्ण हैं और आज भी प्रासंगिक हैं।

संगोष्ठी का समापन प्रो. अमीना के. अंसारी के संबोधन के साथ हुआ, जहाँ उन्होंने प्रेमचंद के विचारों से अवगत कराते हुए कहा कि साहित्य सत्य और कल्पना के बीच का संघर्ष है तथा प्रगतिशील साहित्य उनके विचार हैं। यह संगोष्ठी प्रेमचंद की लोकप्रिय कृतियों तथा उनके कम ज्ञात कथेतर लेखन के माध्यम से उस महान लेखक के कार्यों के बारे में जानने के लिए छात्रों के साथ-साथ आम पाठकों को सक्षम करने का एक प्रयास है।

आज़ादी का अमृत महोत्सव : 'साहित्य और भारत छोड़ो आंदोलन' पर सम्मेलन

8-9 अगस्त 2021, मुंबई

साहित्य अकादेमी ने 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के अवसर पर 8-9 अगस्त 2021 को मुंबई के एशियाटिक सोसाइटी के ऐतिहासिक दरबार हॉल में 'साहित्य और भारत छोड़ो आंदोलन' विषय पर द्वि-दिवसीय सम्मेलन का आयोजन किया। अपने स्वागत भाषण में साहित्य

उद्घाटन वक्तव्य देते हुए प्रो. बल्देव भाई शर्मा

अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने भारत छोड़ो आंदोलन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और भारतीय भाषाओं के साहित्यिक योगदान को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता आंदोलन के समय प्रकाशित समाचार पत्रों और पुस्तकों ने भारतीय जनता को प्रभावित किया। पत्रकारिता और जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर के कुलपति तथा जाने-माने साहित्यकार बल्देव भाई शर्मा ने अपने उद्घाटन व्याख्यान में कहा कि यह गर्व और ख़ुशी की बात है कि साहित्य अकादेमी द्वारा 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' इस प्रकार मनाया जा रहा है। यह स्थान स्वतंत्रता आंदोलन का साक्षी रहा है। उन्होंने कहा, ''हमें शब्दों से आज़ादी नहीं मिली, इसके लिए पीढ़ियों ने संघर्ष किया है। भारत का इतिहास गुलामी का इतिहास नहीं है, भारत का इतिहास निरंतर संघर्ष का इतिहास रहा है। उस दौर में साहित्यकारों और पत्रकारों ने शब्दों के अग्नि शस्त्र का प्रयोग किया है। उसी साहित्य ने भारतीय जनता में स्वतंत्रता की चेतना का संचार किया। आज हमें अपनी आध्यात्मिक चेतना को नई पीढ़ी तक पहुँचाने की आवश्यकता है।'' इस अवसर पर प्रसिद्ध ओड़िआ साहित्यकार गौरहरि दास ने अपने बीज-भाषण में भारत छोड़ो आंदोलन में ओड़िआ भाषा-साहित्य समाज के योगदान को रेखांकित किया। आरंभिक व्याख्यान में प्रसिद्ध गुजराती साहित्यकार, विद्वान सितांशु यशश्चंद्र ने साहित्य की तीन विधाओं—उपन्यास, जीवनी और कविता तथा भारत छोड़ो आंदोलन पर अपनी बात रखी। उन्होंने उस समय के समयकाल और साहित्य को भी प्रमुखता से रेखांकित किया। यद्यपि वे भौतिक रूप से उपस्थित नहीं थे, उनके विचार साहित्य अकादेमी के उपसचिव कृष्णा किम्बहुने ने पढ़कर सुनाए। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध मराठी लेखक, उपन्यासकार, विश्वास पाटिल ने की। इस अवसर पर पाटिल ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस के जीवन पर आधारित अपने प्रसिद्ध मराठी उपन्यास *महानायक* का अंग्रेज़ी अनुवाद पढ़कर सुनाया। इस कार्यक्रम में हिंदी, उर्दू और मराठी के कवियों ने देशभक्ति के गद्य और कविताओं का पाठ भी किया। गुजराती विदुषी उषा ठक्कर ने 'गाँधी के साहित्य' पर, उर्दू विद्वान शमीम तारिक ने 'भारत छोड़ो आंदोलन में मौलाना अबुल कलाम आज़ाद की भूमिका' पर तथा मराठी विद्वान बी. रंगराव ने 'स्वतंत्रता आंदोलन में बाबासाहेब अंबेडकर का योगदान' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

सम्मेलन के प्रथम सत्र में, प्रसिद्ध हिंदी लेखक और आलोचक शिवराज सिंह बेचैन ने 'आदिवासी, दलित और भारत छोड़ो आंदोलन' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया, जबकि गाँधीवादी विचारक और पत्रकार कुमार प्रशांत ने 'पत्रकारिता और भारत छोड़ो आंदोलन' पर अपना आलेख पढ़कर सुनाया'। सत्र की अध्यक्षता जाने-माने अर्थशास्त्री और विचारक भालचंद्र मुंगेकर ने की।

सम्मेलन के दूसरे दिन 9 अगस्त 2021 को आयोजित प्रथम सत्र 'देशभक्ति साहित्य : अवधारणा, प्रवृत्ति और सौंदर्यशास्त्र' विषय पर केंद्रित था। सत्र की अध्यक्षता प्रतिष्ठित मराठी लेखक-आलोचक सदानंद मोरे ने की। उन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन तथा मराठी समाज और साहित्य पर विस्तार से अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने मराठी साहित्य में स्वतंत्रता आंदोलन के समय उभरी विभिन्न वैचारिक धाराओं को भी रेखांकित किया। प्रसिद्ध सिंधी विद्वान विनोद असुदानी ने 'सिंधी में देशभक्ति साहित्य' पर अपने विचारों को व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि आज़ादी से पहले सिंधी साहित्य पर गाँधीवाद का काफ़ी प्रभाव था। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन के संदर्भ और संघर्ष की पृष्ठभूमि पर सिंधी में लिखे उपन्यासों का भी उल्लेख किया। सत्र के दूसरे वक्ता प्रतिष्ठित तमिळ लेखक-विद्वान, मालन वी. नारायणन ने कहा कि

भारत छोड़ो आंदोलन ब्रिटिश शासन के खिलाफ़ आख़िरी आंदोलन था जिसमें भारत के लोग सक्रिय थे। आंदोलन में लेखकों और पत्रकारों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता संग्राम के इस दौर को तमिळ उपन्यासों में प्रमुखता से उजागर किया गया है।

अंतिम सत्र की अध्यक्षता तेलुगु लेखिका सी. मृणालिनी ने की। उन्होंने इस अवसर पर भारत छोड़ो आंदोलन में तेलुगु साहित्य के योगदान पर भी अपने विचार व्यक्त किए। प्रसिद्ध पंजाबी लेखक-नाटककार सतीश कुमार वर्मा ने 'भारत छोड़ो आंदोलन में पंजाबी का योगदान' विषयक अपने आलेख में कहा कि पंजाब ने स्वतंत्रता आंदोलन ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उस संघर्ष के तत्त्व पंजाबी लोक साहित्य और काव्य में दृष्टिगोचर होते हैं, जिनमें गति, जोश और इंद्रियों का समन्वय दिखाई देता है। मणिपुरी विद्वान ई. विजयलक्ष्मी ने 'भारत छोड़ो आंदोलन में मणिपुरी साहित्य का योगदान' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। हिंदी के प्रख्यात हिंदी विद्वान तथा समालोचक करुणाशंकर उपाध्याय ने 'देशभक्ति साहित्य : अवधारणा, प्रवृत्ति और सौंदर्यशास्त्र' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान, न केवल हिंदी में बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं में भी देशभक्ति साहित्य का निर्माण किया गया था। उन्होंने कहा कि देशभक्ति बहुत प्राचीन अवधारणा है। हमारे देश में सांस्कृतिक, भौगोलिक और भाषाई विविधता है जिसमें एकता का अर्थ निहित है। उन्होंने इस अवसर पर प्रमुख हिंदी कवियों की देशभक्ति कविताओं का भी उल्लेख किया।

उपसचिव कृष्णा किम्बहुने ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा। इस कार्यक्रम में विद्वानों, मीडिया हस्तियों ने भाग लिया और साथ ही साथ साहित्य अकादेमी के यू-ट्यूब चैनल पर इसका सीधा प्रसारण भी किया गया। सम्मेलन के दोनों दिन महाराष्ट्र सरकार के एस.ओ.पी. का कड़ाई से पालन किया गया।

'ब्रजेंद्र कुमार ब्रह्म के जीवन और कार्य' विषय पर संगोष्ठी

10 दिसंबर 2021, असम

साहित्य अकादेमी ने बी.डी.टी.ए. और रंडिया कॉलेज के सहयोग से *गणकबी बैष्णब पानी चयनिका* नामक पुस्तक पर अनिल कुमार बर', ब्रजेंद्र शइकिया, मिहिर कुमार ब्रह्म, भूपेन नार्जारी, नरेश्वर नार्जारी, तुलन मुछाहारी, लोकनाथ गोयारी, लाहेराम मुसाहारी, भैरबि बर', आदाराम बसुमतारी, रीता बर', गोगोम ब्रह्म कछारी, मतिसन दैमारि, रमेश चंद्र नार्जारी और दीपाली खेर्कातारी जैसे विद्वानों के साथ एक पुस्तक चर्चा कार्यक्रम का 10 दिसंबर 2021 को रंडिया कॉलेज, असम में आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने वक्ताओं का परिचय श्रोताओं से भी कराया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता बर' विभाग शिक्षक संघ के अध्यक्ष डॉ. मिहिर कुमार ब्रह्म ने की। रंडिया कॉलेज, रंडिया के प्राचार्य डॉ. ब्रजेंद्र शइकिया ने आरंभिक व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने ब्रजेंद्र कुमार ब्रह्म द्वारा लिखित कई पुस्तकों पर प्रकाश डाला है। साहित्य अकादेमी के बर' परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. अनिल कुमार बर' ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। इस संगोष्ठी में बर' साहित्य सभा के महासचिव श्री प्रशांत बर' ने भी भाग लिया। उन्होंने अनुसंधान और शैक्षणिक उद्देश्यों में सार्वभौमिक शब्दावली के उपयोग पर बल दिया।

संगोष्ठी का दृश्य

प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. आर. ब्रह्म ने की। सत्र में चार वक्ताओं यथा—डॉ. लाहेराम मुसाहारी, डॉ. नरेश्वर नार्जारी, डॉ. तुलन मुसाहारी और सुश्री मंजू लहरी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र के प्रथम आलेख वक्ता डॉ. लाहेराम मुसाहारी ने अपने आलेख 'ब्रजेंद्र कुमार ब्रह्म की कविता में मार्क्सवाद' के माध्यम से इस बात पर प्रकाश डाला कि किस प्रकार मार्क्सवाद ने ब्रह्म की कविताओं को प्रभावित किया। डॉ. नरेश्वर नार्जारी ने अपने आलेख 'ब्रजेंद्र कुमार ब्रह्म की कविता की दुनिया' के माध्यम से विषयों, शैली तथा लेखन तकनीकों की पड़ताल की। डॉ. तुलन मुछाहारी का आलेख विशेष रूप से ब्रजेंद्र कुमार ब्रह्म के प्रसिद्ध गद्य संग्रहों में से एक 'खोबम द्वादनई जिउ' पर आधारित था। उन्होंने 'खोबम द्वादनई जिउ—एक आलोचनात्मक अध्ययन' नामक अपने आलेख में लेखन शैली और विषयों के बारे में पता लगाने का प्रयास किया। सुश्री मुंजू लहरी ने अपने आलेख 'बोरो रोमांटिक कविता' के माध्यम से गतिशील कवि ब्रजेंद्र कुमार ब्रह्म की रोमांटिक कविताओं पर प्रकाश डाला। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता आदाराम बसुमतारी ने की। सत्र में चार वक्ताओं यथा—सुश्री भैरबि बर', डॉ. गोगोम ब्रह्म कछारी, डॉ. मतिसन दैमारि तथा श्री रमेश चंद्र नार्जारी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सुश्री भैरबि बर' का आलेख 'सिमंगनिफ्राई फ्विफिननवी' कविता पर आधारित था। उन्होंने ब्रजेंद्र कुमार ब्रह्म कृत *सिमंगनिफ्राई फ्विफिननवी* विषयक अपने आलेख में कविता के विषय और लेखन शैली की पड़ताल की। डॉ. गोगोम ब्रह्म कछारी ने 'ब्रजेंद्र कुमार ब्रह्म में परिलक्षित मानवता' विषयक अपने आलेख में बताया कि मानवता का प्रतिबिंब ब्रजेंद्र कुमार ब्रह्म की सामान्य विशेषताओं में से एक है। डॉ. मतिसन दैमारि का आलेख ब्रजेंद्र कुमार ब्रह्म के गद्य-लेखन पर आधारित था। 'ब्रजेंद्र कुमार ब्रह्म का गद्य : एक अध्ययन' विषयक अपने आलेख में उन्होंने ब्रह्म के गद्य के विषयों तथा उनकी लेखन शैलियों के बारे में में बताया। श्री रमेश चंद्र नार्जारी ने अपने आलेख 'ब्रजेंद्र कुमार ब्रह्म में राजनीतिक दृश्यों का प्रतिबिंब' के माध्यम से ब्रह्म की कविता में परिलक्षित राजनीतिक दृश्यों पर प्रकाश डाला।

'अन्ना भाऊ साठे जन्म शतवार्षिकी' पर संगोष्ठी

22 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

संगोष्ठी का दृश्य

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई ने अपनी वेबलाइन साहित्य शृंखला के अंतर्गत 22 अप्रैल 2021 को 'अन्ना भाऊ साठे जन्म शतवार्षिकी' पर संगोष्ठी का आयोजन किया। संगोष्ठी में आमंत्रित अतिथियों ने अन्ना भाऊ साठे के जीवन और साहित्य पर विस्तार से चर्चा की। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के मराठी परामर्श मंडल के सदस्य प्रमोद मुंगटे ने की। प्रसिद्ध मराठी लेखक मंगेश बंसोड़ ने 'लोक कलाकार अन्ना भाऊ साठे' पर तथा प्रभाकर देसाई ने 'बीसवीं सदी का साहित्य और उसकी भूमिका के संदर्भ में अन्ना भाऊ साठे' विषयों पर अपने विचार व्यक्त किए।

नंदकुमार कामथ ने अन्ना भाऊ साठे के महिला अधिकारों के संबंध में कहानी-लेखन की बात कही। इस अवसर पर कैलाश उम्ब्रे ने भी अन्ना भाऊ साठे के जीवन के विभिन्न आयामों तथा साहित्य पर अपने विचार व्यक्त किए तथा संगोष्ठी का अंतिम आलेख प्रसिद्ध शोधकर्ता बजरंग कोर्डे ने प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का संचालन कार्यक्रम अधिकारी ओम प्रकाश नागर ने किया।

'लोकमान्य तिलक के जीवन और कार्य' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

17-18 फ़रवरी 2022, कोल्हापुर

संगोष्ठी का दृश्य

साहित्य अकादेमी ने 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के अवसर पर कोल्हापुर में शिवाजी विश्वविद्यालय के यशवंतराव चव्हाण स्कूल ऑफ़ रूरल डेवलपमेंट तथा मराठी विभाग के सहयोग से 17-18 फ़रवरी 2022 को 'लोकमान्य तिलक के जीवन और कार्य' विषय पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया। अपने स्वागत भाषण में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने भारत के मूल विचार, विविधता और विविधता में एकता को रेखांकित किया। साथ ही यह भी कहा कि इस विविधता में कोई अलग या पृथक नहीं है। जब किसी के पास जीवन की एकीकृत दृष्टि होती है, तो वह इसे आसानी से समझ सकता है। साहित्य अकादेमी के मराठी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रंगनाथ पठारे ने आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया। अपने उद्घाटन भाषण में प्रतिष्ठित मराठी विद्वान सदानंद मोरे ने कहा कि लोकमान्य तिलक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की नींव रखने वाले अग्रणियों में से एक थे। गाँधी जी उनसे संकेत प्राप्त कर स्वतंत्रता संग्राम को एक अलग और अधिक गहन स्तर पर ले आए। इस सत्र की अध्यक्षता, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के कुलपति डी.टी. शिर्के ने की। साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई के प्रभारी अधिकारी ओम प्रकाश नागर ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रथम सत्र का विषय था—'संस्कृति एवं भाषा विषयक विचार और गीता रहस्य'। इस सत्र की अध्यक्षता प्रकाश पवार ने की। सत्र में एकनाथ पाग, वर्षा तोडमल तथा नंदकुमार मोरे ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र का विषय था—'राजकीय, कृषि, आर्थिक एवं समाज-सुधार विषयक विचार'। इस सत्र की अध्यक्षता राजन गावस ने की। प्रदीप कुमार माने, भारती पाटील तथा अभय टिळक ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता रफ़ीक सूरज ने की। इस सत्र का विषय था—'तिलक और महात्मा गाँधी, छत्रपति शाहू महाराज, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर'। विनोद सिरसाठ तथा वासुदेव कुलकर्णी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

समापन वक्तव्य यशवंतराव चव्हाण स्कूल ऑफ़ रूरल डेवलपमेंट के अध्यक्ष प्रकाश पवार ने प्रस्तुत किया तथा रंगनाथ पठारे ने सत्र की अध्यक्षता की। शिवाजी विश्वविद्यालय के मराठी विभागाध्यक्ष डॉ. रणधीर शिंदे ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

इस संगोष्ठी में विश्वविद्यालय के विद्वानों, मीडिया हस्तियों तथा छात्रों ने भाग लिया। संगोष्ठी के दोनों दिन महाराष्ट्र सरकार के मानक संचालन प्रक्रिया का कड़ाई से पालन किया गया।

'संत कवि भीम भोई' पर संगोष्ठी

25 सितंबर 2021, संबलपुर, ओडिशा

संगोष्ठी का दृश्य

साहित्य अकादेमी ने भीम भोई रिसर्च चेयर, गंगाधर मेहर यूनिवर्सिटी, संबलपुर के सहयोग से 25 सितंबर

2021 को 'संत कवि भीम भोई' पर संगोष्ठी का आयोजन किया, जिसमें प्रो. एन. नागराजू, प्रो. दीपक कुमार बेहरा, प्रो. प्रदीप कुमार पांडा, डॉ. बिजयानंद सिंह, श्री फनिन्दम देव, श्री श्याम भोई, श्री कुमुदा रंजन पाणिग्रही, श्री हरिश्चंद्र साहू, श्री अखिला बिस्वाल और श्री कालिदास मिश्र जैसे प्रसिद्ध ओड़िआ लेखक और विद्वान शामिल थे।

स्वागत भाषण साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मिहिर कुमार साहू ने प्रस्तुत किया। उन्होंने श्रोताओं से वक्ताओं का परिचय कराया तथा कवि भीम भोई का संक्षिप्त जीवन परिचय प्रस्तुत किया। संगोष्ठी का उद्घाटन जी.एम. विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एन. नागराजू ने किया। के.आई.एस.एस. विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. दीपक कुमार बेहरा उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि थे। भीमा भोई अनुसंधान चेयर अध्यक्ष एवं गंगाधर मेहर विश्वविद्यालय के प्रो. प्रदीप कुमार पांडा ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। ओड़िआ परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. बिजयानंद सिंह ने सत्र की अध्यक्षता की।

भीम भोई (1850-1895) संत, कवि और दार्शनिक थे। वह महिमा स्वामी के भक्त थे (जिन्हें आमतौर पर महिमा गोसाईं कहा जाता है तथा जिनके जन्म का नाम मुकुंद दास है)। महिमा स्वामी से, भीम भोई ने महिमा धर्म में दीक्षा प्राप्त की, जिसने अपनी शर्तों पर जाति आधारित हिंदू धर्म के अधिकार को चुनौती दी थी। उद्घाटन सत्र में जी.एम. विश्वविद्यालय की रजिस्ट्रार सुश्री जुगलेश्वरी दास ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. कालिदास मिश्र ने की तथा इस सत्र में श्री फणीन्दम देव और श्री श्याम भोई ने क्रमशः 'भीम भोई : भाटा, सिद्ध, साधक, कबि, महिमा धर्म प्रचारक' और 'धर्म पचे निंदा हाउ धरणी मंडल राहु/शून्य धरती आकाश, आकाश भासी ना जाऊ : भीम भोइंका रचनारे बैप्लबिका चेतना' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. कुमुदा रंजन पाणिग्रही ने की और इस सत्र में डॉ. अखिल विश्वास और डॉ. हरिश्चंद्र साहू द्वारा क्रमशः 'भारतीय योग परंपरा औ भीम भोई' तथा 'भक्ति धारा औ प्रभाक्त : संत कबि भीम भोई' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। धन्यवाद प्रस्ताव डॉ. प्रदीप कुमार पांडा ने प्रस्तुत किया।

'समाजस्य विकासे संस्कृत भक्ति साहित्यस्य योगदानम्' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

24-25 जनवरी 2022, तिरुपति

साहित्य अकादेमी ने राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति के सहयोग से 24-25 जनवरी 2022 को उक्त विषय पर संस्कृत में द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि संस्कृत साहित्य हमेशा सार्वभौमिकता और भाईचारे पर बल देता है। यह न केवल सभी को भक्तिपूर्ण धर्म पथ की ओर ले जाता है बल्कि नवाचार के लिए भी प्रोत्साहित करता है। साहित्य अकादेमी के संस्कृत परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. अभिराज राजेंद्र मिश्र ने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि संस्कृत भक्ति साहित्य आध्यात्मिक पथ के अलावा सामाजिक चेतना पर आधारित है। कर्नाटक संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के.ई. देवनाथन् के अस्वस्थ होने के कारण, उनका बीज-भाषण प्रो. रंगनाथ द्वारा पढ़कर सुनाया गया। राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,

स्वागत वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव

तिरुपति के प्रभारी कुलपति प्रो. राधा कांत ठाकुर ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ. एन. सुरेश बाबू ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा। उद्घाटन सत्र के आरंभ में, सभी गणमान्य व्यक्तियों ने राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति के कुलपति प्रो. मुरलीधर शर्मा को पुष्पांजलि अर्पित की, जिनका कुछ दिन पहले हृदय गति रुकने से निधन हो गया था।

प्रथम सत्र का विषय था—'स्तोत्रसाहित्यस्य समाजोपयोगिता'। इस सत्र की अध्यक्षता प्रोफ़ेसर जी.एस.आर. कृष्णमूर्ति, डीन, अकादमिक मामले, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति ने की, तथा उन्होंने 'भागवतपाड़ा के भक्ति भजन : समाज का संवर्धन' विषय पर आलेख भी प्रस्तुत किया। प्रख्यात संस्कृत विद्वान प्रो. के. रामसूर्यनारायण ने 'भक्ति भजनों का साहित्य : समाज का संवर्धन' पर आलेख प्रस्तुत किया। भक्ति व्याख्यान के प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान डॉ. अकेल्लविभीषण शर्मा ने 'वेंकटेश्वरस्तोत्राणां समाजोपयोगिता' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया।

द्वितीय सत्र का विषय था—'अद्वैतविशिष्टा-द्वैतस्तोत्राणां समाजोपयोगिता'। साहित्य अकादेमी के संस्कृत परामर्श मंडल के सदस्य प्रो. एस. रंगनाथ ने सत्र की अध्यक्षता की तथा 'अद्वैतस्तोत्राणां समाजोपयोगिता' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। प्रो. सी. रंगनाथन, प्रोफ़ेसर, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति ने 'वेदांतदेशिकास्तोत्राणां समाजोपयोगिता' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। प्रोफ़ेसर जी. शंकरनारायणनं, प्रोफ़ेसर, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति साहित्य ने 'स्तोत्राणां चारित्रकविषययोगदानाम्' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया।

तृतीय सत्र का विषय था—'शैवशाक्तस्तोत्राणां समाजोपयोगिता'। सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के संस्कृत परामर्श मंडल के सदस्य प्रो. रमाकांत पाण्डेय ने की। प्रसिद्ध संस्कृत लेखक डॉ. के.एस.एस.वी. प्रसाद शर्मा ने 'शैवशाक्तस्तोत्राणां समाजोपयोगिता' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। प्रो. रानी सदाशिव मूर्ति, साहित्य में प्रोफ़ेसर, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति ने 'शाक्तपौराणिकस्तोत्राणां समाजोपयोगिता' पर आलेख प्रस्तुत किया। डॉ. वी. सुब्रह्मण्यम, सहायक निदेशक, संस्कृत अकादेमी, हैदराबाद ने 'शक्तिस्तोत्राणां समाजोपयोगिता' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया।

चतुर्थ सत्र का विषय था—'वेदांतस्तोत्राणां समाजोपयोगिता'। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. रानी सदाशिवमूर्ति ने की। राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति की प्रोफ़ेसर सी. ललिता रानी ने 'प्रकीर्ण स्तोत्राणां समाजोपयोगिता' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया।

साहित्य अकादेमी के संस्कृत परामर्श मंडल के संयोजक तथा प्रख्यात संस्कृत विद्वान प्रो. अभिराज राजेंद्र मिश्र ने पंचम तथा अंतिम सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने 'भारतीयदर्शनानां समाजोपयोगिता' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। प्रोफ़ेसर (साहित्य) रमाकांत पांडे, केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर कैंपस, जयपुर ने 'प्रत्याभिज्ञानदर्शनम्-समाजोपयोगिता' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। प्रख्यात हिंदी तथा संस्कृत विद्वान, वाराणसी के प्रो. उदय प्रताप सिंह ने 'वल्लभदर्शनम् समाजोपयोगिता' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। राजस्थान के प्रख्यात संस्कृत विद्वान प्रो. नरेंद्र अवस्थी ने 'विशिष्टाद्वैतदर्शनम्-समाजोपयोगिता' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया।

राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति की ओर से प्रो. जी.एस.आर. कृष्णमूर्ति द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न हुई। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव की ओर से डॉ. एन. सुरेश बाबू ने सहयोगी विश्वविद्यालय तथा प्रतिभागियों का आभार प्रकट किया।

'सिंधी लेखकों का अन्य भाषाओं में योगदान' विषय पर संगोष्ठी

9 मार्च 2022, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने 9 मार्च 2022 को साहित्य अकादेमी सभागार, नई दिल्ली में 'सिंधी लेखकों का अन्य भाषाओं में योगदान' विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने स्वागत भाषण दिया। भाषण में उन्होंने कहा कि भारत एक बहुभाषी और बहु-सांस्कृतिक देश है और यही संस्कृतियों की विविधता है, जो हमें एक सूत्र में बाँधती है। सिंधी लेखकों ने अपने लेखन के माध्यम से न केवल भाषा और संस्कृति में योगदान दिया है, बल्कि अपने साहित्य में बहुत-सी ऐतिहासिक वास्तविकताओं को भी दर्शाया है। उन्होंने आगे कहा कि सिंधी लेखकों ने भी अन्य भाषाओं में सराहनीय योगदान दिया है।

इस अवसर पर सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक नामदेव ताराचंदाणी ने अन्य भाषाओं के साहित्य में सिंधी लेखकों के रचनात्मक योगदान की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि सिंधी लेखकों का हिंदी, अंग्रेज़ी, पाली तथा अन्य भारतीय भाषाओं में योगदान सिंधी लेखकों की भावी युवा पीढ़ी के लिए एक बहुत ही प्रेरक तथ्य है।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात सिंधी लेखक और आलोचक मोहन गेहानी ने की।

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए श्री मोहन गेहानी

प्रथम सत्र में डॉ. के. श्रीनिवासराव ने 'साहित्य अकादेमी के प्रथम सचिव—'श्री कृष्ण कृपलानी—उनका जीवन और कार्य' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। भगवान गिडवानी पर राम जवाहराणी, मोहन दीप पर मोहन हिमथाणी, राजकुमार केशवाणी पर अशोक मनवाणी और नारायण समताणी पर वीणा श्रृंगी ने क्रमशः आपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए।

लेखक हिरो ठाकुर की अध्यक्षता वाले द्वितीय सत्र में नामदेव ताराचंदाणी ने अनीता मूरजाणी पर, मोहन गेहाणी ने सुनील खिलवाणी पर, साज़ अग्रवाल ने मुरली मेलवाणी पर, मीनू प्रेमचंदाणी ने नंदिता भवनाणी पर क्रमशः आपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए।

इस अवसर पर ढोलन राही द्वारा लेखिका जया जादवाणी की रचनात्मकता पर लिखे गए आलेख का वाचन सिंधी युवा लेखक जयेश शर्मा ने किया।

इस कार्यक्रम में साहित्यकारों, मीडियाकर्मियों ने भाग लिया तथा कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई के प्रभारी अधिकारी ओम प्रकाश नागर ने किया।

साहित्योत्सव 2022

'भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन पर साहित्य का प्रभाव' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

13-15 मार्च 2022, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने 13-15 मार्च 2022 को रवींद्र भवन, नई दिल्ली में 'भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन पर साहित्य का प्रभाव' विषय पर त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों और दर्शकों का स्वागत किया और त्रि-दिवसीय संगोष्ठी में चर्चा किए जाने वाले विषयों के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में, साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की

विशिष्टता तथा विभिन्न प्रकार के साहित्य ने किस प्रकार इस आंदोलन को प्रभावित किया, के बारे में बात की। अपने उद्घाटन व्याख्यान में प्रख्यात हिंदी कवि, साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष तथा महत्तर सदस्य डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने देश भर के कवियों द्वारा विशेष रूप से हिंदी और संबद्ध भाषाओं में आंदोलन की विभिन्न धाराओं और उन पर महारत हासिल करने के बारे में बात की। अपने बीज-भाषण में प्रख्यात लेखक, विद्वान, आलोचक और अनुवादक डॉ. हरीश त्रिवेदी ने संघर्ष के साहित्यिक चित्रण, आंदोलन की धाराओं और स्वतंत्रता आदि विषयों पर प्रकाश डाला। साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने अपनी समापन टिप्पणी में विभिन्न भाषाओं में आंदोलन की साहित्यिक पकड़ की गहराई और ताकत के बारे में बात की तथा उन्होंने यह भी बताया कि इसने जनता और आंदोलन को किस प्रकार प्रभावित किया।

प्रथम सत्र का विषय 'राष्ट्रवादी साहित्य और स्वतंत्रता के विचार' था। श्री नंद किशोर आचार्य की अध्यक्षता में प्रथम सत्र में, तीन प्रख्यात विद्वानों, डॉ. वेल्लिक्कील राघवन, श्री कपिल कुमार और डॉ. एम. ए. अलवर ने अपने आलेख प्रस्तुत किए, जिसमें बताया गया कि साहित्य ने किस प्रकार जनता में स्वतंत्रता के विचार को जन्म दिया। श्री दामोदर मावज़ो की अध्यक्षता में 'भारतीय साहित्य और उभरते भारत' को समर्पित द्वितीय सत्र में, तीन प्रख्यात विद्वानों, प्रो. राणा नायर, डॉ. धनंजय सिंह और डॉ. जयदीप सारंगी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए, जिनमें बताया गया कि किस प्रकार विभिन्न भाषाओं के भारतीय साहित्य ने युवाओं को प्रेरित किया। आंदोलन को आगे जारी रखने में एवं युवाओं को प्रेरित करने में भारतीय साहित्य की अहम भूमिका रही है। तृतीय सत्र में 'स्वतंत्रता आंदोलन में अनुवाद की भूमिका' को समर्पित तथा डॉ. चंद्रकांत पाटिल की अध्यक्षता में, तीन प्रख्यात विद्वानों, डॉ. रक्षंदा जलील, श्री दामोदर खडसे और डॉ. जीवन नामदुंग ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रस्तुत आलेखों में बताया गया कि किस प्रकार अनुवाद ने भारत के विभिन्न समुदायों को एकजुट किया तथा आंदोलन में मदद की।

संगोष्ठी का चतुर्थ सत्र—'भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य का उदय तथा उसका भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के साहित्य पर प्रभाव' का प्रारंभ सोमवार, 14 मार्च 2022 को पूर्वाह्न 10 बजे प्रारंभ हुआ। प्रख्यात लेखक और आलोचक प्रो. सुमन्यु सत्पथी ने सत्र की अध्यक्षता की। इस सत्र में प्रो. सचिन केतकर, प्रो. ओम द्विवेदी और डॉ. सायंतन दासगुप्ता ने आलेख प्रस्तुत किए। सचिन केतकर ने कहा कि अंग्रेज़ी में भारतीय साहित्य सामाजिक, संस्थागत, वैचारिक और मीडिया संदर्भों जैसे पश्चिमी शैक्षणिक संस्थानों (जैसे हिंदू कॉलेज), उपनिवेशवाद विरोधी राष्ट्रवाद और सुधार आंदोलनों के धर्मनिरपेक्ष वैचारिक एजेंडा के कारण प्रिंट क्षेत्र में तेज़ी से विकास हुआ है। ओम द्विवेदी ने कहा कि भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य ने एक लंबा सफर तय किया है और वैश्विक साहित्यिक परिदृश्य में उसका एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। जब हम इस क्षेत्र के उदय की बात करते हैं, तो हमें उन प्रतिमानों को भी देखने की आवश्यकता होती है जो इसे स्थान और सत्तामीमांसा प्रदान करते हैं। लेखक का स्थान, साहित्यिक कार्य का स्वागत, 'अंधेरे भारत' की कथा, अंग्रेज़ी की चिंता, प्रतिनिधित्व के मुद्दे, प्रामाणिकता और सांस्कृतिक द्वारपाल के रूप में वैश्विक साहित्यिक बाज़ार में कुछ प्रमुख मुद्दे हैं जो इस क्षेत्र में व्याप्त हैं। सायंतन दासगुप्ता ने कहा कि साहित्यिक इतिहास, व्यापक सामाजिक और सांस्कृतिक प्रथाओं को समझने का एक मूल्यवान स्रोत है। पहली नज़र में, साहित्यिक इतिहास घटनाओं और घटनाओं के कालक्रम को प्रस्तुत करने का प्रतीत हो सकता है, लेकिन यह जल्द ही स्पष्ट हो जाता है कि साहित्यिक इतिहास का लेखन ही एक ऐसा अभ्यास है जो साहित्य और उसके इतिहास पर उतना ही प्रकाश डालता है जितना इतिहासकार और उनकी समझ और बड़े सामाजिक परिवर्तन की प्रतिक्रिया पर।

पंचम सत्र का विषय था— 'स्वतंत्रता आंदोलन में पत्रकारिता की भूमिका'। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात

लेखक और पत्रकार श्री बल्देव भाई शर्मा ने की। इस सत्र में श्री मालन वी. नारायणन, श्री अनंत विजय और श्री मधु आचार्य 'आशावादी' ने अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री अनंत विजय ने कहा, ''पत्रकारिता ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हमें पत्रकारिता को कभी भी केवल राजनीतिक पत्रकारिता के रूप में नहीं लेना चाहिए, क्योंकि यह इससे कहीं अधिक है।'' उन्होंने पाया कि दो मामलों—रखमाबाई और गणेश शंकर विद्यार्थी की हत्या—ने पत्रकारिता के पूरे परिदृश्य को बदल दिया। मालन वी. नारायणन ने कहा कि यह न तो आश्चर्यजनक संयोग है और न ही ऐतिहासिक दुर्घटना है कि हमारे स्वतंत्रता आंदोलन के लगभग सभी नेता पत्रकार थे। उन्होंने कहा कि वह इस वाक्य को फिर से लिखना चाहेंगे क्योंकि हमारे अधिकांश अग्रणी पत्रकार स्वतंत्रता आंदोलन के नेता थे। भारत में राजनीतिक आंदोलनों के जन्म से पहले ही, पूरे देश में स्वतंत्रता आंदोलनों का नेतृत्व पत्रकारों ने किया था। यह भारतीय प्रेस का ही संघर्ष था, जिसने स्वतंत्रता आंदोलन को राष्ट्रीय चरित्र दिया। श्री मधु आचार्य 'आशावादी' ने कहा कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की गाथा वास्तव में भारतीय पत्रकारिता की कहानी है। पत्रकारों ने अपने ब्रिटिश विरोधी उग्र विचारों को निडरता से व्यक्त किया और आम लोगों के बीच स्वतंत्रता के बारे में जागरूकता फैलाई। यह स्वतंत्रता संग्राम में पत्रकारिता का प्रमुख योगदान था। श्री बल्देव भाई शर्मा ने सत्र का समापन करते हुए कहा कि विशेष समय के दौरान भारतीय स्वाधीनता संग्राम में स्वतंत्रता और पत्रकारिता एक ही सिक्के के दो पहलू बन गए। पत्रकारिता अनिवार्य रूप से राष्ट्र के कल्याण और जागरूकता का अंग बन गई थी।

डॉ. गौरहरी दास ने षष्ठ सत्र—'भारतीय कथा साहित्य में स्वतंत्रता के लिए तड़प' की अध्यक्षता की। इस सत्र में डॉ. बी. तिरुपति राव, डॉ. दर्शन ढोलकिया ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। बी. तिरुपति राव ने विशेष रूप से आधुनिक तेलुगु साहित्य के संदर्भ में अपना आलेख प्रस्तुत किया और कहा कि इसकी उत्पत्ति 20वीं शताब्दी की शुरुआत में तेलुगु में सुधारवादी आंदोलन से हुई थी। तीनों, वीरदालिंगम, गुरजादा अप्पा राव और गिदुगु राममूर्ति ने तेलुगु भाषा को आधुनिक विचारों में बदल दिया। वास्तव में, तीन सुधारक प्राचीन तेलुगु को आधुनिक तेलुगु में बदलने के उत्तरदायी हैं। दर्शना ढोलकिया ने अपने आलेख में कहा है कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और महात्मा गाँधी द्वारा इसके संदर्भ में अपनाए गए मूल्य साहित्य में विभिन्न रूपों में परिलक्षित होते हैं। कभी प्रत्यक्ष तो कभी परोक्ष रूप से, कभी प्रत्यक्ष प्रचार के रूप में, कभी वैचारिक संदर्भ में तो कभी वर्तमान में इतिहास के प्रक्षेपण के रूप में। गौरहारी दास ने कहा कि साहित्य केवल मानव जाति का समानांतर इतिहास नहीं है; यह सभ्यता का समानांतर राजनीतिक आख्यान भी है। साहित्य-कथा और कविता दोनों ही समाज के ज्वलंत चित्र प्रस्तुत करते हैं, जिन्हें राजनीतिक इतिहास के परिप्रेक्ष्य के रूप में नजरअंदाज़ कर दिया जाता है।

सप्तम सत्र का विषय था—'लोकगीत और स्वतंत्रता आंदोलन'। इस सत्र की अध्यक्षता प्रतिष्ठित कवि और विद्वान प्रो. सितांशु यशश्चंद्र ने की। इस सत्र में डॉ. प्रदीप ज्योति महंत और डॉ. फ़ारूक फ़ैयाज़ ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रदीप ज्योति महंत ने कहा कि लोककथाओं की छत्रछाया में गद्य में कविता और आख्यान की मौखिक परंपराएँ एक मौखिक कला के रूप में हैं, जिसमें कोई लेखक नहीं है तथा इसने भारत की दोनों साक्षर और गैर - साक्षर आबादी के इलाकों में संचार का बहुत अच्छा कार्य किया है। फ़ारूक फ़ैयाज़ ने अपने आलेख—'लोकगीत और कश्मीरी स्वतंत्रता आंदोलन' में बताया कि इतिहास के विभिन्न चरणों में साम्राज्यवादी शक्तियों द्वारा स्वतंत्र चरित्र के नुक़सान के विरुद्ध राष्ट्रवादी भावनाओं के साथ तीव्र जन लालसा को सदा से ही उपयुक्त स्थान नहीं मिला है। लेकिन केवल कश्मीरी रचनात्मक साहित्य में इसकी गूँज लोक साहित्य की विभिन्न विधाओं में भी अच्छी तरह से गूँजती है। प्रो. सितांशु यशश्चंद्र ने यह कहकर सत्र का समापन किया कि देश के विभिन्न हिस्सों ने स्वतंत्रता आंदोलन

में विविध तरीक़ों से भाग लिया तथा लोककथाओं ने स्वतंत्रता संग्राम में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अष्टम सत्र का विषय था—'भारतीय कविता और स्वतंत्रता आंदोलन'। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात कवि और आलोचक उदय नारायण सिंह ने की। इस सत्र में प्रो. आर. राज राव और प्रो. जतिंद्र कुमार नायक ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. सिंह ने 'बाङ्ला कविता और स्वतंत्रता आंदोलन : कुछ विचार' विषय पर अपने विचार साझा किए। उन्होंने कहा कि एक राष्ट्र को लंबे समय से गुलामी झोल रहे देश को आज़ाद करने के लिए बहुत साहस और समर्पण की आवश्यकता होती है, जिसमें हताशा की भावना और कुछ हद तक पागलपन भी शामिल होता है। सदियों से चले आ रहे शोषण, भयानक दमन और अत्याचार से क्षुब्ध होकर देश के विभिन्न भागों से आए भारतीयों ने अंग्रेजों के विरुद्ध असंख्य आंदोलन किए। आर. राज राव ने अपने आलेख में कहा कि आधुनिक भारतीय कविता, स्वतंत्रता के बाद निसिम ईजेकील के साथ आरंभ हुई। 1941 से 1949 भारत की राजनीति के सबसे महत्त्वपूर्ण तथा संवेदनशील वर्ष थे। जतिंद्र कुमार नायक ने 'मेकिंग थिंग्स हैपन : ओड़िआ पोएट्री एंड द फ्रीडम मूवमेंट' साम्राज्यवादी शक्ति विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। भारत में अपने औपनिवेशिक आकाओं के खिलाफ़ लड़े गए स्वतंत्रता आंदोलन में कवियों के दृढ़ विश्वास नई संभावनाओं की भावना और उत्पीड़ितों के साथ एकजुटता की भावना से ओत-प्रोत शब्दों ने स्वतंत्रता सेनानिया में निरंतर ऊर्जा का संचार किया।

नवम सत्र का विषय था—'महिला लेखक और स्वतंत्रता आंदोलन'। प्रो. संजुक्ता दासगुप्ता ने इस सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि औपनिवेशिक काल के दौरान महिलाओं की शिक्षा, महिला लेखन और स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी महत्त्वपूर्ण रूप से परस्पर जुड़ी हुई है। दरअसल, भारत में नारी मुक्ति की शुरुआत राष्ट्रवादी आंदोलन के दौरान हुई थी। भारत की सभी प्रमुख भाषाओं में महिलाओं के लेखन ने राष्ट्रवादी राजनीति को अलग-अलग विषयों और शैलियों में संबोधित किया है जो क्षेत्र-विशिष्ट और संस्कृति-विशिष्ट हैं। इस सत्र में डॉ. सुधा शेषायन और डॉ. सुनीता भदवाल ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. भदवाल ने महिलाओं को समाज की निर्माता बताते हुए स्वतंत्रता आंदोलन में डोगरी महिला लेखिकाओं के योगदान पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। डॉ. सुधा शेषायन ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में तमिळ महिला लेखिकाओं के अत्यधिक महत्त्वपूर्ण योगदान पर चर्चा की। अनिल कुमार बर' ने दशम् सत्र की अध्यक्षता की। इस सत्र का विषय था—'हाशिए के लोगों की आवाज़ और स्वतंत्रता आंदोलन'। उन्होंने कहा कि जब हम भारतीय समाज के आदिवासियों, दलितों और हाशिए के वर्गों के बारे में बात करते हैं, तो हम सभी स्वीकार करते हैं कि हमारे समाज में ऐसे लोगों का एक वर्ग है जो बाक़ी समाज से अलग-थलग था, जो लोग विशेष रूप से सामाजिक और आर्थिक रूप से दूसरों से पिछड़े हुए थे। ऐसे में ये वर्ग ख़ुद को 'वंचित' और 'उपेक्षित' मानते थे, शोषित होते थे और उन्हें समान अधिकारों के लिए संघर्ष करना पड़ता था। मेरी अपनी बर' जनजाति से कई ऐसे लोग हैं जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया और अपने प्राणों की आहुति दी। मदन मोहन सोरेन के आलेख में झारखंड के छोटा नागपुर क्षेत्रों में जनजातीय विद्रोह और संताली, बाङ्ला, हिंदी और अंग्रेज़ी जैसी महत्त्वपूर्ण भाषाओं के साहित्य में उनके प्रतिबिंब पर विशेष ध्यान देने के साथ हाशिए की आवाज़ और स्वतंत्रता आंदोलन को प्रमुखता से उजागर किया गया। हरि राम मीणा ने कहा कि, इस तथ्य को रेखांकित किया जाना चाहिए कि स्वतंत्रता संग्राम को अक्सर 1857 के विद्रोह की शुरुआत माना जाता है, जो ग़लत है। भारत के आदिवासी क्षेत्रों में स्वतंत्रता के लिए संघर्ष लगभग तब से शुरू हो गया था जब अंग्रेज़ों ने ईस्ट इंडिया कंपनी के रूप में पूर्वी भारत में अपनी सत्ता स्थापित की थी। यह सिलसिला 1757 के प्लासी के युद्ध से शुरू होता है। शिवराज सिंह बेचैन ने कहा कि स्वतंत्रता आंदोलन की अवधि और दायरा बहुत व्यापक है। जहाँ तक हाशिए की आवाज़ों का स्वतंत्रता आंदोलन से संबंध है, यह इतिहास का अविभाज्य अंग है।

'बर' में साहित्यिक अनुकूलन : विशेषरूप से असमिया साहित्य के संदर्भ में' विषय पर परिसंवाद

13 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने आभासी मंच के अंतर्गत 13 अप्रैल 2021 को 'बर' में साहित्यिक अनुकूलन : विशेषरूप से असमिया साहित्य के संदर्भ में' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया।

कार्यक्रम में स्वागत भाषण साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने दिया। उन्होंने वक्ताओं का परिचय दर्शकों से भी कराया। साहित्य अकादेमी के बर' परामर्श मंडल की सदस्या प्रो. अंजली बसुमतारी ने आरंभिक व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने परिसंवाद के विषय के महत्त्व के साथ-साथ विषय के मौजूदा साहित्य पर संक्षेप में बात की। साहित्य अकादेमी के बर' परामर्श मंडल की सदस्या प्रो. इंदिरा बर' ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी के बर' परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. अनिल कुमार बर' ने सत्र की अध्यक्षता की। श्री आदाराम बसुमतारी, सुश्री बिंदु बसुमतारी, गोगोम ब्रह्म कसारी तथा सुश्री रिता बर' ने अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। समस्त वक्ताओं ने बर' में असमिया साहित्य के अनुवाद और रूपांतरण के विभिन्न पहलुओं के साथ-साथ उसकी शैली के इतिहास और विकास पर आधारित विभिन्न कार्यों का उल्लेख किया तथा उनके महत्त्वपूर्ण पहलुओं के साथ-साथ क्षेत्र में मौजूद अनुवाद प्रथाओं के विभिन्न आयामों को भी सामने लाने का प्रयास किया।

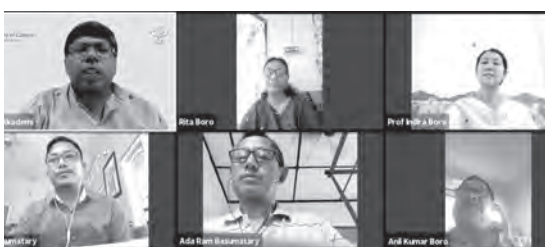

परिसंवाद का दृश्य

'इतिहास और साहित्य' विषय पर परिसंवाद

21 जून 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने प्रख्यात असमिया विद्वानों तथा लेखकों के साथ आभासी मंच के अंतर्गत 21 जून 2021 को 'इतिहास और साहित्य' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया।

कार्यक्रम में स्वागत भाषण साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने दिया। उन्होंने साहित्य और इतिहास' विषय के महत्त्व पर बात की। उनका मत था कि इतिहास और साहित्य के रूप में एक दूसरे के साथ मिलकर और एक दूसरे के पर्याप्त ज्ञान के बिना ठीक से अध्ययन नहीं किया जा सकता है। लेकिन फिर भी इतिहास और साहित्य के बीच मतभेद हैं क्योंकि इतिहास अतीत की घटनाओं को रिकॉर्ड करने पर आधारित है, जबकि साहित्य अतीत, वर्तमान और भविष्य को शामिल करता है। दूसरी ओर साहित्यिक रचनाएँ अक्सर इतिहास के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रस्तुत करती हैं जो अन्यत्र उपलब्ध नहीं होतीं। उन्होंने अलग-अलग समय और स्थानों में इतिहास और साहित्य के बीच संबंधों को स्पष्ट करने के लिए कई उदाहरण प्रस्तुत किए। साहित्य अकादेमी के असमिया परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. ध्रुब ज्योति बोरा ने आरंभिक व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि अपने स्वयं के लेखन में उन्होंने अक्सर इतिहास में परिवर्तन के प्रमुख क्षणों के दौरान सामाजिक वातावरण को एक अहम् बिंदु माना। उन्होंने कहा कि

परिसंवाद का दृश्य

ऐतिहासिक अभिलेखों को अक्सर पक्षपाती लोगों द्वारा प्रलेखित किया गया था और इसलिए, यह अक्सर हाशिए पर या पराजित जनता के बारे में बोलने में विफल रहते हैं। उन्होंने अपने तर्क के समर्थन में कुछ उदाहरण भी प्रस्तुत किए। उन्होंने अपने भाषण में कोविड-19 वैश्विक महामारी की स्थिति और साहित्य में इसके प्रतिनिधित्व का भी उल्लेख किया। डॉ. एन. दत्ता, डॉ. रज़ीउद्दीन अकील, डॉ. राखी कलिता मराल, डॉ. राजेन शइकिया तथा डॉ. चंदन कुमार शर्मा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. एन. दत्ता ने अपने आलेख में अफ़्रीकी-अमेरिकी साहित्य के संदर्भ में इतिहास और साहित्य के बीच संबंधों पर बात की, हालाँकि उन्होंने अपने आलेख की शुरुआत भारतीय इतिहासकारों के कार्यों से की। उन्होंने यह भी बताया कि पहले भारतीय महामारियों को किस प्रकार दर्ज किया जाता था। डॉ. रज़ीउद्दीन अकील ने मध्यकालीन और प्रारंभिक आधुनिक भारत में साहित्यिक और ऐतिहासिक परंपराओं और प्रथाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने क्षेत्र के प्रमुख शोधकर्ताओं और विद्वानों के साथ-साथ उनके विचारों का भी उल्लेख किया। डॉ. राखी कलिता मराल ने अपने आलेख में 'साहित्य में इतिहास' पर अपनी राय व्यक्त की। उन्होंने उत्पीड़ितों के साहित्यिक प्रतिनिधित्व और उनके प्रतिरोध के उदाहरणों पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने साहित्यकारों के ऐतिहासिक आख्यानों की सीमाओं और इतिहासकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए ऐतिहासिक अभिलेखों पर भी अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. राजेन शइकिया ने अपने आलेख में कुछ चर्चाओं में 'ऐतिहासिक तथ्यों की उपेक्षा करने वाले ऐतिहासिक सिद्धांतों के अति-मूल्यांकन' विषय पर आधारित अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने समकालीन इतिहास और साहित्य में परिलक्षित समाज और मनुष्य के बीच संबंधों पर अपना मत व्यक्त किया। उन्होंने इस संदर्भ में पत्रकारों की भूमिका का भी उल्लेख किया। उन्होंने भाषा की बाधा के साथ-साथ तथ्यों को पहचानने, समझने और रिकॉर्ड करने पर भी अपनी बात रखी। अंत में, डॉ. चंदन कुमार शर्मा ने इतिहास के सार्वजनिक जीवन के विषय पर बात की, जिसमें लोकप्रिय ऐतिहासिक लेखन जैसे अर्ध-ऐतिहासिक कथाओं के साथ-साथ इतिहास के अनुशासनात्मक जीवन का प्रभुत्व है, जिसमें पेशेवर इतिहासकारों का वर्चस्व है, पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया, उन्होंने कार्यक्रम का संचालन भी किया तथा वक्ताओं को दर्शकों से भी परिचित करवाया।

'प्रकृति लेखन और वन संरक्षण' विषय पर परिसंवाद

1 अक्तूबर 2021, गुवाहाटी, असम

साहित्य अकादेमी ने संतनु घोष, ध्रुव ज्योति बोरा, मलय मुखोपाध्याय, अरबिंद राजखोवा, जॉयदीप बरुआ, पंकज गोबिंद मेधी, अनुराधा शर्मा पुजारी, बिपुल देउरी, अतनु भट्टाचार्जी तथा पंकज दत्ता जैसे प्रसिद्ध असमिया विद्वानों एवं लेखकों के साथ नेचर बेक के सहयोग से 1 अक्तूबर 2021 को डॉ. बनिकांत काकाती हॉल, शंकरदेव कलाक्षेत्र, पंजाबाड़ी, गुवाहाटी, असम में 'प्रकृति लेखन और वन संरक्षण' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया।

कार्यक्रम में स्वागत भाषण साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने दिया। उन्होंने वक्ताओं का दर्शकों से परिचय भी कराया। आरंभिक व्याख्यान डॉ. ध्रुव ज्योति बोरा, संयोजक, असमिया परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी ने प्रस्तुत किया। उन्होंने आधुनिक असमिया साहित्य पर बात की तथा यह भी

परिसंवाद का दृश्य

बताया कि किस प्रकार असम प्राकृतिक घटनाओं से निपटता है। बीज-भाषण श्री सौम्यदीप दत्ता, निदेशक, नेचर्स बेकन, गुवाहाटी द्वारा दिया गया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि विख्यात वैज्ञानिक और लेखक श्री शांतनु घोष थे। श्री दत्ता और श्री घोष ने असमिया साहित्य की उस शैली की उत्पत्ति और विकास का पता लगाया, जो संवेदनशीलता की प्राथमिक प्रेरणा के रूप में प्रकृति पर केंद्रित थी तथा जिसने असमिया संस्कृति और प्रकृति के बीच के संबंधों की परिभाषा को व्याख्यायित किया। उद्घाटन सत्र में सुश्री नवनिता शर्मा ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा। प्रथम सत्र में श्री अरबिंद राजखोवा, श्री जॉयदीप बरुआ और श्री पंकज गोबिंदा मेधी ने असमिया साहित्य पर बात की, जो विशेष रूप से प्रकृति पर केंद्रित था। इस सत्र की अध्यक्षता श्री मलय मुखोपाध्याय ने की। द्वितीय सत्र में श्री अतनु भट्टाचार्जी, श्री बिपुल देउरी और श्री पंकज कुमार दत्ता ने प्राकृतिक चमत्कारों और मनुष्य और प्रकृति के बीच संबंधों पर आधारित साहित्य की बात की। इस सत्र की अध्यक्षता सुश्री अनुराधा शर्मा पुजारी ने की।

'देउरी भाषा और साहित्य' विषय पर परिसंवाद

12 दिसंबर 2021, गुवाहाटी

साहित्य अकादेमी ने 12 दिसंबर 2021 को गुवाहाटी में बिपुल देउरी, माधव कौशिक, ज्योतिरेखा हजारिका, सरनन देवरी, प्रार्थना आचार्य, संगीता शइकिया, उपेन राभा हकसम, नृपेन देवरी, जीतू बोरा और मंदिरा भगवती जैसे प्रसिद्ध असमिया लेखकों के साथ 'देउरी भाषा और साहित्य' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया।

उद्घाटन सत्र की शुरुआत साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश के स्वागत भाषण से हुई, जिन्होंने वक्ताओं का परिचय भी दिया। इसके बाद साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार विजेता लेखक श्री बिपुल देउरी ने अपने बीज-भाषण में कहा कि यह दिन असम के पूरे देउरी समुदाय के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि पहली बार साहित्य अकादेमी ने देउरी

परिसंवाद का दृश्य

भाषा और साहित्य पर इतने उच्चस्तरीय परिसंवाद का आयोजन किया है। उन्होंने दिनभर चलने वाले कार्यक्रम में होने वाले सत्रों की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की और प्रतिभागी देउरी लेखकों का परिचय भी कराया। उन्होंने अपने भाषण का समापन यह कहते हुए किया कि देउरी भाषा बोलने वाली आबादी में कमी आई है और उनके अनुसार यह वास्तव में गहरी चिंता का विषय है। इसके बाद तेजपुर विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त प्रोफ़ेसर डॉ. सुनील कुमार दत्त ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया, उन्होंने अपने भाषण में देउरी भाषा और साहित्य को असमिया राष्ट्रीयता के समृद्ध गुण के रूप में बताया। उद्घाटन सत्र का समापन धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ जिसे डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने प्रस्तावित किया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता देउरी साहित्य सभा के अध्यक्ष श्री फिजू कुमार देउरी ने की। सत्र की प्रथम वक्ता जे.बी. कॉलेज, जोरहाट की डॉ. ज्योतिरेखा हाज़रिका थीं, जिन्होंने 'देउरी भाषा के विकास का इतिहास' विषय पर बात की। अपने आलेख में उन्होंने असम की चार तिब्बती-बर्मन भाषाओं में से एक के रूप में देउरी भाषा की मुख्य विशेषताओं के बारे में बताया। असम में असमिया भाषा की दुर्दशा का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि सभी चार तिब्बती-बर्मन भाषाएँ, यानी देउरी, तिवा, मिसिंग और कार्बी, राज्य में किस प्रकार जीवित हैं।

डॉ. हाज़रिका ने कहा कि देउरी समुदाय के चार संप्रदायों में से एक ने मिसिंग को आत्मसात् कर लिया है और दो अन्य अब देउरी भाषा पढ़ने, लिखने और बोलने में असमर्थ हैं। केवल एक संप्रदाय अभी भी देउरी भाषा का अभ्यास कर रहा है और यह देउरी भाषा के लिए आसन्न खतरे को दर्शाता है। उन्होंने

इस अवसर पर उपस्थित सभी युवा और अनुभवी देउरी लेखकों से देउरी भाषा पर इस हमले को रोकने के लिए एकजुट प्रयास करने की अपील की। देउरी साहित्य सभा के पूर्व अध्यक्ष श्री नृपेन देउरी ने 'देउरी भाषा की वर्णमाला और ध्वन्यात्मकता की विशेषता' विषय पर चर्चा की। अपने आलेख में उन्होंने कहा कि देउरी भाषा में 07 स्वर और 17 व्यंजन हैं जो असमिया लिपि का अनुसरण करते हैं। देउरी वर्णमाला को देउरी भाषा में 'यादेबाली' कहा जाता है, उन्होंने सुझाव दिया कि देउरी भाषा-साहित्य विशेषज्ञों को अधिक शोध कार्य करने का प्रयास करना चाहिए और इस प्रकार भाषा के व्यापक प्रसार और लोकप्रियकरण को सुनिश्चित करना चाहिए। सत्र के अंतिम वक्ता, देउरी साहित्य सभा के उपाध्यक्ष डॉ. शरणन देउरी ने 'देउरी भाषा की पहचान, इसकी मुख्य विशेषताएँ और असमिया भाषा में इसका योगदान' विषय पर चर्चा की। उन्होंने देउरी भाषा का संक्षिप्त परिचय देते हुए कहा कि यह तिब्बती-चीनी भाषाओं के तिब्बती-बर्मन संप्रदायों में से एक के रूप में है। फिर उन्होंने देउरी भाषा के महत्त्व के बारे में विस्तार से बताया। सत्र के अध्यक्ष श्री फीजू कुमार देउरी ने अपने समापन वक्तव्य में समस्त वक्ताओं को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि देउरी भाषा में और अधिक अध्ययन और शोध की आवश्यकता है और उन्होंने इसके साथ ही समस्त देउरी भाषी संगठनों से भाषा के विकास के लिए एकजुट होकर काम करने की अपील की। द्वितीय सत्र के प्रथम वक्ता श्री शशाधर देउरी ने 'देउरी भाषा की उत्पत्ति, उद्भव, विकास और वर्तमान स्थिति' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। देउरी भाषा को सभी देउरी लोगों में सबसे प्रिय बताते हुए उन्होंने देउरी भाषा के अतीत, क्रमिक विकास और वर्तमान स्थिति पर एक स्पष्ट प्रस्तुति दी। उन्होंने देउरी समुदाय के वर्चस्व वाले क्षेत्रों के प्राथमिक विद्यालयों में देउरी भाषा अनिवार्य करने पर बल दिया। सुश्री प्रार्थना आचार्य सत्र की दूसरी वक्ता थीं तथा उन्होंने 'देउरी भाषा में धुन और नाक के स्वर का महत्त्व' विषय पर चर्चा की। अगली वक्ता डॉ. संगीता शइकिया ने 'देउरी भाषा समुदाय और द्विभाषी स्थिति' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि देउरी भाषा और साहित्य के अध्ययन और विकास के लिए नए और समग्र प्रयास शुरू करने का समय आ गया है। देउरी साहित्य सभा के पूर्व अध्यक्ष श्री लीलाकांत देउरी, जिन्होंने सत्र की अध्यक्षता की, ने अपने समापन वक्तव्य में कहा कि राज्य सरकार को असम की प्रत्येक आदिवासी भाषा के अध्ययन-अनुसंधान केंद्र और पुस्तकालय स्थापित करने चाहिए, विशेष रूप से जो असमिया भाषा से निकटता से जुड़े हुए हैं तथा इस संबंध में सभी सामाजिक-राजनीतिक संगठनों को एकजुट होकर कार्य करना अत्यंत आवश्यक है।

'दारंगी लोक संस्कृति और लोक साहित्य' विषय पर परिसंवाद

8 जनवरी 2022, गुवाहाटी, असम

साहित्य अकादेमी ने बी. बोरूआ कॉलेज के गुवाहाटी असमिया विभाग के सहयोग से प्रसिद्ध असमिया लेखकों जैसे– प्रसन्ना के. नाथ, दुलेन नाथ, जदाब चंद्र शर्मा, राम चंद्र डेका, तरुण आजाद डेका, मोहिनी गोस्वामी, साहिर भुइयां, जयंत कुमार नाथ तथा उनकी मंडली, मुकुट चंद्र हाज़रिका और उनकी मंडली, तीर्थ नाथ ओजा और उनकी मंडली तथा अस्मत अली और उनकी मंडली की उपस्थिति में 8 जनवरी 2022 को डॉ. भूपेन हाज़रिका सभागार, बी. बोरूआ कॉलेज, गुवाहाटी, असम में 'दारंगी लोक संस्कृति और लोक साहित्य' पर परिसंवाद का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने वक्ताओं का परिचय भी दर्शकों से करवाया। आरंभिक व्याख्यान सत्येंद्र नाथ बर्मन, प्राचार्य, बी. बोरूआ कॉलेज, गुवाहाटी द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस कार्यक्रम में असम साहित्य सभा के पूर्व अध्यक्ष परमानंद राजबोंगशी, सम्मानित अतिथि थे। श्री तरुण आज़ाद डेका, आयोजक ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी के असमिया परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. ध्रुब ज्योति

बोरा ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। उद्घाटन सत्र में बी. बोरूआ कॉलेज की असमिया विभागाध्यक्ष सुश्री इंदुप्रवा देवी ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। प्रथम सत्र में श्री प्रशांत कुमार नाथ, सुश्री मून मन देवी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा सत्र की अध्यक्षता श्री दलेंद्र नाथ ने की। श्री नाथ ने ओजापाली, सुकनन्नी ओजापाली, व्यास ओजापाली, देवधनी, पुतोला नस आदि सहित दरांग के विभिन्न लोक नृत्यों पर बात की, वहीं सुश्री मून मन देवी ने लोक गीत, लोककथाओं तथा लोक भाषणों सहित दारांग के लोक साहित्य पर अपने विचार व्यक्त किए। सत्र के अंतिम वक्ता, श्री नाथ ने दारांग के इतिहास पर बल दिया, जिसमें ऐतिहासिक संकेतों और दारांग के स्मारकों पर प्रकाश डाला गया। द्वितीय सत्र में श्री राम चंद्र डेका, श्री तरुण आज़ाद डेका, सुश्री मोहिनी गोस्वामी तथा श्री एम. हाफ़िज़ अली ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री डेका के साथ जयंत कुमार नाथ और उनकी मंडली, सुश्री गोस्वामी के साथ तीर्थ नाथ ओजा और उनकी मंडली तथा श्री अली के साथ हातिम अली और उनकी मंडली के प्रदर्शन के साथ सुकन्नी ओजापाली तथा व्यास ओजापाली और चेरा ढेक जैसे विभिन्न प्रकार के लोक नृत्यों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री डेका ने 'नंगेली गीत' पर आधारित अपने विचार व्यक्त किए। सत्र की अध्यक्षता श्री जादब चंद्र शर्मा ने की।

'कार्बी अनुष्ठान साहित्य का महत्त्व' पर परिसंवाद

9 जनवरी 2022, दीफ़ू, असम

साहित्य अकादेमी ने असम साहित्य सभा, गुवाहाटी के सहयोग से प्रसिद्ध असमिया और कार्बी लेखकों और विद्वानों जैसे निपु चरण दत्ता, रोंगबोंग तेरांग, ध्रुव ज्योति बोरा, तुलीराम रोंगहांग, धर्मसिंग टेरॉन, हंगमीजी तिमुंग, परी रोंगपी, देबेन काकोटी, पबित्रा बोरा, मोनजू टेरोनपी, गीता बोरा और जॉयसिंग टोकबी के साथ 'कार्बी अनुष्ठान साहित्य का महत्त्व' विषय पर 9 जनवरी 2022 को रंगसीना भवन, दीफू, असम में परिसंवाद का

परिसंवाद का दृश्य

आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने वक्ताओं का परिचय भी दर्शकों से करवाया। कार्यक्रम का उद्घाटन असम साहित्य सभा के पूर्व अध्यक्ष पद्मश्री प्रो. रोंगबोंग तेरांग ने किया, जिन्होंने अपने उद्घाटन व्याख्यान में कार्बियों की समृद्ध साहित्यिक विरासत की सराहना की और विशेष रूप से स्वतंत्रता-पूर्व साहित्यिक अग्रदूत बोंगलोंग तेरांग के योगदान का संदर्भ दिया जिन्होंने अपनी व्यक्तिगत पहल से कार्य किया जिसके लिए उन्हें असम के पूर्व मंत्री गोपीनाथ बारदोलोई से वित्तीय सहायता भी प्राप्त हुई। उन्होंने साहित्य अकादेमी को कार्बी लोक साहित्य जिसमें अभी भी अनुष्ठान साहित्य सहित कई अनदेखी विशेषताएँ हैं की समृद्धि को उजागर करने की पहल करने के लिए धन्यवाद दिया, उन्होंने लोक महाकाव्यों जैसे *सबिन अलुन* (कार्बी लोक रामायण) का भी उल्लेख किया, जो कार्बी लोक कविता परंपरा का समृद्धि का प्रतीक है। श्री दोर्सिंग रोंगांग, विधायक (हावड़ाघाट), उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि थे। डॉ. तुलीराम रोंगहांग, मुख्य कार्यकारी सदस्य, के.ए.ए.सी. ने आशा व्यक्त की कि यह परिसंवाद कार्बी लोक साहित्य को बढ़ावा देने के लिए साहित्य अकादेमी का आभार व्यक्त किया। असम साहित्य सभा के संयोजक ब्रह्मानंद बोरा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। प्रथम शैक्षणिक सत्र का विषय था—'कार्बी अनुष्ठान साहित्य का महत्त्व और इसके सामाजिक निहितार्थ'। इस सत्र की अध्यक्षता धर्मसिंह टेरोन, निदेशक, कार्बी अध्ययन केंद्र,

दीफ़ू ने की। तीन प्रमुख कार्बी साहित्यिक विद्वानों ने अपनी वाक्पटुता से अनुष्ठान साहित्य के दस्तावेज़ीकरण की तात्कालिकता पर बल दिया। उनके आलेख विद्वत्तापूर्ण तथा स्पष्ट थे, जो निकट भविष्य में और अधिक विस्तृत चर्चा के लिए आश्वस्त करते हैं। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता ए.एस.एस., दीफू क्षेत्र के पूर्व अध्यक्ष देबेन काकोटी ने की। इस सत्र का विषय था—'लॉन्गकम टेरोन के कार्यों का मूल्यांकन'। इस सत्र में वरिष्ठ पत्रकार तथा लेखक यथा—पबित्र बोरा एवं जॉयसिंग टोकबी, मंजू टेरोनपी तथा गीत बोरा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। आलेख वक्ताओं ने लॉन्गकम टेरोन की साहित्यिक विरासत पर चर्चा की, जिन्हें कार्बी साहित्य को संरक्षित करने का सम्मान प्राप्त है, पद्मश्री प्रो. रोंगबोंग तेरांग को इसके संस्थापक महासचिव थे।

'स्वतंत्रता के बाद के बाङ्ला निबंध' विषय पर परिसंवाद

27 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने 27 अप्रैल 2021 को आभासी मंच पर 'स्वतंत्रता के बाद के बाङ्ला निबंध' पर परिसंवाद का आयोजन किया।

कार्यक्रम में स्वागत भाषण साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने प्रस्तुत किया। आरंभिक व्याख्यान प्रो. अमित्रसूदन भट्टाचार्य, सदस्य, बाङ्ला परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी ने प्रस्तुत किया। उन्होंने स्वतंत्रता के बाद के बाङ्ला निबंधों के योगदान पर बात की। उन्होंने संक्षेप में इस विधा के इतिहास और विकास पर भी चर्चा की। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रख्यात आलोचक प्रो. पबित्र सरकार ने की। प्रो. पबित्र

परिसंवाद का दृश्य

सरकार ने अपने भाषण में साहित्यिक आलोचना और निबंध की अवधारणा के साथ-साथ निबंधों के वर्गीकरण के बीच अंतर पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने पश्चिम बंगाल से इतर लिखे गए बाङ्ला साहित्य के महत्त्व पर भी प्रकाश डाला। प्रो. अभ्रा बसु, श्री हिंडोल भट्टाचार्जी, प्रो. अर्जुनदेव सेन शर्मा और प्रो. अनिल आचार्य ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रोफ़ेसर अभ्रा बसु ने 1947-1960 में लिखे गए बाङ्ला निबंधों की विशेषताओं और महत्त्व पर, प्रोफ़ेसर हिंडोल भट्टाचार्जी ने 1960-1980 के दौरान विकसित शैली पर, प्रोफ़ेसर अर्जुनदेव सेन शर्मा ने 1980-2000 के दौरान लिखे गए बाङ्ला निबंधों पर तथा प्रोफ़ेसर अनिल आचार्य ने समकालीन बाङ्ला निबंधों के साथ-साथ सामान्य रूप से बाङ्ला निबंधों की परंपरा पर तथा विभिन्न प्रकार के बाङ्ला निबंधों तथा विगत वर्षों के दौरान वे किस प्रकार विकसित हुए, विषयों पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए।

आलेख वक्ताओं ने प्रासंगिक निबंधों से कई उद्धरण भी प्रस्तुत किए तथा प्रसिद्ध बाङ्ला निबंधकारों के सैद्धांतिक दृष्टिकोण का भी पता लगाने की चेष्टा की। परिसंवाद का संचालन सुश्री समर्पिता गोस्वामी, प्रकाशन सहायक, साहित्य अकादेमी द्वारा किया गया।

'सुनील गंगोपाध्याय' पर परिसंवाद

25 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने 25 अगस्त 2021 को आभासी मंच पर सुनील गंगोपाध्याय पर परिसंवाद का आयोजन किया।

कार्यक्रम में स्वागत भाषण साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रस्तुत किया। उन्होंने साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष सुनील गंगोपाध्याय के भारतीय साहित्य को समग्र रूप से समृद्ध करने में योगदान के बारे में संक्षेप में बताया। साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने वक्ताओं का परिचय दर्शकों से कराया। आरंभिक व्याख्यान में डॉ. सुबोध सरकार, संयोजक, बाङ्ला परामर्श मंडल,

परिसंवाद का दृश्य

साहित्य अकादेमी ने प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने गंगोपाध्याय के साथ उनके बात की क्योंकि वे लंबे समय तक श्री गंगोपाध्याय से जुड़े रहे। उन्होंने कहा कि श्री गंगोपाध्याय ने निरंतर युवा लेखकों को बढ़ावा देने का प्रयास किया। परिसंवाद की अध्यक्षता प्रख्यात बाङ्ला लेखक शंकर ने की तथा परिसंवाद का उद्घाटन प्रख्यात बाङ्ला कथाकार तथा साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य श्री शीर्षेंदु मुखोपाध्याय ने किया। शंकर और शीर्षेंदु मुखोपाध्याय दोनों ही सुनील गंगोपाध्याय के समकालीन हैं। उन्होंने लेखन के साथ-साथ सुनील गंगोपाध्याय के व्यक्तित्व के बारे में भी अपने विचार व्यक्त किए। बीज-भाषण प्रो. चिन्मय गुहा ने प्रस्तुत किया। उन्होंने सुनील गंगोपाध्याय के साहित्यिक योगदानों का विस्तारपूर्वक विश्लेषण प्रस्तुत किया। सुनील गंगोपाध्याय (1934-2012) का जन्म फ़रीदपुर (अब बांग्लादेश) में हुआ था, गंगोपाध्याय ने कलकत्ता विश्वविद्यालय से बाङ्ला में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की थी। 1953 में वे कविता पत्रिका *कृतिबास* के संस्थापकों और संपादकों में से एक थे, जो कवियों की प्रगतिशील पीढ़ी के लिए लंबे समय तक मंच रहा। विपुल लेखक, गंगोपाध्याय ने कविता और कथा साहित्य के दो सौ से अधिक खंड प्रकाशित किए। वे साहित्य अकादेमी पुरस्कार (साहित्य के लिए सर्वोच्च राष्ट्रीय पुरस्कार) सहित कई पुरस्कारों के प्राप्तकर्ता रह चुके हैं। उनके दो उपन्यासों पर सत्यजीत राय ने फ़िल्म बनाई थी। गंगोपाध्याय ने बच्चों के लिए भी लिखा। उन्होंने बाङ्ला काल्पनिक चरित्र काका बाबू का निर्माण किया और इस चरित्र पर उपन्यासों की एक शृंखला लिखी, जो भारतीय बाल साहित्य के लिए महत्त्वपूर्ण बन गई। 1985 में उनके उपन्यास *थोज़ डेज़* (सेई समय) के लिए उन्हें साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। गंगोपाध्याय ने नील लोहित, सनातन पाठक और नील उपाध्याय के नामों का प्रयोग किया। प्रो. गुहा ने सुनील गंगोपाध्याय के महत्त्वपूर्ण लेखों को भी उद्धृत किया। परिसंवाद में श्री बिनायक बंद्योपाध्याय तथा श्री श्रीजातो जैसे प्रसिद्ध बाङ्ला लेखकों ने सुनील गंगोपाध्याय के जीवन और गतिविधियों पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री बिनायक बंद्योपाध्याय ने दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों के अन्य आधुनिक कवियों के साथ सुनील गंगोपाध्याय के संबंध पर अपने विचार व्यक्त किए। श्री बंद्योपाध्याय ने सुनील गंगोपाध्याय के लेखकीय कार्यों में अंतर्गत क्रॉस-सांस्कृतिक संदर्भों की पहचान करने का प्रयास किया। श्री श्रीजातो ने सुनील गंगोपाध्याय के खुले दिमाग़ वाले व्यक्तित्व पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि उन्होंने हमेशा सुंदरता की प्रशंसा की और दूसरों को नीचा दिखाने की उपेक्षा की। धन्यवाद प्रस्ताव साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने प्रस्तुत किया।

'कार्बी आंगलोंग ज़िले के विशेष संदर्भ में बर' की सामाजिक-आर्थिक स्थिति' विषय पर परिसंवाद

31 मई 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने 31 मई 2021 को आभासी मंच पर 'कार्बी आंगलोंग ज़िले के विशेष संदर्भ में बर' की सामाजिक-आर्थिक स्थिति' पर परिसंवाद का आयोजन किया।

कार्यक्रम का स्वागत भाषण साहित्य अकादेमी के पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने दिया।

परिसंवाद का दृश्य

उन्होंने वक्ताओं का परिचय श्रोताओं से भी करवाया। के.ए.डी.-बी.एस.एस. के अध्यक्ष श्री शांतिराम बसुमतारी ने आरंभिक व्याख्यान प्रस्तुत किया। अपने संबोधन में श्री बसुमतारी ने परिसंवाद के विषय की प्रासंगिकता पर वर्तमान संदर्भ में बात की, जिसका उन्होंने विश्लेषण भी प्रस्तुत किया। बीज-भाषण श्री बिस्वेश्वर बसुमतारी, सदस्य, बर' परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी ने प्रस्तुत किया। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. अनिल कुमार बर', संयोजक, बर' परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी ने की। श्री बिस्वेश्वर बसुमतारी और प्रोफ़ेसर बर' ने कार्बी आंगलोंग में बर' के सामाजिक-आर्थिक इतिहास पर संक्षेप में बात की। उन्होंने उन महत्त्वपूर्ण बातों पर प्रकाश डाला जो कार्बी आंगलोंग में बर' लोगों की वर्तमान सामाजिक-आर्थिक स्थिति का कारण बने। डॉ. प्रेमानंद मसाहारी, श्री निर्मल बसुमतारी तथा श्री अजीत बसुमतारी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। आलेख वक्ताओं ने विशेष रूप से चर्चा के अंतर्गत आने वाले क्षेत्र में इतिहास के विभिन्न चरणों पर प्रकाश डाला तथा उन्होंने यह भी बताया कि उससे बर' की सामाजिक-आर्थिक स्थिति किस प्रकार प्रभावित हुई। उन्होंने उन महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक दस्तावेज़ों का उल्लेख किया जो वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डाल सकते हैं। उन्होंने अपने तर्क और विचारधारा के समर्थन में महत्त्वपूर्ण आँकड़े भी प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का समापन वर्तमान स्थिति के आलेख वक्ताओं के बहुमूल्य मूल्यांकन के साथ हुआ।

'तिवा कविता की वर्तमान स्थिति' विषय पर परिसंवाद

19 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने 19 जुलाई 2021 को आभासी मंच पर 'तिवा कविता की वर्तमान स्थिति' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया।

स्वागत भाषण साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने वक्ताओं का परिचय दर्शकों से करवाया। उन्होंने तिवा भाषा की उत्पत्ति और विकास पर संक्षेप में बात की। तिवा (लालंग) उत्तर पूर्व भारत में असम और मेघालय की तिब्बती-बर्मन या सीनो-तिब्बती भाषा है। डॉ. राव ने उत्तर पूर्व भारतीय साहित्य में तिवा भाषा के योगदान के महत्त्व पर भी संक्षेप में बात की। उन्होंने कहा कि यह भाषा अपने समुदाय की संस्कृति और परंपरा का भंडार है। साहित्य अकादेमी के बर' परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. अनिल कुमार बर' ने आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया। डॉ. बर' ने तिवा भाषा के भाषाई पहलुओं तथा तिवा कविता की क्षमता पर आधारित अपने विचार व्यक्त किए। पूर्वोत्तर की पहाड़ी जनजातियों की अधिकांश भाषाओं की तरह, पहाड़ी तिवा की अपनी लिपि नहीं है और यह रोमन (लैटिन) वर्णमाला में लिखी जाती है, कभी-कभी अंग्रेज़ी और असमिया लिपि में भी। उन्होंने तिवा लोगों के विभिन्न कुलों पर भी बात की।

परिसंवाद का दृश्य

परिसंवाद की अध्यक्षता श्री बिद्युत विकास सेनापति ने की तथा बीज-भाषण श्री जनार्दन पातर ने प्रस्तुत किया। उन्होंने तिवा कविता की उत्पत्ति और विकास के साथ-साथ उभरती तिवा कविता के विभिन्न पहलुओं पर संक्षेप में अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने इस संदर्भ में महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का भी उल्लेख किया। उन्होंने तिवा परंपराओं और संस्कृति के महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर अपने विचार व्यक्त किए। श्री फ्रांसिस मसलाई, सुश्री मैरीलिन मदार तथा श्री बिजॉय सिंग मसलई ने अपने आलेख प्रस्तुत किए गए। वक्ताओं ने विभिन्न युगों के तिवा कविता के महत्त्वपूर्ण काव्य ग्रंथों पर आधारित अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने तिवा कविता के विशिष्ट पहलुओं पर भी विस्तार से चर्चा की।

'डोगरी साहित्य में सूफ़ीवाद' विषय पर परिसंवाद

30 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी द्वारा 30 अप्रैल 2021 को आभासी मंच पर 'डोगरी साहित्य में सूफ़ीवाद' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया गया। साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ. एन. सुरेश बाबू ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया तथा अकादेमी द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की जानकारी दी। डॉ.एन. सुरेश बाबू ने सूफ़ीवाद और सार्वजनिक जीवन पर इसके प्रभाव की विस्तृत जानकारी दी।

साहित्य अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक दर्शन दर्शी (डी.के. वैद) ने भी सूफ़ीवाद पर विस्तार से चर्चा की और कहा कि उत्तर भारत मध्यकाल में सूफ़ीवाद का केंद्र था तथा राष्ट्रीय ताने-बाने को मजबूत करने के लिए इसके सकारात्मक प्रभाव को देखा जा सकता है। सुभाष चंद्र बादु ने अपने भाषण में सूफ़ीवाद पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हालाँकि सूफ़ीवाद डोगरी जीवन का अभिन्न अंग है, इस भाषा में इस परंपरा का पालन करने वाले कुछ लेखक हैं, फिर भी डोगरी भाषा में उपलब्ध साहित्य की मात्रा, गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों है। डॉ. ज्ञान सिंह ने अध्यक्षीय व्याख्यान देते हुए कहा कि डोगरी में तीन प्रकार के तर्क मिलते हैं अर्थात् ईश्वर से सीधे जुड़ने के बारे में, देवताओं को मोक्ष प्राप्ति का साधन मानने के बारे में तथा छायावाद के प्रभाव में लिखे गए साहित्य के बारे में द्वारा।

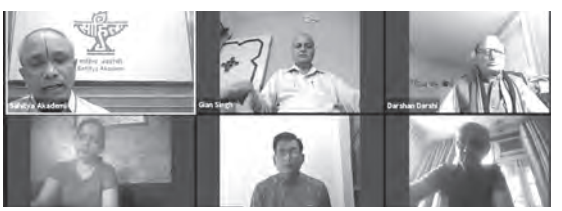

परिसंवाद का दृश्य

कार्यक्रम के द्वितीय सत्र में तीन आलेख प्रस्तुत किए गए जिनमें कवि एवं प्रसिद्ध लोक गायक श्री खजूर सिंह ने डोगरी लोक साहित्य में सूफ़ीवाद के बारे में, डॉ. नरसिंह दास ने 20वीं सदी के डोगरी साहित्य में सूफ़ीवाद पर तथा डॉ. सुषमा रानी ने इक्कीसवीं सदी का डोगरी साहित्य पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। तीनों वक्ताओं ने सूफ़ीवाद और डोगरी साहित्य और संस्कृति पर इसके प्रभाव के बारे में रोचक जानकारियाँ प्रस्तुत कीं। कार्यक्रम के इस सत्र की अध्यक्षता श्री सुभाष चंद्र बाली उर्फ़ राज मनावरी ने की। अंत में डॉ. एन. सुरेश बाबू ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

'डोगरी लोक साहित्य में साहित्यिक तत्त्व' विषय पर परिसंवाद

18 दिसंबर 2021, मजालता, जम्मू-कश्मीर

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा 18 दिसंबर 2021 को 'डोगरी लोक साहित्य में साहित्यिक तत्त्व' विषय पर परिसंवाद का आयोजन गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज मजालता, ज़िला उधमपुर, जम्मू-कश्मीर के सहयोग से किया गया। परिसंवाद की अध्यक्षता प्रख्यात डोगरी लेखक और डोगरी लोक साहित्य विशेषज्ञ, प्रकाश प्रेमी ने की। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि डिग्री कॉलेज मजालता के प्रधानाचार्य डॉ. बी.बी. आनंद थे। लोकगीतकार तथा

स्वागत वक्तव्य देते हुए श्री दर्शन दर्शी

साहित्य अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. ज्ञान सिंह ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया।

उद्घाटन व्याख्यान साहित्य अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक दर्शन दर्शनी (डी.के. वैद) ने प्रस्तुत किया। उन्होंने कॉलेज के शिक्षकों और छात्रों के साथ समारोह में उपस्थित प्रतिभागियों और प्रतिष्ठित लेखकों का भी स्वागत किया। यह देखना बहुत ही रोचक और आकर्षक है कि डोगरी लोकगीत, जो आम तौर पर अन्य सभी लोक साहित्य की भाँति, अशिक्षित ग्रामीण लोगों द्वारा निर्मित हैं, जो अक्सर बोलचाल से निर्मित और प्रचारित होते हैं, अत्यधिक साहित्यिक समृद्धि और गहराई को दर्शाते हैं तथा उनमें से कई साहित्यिक तत्त्वों तत्त्व मिलते हैं। उन्होंने आशा व्यक्त की कि परिसंवाद से डोगरी भाषा और साहित्य की व्यापक समझ और डोगरी लोककथाओं की क्षमता और महत्त्व को समझने के लिए कॉलेज जाने वालों के बीच एक नई रुचि पैदा होगी। डॉ. सुरेश शर्मा, सहायक प्रोफ़ेसर डोगरी द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ उद्घाटन सत्र का समापन हुआ।

प्रथम सत्र 'डोगरी लोक गीतों में साहित्यिक तत्त्व और डोगरी नीतिवचन और मुहावरों (कहावतां या मुहवरे) में साहित्यिक तत्त्व' विषय पर आधारित था। जगदीप दुबे और यशपाल निर्मल द्वारा क्रमशः दो विषयों पर आलेख पढ़े गए तथा वक्ताओं ने दर्शकों के बीच गहरी रुचि उत्पन्न की। इस सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध कवि, उपन्यासकार, नाटककार और साहित्यकार आलोचक मोहन सिंह ने की। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता कवि तथा कहानीकार शिव देव सुशील ने की। इस सत्र में तरसीम रैना ने डोगरी लोक कथाओं के साहित्यिक तत्त्वों पर विस्तार से चर्चा की, जबकि रणबीर सिंह चिब ने लोक गाथाओं में साहित्यिक तत्त्वों की खोज पर आधारित आलेख प्रस्तुत किया। दर्शकों ने द्वितीय सत्र के अंत में चारों आलेख वक्ताओं के साथ विचार-विमर्श भी किया।

परिसंवाद के बाद डोगरी कविता-पाठ सत्र का आयोजन किया गया, जहाँ पर स्थापित तथा उभरते कवियों ने एक साथ मंच साझा किया और दर्शकों को अपनी नई रचनाओं का पाठ सुनाया। इस कार्यक्रम में कॉलेज के शिक्षकों और छात्रों के अलावा, बड़ी संख्या में स्थानीय लोग भी मौजूद थे। इस कवि गोष्ठी की अध्यक्षता प्रमुख साहित्यकार और गज़लकार विजय वर्मा ने की तथा सत्र का संचालन लोकप्रिय युवा कवि राजिंदर रांझा ने किया।

'कथेतर गद्य लेखन' विषय पर परिसंवाद

28 जून 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने अपनी वेबलाइन साहित्य शृंखला के अंतर्गत 28 जून 2021 को आभासी मंच पर 'कथेतर गद्य लेखन' विषय परिसंवाद का आयोजन किया। अंग्रेज़ी शिक्षाविद् के निम्नलिखित विशिष्ट सदस्यों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया– अध्यक्ष– अनीसुर रहमान, आलेख वक्ता– अनीता सिंह, बसुधारा राई, मालती माथुर, निशि पुलुगुरथा, सच्चिदानंद मोहंती, श्रीमती मुखर्जी तथा उषा बंदे। सत्र की शुरुआत साहित्य अकादेमी के सहायक संपादक श्री ज्योति कृष्ण वर्मा के स्वागत भाषण से हुई। उन्होंने अध्यक्ष का परिचय प्रस्तुत किया, आलेख वक्ताओं का स्वागत किया तथा परिसंवाद के मुख्य विषय पर प्रकाश डाला। अध्यक्ष ने परिसंवाद के विषय से अवगत कराया तथा साहित्यिक अध्ययन में इसके महत्त्व को रेखांकित किया। इसके बाद, उन्होंने आलेख वक्ताओं का परिचय दिया तथा उन्हें आलेख प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया। अपने आलेख में अनीता सिंह ने चार आत्मकथाओं के संदर्भ में

स्व लिंग की गतिशीलता पर चर्चा की। बसुधारा राई ने साहित्य अकादेमी द्वारा एक खंड में प्रकाशित उत्तर पूर्व के लेखों के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए। मालती माथुर ने 'द लॉस ऑफ़ इनहेरिटेंस : अवर मून हैज़ ब्लड क्लॉट्स' विषयक आलेख प्रस्तुत किया। निशि पुलुगुरथा ने 'ट्रैवल राइटिंग, राइटिंग ट्रैवल' विषयक आलेख प्रस्तुत किया। सच्चिदानंद मोहंती ने 'रिक्लेमिंग मेमोरीज : वी टू टुगेदर' विषयक आलेख प्रस्तुत किया। श्रीमती मुखर्जी ने '19वीं शताब्दी के बंगाल में लिंग, यात्रा वृत्तांत, नारीवाद : कृष्णभबानी दास की इंग्लैंड बंग महिला' विषयक आपने आलेख में विभिन्न सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोणों से इसके महत्त्व पर प्रकाश डाला। उषा बंदे ने 'नैरेटिव स्पेस, फ़ीमेल स्पेस एंड माउंटेन स्पेस' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सत्र के अंत में सत्राध्यक्ष अनीसुर रहमान ने प्रस्तुत आलेखों का समाहार प्रस्तुत किया। उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि ये विचार-विमर्श भारत में साहित्यिक अध्ययन के नए क्षेत्रों के विकास के लिए किस प्रकार मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। अध्यक्ष की टिप्पणी के बाद, ज्योति कृष्ण वर्मा ने अध्यक्ष तथा प्रतिभागियों को उनके बहुमूल्य योगदान के लिए धन्यवाद दिया। सत्र में फ़ेसबुक/यूट्यूब के माध्यम से दर्शकों ने भी कार्यक्रम में भाग लिया।

'भारतीय कथा साहित्य' विषय पर परिसंवाद

23 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने अपनी वेबलाइन साहित्य शृंखला के अंतर्गत 23 जुलाई 2021 को आभासी मंच पर 'भारतीय कथा साहित्य' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। अकादेमी के उपसचिव श्री कृष्णा किम्बहुने ने विशिष्ट वक्ताओं का स्वागत किया। इस कार्यक्रम में डॉ. जोसफ़ कोइपल्ली जोसफ़, श्री जोसी जोसफ़, प्रो. डॉ. माला पांडुरंग, सुश्री मंदाकिनी भट्टाचार्य तथा श्री रजत चौधुरी ने भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अनुवादक और आलोचक प्रो. जतिंद्र कुमार नायक ने की। प्रो. नायक ने आरंभिक व्याख्यान में भारत, रूस तथा अन्य स्थानों पर कहानी कहने की जीवंत परंपराओं पर चर्चा की। उन्होंने कथासरितसागर, पंचतंत्र, हितोपदेश और जातक कथाओं के प्रसंगों का हवाला दिया, जो भारत में कहानी कहने की समृद्ध परंपरा की अहम गवाही प्रस्तुत करता है। लेकिन आधुनिक कथा शैली अभी हाल की ही है। यह 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में उभरा, जब पश्चिमी शिक्षा के प्रभाव में, भारत में साहित्यिक प्रथाओं में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए। उन्होंने आलोचकों द्वारा कहानी की उपेक्षा किए जाने पर भी अपने विचार व्यक्त किए। हालाँकि, प्रो. नायक ने एलिस मुनरो को उनकी कहानियों के लिए साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिलने पर हर्ष व्यक्त किया और कहा कि अब स्थितियाँ बदल रही हैं।

केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय में अंग्रेज़ी और तुलनात्मक साहित्य के प्रोफ़ेसर डॉ. जोसफ़ कोइपल्ली जोसफ़ ने मलयाळम् में कथा साहित्य की परंपरा पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने विनॉय थॉमस की कहानी 'रामाची' का विश्लेषण प्रस्तुत किया, जिसमें केरल के एक आदिवासी परिवार के संघर्षों का वर्णन है। 2019 में केरल साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त करने वाले थॉमस ने अपने कार्यों में प्रकृति-संस्कृति के विभाजन पर प्रकाश डाला। अनुवादक और समालोचक श्री जोसी जोसफ़ ने अपनी प्रस्तुति में एस. हरीश की मलयाळम् कहानी 'माओवादी' पर अपने विचार व्यक्त किए। यह कहानी केरल के सुदूर गाँव में स्थित, मानवीय मूर्खताओं तथा सभ्य और सुसंस्कृत होने के हमारे ढोंग को उजागर करती है। बी.एम.एन. कॉलेज, मुंबई की प्राचार्य प्रो. डॉ. माला पांडुरंग ने 'वृद्धावस्था के वैज्ञानिक अध्ययन—जेरोन्टोलॉजी के लेंस' विषय के माध्यम से भारतीय कथा साहित्य की पड़ताल की। उन्होंने उन आख्यानों का विश्लेषण किया जो बुज़ुर्ग लोगों के सामने आने वाली भावनात्मक और शारीरिक चुनौतियों को समक्ष रखते हैं। बहुभाषी कवयित्री एवं अनुवादक सुश्री मंदाकिनी भट्टाचार्य ने उर्मिला पवार और बामा के कार्यों के संदर्भ में दलित महिलाओं की कहानियों पर चर्चा की।

उपन्यासकार तथा समालोचक श्री रजत चौधरी ने तीन प्रमुख बिंदुओं पर चर्चा की— कहानी की उत्पत्ति;

जलवायु परिवर्तन से प्रभावित लोगों की आवाज़ सुनने की आवश्यकता; तथा उपन्यास लिखने और संपादित करने के उनके अनुभव। परिसंवाद के अंत में, श्री कृष्णा किम्बहुने ने समस्त प्रतिभागियों को उनकी गहन अंतर्दृष्टिपूर्ण प्रस्तुतियों के लिए धन्यवाद दिया।

'महात्मा गाँधी और गुजराती साहित्य' विषय पर परिसंवाद

1 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

परिसंवाद का दृश्य

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई ने अपनी वेबलाइन साहित्य शृंखला के अंतर्गत 1 अक्तूबर 2021 को आभासी मंच पर 'महात्मा गाँधी और गुजराती साहित्य' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। प्रारंभ में, गुजराती परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. विनोद जोशी ने कहा कि गाँधी जी का बहुमुखी प्रतिभा संपन्न व्यक्तित्व अत्यंत प्रभावशाली था। गाँधी जी का दुभाषिया केवल स्वयं गाँधी जी ही हो सकते हैं। उन्होंने गुजराती साहित्य और गाँधी जी के विषय पर विस्तार से चर्चा की। परिसंवाद की अध्यक्षता प्रसिद्ध गुजराती लेखक तथा साहित्य अकादेमी के गुजराती परामर्श मंडल की सदस्या सुश्री वर्षा अडालजा ने की। परिसंवाद के चर्चा खंड में लेखक, विचारक श्री भद्रायु वछराजानी ने पुस्तक—*सत्य के साथ मेरे प्रयोग* तथा गुजराती साहित्य पर इसके प्रभाव पर बात की। श्री भरत जोशी ने *हिंद स्वराज* तथा गुजराती साहित्य पर इसके प्रभावों पर बात की तथा सोनल परीख ने 'दक्षिण अफ़्रीका के सत्याग्रह और स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास' पर इसके प्रभाव के बारे में बात की। परिसंवाद के समापन सत्र में गुजराती लेखक तथा गुजराती साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री विष्णु पंड्या ने कहा कि महात्मा गाँधी ने ही हमें सत्याग्रह, अहिंसा और स्वतंत्रता का अर्थ बताया था। उन्होंने कहा कि गुजराती साहित्य पर महात्मा गाँधी के व्यक्तिगत विचारों और जीवन का प्रभाव है। गाँधी जी के विचार गुजराती साहित्य के लिए प्रेरणा हैं। कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई के प्रभारी अधिकारी डॉ. ओम प्रकाश नागर द्वारा किया गया।

'कोंकणी समुद्र साहित्य' विषय पर परिसंवाद

21 अक्तूबर 2021, मडगाँव, गोवा

साहित्य अकादेमी ने मडगाँव, गोवा के राज्य जैव-विविधता मंडल के सहयोग से 21 अक्तूबर 2021 को रवींद्र भवन सभागार, फातोर्डा, मडगाँव में 'कोंकणी समुद्र साहित्य' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के कोंकणी परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. हनुमंत चोपडेकर ने स्वागत भाषण दिया। गोवा राज्य जैव-विविधता मंडल के सचिव प्रदीप सरमोकदम ने आरंभिक वक्तव्य दिया। दामोदर नायक ने उद्घाटन व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि कोंकणी समुद्र साहित्य को अच्छी तरह से प्रलेखित करने की आवश्यकता है। इस अवसर पर प्रसिद्ध कोंकणी लेखक श्री वामन टाकेकर ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने समुद्र के चारों ओर पारंपरिक जीवन, समुद्र पर निर्भरता तथा कोंकणी साहित्य में इसकी अभिव्यक्ति पर

परिसंवाद का दृश्य

चर्चा की। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक भूषण भावे ने की।

प्रथम सत्र में मानसी धौस्कर ने 'कथा', सखाराम बोरकर ने 'लोकसाहित्य' तथा राजय पवार ने 'कविता' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र में प्रसाद पागी ने 'कोंकणी साहित्य में मछुआरा समुदाय' पर, सुशांत नायक ने 'नाटक' तथा प्रकाश वजरीकर ने 'उपन्यास' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। इस अवसर पर बड़ी संख्या में कोंकणी लेखक एवं साहित्य प्रेमी उपस्थित थे।

'मैथिली साहित्य में राष्ट्रीय चेतना' विषय पर परिसंवाद

29 अगस्त 2021, मधेपुरा

साहित्य अकादेमी ने मधेपुरा कॉलेज, मधेपुरा, बिहार के सहयोग से 29 अगस्त 2021 को मधेपुरा में 'मैथिली साहित्य में राष्ट्रीय चेतना' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। परिसंवाद का शुभारंभ प्रार्थना गीत के साथ हुआ, इसके पश्चात् दीप प्रज्जवलित किया गया। कार्यक्रम का संचालन मधेपुरा कॉलेज, मधेपुरा, बिहार के प्रधानाचार्य डॉ. अशोक कुमार यादव द्वारा किया गया। डॉ. एन. सुरेश बाबू, उपसचिव, साहित्य अकादेमी ने प्रतिभागियों तथा श्रोताओं का स्वागत किया। उन्होंने कोविड-19 प्रतिबंधों के बावजूद बड़ी संख्या में प्रतिभागियों की उपस्थिति होने पर हर्ष व्यक्त किया तथा उन्होंने राष्ट्रीय अखंडता और सद्भाव तथा राष्ट्र के उत्थान हेतु राष्ट्रीय चेतना की भूमिका के बारे में बताया। आरंभिक वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. अशोक कुमार झा 'अविचल' ने कोविड-19 के कारण आए लंबे अंतराल के बाद साहित्य अकादेमी द्वारा भौतिक कार्यक्रमों के आयोजन में की गई पहल की सराहना की। उन्होंने मैथिली साहित्य के इतिहास के प्रारंभ से राष्ट्रीय चेतना में उसकी भूमिका पर प्रकाश डाला। प्रो. आर.के.पी. रमण, कुलपति, भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा, ने इस अवसर पर युवाओं से राष्ट्र निर्माण में भाग लेने का आग्रह किया और मैथिली लेखकों से युवाओं की मदद के लिए अपने प्रत्येक लेखन द्वारा राष्ट्रीय चेतना के प्रति सजग होने का आह्वान किया। प्रतिष्ठित मैथिली लेखक श्री रमानंद झा 'रमण' ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। प्रख्यात मैथिली लेखिका प्रो. बीना ठाकुर कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि थीं। बैठक की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के मैथिली परामर्श मंडल के सदस्य प्रो. रामनरेश सिंह ने की।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के मैथिली परामर्श मंडल के सदस्य प्रो. के.पी. यादव ने की। प्रोफ़ेसर अशोक कुमार मेहता ने 'मैथिली कथा साहित्य में राष्ट्रीय चेतना' तथा प्रोफ़ेसर नारायण झा ने 'मैथिली निबंध और जीवनी में राष्ट्रीय चेतना' विषयों पर क्रमशः अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. राजा राम प्रसाद ने की तथा उन्होंने 'मैथिली लोक साहित्य में राष्ट्रीय चेतना' पर आलेख प्रस्तुत किया। डॉ. उपेंद्र यादव ने 'मैथिली कविता में राष्ट्रीय चेतना' तथा श्री किसलय कृष्ण ने 'मैथिली उपन्यास में राष्ट्रीय चेतना' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. अशोक कुमार झा 'अविचल' ने समापन वक्तव्य प्रस्तुत किया तथा डॉ. एन. सुरेश बाबू ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

परिसंवाद का दृश्य

'जनजातीय भाषाओं और साहित्य' विषय पर परिसंवाद

29 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु ने अपनी वेबलाइन साहित्य शृंखला के अंतर्गत 29 जुलाई 2021

परिसंवाद का दृश्य

को पूर्वाह्न 11.00 बजे आभासी मंच पर 'जनजातीय भाषाओं और साहित्य' विषय पर परिसंवाद कार्यक्रम का आयोजन किया। क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने कार्यक्रम के दर्शकों, वक्ताओं, उद्घाटनकर्ता तथा अध्यक्ष का स्वागत किया तथा पूरे देश में आदिवासी साहित्य एवं अध्ययन पर अकादेमी की गतिविधियों के बारे में विस्तार से चर्चा की।

श्री वी.पी. जॉय, आई.ए.एस., केरल सरकार के मुख्य सचिव ने अपने उद्घाटन भाषण में केरल की जनजातियों की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डाला तथा यह भी बताया कि केंद्र और राज्य सरकारों ने भी आदिवासी अध्ययनों को समेकित करने के लिए बड़े पैमाने पर प्रयास शुरू कर दिए हैं।

साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रभा वर्मा ने आदिवासी-विद्या पर अकादेमी के प्रयासों तथा इसे परिभाषित करने में मलयाळम् परामर्श मंडल की सक्रिय भूमिका की सराहना की। उन्होंने केरल की जनजातियों में गोत्र परंपरा की विशिष्टता तथा उसके विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार व्यक्त किए।

साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य श्री एल.वी. हरिकुमार ने उन वक्ताओं की सराहना की जो जनजातीय साहित्य के वास्तविक योगदानकर्ता हैं। आगे उन्होंने कहा कि अकादेमी पहले से ही सुल्तान बटेरी और केरल के अन्य स्थानों में इस प्रकार की संगोष्ठियाँ और परिसंवाद आयोजित कर चुकी है। श्री एम.पी. वासु ने कहा कि अकादेमी आदिवासी साहित्य को उचित प्रकार से महत्त्व देती है तथा मैं इस प्रकार की परियोजनाओं और कार्यक्रमों की सफलता की कामना करता हूँ। श्री शिवलिंगम ने कहा कि राज्य और राष्ट्रीय सम्मेलनों या आयोजनों में आदिवासी लोगों के लिए अधिक स्थान देने की आवश्यकता है। उन्होंने सरकार से आदिवासी संस्कृति को महत्त्व देने का भी आग्रह किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता एम.एस. नारायणन ने की। उन्होंने केरल तथा अन्य भागों में की जा रही शैक्षणिक स्तर पर जनजातीय अनुसंधान गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत किया।

के.पी. नितीश कुमार ने आदिवासियों की भाषा और संस्कृति पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि कई आदिवासी भाषाएँ लुप्त हो गई हैं।

सुश्री विनीता बी. ने केरल के वन क्षेत्रों, विशेष रूप से वायनाड क्षेत्र में आदिवासी लोगों के दर्द और तकलीफ़ों के बारे में बताया।

सुश्री जैन्सी जॉन ने आदिवासी लोगों के लेखन, विशेष रूप से मलयाळम् में लिखे गए लेखन को बहुत स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया—क्योंकि आदिवासी भाषाओं की बारीकियों को प्रोत्साहित नहीं किया जाता है और हमारी प्रणाली भी आदिवासी भाषाओं को आवश्यक प्राथमिकता नहीं देती है।

'जनजातीय भाषा और संस्कृति' विषय पर परिसंवाद (गोथरा भाषा)

11 मार्च 2022, वायनाड

साहित्य अकादेमी ने साहित्य वेदी, गवर्नमेंट कॉलेज मानंथवाडी के सहयोग से 'जनजातीय भाषा और संस्कृति' विषय पर परिसंवाद का आयोजन शुक्रवार, 11 मार्च 2022 को शासकीय महाविद्यालय मानंथवाडी सभागार में किया गया।

उद्घाटन सत्र पूर्वाह्न 9.30 बजे साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी श्री के.पी. राधाकृष्णन के स्वागत भाषण के साथ आरंभ हुआ। उन्होंने साहित्य अकादेमी के उद्देश्यों तथा गतिविधियों के बारे में बताया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता गवर्नमेंट कॉलेज मानंथवाडी के प्रभारी-प्रधानाचार्य डॉ. अब्दुल सलाम ने की। साहित्य

परिसंवाद का दृश्य

अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल की सदस्या डॉ. मिनी प्रसाद ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने जनजातीय भाषा के महत्त्व, जनजातीय भाषा के प्रकारों तथा उन्हें किस प्रकार संरक्षित किया जा सकता है पर अपने विचार व्यक्त किए। बीज-भाषण गोथरा कवि श्री सुकुमारन चालीगड्डा ने प्रस्तुत किया। उन्होंने विभिन्न जनजातीय समुदायों की भाषाओं और इसकी क़िस्मों के बारे में बात की जो 'जनजातीय संस्कृति की आत्मा' हैं। उन्होंने रावुला समुदाय और उनकी भाषा रावुला के बारे में विस्तार से बात की। बीज-भाषण तथ्यों के साथ-साथ लय का मिश्रण था।

अंग्रेज़ी विभाग के सहायक प्रोफ़ेसर डॉ. सारथ एस. ने समस्त अतिथियों, समन्वयकों तथा श्रोताओं को धन्यवाद दिया। उनके द्वारा दिया गया भाषण सभी को चकित करने वाला था। उन्होंने कहा कि आज हम जो आधुनिक अंग्रेज़ी बोलते हैं वह कभी जनजातीय भाषा थी।

'जनजातीय भाषा और संस्कृति' विषय पर परिसंवाद के उद्घाटन समारोह के पश्चात्, प्रथम सत्र पूर्वाह्न 11:15 बजे आरंभ हुआ, इसकी सत्र अध्यक्षता अंग्रेज़ी की सहायक प्रोफ़ेसर विद्या एस. चंद्रन ने की। श्री वासुदेवन चीक्कल्लूर ने पनिया समुदाय के बारे में अपनी प्रस्तुति के साथ सत्र की शुरुआत की। उन्होंने उस राजनीति और शोषण की ओर भी इशारा किया जो पनिया समुदाय को प्रगतिशील दुनिया से पीछे ले जाती है। श्री के.के. केलू ने कुरिच्या समुदाय पर आलेख प्रस्तुत किया, जो उनके मूल, त्योहारों और भाषा पर आधारित था। उन्होंने कुरिच्य भाषा के माध्यम से उनकी भाषा, संस्कृति और प्रथाओं के बारे में बहुत सारी जानकारी दी।

श्रीमती सिंधु ने 'वेट्टुकुरुमा समुदाय' पर आलेख प्रस्तुत किया। आपने आलेख में उन्होंने इस समुदाय के उद्भव, भाषा और प्रतिभा पर बात की। उन्होंने वेट्टुकुरुमा भाषा में एक लोरी के साथ वेट्टुकुरुमा भाषा में अपनी कविता का पाठ भी किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री सुधीर कुमार पी. (सहायक प्रोफ़ेसर, इतिहास विभाग) ने की। तीन आलेख वक्ताओं ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री वासु सांसद ने 'कट्टनायककर का जीवन और उनकी संस्कृति' विषय पर बात की। अपनी प्रस्तुति में उन्होंने कट्टुनायक्कर शब्द का अर्थ बताया, जिसका अर्थ है 'जंगल के नायक' (कादिंते नायक)। उन्होंने उनकी जीवन शैली और परंपरा (कुडियाट्टा और थोटी) के बारे में बताया। उन्होंने अपनी प्रस्तुति को इस अनुरोध के साथ समाप्त किया कि हमें अपनी संस्कृति और प्रथाओं का मज़ाक नहीं बनाना चाहिए तथा हमें इसका सम्मान करना चाहिए।

दूसरा आलेख एम. बीजू के.के. ने 'मुल्लाक्कुरुमा समुदाय—उनके गीत और साहित्य' विषय पर प्रस्तुत किया। किसी भी अन्य जनजातीय समुदाय की भाँति उनके समुदाय का भी लिखित साहित्य है, उनके गीत जैन समुदाय से प्रभावित हैं। उन्होंने मुलक्कुरुमा भाषा में पहेलियों और कहावतों को भी सुनाया।

अंतिम आलेख, डॉ. रमेशन के., मलयाळम् विभाग, भारत सरकार द्वारा 'आदिया की संस्कृति और जीवन' विषय पर प्रस्तुत किया गया। उन्होंने पी.के. कलां का स्मरण किया, उन्होंने रावुला गीतों की विशेषता, उनकी भाषा और आदियान समुदाय की व्युत्पत्ति के बारे में बताया।

'जनजातीय भाषा और संस्कृति' विषय पर एक दिवसीय परिसंवाद का समापन साहित्य वेदी, गवर्नमेंट कॉलेज मानंथवाडी के समंवयक डॉ. रमेशन के. द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

'मणिपुरी बाल साहित्य : अतीत और वर्तमान' विषय पर परिसंवाद

15 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने 15 अप्रैल 2021 को आभासी मंच पर 'मणिपुरी बाल साहित्य : अतीत और वर्तमान' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया।

कार्यक्रम में स्वागत भाषण साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मिहिर कुमार साहू ने दिया। उन्होंने वक्ताओं का परिचय श्रोताओं से भी कराया। आरंभिक वक्तव्य श्री एन. किरणकुमार सिंह, संयोजक, मणिपुरी परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का उद्घाटन प्रख्यात लेखिका सुश्री कोइजम शांतिबाला देवी ने किया। बीज-भाषण प्रख्यात लेखक श्री आर. के. भुबनसाना सिंह ने श्री लामबम गोजेंद्र, अध्यक्ष, बाल सांस्कृतिक केंद्र, मणिपुर के साथ दिया। सुश्री कोइजम शांतिबाला देवी, श्री आर. के. भुबनसाना सिंह तथा श्री लामबम गोजेंद्र ने मणिपुरी बाल साहित्य के इतिहास और विकास पर संक्षेप में बात की। अथोकपम ख. चंद्र, ख. शामंगौ, एल. संगीता और डब्ल्यू. कुमारी चानू वक्ताओं ने महत्त्वपूर्ण लेखकों के विशेष संदर्भ में मणिपुरी भाषा में बाल साहित्य की परंपरा के विभिन्न पहलुओं पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए।

परिसंवाद का दृश्य

'मणिपुरी साहित्य में महिलाओं के दृष्टिकोण' विषय पर परिसंवाद

18 नवंबर 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने आभासी मंच पर 18 नवंबर 2021 को प्रसिद्ध मणिपुरी लेखकों और विद्वानों जैसे के. शांतिबाला देवी, चौ. शीलारमानी, डब्ल्यू. कुमारी चानू, एल. संगीता देवी तथा एच. रॉयबाला देवी के साथ 'मणिपुरी साहित्य में महिलाओं के दृष्टिकोण' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया।

स्वागत भाषण साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने दिया। उन्होंने वक्ताओं का परिचय भी दर्शकों से कराया। आरंभिक वक्तव्य सुश्री के. शांतिबाला देवी ने दिया। उन्होंने केंद्र में महिलाओं के साथ मणिपुरी साहित्य की उत्पत्ति और विकास पर बात की। सत्र की अध्यक्षता सुश्री चौ. शीलारमणी की। उन्होंने मणिपुरी साहित्य में महिलाओं के चित्रण और लेखकों के विभिन्न दृष्टिकोणों की पृष्ठभूमि में महिला पात्रों को किस प्रकार विकसित किया गया, पर अपने विचार व्यक्त किए। सत्र में सुश्री डब्ल्यू. कुमारी चानू, सुश्री एल. संगीता देवी और सुश्री एच. रॉयबाला देवी ने मणिपुरी लेखन की विभिन्न शैलियों में महिलाओं के चित्रण पर बात की। उन्होंने विभिन्न साहित्यिक ग्रंथों का भी उल्लेख किया और पृष्ठभूमि में प्रमुख प्रवृत्तियों के साथ उनके पात्रों का विश्लेषण किया।

परिसंवाद का दृश्य

'मराठी की बोलियाँ' विषय पर परिसंवाद

30 अक्तूबर 2021, अचलपुर

साहित्य अकादेमी ने 30 अक्तूबर 2021 को छगनलाल मूलजीभाई आर्ट्स कॉलेज, अचलपुर कैंप, ज़िला अमरावती, महाराष्ट्र के सहयोग से कॉलेज के सभागार में 'मराठी की बोलियाँ' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में प्रतिष्ठित मराठी लोक शोधकर्ता तथा आलोचक मधुकर वाकोडे ने कहा कि भाषाएँ प्रकृति की रचनाएँ हैं। उन्होंने भाषा की निर्माण प्रक्रियाओं और उनकी सुंदरता का विस्तार से वर्णन किया और कहा कि मराठी में बोलियों ने भाषा को समृद्ध किया है। बीज-भाषण साहित्य अकादेमी के मराठी परामर्श मंडल के सदस्य एकनाथ पागर ने प्रस्तुत किया। उन्होंने भाषा में अंतर पर विस्तृत जानकारी दी और कहा कि बोली जाने वाली भाषाएँ न केवल भाषा को समृद्ध करती हैं, बल्कि मानव जाति के जीवन और संस्कृति को प्रभावित और समृद्ध करती हैं। परिसंवाद के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता मेधा सुनील देशपांडे ने की।

मराठी विद्वान और साहित्यकार हरिश्चंद्र बोरकर ने 'झड़ी' बोली पर, एकनाथ पागर ने 'अहिरानी' पर, गोविंद काजरेकर ने 'मालवानी' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए, जबकि रावसाहेब काले ने मराठी भाषा की 'वरहदी' बोली पर अपने विचार साझा किए। धन्यवाद ज्ञापन सचिव श्रीपद कृष्ण तारे ने प्रस्तुत किया।

उद्घाटन वक्तव्य देते हुए श्री मधुकर वाकोडे

'भारतीय नेपाली नाटक में परंपरा और प्रवृत्तियाँ' विषय पर परिसंवाद

16 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने 16 अप्रैल 2021 को अपनी वेबलाइन साहित्य शृंखला के अंतर्गत आभासी मंच पर 'भारतीय नेपाली नाटक में परंपरा और प्रवृत्तियाँ' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया।

डॉ. गरिमा राय, सहायक प्रोफ़ेसर, अंग्रेज़ी विभाग श्यामा प्रसाद कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय ने अपने आलेख में नेपाली नाटक के विभिन्न पहलुओं के बारे में चर्चा की तथा बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में दार्जीलिंग के गोरखाली समाज में जागरुकता लाने में रंगमंच और नाट्य मंच की भूमिका क्या थी, पर अपने विचार व्यक्त किए। श्री. विक्रम राय, वर्तमान में मिरिक कॉलेज, दार्जीलिंग में सहायक प्राफ़ेसर, डॉ. गोमादेवी शर्मा, गुवाहाटी में आर्मी पब्लिक स्कूल में हिंदी की स्नातकोत्तर शिक्षिका, डॉ. ममता लामा, वर्तमान में नेपाली विभाग, कलिम्पोंग कॉलेज, दार्जीलिंग में सहायक प्रोफ़ेसर तथा सोनम शेरपा, गोरुबथान गवर्नमेंट कॉलेज में सहायक प्रोफ़ेसर ने क्रमशः अपने-अपने आलेखों में नेपाली नाटक के क्षेत्र में परंपराओं और प्रवृत्तियों पर विस्तार से चर्चा की। श्री उदय छेत्री, जिन्होंने चार पुस्तक तथा एक विनिबंध लिखा है, ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

'कुलैनबाड़ी साहित्य' विषय पर परिसंवाद

24 जून 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने 24 जून 2021 को अपनी वेबलाइन साहित्य शृंखला के अंतर्गत आभासी मंच पर 'कुलैनबाड़ी साहित्य' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। प्राचीन काल से साहित्य जीवन और समाज की अमूर्त और वास्तविक छवि को चित्रित करता रहा है। इस विशाल राष्ट्र में नेपाली साहित्य अपने छोटे समुदाय में

इसे कायम रखने में भी पीछे नहीं है। इस मैदान में 'कुलैनबाड़ी' कुनैन के रोपण में केंद्रित क्षेत्र का एक भाषाई उपनाम/शब्द है जिसे विश्व स्तर पर 'सिनकोना प्लांटेशन' के रूप में भी जाना जाता है। यह परिसंवाद नेपाली साहित्य के माध्यम से 'कुलैनबाड़ी' में जीवन की व्याख्या पर और महान विद्वानों के शब्द, ज्ञान और भाषण के माध्यम से एक व्याख्यान था, जिसे 'कुलैनबाड़ी' अपना घर कहते हैं।

परिसंवाद की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता श्री मोहन ठाकूरी ने की। परिसंवाद की शुरुआत श्री ज्योति कृष्ण वर्मा द्वारा प्रस्तुत संक्षिप्त परिचयात्मक वक्तव्य के साथ हुई। श्री दिलीप कुमार थापा ने 'कुलैनबाड़ी और नेपाली कविता' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया, उन्होंने 'कुलैनबाड़ी' के क्षेत्रों से आए प्रसिद्ध कवियों और उनकी काव्य कृतियों का उल्लेख किया। श्री जय कुमार गुरुंग ने 'नेपाली समलोचना और कुलैनबाड़ी' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री कमल रेग्मी ने 'कुलैनबारी का गीत रा गीतकारहरु' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया, जो स्वयं नेपाली समुदाय के एक प्रख्यात गीतकार हैं। अपने आलेख में उन्होंने अधिकतर अन्य प्रख्यात गीतकारों तथा उनकी मधुर रचनाओं पर अपने विचार व्यक्त किए। श्रीमती सुभद्रा बोमज़ोन ने 'कुलैनबाड़ी निबंद साहित्य' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। अंत में, श्री उदय थुलुंग ने 'कुलैनबाड़ी और नेपाली कहानियाँ' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने कथा लेखकों के अथक प्रयासों के बारे में बताया।

वक्ताओं के लगभग दो घंटे के ज्ञानवर्धक और मस्तिष्क को पोषित करने वाले सत्र के पश्चात्, 'कुलैनबाड़ी' पर आधारित इस परिसंवाद का धन्यवाद ज्ञापन के साथ समापन हुआ।

'आदिवासी ओडिशा में कहानी कहने की परंपरा' विषय पर परिसंवाद

31 अक्तूबर 2021, कोरापुट, ओडिशा

साहित्य अकादेमी ने महिला कॉलेज, रायगड़ के सहयोग से 'आदिवासी ओडिशा में कहानी कहने की परंपरा' विषय पर दीपक कुमार पटनायक, शरत कुमार पालित, जगबंधु सामल, बिजयानंद सिंह, बिजय कुमार सत्पथी, प्रदोष कुमार स्वैन, रंजीता भुइयां, कमल कृष्ण त्रिपाठी, जलधारा स्वैन, उमाकांत दास, लोपामुद्रा स्वैन, मनोरंजन नाइक, नारायण पांडा, रबि सत्पथी, चंद्रशेखर होता, प्रीतिधर सामल तथा सुजाता सारंगी जैसे लेखकों के साथ 31 अक्तूबर 2021 को गवर्नमेंट पी.जी. कॉलेज, कोरापुट, ओडिशा में परिसंवाद का आयोजन किया।

कार्यक्रम में स्वागत भाषण साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने दिया। उन्होंने वक्ताओं का परिचय श्रोताओं से भी करवाया। आरंभिक वक्तव्य शरत कुमार पलित, कुलपति, ओडिशा केंद्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुट ने दिया। उन्होंने स्थानीय लोगों की रुचि की कमी के कारण आदिवासी भाषाओं के निरंतर क्षरण पर बात की। उन्होंने कहा कि वैश्विक मीडिया के उदय के कारण कई मामलों में स्थानीय संस्कृतियों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। श्री दीपक कुमार पटनायक, प्राचार्य, गवर्नमेंट कॉलेज, कोरापुट

आरंभिक वक्तव्य देते हुए प्रो. शरत कुमार पालित

ने आरंभिक भाषण दिया। प्रोफ़ेसर जगबंधु सामल ने बीज-भाषण में ओडिशा के आदिवासी समुदायों के प्रकारों के बारे में विस्तार से चर्चा की। उन्होंने उनकी विभिन्न सांस्कृतिक प्रथाओं पर भी अपने विचार व्यक्त किए। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता डॉ. बिजयानंद सिंह, संयोजक, ओड़िआ परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी ने की तथा धन्यवाद प्रस्ताव सुश्री रंजीता भुइयां ने प्रस्तुत किया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रोफ़ेसर बिजय कुमार सत्पथी ने की तथा श्री उमाकांत दास, श्री कमल कृष्ण त्रिपाठी, सुश्री लोपामुद्रा स्वैन, सुश्री रंजीता भुइयां तथा श्री प्रदोष कुमार स्वैन आदिवासी ने ओड़िआ कहानी परंपरा के विभिन्न पहलुओं पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र के अंत में श्री मनोरंजन नायक ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। द्वितीय सत्र में, श्री चंद्रशेखर होता, सुश्री प्रीतिधर सामल, श्री जलधर स्वैन तथा श्री रबि सत्पथी ने ओड़िआ परंपरा के संदर्भ में विभिन्न प्रकार की कहानी कहने की तकनीकों पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता श्री नारायण पांडा ने की तथा सुश्री सुजाता सारंगी ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा।

'21वीं सदी की ओड़िआ समालोचना : विधियाँ और परिप्रेक्ष्य' विषय पर परिसंवाद

28 मार्च 2022, भुवनेश्वर

साहित्य अकादेमी ने 28 मार्च 2022 को उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर में '21वीं सदी की ओड़िआ समालोचना : विधियाँ और परिप्रेक्ष्य' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया।

स्वागत भाषण साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने दिया। उन्होंने कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। परिसंवाद का उद्घाटन प्रो. दुर्गा शंकर पटनायक, अध्यक्ष, पी.जी. काउंसिल, उत्कल विश्वविद्यालय ने किया। कार्यक्रम में उन्होंने न केवल ओड़िआ का साहित्यिक इतिहास प्रस्तुत किया बल्कि साहित्य के वैज्ञानिक विश्लेषण पर भी बल दिया।

आरंभिक वक्तव्य देते हुए प्रो. बिजयानंद सिंह

ओड़िआ के प्रख्यात समालोचक प्रो. दशरथी दास ने कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया तथा उन्होंने साहित्यिक आलोचना के नए रुझानों पर प्रकाश डाला, जो ओड़िआ साहित्यिक आलोचना में परिलक्षित हुए। बीज-भाषण प्रो. संतोष कुमार त्रिपाठी, प्रमुख, ओड़िआ, उत्कल विश्वविद्यालय के पी.जी. विभाग द्वारा प्रस्तावित किया गया। उन्होंने परिसंवाद के मुख्य विषयों तथा उद्देश्यों के बारे में बताया। प्रो. बिजयानंद सिंह, संयोजक, ओड़िआ परामर्श मंडल ने परिसंवाद के महत्त्वपूर्ण पहलुओं को प्रस्तुत करते हुए उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। ओड़िआ परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. प्रदीप्त कुमार पांडा ने उद्घाटन सत्र के अंत में धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। प्रथम सत्र में डॉ. रुद्रनारायण महापात्र ने 'साहित्यिक आलोचना की प्रवृत्तियाँ और ओड़िआ में इसकी भूमिका' पर आलेख प्रस्तुत किया। मूल रूप से, उन्होंने पुनर्निर्माण के सैद्धांतिक विकास और इसके महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डाला। डॉ. प्रदोष कुमार स्वैन ने इको-क्रिटिसिज्म इन ओड़िआ लिटरेचर' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। इस सत्र में डॉ. श्रीकांत कुमार बारिक ने 21वीं सदी में ओड़िआ साहित्यिक आलोचना के महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर आलेख भी प्रस्तुत किया। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. प्रसन्ना कुमार मोहंती ने की। द्वितीय सत्र में डॉ. बिजयलक्ष्मी दास ने ओड़िआ साहित्यिक आलोचना के महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने ओड़िआ साहित्यिक विचारों की विभिन्न प्रवृत्तियों पर प्रकाश डाला और बताया कि प्रमुख साहित्यिक परंपराओं में से एक यानी

संपादन की खोज डॉ. ममता बेहरा ने की थी। उन्होंने ओड़िआ की प्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिका *इस्ताहारा* के संपादकीय पर भी चर्चा की। डॉ. प्रह्लाद खिला ने अपने आलेख में 21वीं सदी की आलोचना की विधियों और दृष्टिकोणों पर विचार व्यक्त किए गए। इस सत्र में डॉ. रमेश चंद्र मलिक द्वारा ओड़िआ भाषाविज्ञान प्रवचन की परंपरा पर अपने विचार व्यक्त किए। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. कृष्ण चंद्र प्रधान ने की, उन्होंने परिसंवाद के विषयों और दृष्टिकोणों को रेखांकित किया। श्रोताओं ने आलेख वक्ताओं से कुछ प्रश्न भी पूछे। कार्यक्रम के अंत में श्री अम्पा मरंडी ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा।

'राजस्थानी में साहित्यिक समालोचना : वर्तमान और भविष्य' विषय पर परिसंवाद

28 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने 28 अप्रैल 2021 को अपनी वेबलाइन साहित्य शृंखला के अंतर्गत आभासी मंच पर 'राजस्थानी में साहित्यिक आलोचना : वर्तमान और भविष्य' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। श्री हरीश बी. शर्मा, डॉ. कृष्ण कुमार 'आशु', श्री मदन गोपाल लाधा, डॉ. नीरज दइया तथा डॉ. राजेश कुमार व्यास ने कार्यक्रम में भाग लिया। श्री मधु आचार्य 'आशावादी', संयोजक, राजस्थानी परामर्श मंडल ने आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया तथा सत्र की अध्यक्षता श्री कुंदन माली ने की।

'राजस्थानी साहित्य में गाँधी' विषय पर परिसंवाद

21 नवंबर 2021, श्रीगंगानगर

साहित्य अकादेमी ने 21 नवंबर 2021 को श्रीगंगानगर, राजस्थान में सृजन सेवा संस्थान के सहयोग से 'राजस्थानी साहित्य में गाँधी' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता वयोवृद्ध राजस्थानी लेखक डॉ. शारदा कृष्ण ने की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजस्थानी साहित्यकार एवं साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता डॉ. मंगत बादल थे। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए उन्होंने कहा कि गाँधी हमेशा राजनेताओं के लिए प्रासंगिक रहे हैं लेकिन इसके साथ ही वे आम आदमी के लिए भी प्रासंगिक रहे हैं। उन्होंने कहा कि गाँधी ने ब्रिटिश सरकार को उनके सिद्धांतों पर झुकने के लिए मजबूर किया, जिसने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में प्रमुख भूमिका निभाई जिसमें असहयोग और अहिंसा शामिल थे। गाँधी का ज़िक्र करते हुए उन्होंने कहा कि उन्होंने ग्रामीण विकास को समान महत्त्व दिया और ग्रामीण विकास और ग्रामीण उद्योगों के लिए गंभीर प्रयास किए। वे ऐसे व्यक्ति थे जिसने अमीर और गरीब को विश्वास दिलाया कि स्वतंत्रता प्राप्त किए बिना उनका जीवन बेकार है। राजस्थानी परामर्श मंडल के संयोजक श्री मधु आचार्य 'आशावादी' ने अपने बीज-भाषण में कहा कि विगत एक दशक के दौरान देश में व्याप्त स्थिति को देखते हुए गाँधी और अधिक प्रासंगिक हो गए हैं। उन्होंने आगे कहा कि लोगों ने गाँधी को पढ़ा है लेकिन उनके दृष्टिकोण और सिद्धांतों का उपयोग नहीं किया है। गाँधी ने 'सत्याग्रह' का उपयोग विनम्र प्रतिरोध के साथ किया है। गाँधी को अपनी मातृभाषा से बेहद प्रेम था। उन्होंने स्त्री शिक्षा और अस्पृश्यता के उन्मूलन पर अधिक बल दिया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए सृजन सेवा संस्थान के संरक्षक श्री विजय गोयल ने कहा कि गाँधी ने हमेशा सत्य को चुना और वे अपनी ग़लतियों को स्वीकारने से कभी नहीं हिचके। श्री गोयल ने युवाओं से गाँधी से प्रेरणा लेने तथा अपने जीवन में उनके सिद्धांतों का पालन करने की अपील की। कार्यक्रम के प्रारंभ में स्वागत भाषण में साहित्य अकादेमी के सहायक संपादक श्री ज्योति कृष्ण वर्मा ने गाँधी जी के जीवन के मुख्य अंशों के बारे में संक्षेप में बात की और कार्यक्रम की रूपरेखा भी प्रस्तुत की। उन्होंने उन लेखकों के बारे में भी बात की जिन्होंने गाँधी पर लिखा है। श्री वर्मा ने कार्यक्रम के महत्त्व को रेखांकित किया। प्रथम सत्र में श्रीमती संतोष चौधरी ने 'राजस्थानी साहित्य में गाँधी का सत्याग्रह

आंदोलन' विषयक अपने आलेख में कहा कि 'सत्याग्रह' का मुख्य उद्देश्य अन्याय और उत्पीड़न के खिलाफ विनम्र प्रतिरोध है। उन्होंने आगे कहा कि गाँधी ने 'सत्याग्रह' के माध्यम से आत्म-अभिव्यक्ति की शुरुआत की और गाँधी के अधिकांश कार्यों को राजस्थानी साहित्य में संदर्भित किया गया है तथा कई कार्य गाँधी के दर्शन पर भी आधारित हैं। उन्होंने कन्हैयालाल सेठिया, आईदान सिंह भाटी, डॉ. अर्जुन देव चारण के कार्यों का भी उल्लेख किया। अन्य लेखकों में सी.पी. देवल, लक्ष्मणन काविया और तारालक्षण गहलोत ने गद्य के साथ-साथ गाँधी के 'सत्याग्रह' को समर्पित कविताएँ भी प्रस्तुत कीं।

द्वितीय सत्र का विषय था—'गाँधी की अहिंसा'। डॉ. आशाराम भार्गव ने कहा कि गाँधी की अहिंसा बौद्ध धर्म और जैन धर्म से प्रेरित थी। राजस्थानी साहित्य का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि अहिंसा हिंसा की क्रूर शक्ति से कहीं अधिक शक्तिशाली है और क्रूरता से मुक्ति सभ्यता है। आज गाँधी की अधिक आवश्यकता है। डॉ. मदनगोपाल लाधा ने 'राजस्थानी साहित्य में मातृभाषा पर गाँधी की सोच' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि गाँधी ने हमेशा इस बात पर ज़ोर दिया कि शिक्षा के लिए मातृभाषा महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने आगे कहा कि गाँधी भारतीय भाषाओं के बड़े पैरोकार थे तथा उन्होंने स्वीकार किया कि भारतीय भाषाएँ भारतीय संस्कृति की पहचान और पोषक हैं तथा केवल वही भारतीय संस्कृति की रक्षा कर सकती हैं। सत्र की अध्यक्षता सुश्री सीमा भाटी ने की। उन्होंने कहा कि मनुष्य की पहचान उसकी भाषा, क्रिया और व्यवहार से होती है। अहिंसा का मार्ग महान है। उन्होंने सत्र के दौरान पढ़े गए सभी आलेखों पर बात की और कहा कि प्रस्तुत आलेख संबद्ध विषय पर एक नई अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

अगले सत्र में डॉ. गजसिंह राजपुरोहित ने 'राजस्थानी साहित्य में गाँधी जी का नारी विमर्श' विषयक अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि यद्यपि राजस्थानी साहित्य में गाँधी जी का महिलाओं पर व्याख्यान दुर्लभ है, फिर भी हमें कुछ ऐसी सामग्रियाँ मिलती हैं, जो यह दर्शाती हैं कि स्वतंत्रता और 21वीं सदी की महिलाओं को मिली आज़ादी में गाँधी जी का योगदान अवश्य था। 'राजस्थानी साहित्य में अस्पृश्यता' विषय पर बोलते हुए डॉ. सतपाल खाती ने राजस्थानी कहानियों में छुआछूत और जातिवाद पर आधारित भेदभाव पर विस्तारपूर्वक अपने विचार व्यक्त किए। 'राजस्थानी साहित्य में गाँधीवाद' विषय पर अपने आलेख में डॉ. हरिमोहन सारस्वत ने कहा कि गाँधीवाद को दैनिक जीवन में लाने की आवश्यकता है। डॉ. कृष्ण कुमार 'आशु' ने इस सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि गाँधी हमेशा प्रासंगिक थे, हैं और रहेंगे। जो लोग उनके जीवनकाल में सफल नहीं हो सके, वे गाँधी की मृत्यु के 75 साल बाद भी उनकी विचारधारा को मिटाने के लिए कड़ी मशक्कत कर रहे हैं, लेकिन असफल हो रहे हैं। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि जो लोग गाँधी का विरोध कर रहे हैं वे वास्तव में अपनी विकृत मानसिकता दिखा रहे हैं।

समापन सत्र के मुख्य अतिथि श्री आत्मवल्लभ जैन, जैन कन्या महाविद्यालय के आयोजक श्री अमरचंद बोराड ने धन्यवाद दिया और अकादेमी से भविष्य में भी इस प्रकार के कार्यक्रम आयोजित करने का अनुरोध किया। अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में श्री मधु आचार्य 'आशावादी' ने कहा कि अगर आज के युवा गाँधी के महत्त्व के बारे में जानेंगे, तो यह देश के भविष्य के लिए एक अच्छा लक्षण होगा।

'डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर-संस्कृत साहित्य' विषय पर परिसंवाद

24 मई 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने अपनी वेबलाइन साहित्य शृंखला के अंतर्गत आभासी मंच पर 24 मई 2021 को 'डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर-संस्कृत साहित्य' विषय पर परिसंवाद आयोजित किया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने साहित्य अकादेमी की ओर से परिसंवाद में भाग लेने वाले प्रतिभागियों तथा दर्शकों का स्वागत किया। अपने स्वागत भाषण में उन्होंने कहा कि यह

परिसंवाद का दृश्य

एकमात्र विद्या ही है जो सभी को सुर्खियों में लाती है और डॉ. बी.आर. अंबेडकर इसका सबसे अच्छा उदाहरण हैं। इसलिए, अधिग्रहण को प्राथमिकता देनी चाहिए। प्रो. अभिराम राजेंद्र मिश्र, संयोजक, संस्कृत परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी ने अपने आरंभिक वक्तव्य में संस्कृत भाषा सीखने के प्रति डॉ. अंबेडकर के दृष्टिकोण की चर्चा की। प्रो. अर्कनाथ चौधरी, संस्कृत विद्वान तथा जयपुर के पूर्व कुलपति ने अपने बीज-भाषण में डॉ. बी.आर. अंबेडकर के समस्त कार्यों और व्याख्यानों के बारे में बताया। दरभंगा, बिहार के पूर्व कुलपति प्रो. देवनारायण झा ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में उन्होंने कहा कि डॉ. अंबेडकर का जीवन कई अन्य व्यक्तियों के लिए जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से असीम ज्ञान प्राप्त करने का एक सबक है।

आलेख प्रस्तुति सत्र की अध्यक्षता प्रो. गंगाधर पांडा, कुलपति, कोल्हान विश्वविद्यालय, चाईबासा, झारखंड ने की। गुजरात के संस्कृत विद्वान डॉ. कमलेश कुमार सी. चोकशी ने 'वैदिक सामग्री पर डॉ. भीमराव अंबेडकर की विचारधारा की समीक्षा' विषयक आलेख प्रस्तुत किया। मदुरै कामराज विश्वविद्यालय, मदुरै के सहायक प्रोफ़ेसर डॉ. मैराम ने 'डॉ. अंबेडकर के संस्कृत दार्शनिक सिद्धांतों को समझाने की विधि' पर आलेख प्रस्तुत किया। दिल्ली के संस्कृत लेखक डॉ. कौशल पंवार ने 'डॉ. भीमराव अंबेडकर-संस्कृत भाषा के विचार' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ. एन. सुरेश बाबू ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

'साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित संस्कृत पुस्तकों-1 की समीक्षा' विषय पर परिसंवाद

17 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने 17 अगस्त 2021 को अपनी वेबलाइन साहित्य शृंखला के अंतर्गत आभासी मंच पर 'साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित संस्कृत पुस्तकों-1 की समीक्षा' पर परिसंवाद का आयोजन किया। डॉ. एन. सुरेश बाबू, उप-सचिव, साहित्य अकादेमी ने डॉ. के. श्रीनिवासराव, सचिव, साहित्य अकादेमी की ओर से परिसंवाद में भाग लेने वाले दोनों प्रतिभागियों तथा दर्शकों का स्वागत किया। साहित्य अकादेमी के संस्कृत परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. अभिराज राजेंद्र मिश्र ने अपने आरंभिक वक्तव्य में संस्कृत विद्वानों को पहचानने और प्रोत्साहित करने में साहित्य अकादेमी की भूमिका पर प्रकाश डाला। साहित्य अकादेमी के संस्कृत परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. एस. रंगनाथ ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गोपबंधु मिश्र ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की।

आलेख प्रस्तुति सत्र की अध्यक्षता प्रो. दीपक कुमार शर्मा, कुलपति, के.बी.वी. संस्कृत और प्राचीन अध्ययन विश्वविद्यालय, नलबाड़ी, असम ने की, जबकि प्रो. गौरी माहुलीकर ने 'पी.वी. केन द्वारा धर्म शास्त्र खंड-IV का इतिहास' पर आलेख प्रस्तुत किया। प्रो. अरुण रंजन मिश्र ने 'गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी द्वारा वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृत' पर आलेख प्रस्तुत किया तथा प्रो. रमाकांत पांडे ने 'वी. राघवन द्वारा भोज का शृंगार

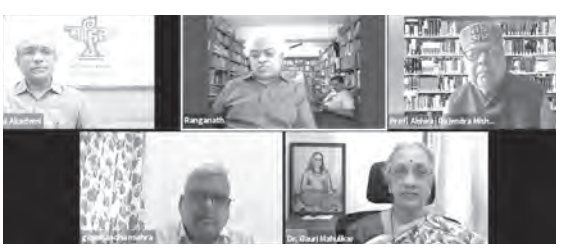

परिसंवाद का दृश्य

प्रकाश' विषय पर आपना आलेख प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी के उप-सचिव डॉ. एन. सुरेश बाबू ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

'संस्कृत साहित्य के प्रचार-प्रसार में मिथिला का योगदान' विषय पर परिसंवाद

26 अगस्त 2021, दरभंगा

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली ने एम.एल.एस.एम. कॉलेज, दरभंगा (बिहार) के सहयोग से 26 अगस्त 2021 को एम.एल.एस.एम. कॉलेज, दरभंगा के सेमिनार हॉल में 'संस्कृत साहित्य के प्रचार-प्रसार में मिथिला का योगदान' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। सत्र की शुरुआत कुछ प्रतिभागियों द्वारा शांति वचन मंत्र से हुई। संगीत विभाग की छात्राओं ने स्वागत गान प्रस्तुत किया। प्रो. प्रेम मोहन मिश्र ने स्वस्ति वचन मंत्र, सरस्वती वंदना, गणेश वंदना आदि का उच्चारण कर कार्यक्रम की शुरुआत की और फिर संस्कृत में स्वागत कविता का पाठ किया। साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ. एन. सुरेश बाबू ने अपना स्वागत भाषण प्रस्तुत किया तथा संस्कृत के साथ-साथ अंग्रेज़ी में भी विषय प्रवर्तन किया। प्रो. देव नारायण झा, पूर्व कुलपति, के.एस.डी. संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। कोल्हान विश्वविद्यालय, झारखंड के कुलपति प्रो. गंगाधर पांडा परिसंवाद के विशिष्ट अतिथि थे। उन्होंने संस्कृत शब्द के विभिन्न पहलुओं में मिथिला के योगदान पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। प्रो. शशि नाथ झा, कुलपति, के.एस.डी. संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा समारोह के मुख्य अतिथि थे। प्रो. एस.पी. सिंह कुलपति, एल.एन. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में परिसंवाद के महत्त्व पर प्रकाश डाला तथा कॉलेज को इस प्रकार के कार्य में सहयोग का अवसर प्रदान के लिए साहित्य अकादेमी को धन्यवाद दिया। धन्यवाद प्रस्ताव डॉ. विनय कुमार झा, एच.ओ.डी., संस्कृत, एम.एल.एस.एम. कॉलेज, दरभंगा द्वारा प्रस्तुत किया गया।

परिसंवाद का दृश्य

प्रो. विद्याधर मिश्र, पूर्व कुलपति, के.एस.डी. संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा ने संस्कृत कविता में मिथिला के योगदान विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। प्रो. बी. झा, पूर्व विभागाध्यक्ष (दर्शनशास्त्र विभाग) के.एस.डी. एस.यू., दरभंगा ने मिथिला में व्याकरण की परंपरा पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी के मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. अशोक कुमार झा 'अविचल' ने वेद और मिथिला के अवतार विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। प्रो. जीवा नंद झा, विभागाध्यक्ष संस्कृत विभाग, एल.एन.एम.यू., दरभंगा ने संस्कृत दर्शन में मिथिला के योगदान विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। डॉ. संजीत कुमार झा, सहायक प्रोफ़ेसर, सी.एम. कॉलेज, दरभंगा ने संस्कृत व्याकरण में मिथिला के योगदान विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। प्रो. प्रेम मोहन मिश्र, प्रमुख, रसायन विज्ञान विभाग, एम.एल.एस.एम. कॉलेज, दरभंगा तथा साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में इस सत्र में प्रस्तुत विभिन्न आलेखों का समाहार प्रस्तुत किया तथा अपना आलेख भी प्रस्तुत किया। उन्होंने परिसंवाद में किए गए विचार-विमर्श की गुणवत्ता पर संतोष व्यक्त किया। डॉ. विनय कुमार झा, विभागाध्यक्ष संस्कृत, एम.एल.एस.एम. कॉलेज, दरभंगा ने धर्म-दर्शन के क्षेत्र में संस्कृत साहित्य में मिथिला के योगदान विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का समापन परिसंवाद के संयोजक डॉ. विनय कुमार झा के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ-साथ साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली के उपसचिव डॉ. एन. सुरेश बाबू की टिप्पणियों के साथ हुआ। उन्होंने परिसंवाद में किए गए विचार-विमर्श पर संतोष व्यक्त किया।

'संताली भाषा में शास्त्रीय साहित्य' विषय पर परिसंवाद

19 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने आभासी मंच पर 19 अप्रैल 2021 को 'संताली भाषा में शास्त्रीय साहित्य' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मिहिर कुमार साहू ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने वक्ताओं का परिचय दर्शकों से करवाया। श्री मदन मोहन सोरेन, संयोजक, संताली परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी द्वारा आरंभिक व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन प्रख्यात लेखक श्री पृथ्वी माझी ने किया। प्रख्यात लेखक श्री रतन हेम्ब्रम, सदस्य, संताली परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। प्रख्यात संताली लेखक श्री बादल हेम्ब्रम, श्री मदन मोहन सोरेन, श्री पृथ्वी माझी, श्री रतन हेम्ब्रम ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री बादल हेम्ब्रम ने संताली भाषा में शास्त्रीय साहित्य की अवधारणा के महत्त्व के साथ-साथ संताली में शास्त्रीय साहित्य की परंपरा पर महत्त्वपूर्ण लेखकों के विशेष संदर्भ में बात की। आलेख वाचन सत्र में श्री जतिन्द्र नाथ बेश्रा, सुश्री जोबा मुर्मू, श्री श्याम चौ. हेम्ब्रम और श्री श्रीपति टुडू ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। वक्ताओं ने संताली शास्त्रीय साहित्य की महत्त्वपूर्ण विशेषताओं पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए। उन्होंने अपने तर्क और विचार को प्रमाणित करने के लिए कई प्रासंगिक ग्रंथों का उल्लेख किया तथा उनसे कई उद्धरण भी प्रस्तुत किए।

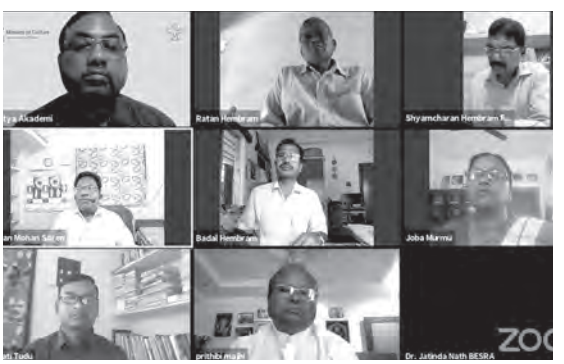

परिसंवाद का दृश्य

'संताली साहित्य में प्रतिबिम्बित विस्थापन' विषय पर परिसंवाद

11 जून 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने 11 जून 2021 को आभासी मंच पर 'संताली साहित्य में प्रतिबिम्बित विस्थापन' विषय पर परिसंवाद कार्यक्रम का आयोजन किया। श्री मदन मोहन सोरेन, श्री गंगाधर हाँसदा, श्री चैतन्य प्रसाद माझी, श्री गणेश ठाकुर हाँसदा, श्री गुमदा मरांडी, श्री समय किस्कू, श्री श्रीकांत सोरेन तथा सुश्री सुमित्रा सोरेन जैसे प्रख्यात लेखकों एवं विद्वानों ने प्रतिभागिता की।

साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने कार्यक्रम के प्रतिभागियों का दर्शकों से परिचय करवाया। साहित्य अकादेमी के संताली परामर्श मंडल के संयोजक श्री मदन मोहन सोरेन ने आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया। उद्घाटन व्याख्यान श्री गंगाधर हाँसदा ने प्रस्तुत। उन्होंने परिसंवाद के विषय के महत्त्व पर चर्चा की। बीज-भाषण श्री चैतन्य प्रसाद माझी ने प्रस्तुत किया तथा श्री गणेश ठाकुर हाँसदा ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। श्री चैतन्य प्रसाद माझी ने विस्थापन के कारणों

परिसंवाद का दृश्य

और परिणामों पर बात की तथा यह भी बताया कि इसने संताली लोगों के समाज और साहित्य को किस प्रकार प्रभावित किया। श्री समय किस्कू, श्री श्रीकांत सोरेन, सुश्री सुमित्रा सोरेन और श्री गुमदा मरांडी ने अपने आलेखों में कविताओं, कथाओं, उपन्यासों और नाटकों की विशिष्ट शैलियों पर अपने विचार व्यक्त किए। प्रस्तुत आलेखों में प्रवासी संताली साहित्य के विकास के महत्त्वपूर्ण चरणों के साथ-साथ विभिन्न विधाओं के महत्त्वपूर्ण साहित्यिक कार्यों को संदर्भित किया गया तथा उनके विशिष्ट पहलुओं पर प्रकाश डाला गया। उन्होंने अपने तर्कों के समर्थन में कई साहित्यिक कार्यों के उद्धरण भी प्रस्तुत किए।

'सुगन आहूजा जन्म शतवार्षिकी' पर परिसंवाद

1 दिसंबर 2021, (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने 1 दिसंबर 2021 को आभासी मंच पर 'सुगन आहूजा जन्म शतवार्षिकी' पर परिसंवाद का आयोजन किया। कार्यक्रम में कई सिंधी अतिथि लेखकों ने सिंधी भाषा, साहित्य और आलोचना के बारे में लेखक सुगन आहूजा पर अपने विचार व्यक्त किए तथा उनकी साहित्यिक गतिविधियों और रचनात्मक यात्रा के बारे में भी विस्तार से चर्चा की। प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा सिंधी साहित्य में सुगन आहूजा के योगदान को रेखांकित किया। साहित्य अकादेमी के सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक श्री नामदेव ताराचंदाणी ने आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया।

परिसंवाद का दृश्य

प्रसिद्ध सिंधी साहित्यकार डॉ. जगदीश लच्छाणी ने सुगन आहूजा के उपन्यासों पर, मोहन गेहाणी ने आलोचनात्मक लेखन पर, साहिब बिजाणी तथा संध्या कुंदनाणी ने सुगन आहूजा के व्यक्तित्व और गतिविधियों पर तथा शोभा लालचंदाणी ने कथाकार सुगन आहूजा पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। समापन भाषण देते हुए प्रतिष्ठित सिंधी लेखक हीरो ठाकुर ने कहा कि सुगन आहूजा सरल स्वभाव के व्यक्ति थे तथा वे एक प्रगतिशील लेखक भी थे। उन्होंने विभिन्न लेखन की विधाओं में लिखा और सिंधी साहित्य को समृद्ध बनाया। अपने व्याख्यान में उन्होंने अपनी रचनात्मक यात्रा में सुगन आहूजा के विविध विषयों के बारे में भी बताया। कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई के प्रभारी अधिकारी डॉ. ओम प्रकाश नागर ने किया।

'संगम साहित्य में लोगों की संस्कृति और जीवन शैली' विषय पर परिसंवाद

16 सितंबर 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी के चेन्नै उप-क्षेत्रीय कार्यालय ने 16 सितंबर 2021 को आभासी मंच पर 'संगम साहित्य में लोगों की संस्कृति और जीवन शैली' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। श्री एस.पी. महालिंगेश्वर, क्षेत्रीय सचिव, साहित्य अकादेमी, बेंगळूरु ने अपने स्वागत भाषण में साहित्य अकादेमी की साहित्यिक गतिविधियों पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला। उन्होंने संगम साहित्य के विषयों तथा तकनीकों का संक्षिप्त परिचय भी दिया तथा परिसंवाद की सफलता की कामना की। इसके बाद साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् की सदस्या डॉ. सुंदरा मुरुगन ने अध्यक्षीय व्याख्यान प्रस्तुत किया तथा 'संगम युग में विवाह' विषय पर आधारित आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने संक्षेप में एक पुरुष और महिला

परिसंवाद का दृश्य

के मिलन के दो रूपों के बारे में बात की—कलावियाल (पूर्व-वैवाहिक प्रेम) और कर्पियाल (नियोजित विवाह/अरेंज मैरिज), जैसा कि प्राचीन तमिऴ कृति में *थोलकाप्पियम* में प्रतिपादित है। उन्होंने अगनानूरु के उपाख्यानों को भी उद्धृत किया, जिसमें प्राचीन तमिऴ विवाहों का विवरण मिलता है जो उस शुभ दिन पर मनाए जाते थे जब रोहिणी तारा चंद्रमा के साथ होता था। उन्होंने अपने व्याख्यान में नात्रिनइ, कम्ब रामायणम, कुरुन्थोगई और ऐंकुरुनूरू के संदर्भों का भी हवाला दिया गया। शैक्षणिक सत्र में डॉ. एस. भक्तवत्सला भारती ने 'संगम युग में पाक शैली' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि कुरिंजी, मुलई, मरुथम, निधल और पलाई के पाँच पारंपरिक परिदृश्यों में, खाना पकाने के अलग-अलग तरीक़े, व्यंजन और विविध खाने की संस्कृति थी। प्राचीन तमिऴ देश में भोजन परिदृश्य, उनके व्यवसाय और आसानी से उपलब्ध संसाधनों पर आधारित था। उन्होंने कहा कि प्राचीन तमिऴ अपने भोजन को दूसरों के साथ बाँटने तथा अन्य प्राणियों के विविध जीवन को संरक्षित करने के सबसे महत्त्वपूर्ण गुण में विश्वास करते थे। इसके बाद, डॉ. आर. संबथ ने 'संगम युग के लोगों की जीवन शैली' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। उनके बाद डॉ. वाणी अरिवलन ने 'संगम युग में युद्ध की रणनीतियाँ' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने पुरम से संबंधित 'थिनाइस' को विस्तार से समझाया। प्रो. सिलाम्बु ना. सेल्वारासु ने 'संगम युग के धार्मिक रीति-रिवाज' पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि तमिलनाडु महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक क्षेत्र होने के कारण, वहाँ पर आदिकाल से ही भगवान शिव और भगवान विष्णु की पूजा की जाती थी। कोत्रावई और मुरुगन जैसे युद्ध देवता संगम युग में मुख्य देवता थे। नादुकल पूजा, यानी युद्ध के मैदान में एक योद्धा की मृत्यु की स्मृति में स्मारक पत्थर, संगम युग के दौरान भी व्यापक रूप से प्रचलित थे। इसके बाद श्री पी. थिरुनावुक्कारासु ने 'संगम युग में अर्थशास्त्र' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि उस काल की मुख्य आर्थिक गतिविधियाँ कृषि, मत्स्य पालन, पशु पालन, बुनाई तथा निर्यात व्यापार थीं और संगम युग के दौरान तमिऴ समाज ने समृद्ध अर्थव्यवस्था का आनंद लिया था। अंत में, डॉ. के. अयप्पन ने 'संगम युग के लोगों के व्यवसाय' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि संगम साहित्य में तमिलनाडु और शेष विश्व के मध्य व्यापक व्यापारिक संबंधों का प्रमाण मिलता है। साहित्य अकादेमी, चेन्नै के कार्यालय प्रभारी श्री टी.एस. चंद्रशेखर राजू ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा सत्र के अंत में धन्यवाद प्रस्ताव रखा।

'तमिऴ उपन्यासों में उत्तर आधुनिकतावाद' विषय पर परिसंवाद

25 फ़रवरी 2022, कुप्पम

साहित्य अकादेमी के उप-क्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै ने तमिऴ भाषा और अनुवाद अध्ययन विभाग, द्रविड़ विश्वविद्यालय, कुप्पम के सहयोग से 25 फ़रवरी 2022 को एमेन्यू हाउस, द्रविड़ विश्वविद्यालय, कुप्पम में 'तमिऴ उपन्यासों में उत्तर आधुनिकतावाद' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में श्री टी.एस. चंद्रशेखर राजू, कार्यालय प्रभारी, साहित्य अकादेमी, चेन्नै ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। प्रो. तुम्माला रामकृष्ण,

परिसंवाद का दृश्य

कुलपति, द्रविड़ विश्वविद्यालय ने उद्घाटन व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने उस माहौल के बारे में संक्षेप में बात की जिसमें वे बड़े हुए थे, जो व्यापक रूप से सीखने तथा पुस्तक पढ़ने के लिए अनुकूल था। उन्होंने कहानी लिखने के अपने अनुभव भी साझा किए तथा द्रविड़ भाषाओं में लिखे गए कुछ महत्त्वपूर्ण उपन्यासों को भी इंगित किया। प्रो. एस. एक्वटर बाबू, डीन, (अकादमिक) द्रविड़ विश्वविद्यालय, ने अध्यक्षीय व्याख्यान दिया। उन्होंने अपनी संस्था में परिसंवाद की मेज़बानी के लिए साहित्य अकादेमी को धन्यवाद दिया तथा इस आयोजन की सफलता की कामना की। इसके बाद प्रो. एन. शिवसुब्रह्मण्यम ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने महसूस किया कि तमिळ संदर्भ में, अकादमिक और रचनात्मक लेखन की प्रक्रिया के बीच की खाई को पाटना अत्यंत आवश्यक था। उन्होंने यह भी कहा कि यह परिसंवाद छात्रों को रचनात्मक साहित्य की बारीकियों को समझने के लिए कम से कम पाँच उत्तर आधुनिक उपन्यास पढ़ने के लिए प्रेरित करेगा। तमिळ भाषा और अनुवाद अध्ययन विभाग के एसोसिएट प्रोफ़ेसर प्रो. टी. विष्णुकुमारन ने आरंभिक वक्तव्य दिया तथा परिसंवाद के विषय पर प्रकाश डाला। डॉ. जी. पद्मनाभन, प्रमुख, तमिळ भाषा और अनुवाद अध्ययन विभाग ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा। प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. एन. शिवसुब्रह्मण्यम ने की तथा 'तमिळ उपन्यासों में उत्तर आधुनिकतावादी विचार' विषय पर आधारित आलेख प्रस्तुत किया। अपने भाषण में, प्रो. शिवसुब्रह्मण्यम ने तमिळ में उपन्यासों के आगमन और तमिळ के प्रसिद्ध उपन्यासकारों के बारे में बताया। उन्होंने 80 के दशक के बाद, संरचनावाद पर सैद्धांतिक पुस्तक के आगमन के साथ तमिळ में हुए बड़े बदलावों का वर्णन किया। उन्होंने तमिळ लेखकों, जैसे- तमिझवन, एम.जी. सुरेश, कोनांगी, चारु निवेदिता और एस. रामकृष्णन की कृतियों को भी उद्धृत किया।

इसके बाद प्रो. बी. रविकुमार ने 'एम.जी. सुरेश के उत्तर आधुनिक उपन्यास' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने संक्षेप में एम.जी. सुरेश के जीवन और साहित्यिक कार्यों का परिचय दिया, जो जीवन भर उत्तर आधुनिकतावादी सिद्धांतों पर परिचयात्मक कार्य और आलोचनाएँ लिखते रहे हैं। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि तमिळ में दो अलग-अलग उत्तर आधुनिक प्रवृत्तियाँ हैं, वामपंथी और दक्षिणपंथी उत्तर आधुनिकतावाद। इसके बाद श्री जमालान ने 'तमिळ संदर्भ में उत्तर आधुनिकता—एक परिचय' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने पाया कि उत्तर आधुनिकतावाद की कोई सामान्य परिभाषा नहीं है और उन्होंने यह आलेख उत्तर आधुनिकतावादी सिद्धांतकारों की अवधारणाओं को समझाने के लिए तैयार किया है। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. ए. जेवियर चंद्र बोस ने की तथा उन्होंने 'उत्तर आधुनिक सिद्धांत' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने उपयुक्त उदाहरणों के साथ उत्तर आधुनिक सिद्धांत की कुछ प्रसिद्ध अवधारणाओं को विस्तार से समझाया। इसके बाद, डॉ. ए. मुथायन ने 'उत्तर आधुनिक तमिळ उपन्यासों में नवीनता' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने तमिझवन के सूक्ष्म उपन्यास के संदर्भों का हवाला देते हुए बताया कि किस प्रकार तमिळ रचनात्मक साहित्य में पढ़ने का अनुभव अलग है। इसके बाद, डॉ. आर. राजा ने 'उत्तर आधुनिक तमिळ उपन्यास और लेखक' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि उत्तर आधुनिक तमिळ उपन्यास अपनी नवीन शैली और रचनात्मक तत्वों के लिए पश्चिमी उत्तर आधुनिक उपन्यासों से बिल्कुल पृथक् हैं। डॉ. जी. मरियप्पन, सहायक प्रोफ़ेसर, तमिळ विभाग ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा।

'मालापल्ली उपन्यास की शतवार्षिकी' पर परिसंवाद ('आज़ादी का अमृत महोत्सव' के अवसर पर)

05 दिसंबर 2021, गुंटूर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु ने अमरावती सामाजिक विज्ञान संस्थान, गुंटूर के सहयोग से 5 दिसंबर 2021 को 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के अवसर पर गुर्रम जाशुवा विज्ञान केंद्रम, ब्रोदिपेटा, गुंटूर, आंध्र प्रदेश में 'मालापल्ली उपन्यास की शतवार्षिकी' पर परिसंवाद का आयोजन किया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक श्री के. शिव रेड्डी ने की। अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में श्री के. शिव रेड्डी ने आयोजकों के प्रयासों की सराहना की तथा श्रोताओं को याद दिलाया कि एक उपन्यास के लिए शतवार्षिकी का जश्न साहित्यिक गतिविधियों में एक ऐतिहासिक घटना है। उन्होंने यह भी कहा कि यह एक कालजयी उपन्यास है जो समकालीन समाज को दर्शाता है तथा उसका प्रतिनिधित्व करता है। उन्होंने कहा कि यदि हम पीछे मुड़कर देखें, तो, मालापल्ली की तुलना रूस के 19वीं शताब्दी के ऐतिहासिक उपन्यासों से की जा सकती है।

अपने स्वागत व्याख्यान में श्री डोक्का माणिक्य वरप्रसाद, संस्थापक, अमरावती सामाजिक विज्ञान संस्थान ने श्रोताओं को बताया कि वे ए.आई.एस.एस. के कार्य कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि वे भारत को आधुनिक भारत में बदलने में गाँधी के योगदान को आदर्श बनाने की दिशा में काम कर रहे हैं।

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए श्री के. शिवा रेड्डी

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने कहा, 'हम इस आयोजन को भारत की आज़ादी के अमृत महोत्सव के हिस्से के रूप में मना रहे हैं। इसके बिना हमारे जीवन का सार अधूरा है। श्री उन्नाव का लेखन पूरी मानवता पर लागू होता है। उन्नाव भी उसी पंथ के हैं। उन्नाव ने सामाजिक यथार्थ को अपना विषय बनाया।

अपने बीज-भाषण में डॉ. के. श्रीनिवासराव ने यह भी कहा कि यह उन मूल्यों को देखने का समय है जिनके लिए उन्नाव लक्ष्मीनारायण ने अपना जीवन समर्पित किया। यह असहयोग और सविनय अवज्ञा आंदोलनों का जश्न मनाने का भी समय है। प्रगतिशील बुद्धिजीवी के रूप में उन्नाव ने अपनी बैरिस्टर डिग्री हासिल करने के लिए डबलिन जाने से पहले उस दशक में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने अपने समाज सुधारकों के उत्साह को राजनीतिक कार्रवाई में परिवर्तित कर दिया। मालापल्ली को पहले सामाजिक उपन्यास और अछूतों को नायक के रूप में दर्शाने के लिए इस प्रकार के प्रथम उपन्यास का श्रेय भी दिया जाता है। प्रो. पापिनेनी शिवहंकर ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की, जिसमें श्री वाई.एस. कृष्णेश्वर राव ने 'मालापल्ली—दार्शनिक विश्व दृष्टिकोण' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया, उनके बाद श्री पेनुगोंडा लक्ष्मीनारायण ने 'समकालीन समाज पर तथ्यपरक-मालापल्ली' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। प्रथम सत्र डॉ. कोपर्थी वेंकटरामनमूर्ति द्वारा 'मालापल्ली—जातिविहीन समाज की दृष्टि' विषयक आलेख की प्रस्तुति के साथ समाप्त हुआ।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. रचापलेम चंद्रशेखर रेड्डी ने की। उन्होंने 'तेलुगु साहित्य में वैकल्पिक विश्व दृश्य—कक्कय्या से जग्गय्या नामक' विषयक आलेख भी प्रस्तुत किया। डॉ. पी.सी. वेंकटेश्वरलू ने 'मालापल्ली-ए डोज़ियर ऑफ़ लिटरेरी क्रिटिसिज्म' विषयक आलेख प्रस्तुत किया। प्रो. कात्यायनी विद्महे ने 'तेलुगु साहित्य में महाकाव्य उपन्यास' विषयक आलेख प्रस्तुत किया।

प्रो. अतलूरी मुरली ने 'स्वतंत्रता आंदोलन और अस्पृश्यता के प्रश्न' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया।

समापन सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात सांस्कृतिक कार्यकर्ता पी.ए. देवी ने की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जन कवि श्री गोराती वेंकन्ना थे। के.एस. लक्ष्मण राव कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे। वेंकन्ना ने महसूस किया कि हमें जनपद के सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं को उसी प्रकार कार्य करना चाहिए जिस प्रकार वे अपने स्वयं के गुट के लिए कार्य करते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि शिवराम दीक्षितर पोटुलुरी वीरब्रह्म के पूर्ववर्ती थे। के.एस. लक्ष्मण राव ने कहा कि भारत का स्वतंत्रता आंदोलन संघर्ष की कई धाराओं का संगम है। कार्यक्रम के समंवयक वीरय्या कोंडूरी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

'तेलुगु दलित साहित्य' विषय पर परिसंवाद

26 मार्च 2022, वारंगल

'आज़ादी का अमृत महोत्सव' की पूर्व संध्या और भारत रत्न डॉ. बी.आर. अंबेडकर की 125वीं जयंती समारोह के समापन पर, साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु और तेलुगु विभाग, यूनिवर्सिटी आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज (स्वायत्त), ककाक्तिया विश्वविद्यालय ने 26 मार्च 2022 को कॉलेज सभागार में 'तेलुगु दलित साहित्य' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य तथा कॉलेज प्राचार्य प्रो. बन्ना ऐलैय्या ने की। अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में प्रो. बन्ना ऐलैया ने कहा कि भारत में दलितों तथा अन्य कमज़ोर लोगों के बीच संघर्ष को उजागर करने तथा दलितों और अन्य लोगों की सोच में बदलाव लाने में दलित साहित्य के महत्त्व को उजागर किया। यह परिसंवाद मुख्य रूप से उसी पर केंद्रित है। साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने अपने उद्घाटन व्याख्यान में सभी अतिथियों तथा प्रतिभागियों का स्वागत किया है। उन्होंने साहित्य अकादेमी की भूमिका के बारे में भी बताया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि तथा साहित्य अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक श्री के. शिव रेड्डी ने युगों-युगों में शिक्षा व्यवस्था में हुए परिवर्तनों पर अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने तेलंगाना के अलग राज्य के आंदोलन तथा अलग राज्य के सपने को साकार करने में दलित और तेलंगाना साहित्य की भूमिका के बारे में भी बताया। बाद में प्रो. मेडिपल्ली रवि कुमार, तेलुगु के प्रोफ़ेसर, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति ने तेलुगु साहित्य में दलित साहित्य के महत्त्व तथा दलितों के उत्थान में उसके द्वारा निभाई गई भूमिका के बारे में बताया। इस कथन का विशिष्ट अतिथि प्रो. डेविड, डीन, कॉलेज विकास परिषद्, ककाक्तिया विश्वविद्यालय, वारंगल ने भी प्रो. मेडिपल्ली की बात का समर्थन किया। उन्होंने गुर्रम जशुवा के महान कार्यों को याद किया, विशेष रूप से उनके साहित्यिक कार्य *गब्बिलम* को, जिसमें दलितों के दर्द और पीड़ा को दर्शाया गया है। अपनी कविताओं के माध्यम से, इस कृति ने दलितों को उनकी स्वतंत्रता के लिए लड़ने के लिए सशक्त तथा प्रेरित किया। यू.ए.एस.सी., ककाक्तिया विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष डॉ. मामिदी लिंगैया ने अपने भाषण में उल्लेख किया कि डॉ. बी.आर. अंबेडकर द्वारा लिखित संविधान ने दलितों के जीवन को बदल दिया है, उनके दूरदर्शी कार्य के कारण, दलितों को राजनीति सहित सभी वर्गों और क्षेत्रों में महत्त्व मिला है।

प्रथम सत्र में डॉ. कार्रे सदाशिव ने आलेख प्रस्तुत किया। सत्र की अध्यक्षता प्रो. पी. कनकैया ने की। अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में प्रो. पी. कनकैया ने अतीत में दलितों द्वारा सही जाने वाली सामाजिक बुराइयों तथा डॉ. बी.आर. अंबेडकर द्वारा बताए गए शासन की शक्ति प्राप्त करने के लिए एस.सी.ए., एस.टी. और बी.सी. के बीच एकता के महत्त्व को याद किया। उन्होंने दलित साहित्य की विभिन्न कृतियों के बारे में भी बात की। प्रो. दारला वेंकटेश्वर राव ने दीरगा कवितावम' विषय

पर बात की, उनका मत था कि दीरगा कवितावम में कई साहित्यिक प्रश्नों के उत्तर मिल जाएँगे। उन्होंने येदलुरी सुधाकर की साहित्यिक कृति *कोठा गब्बिलम* और दलित साहित्य के बारे में अपनी राय व्यक्त की। डॉ. एस. रघु ने 'दलित नानिलु' विषय पर बात की है, जिसमें उन्होंने दलितों के जीवन और साहित्य के महत्त्व को चित्रित किया है।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. कोयई कोटेश्वर ने की। उन्होंने 'दलित कवितावम' विषय पर बात की। उन्होंने बताया कि किस प्रकार दलित कवि अपने साहित्यिक कार्यों द्वारा लिंग भेदभाव आदि को दूर कर सकते हैं। उन्होंने दलित साहित्य को श्रेष्ठ कार्य का दर्ज़ा दिया क्योंकि यह साहित्य समाज में लैंगिक भेदभाव, श्रम मुद्दों तथा अस्पृश्यता जैसी परेशानियों को उजागर करता है। इस सत्र में प्रो.अतुरु ज्योति ने दलित महिला साहित्यिक कृतियों पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि साहित्यिक कार्य करने के लिए बाहर आने से पूर्व दलित महिलाओं को विभिन्न सामाजिक बाधाओं, लिंग भेदभाव, पारिवारिक प्रतिरोध तथा सामाजिक बाधाओं आदि का सामना करना पड़ा है। उन्होंने दलित महिलाओं के पिछले दो दशकों के विभिन्न साहित्यिक कार्यों का ब्यौरा प्रस्तुत किया।

बाद में के.पी. अशोक कुमार ने विभिन्न दलित उपन्यासों की समीक्षा की। अपने आलेख में उन्होंने बाली पेटम, जक्कुलु, अंतरानी वसंतम, कक्के तथा सिद्धि जैसे दलित साहित्य पर अपने विचार व्यक्त किए।

परिसंवाद का समापन व्याख्यान प्रो. बन्ना ऐलैय्या ने प्रस्तुत किया तथा समापन सत्र के मुख्य अतिथि प्रो. पतंगी वकटेश्वरलु ने समापन भाषण प्रस्तुत किया। परिसंवाद में विगत 7 दशकों के विभिन्न दलित कवियों की दलित साहित्यिक कृतियों पर चर्चा की गई। इस परिसंवाद में छात्र, शिक्षक, साहित्यकार समुदाय तथा प्रेस कर्मियों ने भाग लिया।

अखिल भारतीय बर' महिला लेखिका सम्मिलन

30 जून 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने बर' महिला लेखक संघ के सहयोग से आभासी मंच पर 30 जून 2021 को पहली बार अखिल भारतीय महिला लेखिका सम्मिलन का आयोजन किया।

कार्यक्रम में स्वागत भाषण साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने दिया। उन्होंने कहा कि पूर्वोत्तर भारत ने कई महत्त्वपूर्ण लेखकों को जन्म दिया है। बर' सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश का उपयोग महिलाओं द्वारा समान आधार पर तथा साथ ही पुरुषों द्वारा नियंत्रित किया जाता है। बर' समुदाय ने कई संघर्ष देखे हैं तथा महिला लेखिकाओं के लेखन के माध्यम से महिलाओं को परेशान करने वाली वास्तविकता सामने आती है। उन्होंने कहा कि महिलाएँ गृहिणी हैं क्योंकि वे परिवर्तन और ऊर्जा की वाहक हैं। इसलिए उनके द्वारा रचित साहित्य को विकसित करने तथा उस पर उचित ध्यान देने की आवश्यकता है। डॉ. राव ने दर्शकों को इस संबंध में साहित्य अकादेमी के निरंतर प्रयासों की जानकारी भी दी। आरंभिक व्याख्यान साहित्य अकादेमी के बर' परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. अनिल कुमार बर' ने प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि बर' साहित्य के क्षेत्र में महिलाओं ने ज़्यादातर आज़ादी के बाद कलम उठाई तथा 21वीं सदी में बर' महिलाएँ फ़िल्म निर्माण, सांस्कृतिक प्रदर्शन, शिक्षा आदि क्षेत्रों में आईं।

उद्घाटन व्याख्यान प्रख्यात बर' लेखिका सुश्री हारानी ब्रह्म ने प्रस्तुत किया। उन्होंने बर' में महिला लेखन के विकास पर संक्षेप में बात की तथा एक महिला लेखिका के रूप में समाज के साथ अपने अनुभव साझा किए। साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने अध्यक्षीय व्याख्यान में भारत में उन महिला लेखिकाओं के उद्भव की बात की, जिनका संस्कृति, परंपरा तथा भावनाओं से घनिष्ठ संबंध था। जिनका लेखन समाज के विकास के लिए आवश्यक है। उद्घाटन सत्र में तीन प्रमुख बर' महिला लेखिकाओं, सुश्री अंजू बसुमतारी,

सुश्री धीरजु ज्योति बसुमतारी तथा सुश्री शांति बसुमतारी ने अपनी नवीनतम कविताओं को पढ़कर सुनाया तथा इनके माध्यम से बर' सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश के साथ अपने भावनात्मक संबंधों को उजागर किया। उद्घाटन सत्र का समापन साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

प्रथम सत्र कहानी-पाठ का था। प्रतिभागियों में सुश्री अनिला बसुमतारी, सुश्री अनिमा बसुमतारी, सुश्री दीपाली खेरकातारी तथा सुश्री जयश्री बर' ने अपनी कहानियों का पाठ किया। इस सत्र की अध्यक्षता सुश्री उत्तरा विश्वमुथरी ने की। सुश्री जयश्री बर' की कहानी 'सिलिंगखर' समाज पर नशा के प्रभाव पर आधारित थी, सुश्री अनिमा बसुमतारी की कहानी 'आर्ट गैलरी' नई पीढ़ी के बीच प्रेम संबंधों के इर्द-गिर्द घूमती है। सुश्री दीपाली खेरकतारी ने कोरोना की स्थिति से निपटने वाली अपनी कहानी 'सोमदा ओंघई बिखा' पढ़कर सुनाई। सुश्री अनिला बसुमतारी ने महिला सशक्तिकरण के विषय पर कद्रित कहानी 'स्वमहंगफिमई खानाई बिलाई' पढ़कर सुनाई। सुश्री उत्तरा विश्वमुथरी ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में पढ़ी गई कहानियों की सामग्री और शैली पर टिप्पणी की। तत्पश्चात उन्होंने पुत्र और पिता के बीच के संबंधों पर लिखी गई कहानी 'आफा' पढ़कर सुनाई। द्वितीय सत्र का विषय था—'बर' महिला लेखिकाओं के समक्ष चुनौतियाँ'। इस सत्र में सुश्री अंजलि प्रभा दैमारी, सुश्री धरित्री नार्जारी, सुश्री लैश्री और सुश्री रमेला इस्लेरी जैसी विख्यात महिला विदुषी लेखिकाओं ने चुनौतियों के विभिन्न आयामों तथा बर' महिला लेखिकाओं को उन्होंने किस प्रकार प्रभावित किया, पर अपने विचार व्यक्त किए। सत्र की अध्यक्षता श्रीमती इंदिरा बर' ने की। तृतीय सत्र कविता-पाठ का था। प्रतिभागियों में सुश्री डी. स्वर्गियारी, सुश्री इरा बसुमतारी, सुश्री मैजली रानी ब्रह्म, सुश्री मीरा ब्रह्म, सुश्री मौसमी बरगोयारी, सुश्री रश्मी चौधरी, सुश्री रोमा मोचारी, सुश्री स्वर्जिला वारी जैसी विख्यात कवयित्रियों ने अपनी कविताओं का पाठ किया। सत्र की अध्यक्षता भबानी बगलारी ने की।

अंतरराष्ट्रीय विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर 75 भारतीय आदिवासी भाषाओं के 75 कवियों के साथ 'आदिवासी कविता की तलाश' विषय पर कार्यक्रम

9-11 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी ने 9-11 अगस्त 2021 को आभासी मंच पर 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर 75 भारतीय आदिवासी भाषाओं के 75 कवियों के साथ 'आदिवासी कविता की तलाश' विषय कार्यक्रम का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने दर्शकों को 2021 के यूनेस्को के विषय 'किसी को पीछे न छोड़ो : आदिवासी लोग तथा नए सामाजिक अनुबंध के लिए आह्वान' के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि आदिवासी मिट्टी की मूल परंपरा और संस्कृति के वाहक के रूप में, भाषा भावनाओं और विचारों के वाहक हैं, इसलिए आदिवासी कविता को उत्सव के लिए चुना गया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि बंजारा भाषा के प्रख्यात विद्वान डॉ. आर. रमेश आर्य ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि आदिवासी जीवन सरल और सामान्य जीवन शैली के सिद्धांत पर आधारित है। इसका अधिकांश साहित्य मौखिक रूप में है। डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि अंग्रेज़ों द्वारा भारतीय आदिवासी संस्कृति पर प्रारंभिक अध्ययनों का भी उल्लेख मिलता है। आदिवासी संस्कृति मूल रूप से प्राचीन है। अनासक्ति इसकी प्रामाणिकता की निशानी है। उन्होंने कहा कि पूरी दुनिया में आदिवासी आधुनिकता से प्रभावित हो रहे हैं। अपने समापन भाषण में साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. माधव कौशिक ने आदिवासी लोगों की सरलता पर बात की। उन्होंने 'आदिवासी' शीर्षक से अपनी कविता पढ़ कर सुनाई। कविता-पाठ सत्र में श्री सुनील गायकवाड (भीली), श्री चौतराम नाग (डुरुवा), सुश्री कुमुदा बी. (हक्कीपिक्की),

सुश्री स्ट्रीमलेट डखार (खासी) तथा श्री खेनपो कोंचोक रिगज़ेन (लद्दाखी) ने अपनी कविताओं को हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ पढ़कर सुनाया। साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने उद्घाटन सत्र का धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात बर' कवि तथा साहित्य अकादेमी के बर' परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. अनिल कुमार बर' ने की। प्रसिद्ध आदिवासी कवियों जैसे—च. सोते आइमोल (आइमोल), श्री येशे नामग्याल भुटिया (भुटिया), श्री शिवकुमार पांडेय (हल्बी), श्री लनबोन कबुई (कबुई), सुश्री हीरा मीणा (मीणी), सुश्री सोनल राठवा (राठवी), श्री दोर्जी लुन्पो (मोन्पा) तथा श्री महेमूद अहमद तडवी (तडवी) ने अपनी कविताओं को मूल तथा उसके हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ पढ़कर सुनाया।

दिनांक 10 अगस्त 2021 को कार्यक्रम के द्वितीय सत्र की अध्यक्षता आदिवासी भाषा और साहित्य के प्रख्यात विद्वान श्री भगवान दास पटेल ने की। अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में उन्होंने साहित्य अकादेमी की इस ऐतिहासिक उपलब्धि की सराहना की क्योंकि वर्तमान में दुनिया को आदिवासी संस्कृति को अभिलिखित करने की अत्यंत आवश्यकता है। प्रसिद्ध आदिवासी कवियों जैसे—श्री सखाराम डाखोरे (अंध), श्री अर्जुन सिंह धुर्वे (बैगानी), सुश्री जोगमाया चकमा (चकमा), श्री मानसिंह चौधरी (चौधरी), सुश्री न्गुरांग रीना (निशी), मोहम्मद शफ़ी सागर (शीना) तथा श्री संपत देवजी ठणकर (वारळी) ने अपनी कविताओं को मूल तथा उसके हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ पढ़कर सुनाया।

कार्यक्रम के तृतीय सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात अंगामी कवि डुविटु कोले ने की। इस सत्र में सुश्री सुषमा कुमारी असुर (असुरी), श्री गोविंद गायकी (भीलाली), श्री मुक्तेश्वर कपराय (दिमासा), सुश्री उर्मिला कुमरे (गोंडी), श्री दानेश रंगो आर. (कोटा), सुश्री देब्बी ललरिनौमी (मिज़ो), श्री बंसीलाल भामारे (पावरा), श्री प्रवेश लामा तामांग (तामांग) तथा श्री एम. पावमिनलाल हावकिप (थाडौ) ने अपनी कविताओं को मूल तथा उसके हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ पढ़कर सुनाया।

चतुर्थ सत्र में श्री कलिंग बोरांग (आदि), सुश्री इंदुमती लामाणी (बंजारा), श्री प्रफुल्ल चंद्र 'टियु' (हो), श्री योगेश महाले (कोंकणी), फादर विलियम नेपुनी माव (माव) तथा श्री थुंबु मरम (मरम) ने अपनी कविताओं को मूल तथा उसके हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ पढ़कर सुनाया।

पंचम् सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात संताली कवि श्री मदन मोहन सोरेन ने की। इस सत्र में श्री राजकिशोर नायक (बाथुडी), श्री कुलिन पटेल (ढोड़िआ), मोहम्मद मनशाह खाकी (गोजरी), श्री वांसलन ई. धर (जयंतिया), श्री रामगोपाल रामलाल भिलावेकर (कोरकु), श्री नीरद चंद्र कँहर (कुई), श्री एल. सोलोमन डांग्स्वा (मारिंग), श्री दीपक कुमार दोले (मिसिंग) और श्री पैट्रिक पूर्ति (मुंदरी) ने अपनी कविताओं को मूल तथा उसके हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ पढ़कर सुनाया।

षष्ठ सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात गारो लेखक प्रो. फेमेलिन के. मरक ने की। सत्र में सुश्री अणिमा तेलरा बिरजिया (बिरजिया), श्री ऑन तेरान (कार्बी), सुश्री कॉर्डुला कुजुर (कुडुख), श्री काच्यो लेप्चा (लेप्चा), श्री कलाचांद महाली (महाली), श्री थांघमिंगलियान हॉलज़ेल (पाइते) तथा सुश्री अयुंग रैखान (तांगखुल) ने अपनी कविताओं को मूल तथा उसके हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ पढ़कर सुनाया। सुश्री मीतिंगल ज़ेमे (ज़ेमे) की कविताओं को सुश्री हाईदामतेउ ज़ेमे एन. ने पढ़कर सुनाया तथा उन्होंने उनका अंग्रेज़ी अनुवाद भी प्रस्तुत किया।

सप्तम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात टोडा कवियत्री सुश्री के. वासमल्ली ने की। इस सत्र में श्री कुलदीप सिंह बंपाल (भोटिया), सुश्री जोमयीर जीनी (गालो), सुश्री वंदना टेटे (खरिया), सुश्री बेनी यांथन (लोथा), श्री बुद्धि एल. खमधाक (लिंबू), सुश्री क्रैरी मग चौधरी (मग), श्री प्रवीण पवार (पारधी) तथा श्री सत्यजीत टोटो (टोटो) जैसे प्रसिद्ध आदिवासी कवियों ने अपनी

कविताओं को मूल तथा उसके हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ पढ़कर सुनाया।

सभी कविताओं ने कवियों की गहरी समझ के साथ-साथ प्रकृति के प्रति प्रेम और सम्मान को प्रदर्शित किया क्योंकि लगभग सभी आदिवासी परंपराओं ने प्रकृति को अपनी ताकत का प्रमुख स्रोत माना है। सत्र का संचालन साहित्य अकादेमी के पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने किया। अपने धन्यवाद प्रस्ताव में उन्होंने बताया कि यह बैठक भारतीय आदिवासी समुदाय के कवियों द्वारा पढ़ी गई आदिवासी कविता की खोज में एक बड़ी सफलता है। सत्र का संचालन साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मिहिर कुमार साहू तथा डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश द्वारा किया गया।

'24 भाषाओं में अखिल भारतीय काव्य महोत्सव' ('आज़ादी का अमृत महोत्सव' तथा महात्मा गाँधी जयंती के अवसर पर)

2 अक्तूबर 2021, बेंगळूरु

'आज़ादी का अमृत महोत्सव' तथा महात्मा गाँधी जयंती के अवसर पर साहित्य अकादेमी द्वारा 2 अक्तूबर 2021 को जैन कॉलेज, जे.सी. रोड, बेंगळूरु में 'अखिल भारतीय कविता महोत्सव' का आयोजन किया गया। महोत्सव में समस्त 24 भारतीय भाषाओं के कवियों ने भाग लिया।

प्रतिभागियों में विभिन्न भारतीय भाषाओं के कई प्रख्यात कवि शामिल थे। यह महोत्सव अकादेमी की समस्त भारतीय भाषाओं को सम्मान और मान्यता देने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है, भले ही इसे बोलने वाले लोगों की संख्या कितनी ही हो।

समारोह की शुरुआत अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव के स्वागत भाषण के साथ आरंभ हुई। उन्होंने कहा कि यह कार्यक्रम लॉकडाउन के कारण बीस महीने के अंतराल के बाद आयोजित किया जा रहा है। उन्होंने आगे कहा कि समस्त संस्कृतियों में तीन सहस्राब्दियों से निरंतर कविता लिखी जाती रही है। कविता लेखन में विविधता के संबंध में कुछ राष्ट्र भारत के साथ प्रतिस्पर्धा कर सकते हैं।

कन्नड कवि तथा साहित्य अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. सरजू काटकर ने अपने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' गाँधी जी को याद करने का अवसर है, जिन्होंने हमारे जीवन में किसी न किसी रूप में अपने पदचिन्ह छोड़े हैं। उन्होंने कहा कि ऐतिहासिक बेलगावी अधिवेशन के दौरान गाँधी जी अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष चुने गए थे। डॉ. सरजू काटकर ने कन्नड कविता की समृद्धि का उल्लेख किया और कहा कि मध्यकालीन कन्नड कवि राघवंका ने कहा था कि उन्होंने कन्नड कविता लिखी ताकि लोग पढ़ सकें और उसका आनंद उठा सकें।

प्रख्यात कन्नड कवि डॉ. एच.एस. वेंकटेशमूर्ति ने अपने उद्घाटन व्याख्यान में महान कन्नड कवि बेंद्रे की प्रसिद्ध पंक्ति 'नूरू मारा, नूरू स्वर' का उल्लेख किया, जिसका अर्थ है कि सैकड़ों पेड़ ध्वनि उत्पन्न करते हैं। भारतीय अवधारणा सर्वभाषा सरस्वती है, जो समस्त भाषाओं में विद्यमान है। उन्होंने कहा कि यह आज के कवि सम्मेलन में प्रतिध्वनित होगा। डॉ. एच.एस. वेंकटेशमूर्ति ने प्रख्यात कन्नड कवि के.एस. नरसिम्हा स्वामी का उल्लेख किया जिन्होंने कहा था कि गीत कभी समाप्त नहीं होता है, और यदि वह समाप्त होता है, तो वह गीत नहीं है। उन्होंने तीन अलग-अलग कन्नड कवियों द्वारा देखे गए पक्षियों का उदाहरण प्रस्तुत किया। शाम को उड़ते पक्षियों के झुँड को देखकर महान कवि कुवेम्पु ने इसे भगवान का हस्ताक्षर बताया। एक अन्य कवि पु. ती. नार्सिम्हाचार आकाश में उड़ते हुए बाज़ को देखते हैं तथा वह हमारा ध्यान उसकी छाया की ओर भी आकृष्ट करते हैं। कवि पूछता है 'क्या यह गाँधी हो सकता है?' एक अन्य महान कवि बेंद्रे अपनी कविता में पूछते हैं 'क्या आप एक पक्षी को आकाश में उड़ते हुए देखते हैं?' क्या आपने उड़ते हुए पक्षी को देखा है, यहाँ पक्षी समय का ही प्रतिनिधित्व कर रहा है। यही कवि की महानता है।

अकादेमी के अध्यक्ष तथा प्रख्यात कन्नड लेखक डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने एच.एस. वेंकटेशमूर्ति से सहमति जताई तथा गाँधी जी पर एक कविता प्रस्तुत की— जब गाँधी जी की गोली मारकर हत्या की गई थी, मंदिर में कोई भगवान नहीं मिला था।

जैन विश्वविद्यालय के मानविकी विद्यालय के डीन डॉ. मैथिली राव ने कहा कि सौंदर्यानुभूति कवियों के लिए कुछ विशिष्ट है। जब मनुष्य स्वयं को नहीं जानता, तो उसे कवियों द्वारा खोजा जाना चाहिए। हालाँकि कविता 24 भाषाओं में लिखी जा रही है, लेकिन यह केवल एक स्वर है। इसके बाद पाँच कवियों—असमिया के श्री बिजॉय शंकर बर्मन, गुजराती के श्री अनिल चावड़ा, हिंदी के श्री बद्रीनारायण, कन्नड के श्री बी.आर. लक्ष्मण राव तथा बंजारा भाषा के श्री ए.आर. गोविंदा स्वामी द्वारा कविता-पाठ प्रस्तुत किया गया। हालाँकि यह कविता-पाठ विभिन्न भाषाओं का था, लेकिन प्रस्तुत की गई कविताओं को सराहा गया।

प्रथम सत्र का विषय था—'क्या कविता मर रही है'। सत्र की अध्यक्षता विख्यात कन्नड आलोचक तथा साहित्य अकादेमी के सेंटर फ़ॉर ट्रांसलेशन के निदेशक श्री एस.आर. विजयशंकर ने की।

बाड्ला के डॉ. बिनायक बंद्योपाध्याय ने कहा कि कविता हर पल जी रही है और हर पल विकसित हो रही है। उन्होंने कहा कि कविता हमेशा रहती है।

अगले वक्ता प्रो. जयदीप सारंगी ने पूछा कि क्या दुनिया कल के अस्तित्व को नकार सकती है। उन्होंने कहा कि कविता परिवर्तन को अंकुरित करती है। हम कविता पढ़ते हैं और उसका आनंद उठाते हैं। उन्होंने कहा कि बहुभाषावाद और बहुसंस्कृतिवाद कभी नहीं मरते।

डॉ. स्मिता नायक (कोंकणी) ने कहा कि कविता कभी नहीं मर सकती। यह अमर और शाश्वत है। काव्य का स्थान अडिग रहता है। यह कालातीत और युगहीन है।

श्री एस.आर. विजयशंकर ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि अच्छी कविता को भुवनदा भाग्य कहा जाता है। कविता का उपयोगितावादी मूल्य भी मायने रखता है। यदि जीवन के मूल्यों को काव्य में सर्वोत्तम रूप से चित्रित किया गया हो तो कविता मर नहीं सकती।

शाम को कवि-सम्मिलन आयोजित किया गया। विभिन्न भारतीय भाषाओं के चौदह कवियों ने अपनी कविताओं का पाठ उनके मूल और अंग्रेज़ी अथवा हिंदी अनुवाद के साथ प्रस्तुत किया। श्री उथरीसर खुंगुर बसुमतारी (बर'), श्री शिवदेव सिंह सुशील (डोगरी), डॉ. मेसराम मनोहर (गोंडी), श्रीमती मल्लगदा सुधा मुथन्ना (कोडवा), डॉ. एच.एन. नीलकांते गौड़ा (कन्नड), डॉ. जे. प्रमिला देवी (मलयाळम्), श्री निंगोमबम इमोजीत (मणिपुरी), श्री प्रकाश होल्कर (मराठी), श्री सुशांत कुमार नाइक (ओड़िआ), श्री रविंदर सिंह (पंजाबी), श्री एच.वी. नागराजा राव (संस्कृत), सुश्री मित्रा अलगुवेल (तमिऴ), श्री दरभास्नम श्रीनिवासाचार्य (तेलुगु) तथा श्रीमती शाइस्ता यूसुफ (उर्दू) ने अपनी कविताओं का पाठ प्रस्तुत किया।

प्रख्यात उर्दू कवि डॉ. माहेर मंसूर ने सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने कवियों को अपनी कविता के माध्यम से लोगों की आकांक्षाओं को व्यक्त करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि यह कवि सम्मेलन वास्तव में अद्वितीय था, क्योंकि इसमें समस्त मान्यता प्राप्त भाषाओं को सम्मिलित किया गया है।

'युवा लेखक सम्मिलन' (उत्तरी क्षेत्रीय मंडल के अंतर्गत)

25-26 अक्तूबर 2021, अमृतसर

साहित्य अकादेमी ने भाई वीर सिंह साहित्य सदन के सहयोग से 25-26 अक्तूबर 2021 को अमृतसर में 'युवा लेखक सम्मिलन' का आयोजन किया। यह कार्यक्रम भाषाई क्षेत्र में साहित्य के माध्यम से युवा प्रतिभा को प्रोत्साहित करने तथा सुविधा प्रदान करने का प्रयास था। प्रारंभ में श्री ज्योति कृष्ण वर्मा, सहायक संपादक, साहित्य अकादेमी ने गणमान्य व्यक्तियों तथा प्रतिभागियों का स्वागत किया। श्री मधु आचार्य 'आशावादी' (साहित्य

अकादेमी के उत्तरी क्षेत्रीय मंडल के संयोजक) ने आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने अध्यक्षीय व्याख्यान देते हुए कहा कि भारत में लेखकों की युवा पीढ़ी अपने कार्यों में उल्लेखनीय रूप से मौलिक और प्रभावशाली है। उन्होंने उन्हें अपने लेखन के माध्यम से रूमानियत और विद्रोह को संतुलित करने की सलाह दी, क्योंकि वे एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

प्रो. राणा नायर ने अपने बीज-भाषण में युवा लेखकों से समकालीन वास्तविकताओं को समझने के लिए जब भी आवश्यक हो विराम लेने का आह्वान किया। उन्होंने कहा, ''युवा होने के नाते, हमें अपने आस-पास होने वाली चीज़ों का जश्न मनाना चाहिए।'' उन्होंने भाई वीर सिंह के संबंध में कहा कि, उनकी साहित्यिक विरासत न केवल एक प्रेरणा है, बल्कि लिखित शब्दों की पवित्रता को समझने का वह अनुस्मारक भी है। सत्र का समापन भाई वीर सिंह निवास अस्थान, अमृतसर की मानद निदेशक डॉ. सुखबीर कौर द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ। उन्होंने कहा कि यहाँ अमृतसर में इस प्रकार के कार्यक्रम का होना अद्भुत है, जो विरासत का केंद्र माना जाता है तथा इसके साथ ही यह भाई वीर सिंह की साहित्यिक विरासत का स्थान भी है। वक्ताओं ने भाई वीर सिंह को आज भी पंजाबी साहित्य में सबसे प्रासंगिक तथा शक्तिशाली स्वर के रूप में बताया।

प्रथम शैक्षणिक सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के पंजाबी परामर्श मंडल की संयोजक डॉ. वनिता ने की। यह कविता-पाठ सत्र था, जिसमें तीन कवि—श्री संदीप कुमार, डॉ. कमर जहां तथा श्रीमती रीना मेनारिया ने क्रमशः पंजाबी, उर्दू तथा राजस्थानी भाषाओं में हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवादों के साथ अपनी कविताओं का पाठ प्रस्तुत किया। द्वितीय सत्र कहानी-पाठ का था। इस सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. चित्तरंजन मिश्र ने की। श्रीमती शानाज़ रहमान (कहानी का शीर्षक : दस्तक), श्रीमती पूजा दिलावरी (कहानी का शीर्षक : एन इवनिंग वॉल्क), डॉ. (श्रीमती) आशु शर्मा तथा डॉ. पूर्णचंद्र उपाध्याय द्वारा क्रमशः उर्दू, अंग्रेज़ी, डोगरी तथा संस्कृत भाषाओं में एक-एक कहानी प्रस्तुत की गई।

तृतीय सत्र का विषय था—'लेखन : जुनून या व्यवसाय'। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात पंजाबी लेखक तथा विद्वान डॉ. रवेल सिंह ने की। श्री अंकित नरवाल (हिंदी), श्री अमनिंदर सिंह (पंजाबी), श्री आशीष पुरोहित (राजस्थानी) तथा श्री वसीम मजाज़ी (कश्मीरी) ने क्रमशः हिंदी/अंग्रेज़ी में अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रथम वक्ता, श्री अंकित नरवाल ने ज़ोर देकर कहा कि यदि आप एक लेखक हैं, तो आपको इसके प्रति जुनूनी होना चाहिए ताकि हमारी आवाज़ हर जगह सुनी जा सके। अगले वक्ता श्री अमनिंदर सिंह ने कहा, ''मेरे लिए लेखन पेशा नहीं जुनून है। हम जुनून के लिए कुछ भी कर सकते हैं किंतु व्यवसाय के लिए नहीं।'' तीसरे वक्ता श्री आशीष पुरोहित ने भी कहा कि लेखन उनका व्यवसाय नहीं जुनून है। चूंकि उनका कार्यक्षेत्र पत्रकारिता है, इसलिए वे अपने अन्य लेखन को जुनून के रूप में देखते हैं। इस सत्र का अंतिम आलेख श्री वसीम मजाज़ी द्वारा प्रस्तुत किया गया। उनके अनुसार जुनून अधिक सशक्त होता है जिसके लिए आप कभी भी थकान महसूस नहीं करते। आप जुनून के लिए हर संभव प्रयास करेंगे। भारत में व्यवसाय-लेखन का वास्तव में कोई बड़ा दायरा नहीं है तथा जब कोई लेखक केवल पैसे के लिए लिखता है, तो उसकी कला मर जाती है और साहित्य की गुणवत्ता में कमी आ जाती है। अंत में, सत्र के अध्यक्ष डॉ. रवेल सिंह ने कहा, यदि लेखक वास्तव में अपने शिल्प के बारे में भावुक है, तो यह अनिवार्य रूप से उनका व्यवसाय बन जाता है और उन्हें सब कुछ प्रदान करता है। उन्हें प्रसिद्धि या धन के पीछे जाने की आवश्यकता नहीं है। उन्होंने कहा, ''अगर

आपके काम में जुनून शामिल है, तो ये आपके शिल्प का अनुसरण करने वाले द्वि-उत्पाद हैं।''

चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के अंग्रेज़ी परामर्श मंडल की संयोजक प्रो. संजुक्ता दासगुप्ता ने की, जिसमें हर्ष सलारिया, राजिंदर रांझा तथा अरविंद तिवारी ने क्रमशः अंग्रेज़ी, डोगरी और संस्कृत भाषाओं का प्रतिनिधित्व करते हुए अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। सत्र के अंत में अपनी समापन टिप्पणी देते हुए, प्रो. संजुक्ता दासगुप्ता, जो स्वयं एक कवयित्री हैं, ने युवा लेखकों को प्रोत्साहित करने के लिए 'लक्ष्मी अनबाउंड' और 'धोती डांस' नामक अपनी कुछ अंग्रेज़ी कविताओं का पाठ प्रस्तुत किया।

पंचम सत्र का विषय था—'डिजिटल मंचों पर कविता'। इस सत्र की अध्यक्षता गुरु नानक देव विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ़ आर्किटेक्चर एंड प्लानिंग के निदेशक प्रो. सरबजोत सिंह बहल ने की। खालसा कॉलेज, अमृतसर के सहायक प्रोफ़ेसर दलजीत सिंह, प्रतिष्ठित लेखक तथा हिंदी कवि श्री निखिल आनंद गिरि तथा युवा उर्दू लेखक व साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार विजेता डॉ. मोइद रशीदी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्राध्यक्ष तथा कवि प्रो. बहल ने कहा कि डिजिटल मीडिया ने कवियों को एक नया स्थान दिया है जहाँ वे प्रारूपों और पारंपरिक प्रकाशन आवश्यकताओं की चिंता किए बिना स्वयं को व्यक्त कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि इस वक़्त चल रहे किसान आंदोलन ने वास्तव में कई महत्वाकांक्षी कवियों को रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए इस डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया है। डॉ. सुखबीर कौर, निदेशक, भाई वीर सिंह निवास अस्थान, अमृतसर के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। उन्होंने कहा कि भाई वीर सिंह निवास अस्थान के साहित्यिक और ऐतिहासिक महत्त्व को संरक्षित करने की दृष्टि से, उन्हें उम्मीद है कि यह स्थान न केवल शहर में बल्कि क्षेत्र में भी संपन्न साहित्यिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का केंद्र बनेगा।

'मग मौखिक साहित्य और काव्य उत्सव'

12-13 फ़रवरी 2022, देबदारू

साहित्य अकादेमी, दिल्ली ने मग सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थान, अगरतला के सहयोग से दक्षिण त्रिपुरा ज़िले के देबदारू सामुदायिक केंद्र में 12-13 फ़रवरी 2022 को 'मग मौखिक साहित्य और काव्य उत्सव' का आयोजन किया। इस उत्सव में राज्य के विभिन्न हिस्सों से मग समुदाय के कुल 36 मौखिक साहित्य विशेषज्ञ प्रतिभागियों ने भाग लिया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता सुचला मग, अध्यक्ष, एम.एस.सी.ओ., त्रिपुरा ने की तथा स्वागत भाषण-सह-उद्घाटन व्याख्यान डॉ. एन. सुरेश बाबू, उपसचिव साहित्य अकादेमी, दिल्ली ने प्रस्तुत किया। उद्घाटन व्याख्यान एम.एस.सी.ओ. के महासचिव दोआंग मग ने प्रस्तुत किया। बीज-भाषण एम.एस.सी.ओ. के सलाहकार उसजेन मग ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि प्रो. सरोज चौधरी तथा श्री चंद्रकांत मुरासिंह, निदेशक नेकोल, अगरतला ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र का विषय था—'आधुनिक कविता-पाठ' सत्र की अध्यक्षता थाईलो मग ने की। क्यासी मग, लहाफरुसैन मग, नांगथुई मग, सनाऊ मग (ब्रिस्टी) तथा कंजरी मग ने अपनी कविताओं का पाठ प्रस्तुत किया।

द्वितीय सत्र का विषय था—'मग साहित्य : भूत, वर्तमान और भविष्य'। इस सत्र की अध्यक्षता थाइखइ चौधरी ने की। उनुचौंग मग, उसजेन मग, कंजरी मग चौधरी तथा क्रइरी मग चौधरी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। पहले दो वक्ताओं ने मग साहित्य की वर्तमान स्थिति पर चर्चा की तथा तीसरे वक्ता ने मग साहित्य के भविष्य के प्रावधानों पर चर्चा की। यद्यपि चौथे वक्ता ने मग समुदाय के प्राचीन साहित्य पर चर्चा की। सत्राध्यक्ष ने ख़ूबसूरती से मग साहित्य की समग्र वर्तमान स्थिति का

वर्णन किया तथा उन्होंने सभी प्रतिभागियों को धन्यवाद देने के साथ सत्र का समापन किया। कार्यक्रम के प्रथम दिन लगभग 250 दर्शक उपस्थित थे।

13 फ़रवरी 2022 को तृतीय सत्र लोकगीत (पंगखोंग, ओवेसैन्धरा) पर आधारित था। सत्र की अध्यक्षता क्याजा मग ने की। सत्र में शामिल प्रतिभागीगण थे—सलफ्रू मग, मंमं मग, आपइमा मग, अकरा मग, तोतोशे मग तथा अन्यु मग, क्रम्फ्रू मग। सत्र में उपस्थित श्रोताओं ने विशेषज्ञों द्वारा प्रस्तुत विभिन्न पुराने लोकगीतों का भरपूर आनंद उठाया।

चतुर्थ सत्र लोक कविता-पाठ पर आधारित था। सत्र की अध्यक्षता क्रइरी मग चौधरी ने की। प्रतिभागी कवि थे—अमरोसल मग, सथाई मग, लब्रे मग, चेन इहा औंग मग (ललटीला), निंगलाफ्रू मग, अफ्रूसी मग तथा थोइंग्या मग।

पंचम सत्र लोककथा पर आधारित था। इसकी अध्यक्षता मोंगम्राचिंग मग ने की। कुल 7 लोक कथाकारों ने अपनी लोक कथाएँ प्रस्तुत कीं यथा—हला थवेन मग, मधु मग, अबू मग (देबदारु), थाइसा मग, स्वेचिंग यू मग, भबानी मग (सामा) तथा उथाई मग। कुछ दर्शकों ने कहानीकारों से उस कहानी की नैतिकता और समाज पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पड़ने वाले प्रभाव के बारे में भी प्रश्न भी पूछे।

समापन समारोह की अध्यक्षता आई.सी.ए., विभाग के पूर्व संयुक्त निदेशक टी.के. चौधरी ने की। साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ. एन. सुरेश बाबू ने धन्यवाद ज्ञापित किया। डॉ. एन. सुरेश बाबू ने अकादेमी की ओर से आयोजन समिति तथा समस्त प्रतिभागियों एवं स्थानीय लोगों को धन्यवाद दिया तथा भविष्य में हर संभव मदद देने के लिए आयोजन समिति को आश्वासन दिया। कोलकाता के दूरसंचार निदेशक थाईलो मग ने भी समापन समारोह में भाग लिया तथा मौखिक साहित्य के संरक्षण एवं आधुनिक मग साहित्य को बढ़ावा देने के लिए मग समुदाय को सहायता प्रदान करने का आश्वासन दिया। एम.एस.सी.ओ., त्रिपुरा और एस.डब्ल्यू.एम.एस., त्रिपुरा (मग छात्र संगठन) ने कार्यक्रम की सराहना की और विशेष रूप से दूरस्थ मग गाँव में कार्यक्रम के आयोजन के लिए साहित्य अकादेमी को धन्यवाद दिया।

एम.एस.सी.ओ. और एस.डब्ल्यू.एम.एस. ने प्रत्येक वर्ष राज्य में इस प्रकार के महोत्सव या संगोष्ठी आयोजित करने की माँग रखी जिससे कि त्रिपुरा के छोटे मग समुदाय के सुंदर मौखिक साहित्य को उनकी अगली पीढ़ी के लिए संरक्षित किया जा सके।

राज्य के विभिन्न हिस्सों के प्रतिनिधियों द्वारा मौखिक साहित्य पर हुई लंबी चर्चा के पश्चात्, साहित्य अकादेमी के प्रतिनिधियों के सम्मान में स्थानीय छात्र समूह द्वारा एक सुंदर नृत्य प्रस्तुति के साथ द्वि-दिवसीय मग मौखिक साहित्य और काव्य उत्सव संपन्न हुआ।

वर्ष 2021-2022 में साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की सूची

अस्मिता

असमिया लेखिकाओं के साथ
24 मई 2021 (आभासी मंच)

मणिपुरी लेखिकाओं के साथ
09 जून 2021 (आभासी मंच)

अंग्रेज़ी लेखिकाओं के साथ
13 जुलाई 2021

असमिया लेखिकाओं के साथ
13 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

हिंदी लेखिकाओं के साथ
18 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

असमिया लेखिकाओं के साथ
17 सितंबर 2021 (आभासी मंच)

असमिया लेखिकाओं के साथ
22 अक्तूबर 2021

ओड़िआ लेखिकाओं के साथ
05 नवंबर 2021 (आभासी मंच)

कश्मीरी लेखिकाओं के साथ
22 दिसंबर 2021 (आभासी मंच)

असमिया लेखिकाओं के साथ
09 जनवरी 2022, दीफू, असम

बर' लेखिकाओं के साथ
09 फ़रवरी 2022 (आभासी मंच)

असमिया लेखिकाओं के साथ
13 फ़रवरी 2022 (असमिया) डिब्रूगढ़

कश्मीरी लेखिकाओं के साथ
17 फ़रवरी 2022 (आभासी मंच)

आविष्कार

कोंकणी में आविष्कार कार्यक्रम
22 नवंबर 2021, पणजी, गोवा

पुरस्कार एवं महत्तर सदस्यताएँ

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2020 अर्पण समारोह
17 अक्तूबर 2021, बेंगळूरु, कर्नाटक

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2020 अर्पण समारोह
31 दिसंबर 2021, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2021 अर्पण समारोह
11 मार्च 2022, नई दिल्ली

जगद्गुरु रामानंदाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य को महत्तर सदस्यता अर्पण समारोह
13 मार्च 2022, नई दिल्ली

श्री इंदिरा पार्थसारथी को महत्तर सदस्यता अर्पण समारोह
29 मार्च 2022, चेन्नै, तमिऴनाडु

बाल साहिती

'ओड़िआ बाल साहित्य में शिक्षा और नैतिकता' विषय पर बाल साहिती कार्यक्रम
7 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

डोगरी लेखकों के साथ बाल साहिती कार्यक्रम
05 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

'मलयाळम् में कहानी-पाठ' विषय पर बाल साहिती कार्यक्रम
08 सितंबर 2021 (आभासी मंच)

मराठी लेखकों के साथ बाल साहिती कार्यक्रम
13 सितंबर 2021 (आभासी मंच)

तेलुगु में बाल साहित्य : वर्तमान और भविष्य विषय पर बाल साहिती कार्यक्रम
11 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

बर' लेखकों के साथ बाल साहिती कार्यक्रम
12 नवंबर 2021 (आभासी मंच)

मलयाळम् में कविता-पाठ पर बाल साहिती कार्यक्रम
29 नवंबर 2021 (आभासी मंच)

असमिया में कहानी-पाठ पर बाल साहिती कार्यक्रम
13 दिसंबर 2021 (आभासी मंच)

पुस्तक चर्चा

सीताकांत महापात्र : एक पाठक (भगवान जयसिंह द्वारा संपादित) पुस्तक पर चर्चा
30 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

***द फोलोर्न ट्रीज़* पर पुस्तक चर्चा (प्रेम प्रधान कृत पुरस्कृत नेपाली उपन्यास 'उदासीन रूखहरू' का अंग्रेज़ी अनुवाद)**
06 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

कन्नड अनुवादों पर पुस्तक चर्चा : डॉ. एच. दंडप्पा द्वारा व्याख्यान
15 नवंबर 2021, बेंगळूरु, कर्नाटक

प्रख्यात गुजराती लेखक प्रो. खेवाना देसाई ने *ओग्निस्मि सादानु अल्पखयात गुजराती साहित्य* पर पुस्तक चर्चा की
17 नवंबर 2021, मुंबई

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह उत्सव के अवसर पर ओडिशा में एकत्रिकाओं पुस्तक पर चर्चा
20 नवंबर 2021, कटक

गणकबी वैष्णब पानी चयनिकाएँ पुस्तक पर चर्चा
राउरकेला, ओडिशा

पुस्तक पर्व पर चर्चा (एस.एल. भैरप्पा कृत कन्नड गौरव ग्रंथ का मलयाळम् अनुवाद) (कैराली कला समिति, बेंगळूरु के सहयोग से)
19 दिसंबर 2021, विमानपुरा, बेंगळूरु

दलित चेतना के अंतर्गत साहित्य मंच

14 अप्रैल 2021, कट्टक्कडा, तिरुवनंतपुरम

वृत्तचित्र प्रदर्शन (दर्पण)

शंख घोष (बाङ्ला)
01 जून 2021, नई दिल्ली

चंद्रनाथ मिश्र 'अमर' (मैथिली)
02 जून 2021, नई दिल्ली

सुगाथा कुमारी (मलयाळम्)
03 जून 2021, नई दिल्ली

मनोज दास (ओड़िआ)
04 जून 2021, नई दिल्ली

रीवा प्रसाद द्विवेदी (संस्कृत)
05 जून 2021, नई दिल्ली

शीर्षेंदु मुखोपाध्याय (बाङ्ला)
19 जुलाई 2021, नई दिल्ली

ब्रजेंद्र कुमार बह्म (बर')
20 जुलाई 2021, नई दिल्ली

केहरी सिंह मधुकर (डोगरी)
21 जुलाई 2021, नई दिल्ली

चित्रा मुद्गल (हिंदी)
22 जुलाई 2021, नई दिल्ली

विश्वास पाटिल (मराठी)
23 जुलाई 2021, नई दिल्ली

अजीत कौर (पंजाबी)
24 जुलाई 2021, नई दिल्ली

पोन्नीलन (तमिऴ)
19 अगस्त 2021, नई दिल्ली

नील पद्मनाभन (तमिऴ)
21 अगस्त 2021, नई दिल्ली

डी. जयकांतन (तमिऴ)
23 अगस्त 2021, नई दिल्ली

विंदा करंदिकर (मराठी)
23 अगस्त 2021, मुंबई

राजेंद्र शाह (गुजराती)
23 अगस्त 2021, मुंबई

विश्वास पाटिल (मराठी)
23 अगस्त 2021, मुंबई

कुँवर नारायण (हिंदी)
23 अगस्त 2021, बेंगळूरु

इंदिरा पार्थसारथी (तमिऴ)
23 अगस्त 2021 (आभासी)

सुब्रह्मण्यम भारती (तमिऴ)
24 अगस्त 2021, नई दिल्ली

विजय तेंदुलकर (मराठी)
24 अगस्त 2021, मुंबई

रविंद्र केलकर (कोंकणी)
24 अगस्त 2021, मुंबई

एस.एल. भैरप्पा (कन्नड)
24 अगस्त 2021, बेंगळूरु

यू.आर. अनंतमूर्ति (कन्नड)
24 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

नील पद्मनाभन (तमिऴ)
24 अगस्त 2021, (आभासी मंच)

सी. नारायण रेड्डी (तेलुगु)
24 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

पोन्नीलन (तमिऴ)
24 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

जयंत नार्लीकर (मराठी)
25 अगस्त 2021, मुंबई

गिरीश कर्नाड (कन्नड)
25 अगस्त 2021, मुंबई

सुगाथा कुमारी (मलयाळम्)
25 अगस्त 2021, बेंगळूरु

डी. जयकांतन (तमिऴ्)
26 अगस्त 2021, बेंगळूरु

भालचंद्र नेमाडे (मराठी)
27 अगस्त 2021, मुंबई

अर्जन हासीद (सिंधी)
27 अगस्त 2021, मुंबई

सी. नारायण रेड्डी (तेलुगु)
27 अगस्त 2021, बेंगळूरु

भीष्म साहनी (हिंदी)
15 सितंबर 2021, नई दिल्ली

धर्मवीर भारती (हिंदी)
16 सितंबर 2021, नई दिल्ली

यशपाल (हिंदी)
20 सितंबर 2021, नई दिल्ली

नगेन शइकिया (असमिया)
25 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

पद्मा सचदेवा (डोगरी)
26 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

रामदरश मिश्र (हिंदी)
27 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

नानक सिंह (पंजाबी)
28 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

कलीपट्टनम रामा राव (तेलुगु)
30 अक्तूबर 2021, (आभासी मंच)

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' शृंखला

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' शृंखला के अंतर्गत मराठी-बाङ्ला कवि सम्मिलन
17 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' शृंखला के अंतर्गत मैथिली-कोंकणी कविता-पाठ कार्यक्रम
27 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' शृंखला के अंतर्गत तेलुगु-पंजाबी कविता-पाठ कार्यक्रम
27 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' शृंखला के अंतर्गत बाङ्ला-राजस्थानी कवि सम्मिलन
28 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' शृंखला के अंतर्गत हिंदी-मलयाळम् कविता-पाठ कार्यक्रम
29 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' शृंखला के अंतर्गत डोगरी-मलयाळम् साहित्य मंच
21 मई 2021 (आभासी मंच)

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' शृंखला के अंतर्गत ओड़िआ-हिंदी कवि सम्मिलन
26 मई 2021 (आभासी मंच)

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' शृंखला के अंतर्गत कोंकणी-मणिपुरी कवि सम्मिलन
29 मई 2021 (आभासी मंच)

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' शृंखला के अंतर्गत असमिया-पंजाबी कवि सम्मिलन
24 जून 2021 (आभासी मंच)

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' शृंखला के अंतर्गत सिंधी-संताली कवि सम्मिलन
26 जून 2021 (आभासी मंच)

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' शृंखला के अंतर्गत तमिऴ-कश्मीरी कवि सम्मिलन
08 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' शृंखला के अंतर्गत कोंकणी-राजस्थानी कवि सम्मिलन
25 जनवरी 2022 (आभासी मंच)

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' शृंखला के अंतर्गत नेपाली-राजस्थानी कविता-पाठ कार्यक्रम
07 फ़रवरी 2022 (आभासी मंच)

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' शृंखला के अंतर्गत तेलुगु-ओड़िआ कविता-पाठ कार्यक्रम
8 फ़रवरी 2022 (आभासी मंच)

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' शृंखला के अंतर्गत कन्नड-उर्दू कविता - पाठ कार्यक्रम
11 फ़रवरी 2022 (आभासी मंच)

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' शृंखला के अंतर्गत मराठी-नेपाली कवि सम्मिलन
15 फ़रवरी 2022 (आभासी मंच)

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' शृंखला के अंतर्गत अंग्रेज़ी-मराठी कविता-पाठ कार्यक्रम
23 फ़रवरी 2022 (आभासी मंच)

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' शृंखला के अंतर्गत अनुवाद में चुनौतियाँ पर पैनल चर्चा
18 मार्च 2022, क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' शृंखला के अंतर्गत संस्कृत-मणिपुरी साहित्य मंच
25 मार्च 2022 (आभासी मंच)

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' शृंखला के अंतर्गत गुजराती-कश्मीरी कवि सम्मिलन
30 मार्च 2022 (आभासी मंच)

साहित्योत्सव 2022

(10-15 मार्च 2022, नई दिल्ली)

अकादेमी प्रदर्शनी का उद्घाटन
10 मार्च 2022, नई दिल्ली

युवा भारत का उदय (युवा लेखक सम्मिलन)
10 मार्च 2022, नई दिल्ली

'भारतीय भाषाओं में प्रकाशन' विषय पर पैनल चर्चा
10 मार्च 2022, नई दिल्ली

आदिवासी लेखक सम्मिलन
11 मार्च 2022, नई दिल्ली

पुरस्कार विजेताओं के साथ मीडिया की बातचीत
11 मार्च 2022, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी पुरस्कार अर्पण 2021
11 मार्च 2022, नई दिल्ली

लेखक सम्मिलन
12 मार्च 2022, नई दिल्ली

आमने-सामने
12 मार्च 2022, नई दिल्ली

'1947 से भारतीय नाटकों का विकास' विषय पर संगोष्ठी
12 मार्च 2022, नई दिल्ली

'भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन पर साहित्य के प्रभाव' विषय पर त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
13 मार्च 2022, नई दिल्ली

'1947 से भारतीय भाषा में काल्पनिक और विज्ञान कथा' विषय पर संगोष्ठी
13 मार्च 2022, नई दिल्ली

'मीडिया और साहित्य' विषय पर पैनल चर्चा
14 मार्च 2022, नई दिल्ली

'ट्रांसजेंडर कवि सम्मिलन'
14 मार्च 2022, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी स्थापना दिवस के अवसर पर संवत्सर व्याख्यान
14 मार्च 2022, नई दिल्ली

पूर्वोत्तरी
15 मार्च 2022, नई दिल्ली

'साहित्य और महिला सशक्तिकरण' विषय पर संगोष्ठी
15 मार्च 2022, नई दिल्ली

ग्रामालोक

ग्राम अनुगुल, ओडिशा
20 अगस्त 2021

ग्राम बाबा रेशी, बारामूला, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर
21 अगस्त 2021

ग्राम घुंघुतिपाली, बलांगीर, ओडिशा
13 सितंबर 2021

ग्राम देओला, ज़िला नासिक, महाराष्ट्र
21 सितंबर 2021

ग्राम कुर्ती, पोंडा, गोवा
25 सितंबर 2021

ग्राम कल्याणसिंहपुर, रायगढ़, ओडिशा
25 सितंबर 2021

ग्राम पद्मपुर, रायगढ़, ओडिशा
26 सितंबर 2021

ग्राम बंदवगुरी, हरिनागुरी, कोकराझार, असम
26 सितंबर 2021

ग्राम सालडी, ज़िला : अमरेली, गुजरात
17 अक्तूबर 2021

ग्राम बीदर, कर्नाटक
20 अक्तूबर 2021

ग्राम बेकापुर, जिला - अहमदनगर, महाराष्ट्र
20 अक्तूबर 2021

ग्राम चिंगनुंगखोक ग्राम पंचायत, इंफ़ाल, मणिपुर
23 अक्तूबर 2021

ग्राम ठरडा, राजस्थान
28 अक्तूबर 2021

ग्राम ठरडा, राजस्थान
11 नवंबर 2021

ग्राम उचोल, अंगथा ग्राम पंचायत, इंफ़ाल, मणिपुर
14 नवंबर 2021

ग्राम काज़ियाबाद, कुपवाड़ा, कश्मीर
20 नवंबर 2021

ग्राम लोलाह, कुपवाड़ा, कश्मीर
21 नवंबर 2021

ग्राम हंदवाड़ा, कश्मीर
22 नवंबर 2021

ग्राम नूरबाग, सोपोर, कश्मीर
23 नवंबर 2021

ग्राम खंगाबोक, खंगाबोक भाग-1 ग्राम पंचायत, इंफ़ाल, मणिपुर
24 नवंबर 2021

ग्राम हस नूर, पहलगाम, जम्मू और कश्मीर
10 दिसंबर 2021

ग्राम वुल्लरहामा, अनंतनाग, जम्मू और कश्मीर
13 दिसंबर 2021

ग्राम नीलकुठी ग्राम पंचायत, मोगजम
14 दिसंबर 2021

ग्राम बोन्सीगाँव, बनारगाँव, कोकराझार, असम
19 दिसंबर 2021

ग्राम बीदर, कर्नाटक
20 दिसंबर 2021

ग्राम हियांगथांग ग्राम पंचायत, इंफ़ाल, मणिपुर
21 दिसंबर 2021

ग्राम पटगाँव, भुदरगढ़, ज़िला : कोल्हापुर, महाराष्ट्र
25 दिसंबर 2021

ग्राम बंतारपुर, सुंदरी ग्राम पंचायत, सोनाई, कछार, असम
08 जनवरी 2022

ग्राम तुग, ताल्लुका भुज, ज़िला - कच्छ, गुजरात
08 जनवरी 2022

ग्राम तकेयल ग्राम पंचायत, इंफ़ाल, मणिपुर
20 जनवरी 2022

ग्राम दुधनोई, गोलपाड़ा, असम
23 जनवरी 2022

ग्राम यारीपोक, मणिपुर
23 जनवरी 2022

ग्राम कलबुर्गी, कर्नाटक
03 फ़रवरी 2022

ग्राम केइराव बित्रा, इंफ़ाल, मणिपुर
12 फ़रवरी 2022

ग्राम शांतिपारा, कमलघाट, पश्चिम त्रिपुरा, त्रिपुरा
03 मार्च 2022

ग्राम कनियाम्बेट्टा ग्राम पंचायत, वायनाड, कर्नाटक
10 मार्च 2022

ग्राम अझिकोड ग्राम पंचायत, अझिकोड, कर्नाटक
14 मार्च 2022

ग्राम टॉप नौरिया ग्राम पंचायत, इंफ़ाल पूर्व, मणिपुर
17 मार्च 2022

ग्राम दूरू, जम्मू और कश्मीर
28 मार्च 2022

ग्राम कंदेरपोरा, गुरी, जम्मू और कश्मीर
29 मार्च 2022

कवि अनुवादक

मेमचोबी और राजकुमारी देबरीता के साथ कवि-अनुवादक
15 जून 2021 (आभासी मंच)

कवि-अनुवादक (पंजाबी-हिंदी)
08 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

प्रसिद्ध हिंदी लेखक श्री मदन कश्यप ने अपनी हिंदी कविताओं का पाठ किया और प्रख्यात ओड़िआ अनुवादक श्री पापोरी गोस्वामी ने इसका ओड़िआ अनुवाद प्रस्तुत किया।
28 सितंबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात असमिया लेखक डॉ. हरेकृष्ण डेका ने अपनी असमिया कविताओं का पाठ किया और प्रसिद्ध बर' अनुवादक श्री रायरूब ब्रह्म ने इसका बर' अनुवाद प्रस्तुत किया।
15 फ़रवरी 2022 (आभासी मंच)

कथा संधि

प्रख्यात तेलुगु लेखक डॉ. शांति नारायण
16 जून 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात संताली लेखक श्री चंडी चरण किस्कु
02 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात तेलुगु लेखक श्री जी. वेंकटकृष्ण
12 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात असमिया लेखक श्री शिबानंद काकोटी
16 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात कन्नड लेखक डॉ. मोगल्ली गणेश
20 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात उर्दू लेखक श्री तारिक छतारी
04 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात ओड़िआ लेखिका सुश्री सरोजिनी साहू
11 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात हिंदी लेखिका सुश्री उषा किरण ख़ान
02 सितंबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात कन्नड लेखिका श्रीमती सुधा चिदानंदगौड़ा
06 सितंबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात तेलुगु लेखक श्री मल्लीपुरम जगदीश
13 सितंबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात बाङ्ला लेखक श्री निरंजन हाँसदा
26 सितंबर 2021, झारग्राम, पश्चिम बंगाल

प्रख्यात ओड़िआ लेखक श्री अध्यापक बिश्वरंजन
27 सितंबर 2021, भुवनेश्वर

प्रख्यात कन्नड लेखक श्री चिदानंद साली
12 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात हिंदी लेखक श्री हरिसुमन बिष्ट
19 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात कश्मीरी लेखक श्री रहीम रहबर
22 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात हिंदी लेखक श्री हरजेंद्र चौधरी
09 नवंबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात डोगरी लेखक श्री जगदीप दुबे
26 नवंबर 2021, जम्मू

प्रख्यात बर' लेखक श्री विद्यासागर नार्जारी
17 दिसंबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात तेलुगु लेखक श्री बी. अजय प्रसाद
23 दिसंबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात संताली लेखक श्री चैतन्य प्रसाद माझी
28 दिसंबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात कन्नड लेखिका श्रीमती विभा पुरोहित
21 जनवरी 2022 (आभासी मंच)

कवि संधि

प्रख्यात संताली कवयित्री श्रीमती यशोदा मुर्मू
17 मई 2021 (आभासी मंच)

प्रसिद्ध कोंकणी कवि श्री गौरीश वीरेंकर
08 जून 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात तेलुगु कवि श्री अड्डेपल्ली प्रभु
17 जून 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात सिंधी कवि श्री वासदेव मोही
13 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात तेलुगु कवि श्री मल्लेला नरसिम्हा मूर्ति
19 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात उर्दू कवि श्री मुस्हफ़ इक़बाल तौसीफ़ी
04 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात कन्नड कवि डॉ. सत्यानंद
18 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात तेलुगु कवयित्री श्रीमती कोंडेपुडी निर्मला
23 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

श्री दिनेश कुशवाह
08 सितंबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात मलयाळम् कवि प्रो. वी. मधुसूदनन नायर
24 सितंबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात ओड़िआ कवि श्री हुसैन रबीगंधिन
26 सितंबर 2021, कटक

प्रख्यात हिंदी कवि श्री अनंत मिश्र
05 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात तेलुगु कवि श्री कटरागड्डा दयानंद
08 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात कन्नड कवि श्री यू.के. कुमारन
12 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात कन्नड कवयित्री सुश्री ममता अर्सिकेरे
14 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

हिंदी के प्रख्यात कवि श्री संतोष चौबे
08 नवंबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात मराठी कवि श्री किशोर कदम
14 नवंबर 2021, मुंबई

प्रख्यात हिंदी कवि कैलाश नारायण तिवारी
25 नवंबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात डोगरी कवि श्री ध्यान सिंह
26 नवंबर 2021, जम्मू

प्रख्यात ओड़िआ कवि श्री हृषिकेश मल्लिक
25 दिसंबर 2021, भुवनेश्वर

प्रख्यात डोगरी कवि श्री पूरन सिंह बगोत्रा
05 मार्च 2022, जम्मू

साहित्य मंच

प्रख्यात उर्दू लेखकों के साथ साहित्य मंच
05 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

भारत@75 के अंतर्गत साहित्य मंच
09 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात बाङ्ला लेखकों के साथ साहित्य मंच
19 मई 2021 (आभासी मंच)

'मणिपुरी साहित्य की लोककथाएँ' विषय पर साहित्य मंच
26 मई 2021 (आभासी मंच)

तमिऴ उपन्यासों की उत्कृष्ट कृतियों पर साहित्य मंच
18 जून 2021 (आभासी मंच)

'महिला लेखिकाओं की कहानियों में कामकाजी महिलाओं के विषाद' विषय पर साहित्य मंच
22 जून 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात डोगरी लेखकों के साथ साहित्य मंच
29 जून 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात बाङ्ला कवियों के साथ साहित्य मंच
29 जून 2021 (आभासी मंच)

'असमिया साहित्य में प्रकृति चेतना' पर साहित्य मंच
05 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

'तमिऴ प्रवासी कहानियाँ' विषय पर साहित्य मंच
08 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

'संताली शिकारी गीत : एक साहित्यिक मूल्यांकन' पर साहित्य मंच
12 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

'स्कूली शिक्षा में मणिपुरी भाषा और साहित्य के योगदान' विषय पर साहित्य मंच
14 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात कोंकणी लेखकों के साथ साहित्य मंच
15 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

थो. परमसिवन के लेखन पर साहित्य मंच
26 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

'बाङ्ला कविता और कहानी-पाठ' विषय पर साहित्य मंच
30 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

'प्रेमचंद के जीवन और कार्य' विषय पर साहित्य मंच
31 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात डोगरी लेखकों के साथ साहित्य मंच
11 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

'तमिऴ साहित्य में ईसाई मूल्यों और रीति-रिवाज़ों के चित्रण' विषय पर साहित्य मंच
18 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात कोंकणी लेखकों के साथ 'चारोली व्युत्पत्ति इतिहास तथा प्रवृत्तियाँ' विषय पर साहित्य मंच
23 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

'संताली पत्रिकाओं और जर्नल्स : अतीत और वर्तमान' विषय पर साहित्य मंच
23 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

यात्रा अनुदानकर्ताओं के साथ साहित्य मंच (ईआरबी)
27 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

ओड़िआ कहानी-पाठ पर साहित्य मंच
31 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

तमिऴ में कोवई ज्ञानी के संदर्भ में साहित्यिक आलोचना पर साहित्य मंच
07 सितंबर 2021 (आभासी मंच)

पद्मचरण पटनायक (ओड़िआ) पर साहित्य मंच
08 सितंबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात डोगरी लेखकों के साथ साहित्य मंच
09 सितंबर 2021 (आभासी मंच)

'लघु पत्रिका दिवस' पर साहित्य मंच
9 सितंबर 2021 (आभासी मंच)

डोमन साहू समीर (संताली) पर साहित्य मंच
10 सितंबर 2021 (आभासी मंच)

'बर' में अनुवाद साहित्य' विषय पर साहित्य मंच
16 सितंबर 2021 (आभासी मंच)

'बाङ्ला कविता और कहानी-पाठ' विषय पर साहित्य मंच
20 सितंबर 2021 (आभासी मंच)

अंतरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस के अवसर पर 'अंतरभाषी अनुवाद और राष्ट्रीय एकता' विषय पर साहित्य मंच
30 सितंबर 2021 (आभासी मंच)

उपंत ओड़िशारे ओड़िआ भाषा 'साहित्य ओ संस्कृति' विषय पर साहित्य मंच
30 सितंबर 2021 (आभासी मंच)

असमिया में कवि सम्मिलन पर साहित्य मंच
30 सितंबर 2021, गुवाहाटी

प्रख्यात कश्मीरी लेखकों के साथ साहित्य मंच
15 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात हिंदी लेखकों के साथ साहित्य मंच
18 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात मलयाळम् लेखकों के साथ साहित्य मंच
24 अक्तूबर 2021, ज़िला : कन्याकुमारी, केरल

'साहित्य और वर्तमान असमिया साहित्य' विषय पर साहित्य मंच
23 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात कश्मीरी लेखकों के साथ साहित्य मंच
25 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात ओड़िआ लेखक नबीन कुमार साहू पर साहित्य मंच
25 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात पंजाबी लेखकों के साथ साहित्य मंच
27 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात डोगरी लेखकों के साथ साहित्य मंच
28 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

'पी.ओ. बोडिंग और संताली साहित्य' विषय पर साहित्य मंच
29 अक्तूबर 2021 (संताली) (आभासी मंच)

'संस्कृति और साहित्य' विषय पर साहित्य मंच
30 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

मलयाळम् लेखकों के साथ साहित्य मंच
31 अक्तूबर 2021, पुलपल्ली, वायनाड, केरल

प्रख्यात पंजाबी लेखकों के साथ साहित्य मंच
15 नवंबर 2021 (आभासी मंच)

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह समारोह के अवसर पर साहित्य मंच
15 नवंबर 2021, कोलकाता

प्रख्यात कश्मीरी लेखकों के साथ साहित्य मंच
16 नवंबर 2021 (आभासी मंच)

'सिद्धलिंगय्या के लेखन और संस्कृति' विषय पर साहित्य मंच
16 नवंबर 2021, चामराजनगर, कर्नाटक

'डोमन हाँसदा के जीवन और कार्य' विषय पर साहित्य मंच (संताली)
17 नवंबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात अंग्रेज़ी लेखकों के साथ साहित्य मंच
18 नवंबर 2021, नई दिल्ली

प्रख्यात कश्मीरी लेखकों के साथ साहित्य मंच
18 नवंबर 2021 (आभासी मंच)

'डायस्पोरा' विषय पर साहित्य मंच
10 नवंबर 2021 (आभासी मंच)

साहित्य मंच : व्याख्यान तथा देशभक्ति गीतों एवं अमसी नारायण पिल्लई की कविताओं का पाठ
05 दिसंबर 2021, कन्याकुमारी डीटी, तमिलनाडु

प्रख्यात कश्मीरी लेखकों के साथ साहित्य मंच
10 दिसंबर 2021, नई दिल्ली

प्रख्यात मणिपुरी कवियों के साथ साहित्य मंच
10 दिसंबर 2021 (आभासी मंच)

ओड़िआ के पल्ली कबी कृष्ण प्रसाद बेहरा पर साहित्य मंच
15 दिसंबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात कश्मीरी लेखकों के साथ साहित्य मंच
16 दिसंबर 2021 (आभासी मंच)

संताली के पाराव मुर्मू के उपन्यास के महत्त्वपूर्ण आकलन पर साहित्य मंच
20 दिसंबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात तमिऴ लेखकों के साथ 'स्वतंत्रता संग्राम और पय्यान्नूर' विषय पर साहित्य मंच
25 दिसंबर 2021, करयिल, पय्यान्नुर, केरल

प्रख्यात मलयाळम् लेखकों के साथ संजयन और मलयाळम् साहित्य पर साहित्य मंच
25 दिसंबर 2021, अन्नूर, पय्यानुर, केरल

प्रख्यात कश्मीरी लेखकों के साथ साहित्य मंच
12 जनवरी 2022, नई दिल्ली

प्रख्यात कश्मीरी लेखकों के साथ साहित्य मंच
14 फ़रवरी 2022 (आभासी मंच)

'जदुनाथ टुडू के जीवन और कार्य' विषय पर साहित्य मंच
18 जनवरी 2022 (आभासी मंच)

'मणिपुर के स्वदेशी खेल और उनके साहित्यिक महत्त्व' विषय पर साहित्य मंच
27 जनवरी 2022 (आभासी मंच)

'भाषा के मुद्दों तथा असम के संदर्भ में राष्ट्रवादी साहित्य का भविष्य' विषय पर साहित्य मंच
14 फ़रवरी 2022, दुलियाजान पुस्तक मेला, डिब्रूगढ़

'संत रैदास के जीवन और कार्य' विषय पर साहित्य मंच
16 फ़रवरी 2022 (आभासी मंच)

प्रख्यात कश्मीरी लेखकों के साथ साहित्य मंच
17 फ़रवरी 2022 (आभासी मंच)

'कृषि संस्कृति और वायनाड का साहित्य' विषय पर साहित्य मंच
19 फ़रवरी 2022, वायनाड, केरल

'सोशल मीडिया संभाषण पर लेखन और पाठ' पर साहित्य मंच
20 फ़रवरी 2022, कोट्टिला, कन्नूर जिला

स्वतंत्रता स्मारक सम्मेलन पर साहित्य मंच
20 फ़रवरी 2022, पय्यान्नूर, कन्नूर

प्रख्यात कश्मीरी लेखकों के साथ साहित्य मंच
22 फ़रवरी 2022 (आभासी मंच)

युवा कन्नड लेखकों के साथ साहित्य मंच
26 फ़रवरी 2022, बन्नाडा माने आर्ट अड्डा, गडग

साहित्य मंच : एक शाम समालोचक प्रो. कोवेला सुप्रसन्नाचार्य के साथ
28 फ़रवरी 2022, हनुमाकोंडा, तेलंगाना

'बंगाल के बाहर बाङ्ला साहित्य' विषय पर साहित्य मंच
28 फ़रवरी 2022 (आभासी मंच)

साहित्य मंच : एक शाम समालोचक एवं प्रख्यात तेलुगु लेखक प्रो. अनुमंडला भूमैया के साथ
02 मार्च 2022, सूबेदारी, वारंगल, तेलंगाना

'मलयाळम् फिल्म साहित्य' विषय पर साहित्य मंच
04 मार्च 2022, मुवत्तुपुझा, केरल

'असमिया स्वतंत्रता सेनानियों के साहित्य' विषय पर साहित्य मंच
09 मार्च 2022 (आभासी मंच)

के.पी. अप्पन के महत्त्वपूर्ण लेखन पर साहित्य मंच
13 मार्च 2022, तिरुवनंतपुरम, केरल

स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगाँठ के अवसर पर मलयाळम् लेखकों के साथ साहित्य मंच
19 मार्च 2022, कान्हांगड, केरल

लोक : विविध स्वर

बेटीखाई बारिहा तथा उनकी मंडली द्वारा दलखाई की प्रस्तुति
03 दिसंबर 2021, राउरकेला, ओडिशा

लेखक से भेंट

प्रख्यात गुजराती लेखक डॉ. मणिलाल पटेल
21 अगस्त 2021, अहमदाबाद

प्रख्यात सिंधी लेखक डॉ. जगदीश लछानी
24 सितंबर 2021, मुंबई

प्रख्यात कोंकणी लेखक डॉ. दत्ता दामोदर नाइक
22 अक्तूबर 2021, गोवा

विविध

स्वच्छता पखवाड़ा
27 अप्रैल 2021, क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु

की. राजनारायणनन को श्रद्धांजलि
05 मई 2021, क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस
21 जून 2021, क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु

एक शाम समालोचक प्रो. बी. तिरुपति राव के साथ
21 जून 2021 (आभासी मंच)

क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता में योग दिवस का आयोजन
21 जून 2021 (आभासी मंच)

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस
21 जून 2021, क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता

कन्नड कवि डॉ. सिद्दलिंगय्या को श्रद्धांजलि
26 जून 2021 (आभासी मंच)

मलयाळम् कवि एस. रामेशन नय्यर को श्रद्धांजलि
15 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

तेलुगु लेखक कलीपट्टनम रामाराव को श्रद्धांजलि
16 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के अवसर पर एक शाम समालोचक माधवराव सप्रे के साथ
16 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु में हिंदी सप्ताह समारोह
14-21 सितंबर 2021

क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता में हिंदी सप्ताह समारोह
14-21 सितंबर 2021

हिंदी दिवस
21 सितंबर 2021, मुंबई

'शंकर' (बाङ्ला लेखक) को साहित्य अकादेमी पुरस्कार अर्पण समारोह
05 अक्तूबर 2021

साहित्य अकादेमी की *बलाला मंची कथालु* पुस्तक का लोकार्पण
25 अक्तूबर 2021, विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2021 का आयोजन
26 अक्तूबर 2021

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2021 का आयोजन
28 अक्तूबर 2021, मुंबई

सतर्कता जागरूकता के अवसर पर व्याख्यान
29 अक्तूबर 2021, क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता

सतर्कता जागरूकता सप्ताह (स्वतंत्र भारत@75 : सत्यनिष्ठा के साथ आत्मनिर्भरता)
29 अक्तूबर 2021, बेंगळूरु, कर्नाटक

क्षेत्रीय कार्यालय में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन
01 नवंबर 2021, क्षेत्रीय कार्यालय, कोलाकाता

एक शाम समालोचक अख़लाक़ आहन के साथ (अमीर ख़ुसरो और उनकी विरासत)
08 नवंबर 2021 (आभासी मंच)

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह
14-21 नवंबर 2021, कोलकाता

प्रताप सहगल के साथ नाटक पाठ वाचन
15 नवंबर 2021 (आभासी मंच)

एक शाम समालोचक नंदकिशोर करुणाशंकर उपाध्याय पांडे के साथ
29 नवंबर 2021 (आभासी मंच)

आज़ादी के अमृत महोत्सव @ 75 के अवसर पर 'गुजराती साहित्य : स्वतंत्रता पूर्व और स्वतंत्रता के पश्चात्' विषय पर चर्चा
30 नवंबर 2021 (आभासी मंच)

एक शाम समालोचक के साथ (हिंदी)
28 फ़रवरी 2022 (आभासी मंच)

समालोचक श्री पेनुगोंडा लक्ष्मीनारायण द्वारा तेलुगु साहित्य पर व्याख्यान
24 फ़रवरी 2022 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी स्थापना दिवस व्याख्यान
12 मार्च 2022, क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता

कविता उत्सव, कोलकाता
13 मार्च 2022 (आभासी मंच)

कविता उत्सव, कोलकाता
16-17 मार्च 2022 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी स्थापना दिवस व्याख्यान
12 मार्च 2022, क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता

मुलाक़ात

असमिया लेखकों के साथ
7 जून 2021 (आभासी मंच)

अखिल भारतीय बर' महिला लेखिका सम्मिलन
30 जून 2021 (आभासी मंच)

ओड़िआ लेखकों के साथ
22 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

अंतरराष्ट्रीय विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर 75 भारतीय आदिवासी भाषाओं के 75 कवियों के साथ भारत@75 'आदिवासी कविता की तलाश' विषय पर कार्यक्रम का आयोजन
9-11 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

असमिया लेखकों के साथ
18 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

अखिल भारतीय बर' युवा सम्मिलन
20 अगस्त 2021

ओड़िआ लेखकों के साथ
21 अगस्त 2021, कुलंदा, पल्लाहड़ा, अनुगुल, ओडिशा

राजस्थानी महिला लेखिका सम्मिलन
30-31 अगस्त 2021, सालासर

अखिल भारतीय काव्य महोत्सव (आज़ादी का अमृत महोत्सव और महात्मा गाँधी जयंती के अवसर पर)
02 अक्तूबर 2021, बेंगळूरु, कर्नाटक

बाङ्ला लेखकों के साथ
05 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

मैथिली कवि सम्मिलन
28 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

असमिया लेखकों के साथ
9 नवंबर 2021 (आभासी मंच)

'वर्तमान लेखकों के समक्ष मुद्दे' विषय पर लेखक सम्मिलन
11 दिसंबर 2021, गुवाहाटी

बर' लेखकों के साथ
13 दिसंबर 2021 (आभासी मंच)

युवा बर' कवियों के साथ
19 जनवरी 2022 (आभासी मंच)

युवा बाङ्ला लेखकों के साथ
18 फ़रवरी 2022 (आभासी मंच)

गुजराती लेखकों के साथ
24 फ़रवरी 2022 (आभासी मंच)

युवा लेखक सम्मिलन
25-26 अक्तूबर 2021, अमृतसर, पंजाब

भुवनेश्वर में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर अखिल भारतीय महिला लेखिका महोत्सव
08 मार्च 2022

बहुभाषी कवि सम्मिलन

डॉ. अंबेडकर की जन्म शतवार्षिकी के अवसर पर बहुभाषी कवि सम्मिलन
14 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

पुस्तक मेले के अवसर पर बहुभाषी कवि सम्मिलन
7 जनवरी 2022, गुवाहाटी, असम

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर बहुभाषी कवि सम्मिलन
21 फ़रवरी 2022 (आभासी मंच)

बहुभाषी कवि सम्मिलन
21 फ़रवरी 2022 (आभासी मंच)

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर बहुभाषी कवि सम्मिलन
08 मार्च 2022 (आभासी मंच)

नारी चेतना

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर नारी चेतना
08 मार्च 2022 (आभासी मंच)

प्रख्यात कन्नड महिला लेखिकाओं के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
05 अप्रैल 2021, अथानी, कर्नाटक

प्रख्यात ओड़िआ महिला लेखिकाओं के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
7 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात डोगरी महिला लेखिकाओं के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
11 मई 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात डोगरी महिला लेखिकाओं के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
07 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात संस्कृत महिला लेखिकाओं के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
16 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात नेपाली महिला लेखिकाओं के साथ कहानी एवं कविता-पाठ
16 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात मैथिली लेखिकाओं के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
20 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात सिंधी लेखिकाओं के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
06 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात मराठी लेखिकाओं के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
25 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात मैथिली लेखिकाओं के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
20 सितंबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात तेलुगु महिला लेखिकाओं के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
27 सितंबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात मलयाळम् महिला लेखिकाओं के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
27 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात बाङ्ला लेखिकाओं के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
27 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात संस्कृत लेखिकाओं के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
11 नवंबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात कन्नड महिला लेखिकाओं के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
14 नवंबर 2021, बागलकोट, कर्नाटक

प्रख्यात कन्नड महिला लेखिकाओं के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
09 दिसंबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात मलयाळम् महिला लेखिकाओं के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
16 दिसंबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात संताली लेखिकाओं के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
23 फ़रवरी 2022 (आभासी मंच)

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर प्रसिद्ध तेलुगु लेखिकाओं के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
08 मार्च 2022, कुप्पम, आंध्र प्रदेश

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर प्रसिद्ध तमिळ लेखकों के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
08 मार्च 2022 (आभासी मंच)

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह 2021

साहित्य मंच : श्री एस.आर. विजयशंकर द्वारा कन्नड समालोचना पर व्याख्यान
17 नवंबर 2021, क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु

साहित्य मंच : डॉ. एल.एन. मुकुंदराजी द्वारा कन्नड कविता पर व्याख्यान
18 नवंबर 2021, क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु

साहित्य मंच : डॉ. पद्मिनी नागराजू द्वारा कन्नड कहानी पर व्याख्यान
19 नवंबर 2021, क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु

वाचिक तथा जनजातीय साहित्य कार्यक्रम

जनजातीय भाषा और साहित्य पर परिसंवाद (मलयाळम्)
29 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

अलिखित भाषाओं के मौखिक महाकाव्यों पर संगोष्ठी
8-9 दिसंबर 2021, नई दिल्ली

मग मौखिक साहित्य और कविता उत्सव
12-13 फ़रवरी 2022, देबदारु, त्रिपुरा

पैनल चर्चा

इंडिया@75 के अंतर्गत लेखक के रूप में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर चर्चा
9 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

व्यक्ति और कृति

श्री अहनथम दोरेंद्र सिंह (मणिपुरी)
02 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

प्रो. बी.एस. गविमठ, सांस्कृतिक विचारक, ने उन पुस्तकों पर चर्चा की, जिन्होंने उन्हें सबसे अधिक प्रभावित किया
30 सितंबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात पत्रकार श्री ज़ोरावर सिंह जमवाल ने उन पुस्तकों पर चर्चा की, जिन्होंने उन्हें सबसे अधिक प्रभावित किया
12 दिसंबर 2021, जम्मू

श्री ऋषिपाल सिंह, अतिरिक्त आयुक्त, राजस्व विभाग, जम्मू-कश्मीर, ने उन पुस्तकों पर चर्चा की जिन्होंने उन्हें सबसे अधिक प्रभावित किया
27 फ़रवरी 2022, उधमपुर

विख्यात चित्रकार श्री सुधाकर यादव ने उन पुस्तकों पर चर्चा की, जिन्होंने उन्हें सबसे अधिक प्रभावित किया
25 मार्च 2022, मुंबई, महाराष्ट्र

प्रख्यात ओड़िआ लेखक और आंध्र प्रदेश के राज्यपाल श्री विश्वभूषण हरिचंदन ने उन पुस्तकों पर बात की, जिन्होंने उन्हें सबसे अधिक प्रभावित किया
28 मार्च 2022, भुवनेश्वर, ओडिशा

कविता-पाठ

प्रख्यात गुजराती कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
02 फ़रवरी 2022 (आभासी मंच)

प्रख्यात डोगरी कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
06 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात मणिपुरी कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
08 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

इंडिया@75 के अंतर्गत तमिऴ में कविता-पाठ कार्यक्रम
09 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

इंडिया@75 के अंतर्गत कविता-पाठ कार्यक्रम
09 अप्रैल 2021

प्रख्यात गुजराती कवियों के साथ कविता-पाठ कार्यक्रम
17 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर तमिऴ में कविता-पाठ कार्यक्रम
21 फ़रवरी 2022 (आभासी मंच)

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर कविता-पाठ कार्यक्रम
21 फ़रवरी 2022

विश्व कविता दिवस के अवसर पर कविता-पाठ
21 मार्च 2022

कवि सम्मिलन

इंडिया@75 के अंतर्गत प्रख्यात सिंधी लेखकों के साथ कवि सम्मिलन
15 जून 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात मलयाळम् लेखकों के साथ कवि सम्मिलन
29 जून 2021

प्रख्यात डोगरी लेखकों के साथ कवि सम्मिलन
22 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात गुजराती कवियों के साथ कवि सम्मिलन
28 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

आज़ादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत प्रख्यात हिंदी लेखकों के साथ कवि सम्मिलन
23 सितंबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात कन्नड कवियों के साथ कवि सम्मिलन
18 अक्तूबर 2021, बीदर, कर्नाटक

आज़ादी का अमृत महोत्सव के अवसर पर कवि सम्मिलन
11 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

कन्नड और अन्य भाषाओं के कवियों के साथ कवि सम्मिलन
30 दिसंबर 2021, बीदर, कर्नाटक

प्रवासी मंच

प्रख्यात हिंदी लेखिका अंजू रंजन के साथ प्रवासी मंच
23 जुलाई 2021, नई दिल्ली

प्रख्यात बर' लेखक प्रबीर कुमार ब्रह्म के साथ प्रवासी मंच
28 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात बाङ्ला लेखक आलोकेश दत्त राय, रुद्रशंकर, सुदीप्त चट्टोपाध्याय के साथ प्रवासी मंच
6 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

प्रवासी लेखकों और उनके लेखन पर प्रसिद्ध असमिया लेखकों के साथ प्रवासी मंच
24 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात विद्वान रामप्रसाद भट्ट के साथ प्रवासी मंच हीडलबर्ग, जर्मनी
30 मार्च 2022 (आभासी मंच)

संगोष्ठियाँ

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 'स्वतंत्रता संग्राम में लेखक' विषय पर संगोष्ठी
21 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

'भावनात्मक एकता और गुरु तेग बहादुर सिंह' विषय पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी (गुरु तेग बहादुर सिंह की 400वीं जयंती के अवसर पर)
1-2 मई 2021 (आभासी मंच)

'साहित्य और भारत छोड़ो आंदोलन' विषय पर द्वि-दिवसीय सम्मेलन
08-09 अगस्त 2021, मुंबई

'ग़ैर-कथेत्तर प्रेमचंद के गैर-काल्पनिक लेखन' विषय पर संगोष्ठी
24 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

'उर्दू नज़्म के नए रूझानात' विषय पर संगोष्ठी
04-05 सितंबर 2021, जोधपुर, राजस्थान

'सबाल्टर्न सेंसिबिलिटी : इम्पैक्ट एण्ड एक्सप्रेशन इन पंजाबी लिटरेचर/सोसायटी' विषय पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी
20-21 सितंबर 2021 (आभासी मंच)

संत कवि भीमा भोई, गंगाधर मेहर विश्वविद्यालय पर संगोष्ठी
25 सितंबर 2021, संबलपुर

'थी. जानकीरामन' पर शतवार्षिकी संगोष्ठी
05-06 अक्तूबर 2021, सेलम, तमिलनाडु

'फ़ादर थॉमस कोंकणी और मराठी में थॉमस स्टीफंस का योगदान' पर संगोष्ठी
22 नवंबर 2021, पणजी, गोवा

'मराठी उपन्यास में स्वतंत्रता के बाद के शैलीगत परिवर्तन' विषय पर संगोष्ठी
27-28 नवंबर 2021, नासिको

'ब्रजेंद्र कुमार ब्रह्म के जीवन और कार्य' विषय पर संगोष्ठी
10 दिसंबर 2021, असम

'मंघराम मलकाणी का सिंधी साहित्य में योगदान' पर संगोष्ठी
24 दिसंबर 2021 (आभासी मंच)

'भारतीय साहित्य में काशी का योगदान' विषय पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी
29-30 दिसंबर 2021 (आभासी मंच)

'समाज के संवर्धन के लिए भक्ति संस्कृत साहित्य का योगदान' विषय पर संगोष्ठी
24-25 जनवरी 2022, तिरुपति, आंध्र प्रदेश

'लोकमान्य तिलक : जीवन और कार्य' विषय पर संगोष्ठी
17-18 फ़रवरी 2022, कोल्हापुर

'अन्य भाषाओं में सिंधी साहित्य का योगदान' संगोष्ठी
09 मार्च 2022, नई दिल्ली

जनजातीय साहित्य पर संगोष्ठी
26 मार्च 2022, मुंबई

संगोष्ठी/परिसंवाद (जन्म शतवार्षिकी)

नीलमाधब पाणिग्रही की जन्म शतवार्षिकी पर संगोष्ठी
28 मई 2021 (आभासी मंच)

रघुनाथ दाश (जटायु) की जन्म शतवार्षिकी पर परिसंवाद
14 जून 2021 (आभासी मंच)

के. सरस्वती अम्मा की जन्म शतवार्षिकी पर परिसंवाद
26 जून 2021 (आभासी मंच)

आर.सी. हिरेमठ की जन्म शतवार्षिकी पर परिसंवाद
29 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

टा.रा.सु. की जन्म शतवार्षिकी पर परिसंवाद
21 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

राघवाचार्य और बाबू कृष्णनंदन सिंह की जन्म शतवार्षिकी पर परिसंवाद
27-28 अगस्त 2021, सहरसा, बिहार

के. राघवन पिल्लई की जन्म शतवार्षिकी पर परिसंवाद
30 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

रामभटला कृष्णंम्मामूर्ति की जन्म शतवार्षिकी पर परिसंवाद
30 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

वी. आनंदकुट्टन की जन्म शतवार्षिकी पर परिसंवाद
31 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

चुनीलाल माडिया की जन्म शतवार्षिकी पर परिसंवाद
21 सितंबर 2021 (आभासी मंच)

मनमोहन मिश्र की जन्म शतवार्षिकी पर संगोष्ठी
26 सितंबर 2021, कटक

गोविंद चंद्र उद्गत की जन्म शतवार्षिकी पर संगोष्ठी
27 सितंबर 2021, भुवनेश्वर

एम. गोविंदन की जन्म शतवार्षिकी पर संगोष्ठी
29 सितंबर 2021 (आभासी मंच)

के.एम. डैनियल की जन्म शतवार्षिकी पर संगोष्ठी
22 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

देवरकोंडा बालगंगाधर तिलक की जन्म शतवार्षिकी पर पर संगोष्ठी
24 अक्तूबर 2021, तनुकु, आंध्र प्रदेश

बुद्धिधारी सिंह रमाकार की जन्म शतवार्षिकी पर परिसंवाद
12 नवंबर 2021, मधुबनी, बिहार

सत्यजीत राय की जन्म शतवार्षिकी पर संगोष्ठी
25-26 नवंबर 2021, कोलकाता

टी. थोइबी देवी के जीवन और कार्यों की जन्म शतवार्षिकी पर संगोष्ठी
29 नवंबर 2021, इंफ़ाल, मणिपुर

हरभजन सिंह की जन्म शतवार्षिकी पर संगोष्ठी
30 नवंबर-1 दिसंबर 2021, दिल्ली

सुगन आहूजा सिंधी की जन्म शतवार्षिकी पर संगोष्ठी
01 दिसंबर 2021 (आभासी मंच)

सुकुमारी भट्टाचार्य की जन्म शतवार्षिकी पर संगोष्ठी
22 दिसंबर 2021 (आभासी मंच)

राधानाथ रथ की जन्म शतवार्षिकी पर संगोष्ठी
25 दिसंबर 2021, भुवनेश्वर, ओडिशा

रामचंद्र मिश्र की जन्म शतवार्षिकी पर संगोष्ठी
26 दिसंबर 2021 नयागढ़, ओडिशा

मकरंद दवे की जन्म शतवार्षिकी पर संगोष्ठी
05 जनवरी 2022 (आभासी मंच)

एन.एन. पिल्लई की जन्म शतवार्षिकी पर संगोष्ठी
17 फ़रवरी 2022 (आभासी मंच)

पाटिल पुट्टप्पा की जन्म शतवार्षिकी पर संगोष्ठी
25 फ़रवरी 2022 (आभासी मंच)

सुधांशु शेखर चौधरी की जन्म शतवार्षिकी पर संगोष्ठी
26-27 फ़रवरी 2022, मुज़फ़्फ़रपुर, बिहार

कहानी-पाठ

प्रख्यात गुजराती लेखकों के साथ कहानी-पाठ कार्यक्रम
20 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

पंजाबी लेखकों के साथ समसामयिक कहानी-पाठ कार्यक्रम
04 अक्तूबर 2021, नई दिल्ली

परिसंवाद (शतवार्षिकी)

कवि वी. नारा की शतवार्षिकी पर परिसंवाद
12 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

सुरथ की शतवार्षिकी पर परिसंवाद
24 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

एस.डी. सुंदरम की शतवार्षिकी पर परिसंवाद
21 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

के.सी.एस. अरुणाचलम की शतवार्षिकी पर परिसंवाद
27 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

आरवी की शतवार्षिकी पर परिसंवाद
19 नवंबर 2021 (आभासी मंच)

सोमाले (तमिऴ) पर शतवार्षिकी परिसंवाद
25 नवंबर 2021, श्री एस.आर.एन.एम. कॉलेज, सत्तुरी

नकुलन की शतवार्षिकी पर परिसंवाद
29 नवंबर 2021, इधाया महिला कॉलेज, कुंभकोणम

एम.वी. वेंकटराम की शतवार्षिकी पर परिसंवाद
03 दिसंबर 2021, गाँधीग्राम ग्रामीण संस्थान, डिंडीगुल

मालापल्ली उपन्यास की शतवार्षिकी पर परिसंवाद
05 दिसंबर 2021, गुंटूर, आंध्र प्रदेश

पा. सिंगराम की शतवार्षिकी पर परिसंवाद
19 दिसंबर 2021, सिंगमपुनारी

मुल्लई मुथैय्या की शतवार्षिकी पर परिसंवाद
05 जनवरी 2022, एस.एस.एस.एस. जैन कॉलेज फ़ॉर विमेन, चेन्नै

मुदियारासन की शतवार्षिकी पर परिसंवाद
18 फ़रवरी 2022, मद्रास विश्वविद्यालय चेन्नै

परिसंवाद

'संस्कृत साहित्य में आचार्य रामजी उपाध्याय का योगदान' विषय पर परिसंवाद
12 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

'मैं और मेरी कविता' विषय पर परिसंवाद
12 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

'असमिया साहित्य से विशेष रूप बर' में साहित्यिक अनुकूलन' विषय पर परिसंवाद
13 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

'कल और आज का बाल साहित्य' विषय पर परिसंवाद
15 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

'मैं और मेरी कविता' विषय पर परिसंवाद
15 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

'भारतीय नेपाली नाटक में परंपरा और प्रवृत्तियाँ' विषय पर परिसंवाद
16 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

'संताली भाषा में कालजयी साहित्य' विषय पर परिसंवाद
19 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

'मैथिली साहित्य में सीता' विषय पर परिसंवाद
20 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

'भारत पर शेख सादी के विचारों और कविता के प्रभाव' विषय पर परिसंवाद
21 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

'अन्ना भाऊ साठे साहित्य और व्यक्ति' विषय पर परिसंवाद
22 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

'गुजराती में ग़ज़ल : एक परिदृश्य' विषय पर परिसंवाद
27 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

'स्वतंत्रता पश्चात् बाङ्ला निबंध' विषय पर परिसंवाद
27 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

'राजस्थानी में साहित्यिक आलोचना : वर्तमान और भविष्य' विषय पर परिसंवाद
28 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

'कु.मा. बालसुब्रह्मण्यम का तमिऴ का लेखन' विषय पर परिसंवाद
29 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

'डोगरी साहित्य में सूफ़ीवाद' विषय पर परिसंवाद
30 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

'मीडिया और साहित्य' विषय पर परिसंवाद
12 मई 2021 (आभासी मंच)

'सिंधी साहित्य में लाल पुष्प, मोहन कल्पना, गुनो समतानी का योगदान' विषय पर परिसंवाद
13 मई 2021 (आभासी मंच)

'डिजिटल युग में कोंकणी साहित्य' विषय पर परिसंवाद
17 मई 2021 (आभासी मंच)

'डोगरी साहित्य में सामाजिक सरोकार' विषय पर परिसंवाद
19 मई 2021 (आभासी मंच)

'संस्कृत साहित्य में डॉ. भीमराव अंबेडकर का योगदान' विषय पर परिसंवाद
24 मई 2021 (आभासी मंच)

'हामिद दलवई के जीवन और कार्य' विषय पर परिसंवाद
25 मई 2021, (आभासी मंच)

'गुजराती बाल साहित्य' विषय पर परिसंवाद
27 मई 2021 (आभासी मंच)

'यदुनाथ झा 'यदुवर' ' विषय पर परिसंवाद
28 मई 2021 (आभासी मंच)

'कार्बी आंगलोंग ज़िले के विशेष संदर्भ में बर' की सामाजिक-आर्थिक स्थितियाँ' विषय पर परिसंवाद
31 मई 2021 (आभासी मंच)

'संताली साहित्य में प्रतिबिंबित विस्थापन' विषय पर परिसंवाद
11 जून 2021 (आभासी मंच)

'साहित्य, देशांतर और मैं' विषय पर परिसंवाद
11 जून 2021 (आभासी मंच)

'जनार्दन झा' पर परिसंवाद
14 जून 2021 (आभासी मंच)

'इतिहास और साहित्य' विषय पर परिसंवाद
21 जून 2021 (आभासी मंच)

'कुमार माईबी के कार्य' विषय पर परिसंवाद
25 जून 2021 (आभासी मंच)

'कुलेन्बरी साहित्य' पर परिसंवाद
24 जून 2021 (आभासी मंच)

तमिळ संदर्भ में साहित्यिक शैली के रूप में आत्मकथा की व्याख्या पर परिसंवाद
24 जून 2021 (आभासी मंच)

'कथेतर गद्य लेखन' विषय पर परिसंवाद
28 जून 2021 (आभासी मंच)

'भारतीय साहित्य पर मैथिली साहित्य का प्रभाव' विषय पर परिसंवाद
28 जून 2021 (आभासी मंच)

'भवप्रीतानंद ओझा' पर परिसंवाद
14 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत संस्कृत-I पुस्तकों की समीक्षा पर परिसंवाद
17 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

'तिवा कविता (बर') की वर्तमान स्थिति' विषय पर परिसंवाद
19 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

'संतों द्वारा सिंधी में साहित्य' विषय पर परिसंवाद
19 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

'भारतीय कहानी' विषय पर परिसंवाद
23 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

'कोंकणी साहित्य के अंग्रेज़ी अनुवाद' विषय पर परिसंवाद
23 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

'खवाईरकपम चाओबा के जीवन और कार्य' विषय पर परिसंवाद
26 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

'भारतीय भाषाओं में महिलाओं के लेखन' विषय पर परिसंवाद
30 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

'प्रख्यात संताली लेखक श्री टी.सी. बस्के' विषय पर परिसंवाद
04 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

'पंडित ओइनम भोगेश्वर सिंह के जीवन और कार्य' विषय पर परिसंवाद
16 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

'लोक से गौरव ग्रंथों तक द्वंद्व तथा समत्व' विषय पर परिसंवाद
21 अगस्त 2021 कुटारिमुंडा, खमार, अनुगुल

'सुनील गंगोपाध्याय' पर परिसंवाद
25 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

'हाशियामा रहेलुन साहित्य गुजराती' पर परिसंवाद
26 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

'संस्कृत साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए मिथिला का योगदान' विषय पर परिसंवाद
28 अगस्त 2021, दरभंगा, बिहार

'मैथिली साहित्य में राष्ट्रीय चेतना' विषय पर परिसंवाद
29 अगस्त 2021, मधेपुरा, बिहार

'तमिऴ में वेबलाइन साहित्य' विषय पर परिसंवाद
12 सितंबर 2021 (आभासी मंच)

'मैथिली में संरक्षण साहित्य' विषय पर परिसंवाद
15 सितंबर 2021 (आभासी मंच)

'संगम साहित्य में लोगों की संस्कृति और जीवन शैली तमिऴ' पर परिसंवाद
16 सितंबर 2021 (आभासी मंच)

'तमिऴ साहित्य में वी.ओ. चिदम्बरनर का योगदान' विषय पर परिसंवाद
22 सितंबर 2021 (आभासी मंच)

'झारग्राम में साधु रामचंद मुर्मू' पर परिसंवाद
26 सितंबर 2021, पश्चिम बंगाल

'एलांगबम दीनमणि के जीवन और कार्य विषय पर परिसंवाद
27 सितंबर 2021 (आभासी मंच)

'सिंधी साहित्य में लीलाराम रूपचंदाणी का योगदान' विषय पर परिसंवाद
28 सितंबर 2021 (आभासी मंच)

'प्रकृति लेखन और वन संरक्षण' पर परिसंवाद
01 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

'गाँधी और गुजराती साहित्य' पर परिसंवाद
01 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

'सिंधी साहित्य में श्री लखमीचंद प्रेम का योगदान' विषय पर परिसंवाद
05 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

'दररंगी लोक संस्कृति और लोक साहित्य' विषय पर परिसंवाद
08 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

'मणिपुरी संस्कृति की विशिष्टताओं' विषय पर परिसंवाद
20 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

'कोंकणी समुद्र साहित्य' विषय पर परिसंवाद
21 अक्तूबर 2021, गोवा

'ओडिशा लोक नाटक' विषय पर परिसंवाद
30 अक्तूबर 2021, रायगडा, ओडिशा

'मराठी में बोलियाँ' विषय पर परिसंवाद
30 अक्तूबर 2021, अमरावती, महाराष्ट्र

'जनजातीय ओडिशा में कहानी कहने की परंपरा' विषय पर परिसंवाद
31 अक्तूबर 2021, कोरापुट, ओडिशा

'मलयाळम् कहानी इतिहास, समय और प्रवृत्तियाँ' विषय पर परिसंवाद
01 नवंबर 2021, वायनाड, केरल

'मणिपुरी साहित्य में महिलाओं के दृष्टिकोण' विषय पर परिसंवाद
18 नवंबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात हिंदी लेखकों के साथ परिसंवाद
22 नवंबर 2021 (आभासी मंच)

'सुदेश लोटलीकर के जीवन और साहित्यिक कार्य' विषय पर परिसंवाद
23 नवंबर 2021, रामनाथ, पोंडा-गोवा

'आनंद शंकर दास' पर परिसंवाद
27 नवंबर 2021, बारीपदा, ओडिशा

'प्रकृति, साहित्य और पारिस्थितिक आलोचना' विषय पर परिसंवाद
27 नवंबर 2021, बरीपदा, ओडिशा

'ओड़िआ कहानी में जनजातीय चेतना' पर परिसंवाद
28 नवंबर 2021, सोरो, ओडिशा

ओड़िआ साहित्य में कानून (ओड़िआ साहित्यरे आइन चर्चा) की चर्चा पर परिसंवाद
04 दिसंबर 2021, राउरकेला

'देवरी भाषा और साहित्य' विषय पर परिसंवाद
12 दिसंबर 2021 गुवाहाटी

'राजस्थानी साहित्य में गाँधी' विषय पर परिसंवाद
21 नवंबर 2021, श्रीगंगानगर, राजस्थान

'मलयाळम् की भूमिका और प्रासंगिकता' पर परिसंवाद
10 दिसंबर 2021, कन्नूर, केरल

'मिशाल सुल्तानपुरी' पर परिसंवाद
12 दिसंबर 2021, बारामूला, जम्मू-कश्मीर

'डोगरी लोक साहित्य में साहित्यिक तत्व' विषय पर परिसंवाद
18 दिसंबर 2021, उधमपुर, जम्मू

'कार्बी अनुष्ठान साहित्य के महत्त्व' विषय पर परिसंवाद
09 जनवरी 2022, दीफू, असम

'सिंधी साहित्य में हसराम 'पिया' का योगदान' विषय पर परिसंवाद
04 फ़रवरी 2022 (आभासी मंच)

'मणिपुरी लोक साहित्य में परिलक्षित स्थानीय स्वास्थ्य परंपरा' विषय पर परिसंवाद
25 फ़रवरी 2022 (मणिपुरी)

'तमिळ उपन्यासों में उत्तर आधुनिकतावाद' विषय पर परिसंवाद
25 फ़रवरी 2022, द्रविड़ विश्वविद्यालय कुप्पम

'तेलंगाना उद्यम साहित्य' विषय पर परिसंवाद
09 मार्च 2022, सूबेदारी, वारंगल

'जनजातीय भाषा और संस्कृति (गोथरा भाषा)' विषय पर परिसंवाद
11 मार्च 2022, मनंतवाडी, वायनाड

'ज्ञानवान समाजों के माध्यम से केरल पुनर्जागरण की प्रगति' विषय पर परिसंवाद
12 मार्च 2022, कडप्पाक्कड़ा, कोल्लम, केरल

'बस्ती वामन शेनॉय के जीवन और कार्य' विषय पर परिसंवाद
19 मार्च 2022, मैंगलोर

'आनंदशंकर ध्रुव, बी.के. ठाकोर और यशवंतदोशी का गुजराती साहित्य में योगदान' विषय पर परिसंवाद
23 मार्च 2022 (आभासी मंच)

'तेलुगु दलित साहित्य' विषय पर परिसंवाद
26 मार्च 2022, सूबेदारी, वारंगल

'21वीं सदी की ओड़िआ आलोचना के तरीक़े और दृष्टिकोण' पर परिसंवाद
28 मार्च 2022, भुवनेश्वर

'दीवान सिंह' पर परिसंवाद
30 मार्च 2022 (आभासी मंच)

मेरे झरोखे से

प्रख्यात सिंधी लेखक श्री सुरेश बबनी ने प्रख्यात सिंधी लेखक (स्वर्गीय) श्री हरि हिमथानी के बारे में चर्चा की।
04 जून 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात कन्नड लेखक डॉ. एच. दंडप्पा ने प्रसिद्ध कन्नड लेखक वी. सीतारमैया के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
18 जून 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात मलयाळम् लेखक डॉ. के.एस. रविकुमार ने प्रख्यात मलयाळम् लेखक यू.ए. खादर के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
25 जून 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात मराठी लेखिका डॉ. लीना केदारे ने दिवंगत श्रीमती पुष्पा भावे, प्रसिद्ध मराठी लेखिका के जीवन और लेखन पर चर्चा की।
16 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात पंजाबी लेखक श्री आत्मजीत ने प्रख्यात पंजाबी नाटककार (स्वर्गीय) डॉ. अजमेर सिंह औलख के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
17 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात उर्दू लेखक सैयद मोहम्मद अशरफ़ ने प्रख्यात उर्दू लेखक काज़ी अब्दुस सत्तार के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
11 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात तेलुगु लेखक डॉ. राचापलेम चंद्रशेखर रेड्डी ने प्रख्यात तेलुगु लेखक सिंगमनेनी नारायण के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
26 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात मणिपुरी लेखक श्री सगोलसेम लांचेनबा मेतेई ने प्रसिद्ध मणिपुरी लेखक असंगबम मिनाकेतन सिंह की चुनिंदा रचनाओं पर चर्चा की।
06 सितंबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात हिंदी लेखक शेखर जोशी ने प्रख्यात हिंदी लेखक (स्वर्गीय) श्री अमृतराय के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
11 सितंबर 2021, नई दिल्ली

प्रख्यात कोंकणी लेखिका सुश्री अंजू सखरदांडे ने प्रख्यात कोंकणी लेखक (स्वर्गीय) श्री रामकृष्ण जुवरकर के बारे में चर्चा की।
16 सितंबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात कश्मीरी लेखक श्री ज़मीर अंसारी ने मशहूर कश्मीरी लेखक मंज़ूर हाशमी के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
11 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात कश्मीरी लेखक श्री आबिद अशरफ़ ने श्री गुलाम मोहम्मद गमगीन, प्रख्यात कश्मीरी लेखक के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
12 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात कश्मीरी लेखक श्री बृजनाथ बेताब ने प्रख्यात कश्मीरी लेखक श्री शंभू नाथ भट हलीम के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
21 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात कन्नड लेखक प्रो. डोड्डन्ना बजंत्री ने अनुभवी कन्नड लेखक सिम्पी लिंगन्ना के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
29 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात कश्मीरी लेखक श्री गुलज़ार अहमद राथर ने प्रख्यात कश्मीरी लेखक श्री सर्वानंद कौल प्रेमी के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
02 नवंबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात कश्मीरी लेखक श्री अब्दुल अहद हाजिनी ने प्रख्यात कश्मीरी लेखक श्री मोहम्मद अहसन के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
24 नवंबर 2021 (आभासी मंच)

प्रख्यात ओड़िआ लेखक के साथ श्री प्रदीप्त कुमार पांडा।
09 जनवरी 2022 (आभासी मंच)

प्रख्यात मलयाळम् लेखक श्री रवि वर्मा थंपुरन ने प्रख्यात मलयाळम् लेखक तकाषी शिवशंकर पिल्लई के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
28 जनवरी 2022 (आभासी मंच)

प्रख्यात मलयाळम् लेखक के साथ श्री मिनी प्रसाद।
13 फ़रवरी 2022 (आभासी मंच)

प्रख्यात कन्नड लेखक के साथ श्री सतीश कुलकर्णी
22 फ़रवरी 2022 (आभासी मंच)

प्रख्यात तेलुगु लेखक डॉ. नंदिनी सिद्दा रेड्डी ने पद्म विभूषण और प्रजाकवि 'कालोजी नारायण राव' के जीवन और लेखन पर चर्चा की।
03 मार्च 2022, वारंगल, तेलंगाना

प्रख्यात डोगरी लेखक डॉ. जतिंदर उधमपुरी ने प्रख्यात डोगरी लेखक तारा स्माइल पुरी के जीवन और लेखन पर चर्चा की।
05 मार्च 2022, जम्मू

अनुवाद कार्यशाला

बिकासित सत पुष्पा पर बाङ्ला-संताली अनुवाद कार्यशाला
02-03 सितंबर 2021

क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता में बुल्लेशाह पर बाङ्ला-पंजाबी अनुवाद कार्यशाला
20-22 दिसंबर 2021

तेलुगु-कश्मीरी अनुवाद कार्यशाला
28-29 दिसंबर 2021, नई दिल्ली

तमिळ से अंग्रेज़ी कहानियों की अनुवाद कार्यशाला
02-04 मार्च 2022, श्री एस.आर.एन.एम. कॉलेज

युवा साहिती

युवा साहिती
07 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

युवा कन्नड लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
08 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

युवा सिंधी लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
20 अप्रैल 2021 (आभासी मंच)

युवा संस्कृत लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
13 मई 2021 (आभासी मंच)

युवा डोगरी कवियों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
15 जून 2021 (आभासी मंच)

युवा ओड़िआ लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
18 जून 2021 (आभासी मंच)

युवा मराठी लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
22 जून 2021 (आभासी मंच)

युवा मैथिली कवियों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
09 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

युवा संस्कृत लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
10 जुलाई 2021 (आभासी मंच)

युवा मैथिली कवियों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
16 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

युवा मलयाळम् लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
17 अगस्त 2021 (आभासी मंच)

युवा संस्कृत कवियों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
17 सितंबर 2021 (आभासी मंच)

युवा नेपाली लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
27 सितंबर 2021 (आभासी मंच)

युवा मणिपुरी लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
04 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

युवा संताली लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
17 अक्तूबर 2022 (आभासी मंच)

युवा हिंदी लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
26 अक्तूबर 2021 (आभासी मंच)

युवा मलयाळम् लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
25 नवंबर 2021 (आभासी मंच)

युवा गुजराती लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
23 दिसंबर 2021 (आभासी मंच)

युवा तेलुगु लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम
27 दिसंबर 2021 (आभासी मंच)

दर्पण (साहित्य अकादेमी द्वारा निर्मित वृत्तचित्रों का प्रदर्शन)

ताराशंकर बंद्योपाध्याय (बाङ्ला)
23 अगस्त 2021, कोलकाता

सैयद अब्दुल मलिक (असमिया)
23 अगस्त 2021 कोलकाता

एम.के. बिनोदिनी देवी (मणिपुरी)
24 अगस्त 2021 कोलकाता

नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती (बाङ्ला)
24 अगस्त 2021 कोलकाता

शंख घोष (बाङ्ला)
25 अगस्त 2021 कोलकाता

जे.पी. दास (ओड़िआ)
25 अगस्त 2021 कोलकाता

ब्रजेंद्र कुमार ब्रह्म (बर')
26 अगस्त 2021 कोलकाता

मनोज दास (ओड़िआ)
26 अगस्त 2021 कोलकाता

रामपद चौधरी (बाङ्ला)
27 अगस्त 2021 कोलकाता

4 संताली लेखक (संताली)
28 अगस्त 2021 कोलकाता

प्रतिभा राय (ओड़िआ)
28 अगस्त 2021 कोलकाता

लक्ष्मी नंदन बोरा (असमिया)
29 अगस्त 2021 कोलकाता

बुद्धदेव बोस (बाङ्ला)
29 अगस्त 2021, कोलकाता

वर्ष 2021-2022 में आयोजित कार्यकारी मंडल, सामान्य परिषद्, वित्त समिति, क्षेत्रीय मंडलों तथा भाषा परामर्श मंडलों की बैठकें

कार्यकारी मंडल की बैठकें

तिथि	स्थान
18 सितंबर 2021	साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
30 दिसंबर 2021	साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
10 मार्च 2022	साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

सामान्य परिषद् की बैठकें

तिथि	स्थान
18 सितंबर 2021	साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
11 मार्च 2022	साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

वित्त समिति 2021-2022 की बैठकें

तिथि	स्थान
17 अगस्त 2021	आभासी मंच
04 मार्च 2022	आभासी मंच

क्षेत्रीय मंडलों की बैठकें

मंडल	तिथि	स्थान
पूर्वी क्षेत्रीय मंडल	2021-2022 में	कोई बैठक नहीं
पश्चिमी क्षेत्रीय मंडल	10 मार्च 2022	साहित्य अकादेमी, दिल्ली
उत्तरी क्षेत्रीय मंडल	2021-2022 में	कोई बैठक नहीं
दक्षिणी क्षेत्रीय मंडल	2021-2022 में	कोई बैठक नहीं

भाषा परामर्श मंडल की बैठकें

मंडल	तिथि	स्थान
असमिया	30 जनवरी 2022	गुवाहाटी
बाङ्ला	29 जनवरी 2022	कोलकाता
बर'	30 जनवरी 2022	गुवाहाटी
डोगरी	31 दिसंबर 2021	नई दिल्ली
अंग्रेज़ी	20 जनवरी 2022	आभासी मंच
गुजराती	26 फ़रवरी 2022	अहमदाबाद
हिंदी	31 दिसंबर 2021	नई दिल्ली
कन्नड	11 जनवरी 2022	आभासी मंच
कश्मीरी	17 फ़रवरी 2022	नई दिल्ली
कोंकणी	28 फ़रवरी 2022	मुंबई
मलयाळम्	16 जनवरी 2022	तिरुवनंतपुरम
मैथिली	22 जनवरी 2022	कोलकाता
मणिपुरी	03 मार्च 2022	कोलकाता
मराठी	17 फ़रवरी 2022	कोल्हापुर
नेपाली	03 मार्च 2022	कोलकाता
ओड़िआ	02 फ़रवरी 2022	भुवनेश्वर
पंजाबी	27 जनवरी 2022	आभासी मंच
राजस्थानी	17 जनवरी 2022	आभासी मंच
संस्कृत	09 मार्च 2022	नई दिल्ली
संताली	22 जनवरी 2022	कोलकाता
सिंधी	18 जनवरी 2022	आभासी मंच
तमिऴ	28 जनवरी 2022	चेन्नै
तेलुगु	09 जनवरी 2022	हैदराबाद
उर्दू	27 जनवरी 2022	आभासी मंच

अन्य क्षेत्रीय मंडलों की बैठकें

मंडल	तिथि	स्थान
साहित्य अकादेमी की फ़िल्म अभिलेख समिति	08 नवंबर 2021	नई दिल्ली और आभासी मंच
वाचिक तथा जनजातीय साहित्य का पूर्वोत्तर केंद्र	2021-2022 में कोई बैठक नहीं हुई	
अनुवाद के लिए केंद्र के लिए सलाहकार समिति	17 दिसंबर 2021	बेंगळूरु और आभासी मंच
वाचिक तथा जनजातीय साहित्य केंद्र	2021-2022 में कोई बैठक नहीं हुई	
भाषा विकास मंडल	08 नवंबर 2021	नई दिल्ली और आभासी मंच

पुस्तक प्रदर्शनियाँ/मेले

पुस्तक मेलों एवं पुस्तक प्रदर्शनियों की सूची आयोजन एवं सहभागिता : 2021-2022

प्रधान कार्यालय

क्र.सं.	पुस्तक प्रदर्शनी/पुस्तक मेले का विवरण	तिथि
1.	सुब्रह्मण्यम भारती की पुस्तक प्रदर्शनी आईजीएनसीए, जनपथ, नई दिल्ली में भाग लिया।	06 अगस्त 2021
2.	तमिळ तथा अन्य भारतीय भाषाओं में उनकी अनूदित पुस्तकों की प्रदर्शनी।	18-24 अगस्त 2021
3.	श्री अरबिंदो पर पुस्तक प्रदर्शनी, आईजीएनसीए, जनपथ, नई दिल्ली में भाग लिया।	25 अगस्त से 7 सितंबर 2021
4.	हिंदी पुस्तकों की पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली	13-21 सितंबर 2021
5.	आभासी दिल्ली पुस्तक मेले में भाग लिया।	03-05 सितंबर 2021
6.	आभासी मेगा बुक फेयर-V (डीओई) (2021-22) में भाग लिया।	सितंबर 2021
7.	राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह के दौरान प्रदर्शनी का रवीन्द्र भवन, प्रथम तल पर आयोजन।	16-22 नवंबर 2021
8.	'22 आज़मगढ़ पुस्तक मेला' में भाग लिया जिसे शुरुआत समिति, हरियाणा ने शिवली नेशनल कॉलेज में आयोजित किया।	17-23 नवंबर 2021
9.	शुरुआत समिति, हरियाणा द्वारा आयोजित तीसरे मऊ पुस्तक मेले में भाग लिया।	24-28 नवंबर 2021
10.	अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के उपलक्ष्य में गृह मंत्रालय द्वारा थियेटर सुविधा केंद्र, वाराणसी में आयोजित प्रदर्शनी में भाग लिया।	13-14 नवंबर 2021
11.	संस्कृति मंत्रालय द्वारा रुद्राक्ष इंटरनेशनल कॉपरेशन एंड कन्वेंशन सेंट्रल, वाराणसी में आयोजित।	16-18 नवम्बर 2021
12.	अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव के अवसर पर, कुरुक्षेत्र में आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी में भाग लिया।	09-14 नवंबर 2021
13.	राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा आयोजित अमृतसर पुस्तक मेला, खालसा कॉलेज, अमृतसर में भाग लिया।	05-13 मार्च 2022

14.	नई दिल्ली, रवीन्द्र भवन में साहित्योत्सव के दौरान प्रदर्शनी का आयोजन।	10-15 मार्च 2022
15.	ग़ालिब संस्थान में उर्दू पुस्तक मेला, नई दिल्ली में भाग लिया।	11-13 मार्च 2022
16.	आईजीएनसीए, नई दिल्ली पुस्तक प्रदर्शनी में भाग लिया।	25-27 मार्च 2022
17.	नेहा बंसल की पुस्तक *हर स्टोरी* का लोकार्पण/ पुस्तक प्रदर्शनी।	29 मार्च 2022

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु

क्र.सं.	पुस्तक प्रदर्शनी/पुस्तक मेले का विवरण	तिथि
1.	अखिल भारतीय कविता महोत्सव के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' तथा महात्मा गाँधी जयंती के अवसर पर जैन कॉलेज, बेंगळूरु में भाग लिया।	02 अक्तूबर 2021
2.	युवा पुरस्कार 2020 अर्पण समारोह एवं लेखक सम्मिलन के दौरान विद्या भवन, बेंगळूरु में पुस्तक प्रदर्शनी।	17-18 अक्तूबर 2021
3.	कन्नड पुस्तक प्राधिकरण द्वारा रवींद्र कलाक्षेत्र, बेंगळूरु में आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी में पुस्तकों की बिक्री पर विशेष छूट।	01-02 नवंबर 2021
4.	राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह के अवसर पर मल्लेश्वर, बेंगळूरु में साहित्य अकादेमी पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन।	14-21 नवंबर 2021
5.	भारतीय विद्या भवन, बेंगळूरु के सहयोग से साहित्य अकादेमी वृत्तचित्र प्रदर्शन के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी (आज़ादी का अमृत महोत्सव के अवसर पर कन्नड राज्योत्सव) भारतीय विद्या भवन, बेंगळूरु में आयोजित।	27-28 नवंबर 2021
6.	34वें हैदराबाद पुस्तक मेले के दौरान, एनटीआर स्टेडियम, हैदराबाद में पुस्तक प्रदर्शनी में भाग लिया।	18-27 दिसंबर 2021
7.	साहित्य मंच : *पर्व* पुस्तक पर चर्चा (एस.एल. भैरप्पा कृत कन्नड गौरव ग्रंथ का मलयाळम् अनुवाद) के दौरान कइराली कला समिति विमानपुरा, बेंगळूरु में पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन।	19 दिसंबर 2021
8.	32वाँ विजयवाड़ा पुस्तक उत्सव, सातवाहन कॉलेज ग्राउंड, चुट्टुगुंटा, भीमावरम, आंध्र प्रदेश में भाग लिया।	01-11 जनवरी 2022
9.	वैश्विक तेलुगु सम्मेलन-2022, वेस्ट बेरी हाई स्कूल ग्राउंड, भीमावरम, आंध्र प्रदेश में भाग लिया।	06-08 जनवरी 2022
10.	कन्नड पुस्तक प्राधिकरण द्वारा मैसूर महाराजा कॉलेज ग्राउंड्स, मैसूर में आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी में भाग लिया।	10-15 मार्च 2022

क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

क्र.सं.	पुस्तक प्रदर्शनी/पुस्तक मेले का विवरण	तिथि
1.	थी. जानकी रामन की जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी के अवसर पर साहित्य अकादेमी द्वारा पेरियर विश्वविद्यालय, सालेम में साहित्य अकादेमी पुस्तकों की प्रदर्शनी तथा पुस्तकों की ब्रिकी।	5-6 अक्तूबर 2021
2.	उप-क्षेत्रीय कार्यालय में राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन।	14-21 नवंबर 2021
3.	सोमालया की जन्म शतवार्षिकी परिसंवाद के अवसर पर साहित्य अकादेमी द्वारा श्री एस.आर.एन.एम. कॉलेज सात्तुर में साहित्य अकादेमी की पुस्तकों की प्रदर्शनी तथा पुस्तकों की बिक्री।	25 नवंबर 2021
4.	नकुलन की जन्म शतवार्षिकी परिसंवाद के अवसर पर साहित्य अकादेमी द्वारा इधाया कॉलेज फ़ॉर वूमेन, कुंभकोणम में साहित्य अकादेमी की पुस्तकों की प्रदर्शनी तथा पुस्तकों की बिक्री।	29 नवंबर 2021
5.	पुदुचेरी पुस्तक मेला।	17-26 दिसंबर 2021
6.	चेन्नै पुस्तक मेला।	16 फ़रवरी से 06 मार्च 2022 तक
7.	नेल्लई - पोरुनई पुस्तक मेला।	18-27 मार्च 2022

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता

क्र.सं.	पुस्तक प्रदर्शनी/पुस्तक मेले का विवरण	तिथि
1.	साधु रामचंद्र मुर्मू पर आयोजित संगोष्ठी के दौरान संताली पुस्तक प्रदर्शनी।	26 सितंबर 2021
2.	राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह समारोह के अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता में पुस्तक पुदर्शनी।	15-21 नवंबर 2021
3.	कटक पुस्तक प्रदर्शनी।	20-24 नवंबर 2021
4.	क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता में पुस्तक प्रदर्शनी सत्यजीत राय जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन।	25-26 नवंबर 2021
5.	असम पुस्तक मेला 2021, गुवाहाटी।	29 दिसंबर 2021 से 09 जनवरी 2022 तक
6.	अखिल भारतीय उर्दू पुस्तक मेला, कोलकाता।	17-27 फ़रवरी 2022
7.	लघु पत्रिका मेला, नंदन परिसर।	21-27 फ़रवरी 2022

8.	अंतरराष्ट्रीय कोलकाता पुस्तक मेला, साल्टलेक, कोलकाता।	28 फ़रवरी से 13 मार्च 2022 तक
9.	36वाँ कलिम्पोंग (2022) ज़िला पुस्तक मेला।	22-26 मार्च 2022
10.	26वाँ दार्जीलिंग ज़िला पुस्तक मेला सुकना, दार्जीलिंग।	28 मार्च -01 अप्रैल 2022
11.	मणिपुर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित पुस्तक मेले में नेकोल, इंफ़ाल ने भाग लिया।	21-30 नवंबर 2021
12.	बाल साहित्य पुरस्कार के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन।	14-15 नवंबर 2022
13.	राधानाथ रथ जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी।	25 दिसंबर 2022
14.	रामचंद्र मिश्र जन्म शतवार्षिकी सम्मेलन के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी।	26 दिसंबर 2022

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई

क्र.सं.	पुस्तक प्रदर्शनी/पुस्तक मेले का विवरण	तिथि
1.	साहित्य और भारत छोड़ो आंदोलन संगोष्ठी के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी।	8-9 अगस्त 2021
2.	दर्पण-वृत्तचित्र प्रदर्शन एवं पुस्तक प्रदर्शनी, मुंबई।	23-27 अगस्त 2021
3.	हिंदी पखवाड़ा (14-27 सितंबर 2021), ठाणे।	16-17 सितंबर 2021
4.	राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह, मुंबई।	14-20 नवंबर 2021
5.	यथा कथा अंतरराष्ट्रीय फ़िल्म और साहित्य महोत्सव, मुंबई।	25-28 नवंबर 2021
6.	स्वतंत्रता के बाद मराठी उपन्यास में शैलीगत परिवर्तन विषय पर आयोजित संगोष्ठी के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी, नासिक।	27-28 नवंबर 2021
7.	94वाँ अखिल भारतीय मराठी साहित्य सम्मेलन, नासिक।	3-5 दिसंबर 2021
8.	24वाँ अखिल भारतीय उर्दू पुस्तक मेला, मालेगाँव।	18-26 दिसंबर 2021
9.	'कोल्हापुर में जीवन और कार्य' संगोष्ठी के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी।	17-18 फ़रवरी 2022
10.	'विस्थापितों का साहित्य' विषय पर मुंबई में आयोजित संगोष्ठी के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी।	15-16 मार्च 2022

1 अप्रैल 2021 से 31 मार्च 2022 तक प्रकाशित पुस्तकें

असमिया

बागा लेफाफा
(*सदा खाम* पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास)
ले. मोती नंदी
अनु. दिलीप राजबोंगशी
पृ. 118, रु.160/-
ISBN : 978-93-90866-68-7

असमिया गद्य साहित्य : जोनाकिर पोरा जयंती
संपा. कार्बी डेका हाज़रिका और सत्यकाम बरठाकुर
पृ.182, रु.250/-
ISBN : 978-93-89778-00-7

कोन्हुवा
(पुरस्कृत संस्कृत कहानी-संग्रह *इक्षुगंधा*)
ले. अभिराज राजेंद्र मिश्र
अनु. दीपक कुमार शर्मा
पृ. 68, रु. 110/-
ISBN : 978-93-91494-10-0

अर्धशताब्दीर ओडिशा अरु तत मोर स्थान (पुरस्कृत ओड़िआ आत्मकथा अर्धशताब्दी ओडिसा ओ तन्हिरे मो स्थान)
ले. गोदावरीश मिश्र
अनु. थानेश्वर कलिता
पृ.176, रु.200/-
ISBN : 978-93-5548-156-6
(पुनर्मुद्रण)

असमिया गीत अरु गीतिकविता
(संगोष्ठी पत्रों का संकलन)
संपा. कार्बी डेका हाज़रिका
पृ.224, रु.240/-
ISBN : 978-81-260-3098-9

बाङ्ला

कविता सिन्हा (बाङ्ला में विनिबंध)
ले. शंपा चौधरी
पृ.122, पहला संस्करण : 2021
रु.50/-
ISBN : 978-93-89778-82-3

सोनार पाखी (*सुन्ने दी चिड़ी*, पुरस्कृत डोगरी कहानी-संग्रह)
ले. ओम गोस्वामी
अनु. श्यामल भट्टाचार्य
पृ.178, पहला संस्करण : 2021
रु.230/-
ISBN : 978-93-90310-34-0

नतुन पृथ्वी (*ए न्यू वर्ल्ड*, पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास)
ले. अमित चौधरी, अनु. उज्ज्वल जन
पृ.142, पहला संस्करण : 2021
रु.230/-
ISBN : 978-93-90866-83-0

कथा रत्नाकर (*कथा रत्नाकर*, पुरस्कृत असमिया उपन्यास)
ले. ध्रुब ज्योति बर'
अनु. प्रशांत चक्रवर्ती
पृ.410, पहला संस्करण : 2021
रु.510/-
ISBN : 978-93-90866-59-5

जटायु
(*जटायु*, पुरस्कृत गुजराती कविता-संग्रह)
ले. सितांशु यशश्चंद्र
अनु. सुतापा चौधुरी
पृ.134, पहला संस्करणः 2021
रु.170/-
ISBN : 978-93-91017-43-9

चासो : निर्वाचिता छोटोगल्प
(*चासो* : चयनित कहानियाँ, तेलुगु)
ले. चांगटि सोमयाजुलु
अनु. रामकुमार मुखोपाध्याय
पृ.152, पहला संस्करण : 2021
रु. 210/-
ISBN : 978-93-91494-02-5

विनायक
(*विनायक*, पुरस्कृत हिंदी उपन्यास)
ले. रमेश चंद्र शाह
अनु. श्रावस्ती रॉय
पृ.238, पहला संस्करण : 2021
रु.230
ISBN : 978-93-5548-052-1

इडियट : खंड 1
(*इडियट* : रूसी कालजयी कृति)
ले. फ़्योदोर दोस्तोयेव्स्की
अनु. अरुण सोम
पृ.454, दूसरा संस्करणः 2021
रु.420/-
ISBN : 978-93-87567-68-9

इडियट : खंड 2 (*इडियट*, रूसी कालजयी कृति)
ले. फ्योडदोर दोस्तोयेव्स्की
अनु. अरुण सोम
पृ.392, दूसरा संस्करण : 2021
रु.370/-
ISBN : 978-93-87567-69-6

भील महाभारत (*भीलों का भारत*, हिंदी आदिवासी साहित्य)
ले. भगवानदास पटेल
अनु. जया मित्र
पृ.196, दूसरा संस्करण : 2021
रु.210/-
ISBN : 978-93-88468-12-1

चिंगरी (*चेम्मेन*, पुरस्कृत मलयाळम् उपन्यास)
ले. तकषि़ शिवशंकर पिल्लै
अनु. बोम्मन विश्वनाथम और नीलिना अब्राह्म
पृ.256, आठवाँ संस्करण : 2021
रु.200/-
ISBN : 978-81-260-2658-6

कर्माज़व भायेरा : खंड 1 (*ब्रात्या कर्माज़ोवी*, रूसी कालजयी कृति)
ले. फ़्योडोर दोस्तोयेव्स्की
अनु. अरुण सोम
पृ.492, दूसरा संस्करण : 2021
रु.580/-
ISBN : 978-93-89778-41-0

कर्माज़व भायेरा : खंड 2 (*ब्रात्या कर्माज़ोवी*, रूसी कालजयी कृति)
ले. फ़्योदोर दोस्तोयेव्स्की
अनु. अरुण सोम
पृ.650, दूसरा संस्करण : 2021
रु.710/-
ISBN : 978-93-89778-40-3

बाङ्ला गल्प संकलन : खंड I (बाङ्ला कहानियाँ)
संक. एवं संपा. असित कुमार बंद्योपाध्याय और अजीत कुमार घोष
पृ.244, आठवाँ संस्करण : 2021
रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-2655-5

बाङ्ला गल्प संकलन : खंड IV (बाङ्ला कहानियाँ)
संक. एवं संपा. सुनील गंगोपाध्याय
पृ.424, पाँचवाँ संस्करण : 2021
रु.300/-
ISBN : 978-81-260-2726-2

दस्तंबू (*दस्तंबू*, उर्दू - संस्मरण)
ले. मिर्ज़ा असदुल्ला खान ग़ालिब
अनु. पुष्पितो मुखोपाध्याय
पृ.44, दूसरा संस्करण : 2021 रु.100/-
ISBN : 978-81-260-2912-9

उनीश बीघा दुई कथा (*छ मन अथा गुंठा*, ओड़िआ उपन्यास)
ले. फकीर मोहन सेनापति
अनु. मैत्री शुक्ला
पृ.126, छठा संस्करण : 2021
रु.160/-
ISBN : 978-81-260-1753-9

चैतन्यचरितमृत
(बाङ्ला जीवनी कालजयी कृति)
ले. कृष्णदास कविराजी
संक. एवं संपा. सुकुमार सेन
पृ.276, आठवाँ संस्करण : 2021
रु.350/-
ISBN : 978-81-260-2721-7
(पुनर्मुद्रण)

चौतन्य भागबती
(बाङ्ला-मध्यकालीन कालजयी कृति)
ले. वृंदाबन दास
संक. एवं संपा. सुकुमार सेन
पृ.342, सातवाँ संस्करण : 2021
रु.350/-
ISBN : 978-81-260-1769-0

अद्वैत मल्लबर्मन (बाङ्ला विनिबंध)
ले. अचिंत्य बिस्वास
पृ.72, रु.50/-
ISBN : 978-81-260-4515-0

काज़ी नज़रूल इस्लाम
(बाङ्ला विनिबंध)
ले. गोपाल हलदर
अनु. शिवप्रसाद समद्दार
पृ.88, रु.50/-
ISBN : 978-81-260-0847-6

असमिया साहित्येर इतिहास (अंग्रेज़ी, साहित्य का इतिहास)
ले. बिरंचि कुमार बरुआ
अनु. सुधांशुमोहन बंद्योपाध्याय
पृ.242, रु.220/-
ISBN : 978-81-260-4512-9

राहुल सांकृत्यायन (अंग्रेज़ी विनिबंध)
ले. प्रभाकर माचवे
अनु. स्नेहलता चट्टोपाध्याय
पृ.68, रु.50/-
ISBN : 978-81-260-5018-5

बर'

संतनुफ्लनीं फिसाजला
(पुरस्कृत असमिया उपन्यास, *शांतनुकुलनंदन*)
ले. पूरबी बोरमुदोई
अनु. अंबिकागिरी हाज़ोवरी
पृ.304, रु.330/-
ISBN : 978-93-89778-60-1

गुबुन सासे (पुरस्कृत असमिया कविता-संग्रह, *अन्या एकजन*)
ले. हरेकृष्ण डेका, अनु. रायरूब ब्रह्म
पृ.80, रु.120/-
ISBN : 978-93-89778-14-4

अनुवाद केंद्र

अमरूशताक
(*अमरु शतकम्* संस्कृत कविता)
ले. अमरुक, अनु. के. वी. रामप्रसाद
पृ.136, रु.175/-
ISBN : 978-93-91494-37-7

कन्नड साहित्य-ग्यारहवीं शताब्दी से उन्नीसवीं शताब्दी तक : रीडर
(मध्यकालीन कन्नड साहित्य : रीडर) (अंग्रेज़ी)
संपा. एवं अनु. रविचंद्र पी. चित्तमपल्लै और एम.जी. हेगड़े
पृ.256, रु.450/-
ISBN : 978-93-91017-68-2

एडोरेशन ऑफ़ द एंशियंट : टेल्स फ्रॉम वद्दर्थना
(शिवकोटिचार्य द्वारा लिखित *वद्दर्थन कथालोक*) (अंग्रेज़ी)
संपा. आर. एल. अनंतरामैया
अनु. एस. कोमलेश एवं रविचंद्र पी. चित्तमपल्लै
पृ.236, रु.230/-
ISBN : 978-93-55478-191-7

विद्यापतिय गीतेगलु
(विद्यापति के प्रेम गीत) (कन्नड)
संपा. डब्ल्यू. जी. आर्चर
अनु. ओ.एल. नागभूषण स्वामी
पृ.140, रु.175/-
ISBN : 978-93-91494-73-5

कलायुदे अनुभूति
(कला अनुभव पर अंग्रेज़ी में निबंध)
ले. एम. हिरियाना, अनु. सी. राजेंद्रन
पृ. 132, रु.150/-
ISBN : 978-93-91494-65-0

कोलिट

पहाड़िया ओरल ट्रेडिशन
संक. एवं संपा. महेंद्र कुमार मिश्र
पृ.172, पहला संस्करण : 2021, रु.150/-
ISBN : 978-93-89778-73-1

ट्राइबल लिटरेचर एंड ओरल एक्सप्रेशन इन इंडिया
संपा. प्रेम कुमारी श्रीवास्तव
पृ.216, पहला संस्करण : 2021
रु.225/-
ISBN : 978-93-90866-38-0

डोगरी

सिरी संपिगे
(पुरस्कृत कन्नड नाटक)
ले. चंद्रशेखर कंबार
अनु. रजनीश कुमार
पृ. 72, पहला संस्करण : 2021
रु. 100/-
ISBN : 978-93-90866-95-3

पुरई दी निहाले (पुरस्कृत उर्दू कहानियाँ)
ले. सैयद मुहम्मद अशरफ़
अनु. चुन्नी लाल शर्मा
पृ.176, पहला संस्करण : 2021
रु.225/-
ISBN : 978-93-90866-87-8

मानव ज़मीन
(पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास)
ले. शीर्षेंदु मुखोपाध्याय
अनु. सुनीता भड़वाल
पृ.796, पहला संस्करण : 2021
रु.980/-
ISBN : 978-93-90866-35-9

गोगा राम 'साथी' (डोगरी विनिबंध)
ले. अशोक कुमार खजूरिया
पृ.132, पहला संस्करण : 2021
रु.50/-
ISBN : 978-93-91017-54-5

गुरु गोबिंद सिंह (डोगरी विनिबंध)
ले. चंद्र मोहन सुनेजा
अनु. अर्चना केसरी
पृ.102, पहला संस्करण : 2021
रु.50/-
ISBN : 978-93-91017-85-9

पत्तर पिघलाने दी घड़ी
(पुरस्कृत कन्नड कहानियाँ)
ले. पी. लंकेश, अनु. ध्यान सिंह
पृ.140, पहला संस्करण : 2021
रु.200/-
ISBN : 978-93-91017-92-7

लूना (पुरस्कृत पंजाबी पद्य नाटक)
ले. शिव कुमार बटालवी
अनु. राज मनावरी
पृ.214, पहला संस्करण : 2021
रु.180/-
ISBN : 978-93-5548-119-1

पूर्वी क्षेत्रीय मंडल

मैथिली

शाश्वत विवेकानंद : एक संकलन (*द पेरेनियल विवेकानंद : ए सिलेक्शन इन इंग्लिश*)
चयन : स्वामी लोकेश्वरानंद
अनु. अरुण कुमार झा
पृ.312, रु.800/-
ISBN : 978-93-91017-76-7

ओड़िआ

मैथिली कथा : शताब्दी संचयन
(मैथिली कथा संचयन)
संपा. रामदेव झा और इंद्रकांत झा
अनु. उदय नाथ झा 'अशोक'
पृ.462, रु.360/-
ISBN : 978-93-91494-86-5

अंग्रेज़ी

ब्लोज़ ऑफ़ डेस्टिनी
(*घनाघई नियतिचे* पुरस्कृत कोंकणी उपन्यास)
ले. अशोक कामत
अनु. रमेश शंखवलकर
पृ.392, रु.400/-
ISBN : 978-93-5548-190-0

जयभिख्खु
ले. संध्या भट्ट
पृ.120, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-051-4

सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम : रीडर
(अंग्रेज़ी अनुवाद)
संपा : इंद्रन राजेंद्रन
पृ.250, रु.530/-
ISBN : 978-93-9086-12-0
(हार्ड बाउंड संस्करण)

द बैस्टियन (पुरस्कृत तमिऴ उपन्यास)
ले. वेंकटेशन
अनु. पट्टू एम. भूपति
पृ.960, रु.650/-
ISBN : 978-93-91017-38-5

अशोकमित्रन (विनिबंध)
ले. सा. कंदासामी
अंग्रेज़ी में अनुवाद. के. दक्षिणामूर्ति
पृ.80, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-145-0

ता.रा.सु. (विनिबंध)
ले. एम. एस. पाटिल
अनु. सी. नागन्ना
पृ.132, रु.50/-
ISBN : 978-93-91017-25-5

जतरा (तेलुगु उपन्यास- *गौरव ग्रंथ*)
ले. बोया जंगैया, अनु. के. दामोदर राव
पृ.96, रु.125/-
ISBN : 978-93-91017-60-6

आर. नरेंद्र प्रसाद (विनिबंध)
ले. पी. शिव प्रसाद
अनु. एन. एम. बाबू
पृ.58, रु.50/-
ISBN : 978-93-91494-36-0

उन्नीकृष्णन पुथुर (विनिबंध)
ले. टी. बालकृष्णन
अनु. के.एम. शेरिफ
पृ.56, रु.50/-
ISBN : 978-93-91494-70-4

मयरियाद-विंग्ड बर्ड एंड अदर पोएम्स
(अडूरि सत्यवती देवी की चयनित तेलुगु कविताओं का संकलन)
अनु. के. दामोदर राव
पृ.92, रु.125/-
ISBN : 978-93-91494-68-1

पेद्दीभोटला सुब्बारामैया
(पुरस्कृत तेलुगु कहानियाँ *पेद्दीभोटला सुब्बारामैया कथालु-खंड-1*)
ले. पेद्दीभोटला सुब्बारमैया,
अनु. नरेश अन्नेम
पृ.424, रु.350/-
ISBN : 978-93-5548

बदुकु (पुरस्कृत कन्नड उपन्यास *बदुकु*)
ले. गीता नागभूषण, अनु. कुसुम तंत्री
पृ. 648, रु. 500/-
ISBN : 978-93-5548-067-5

नलपत बालमणि अम्मा (विनिबंध)
ले. और अनु. : सुलोचना नलपति
पृ. 192, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-059-0

एन. कृष्णा पिल्लई (विनिबंध)
ले. एषुमत्तूर राजा राज वर्मा
अनु. के.एम. अजीर कुट्टी
पृ. 104, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-192-4

द आर्टिस्ट ऑफ़ द ब्रिक क्लिन
(पुरस्कृत ओड़िआ कहानियाँ, *इटाभाटीर शिल्पी*)
ले. गायत्री सराफ़, अनु. मनोरंजन मिश्र
पृ.168, रु.200/-
ISBN : 978-93-91017-03-3

द सीट ऑफ़ पॉवर (पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास *बिरसन*)
ले. सुब्रत मुखोपाध्याय
अनु. नवमालती चक्रवर्ती
पृ.240, रु.280/-
ISBN : 978-93-5548-071-2

स्वदेश माय मदरलैंड (पुरस्कृत नेपाली उपन्यास, जन्मभूमि मेरो स्वदेस)
ले. गीता उपाध्याय, अनु. सरिता शर्मा
पृ.252, रु.250/-
ISBN : 978-93-91017-08-8

इनर वॉइस (पुरस्कृत कोंकणी पोयम्स, *अंतर्नाद*)
ले. शरतचंद्र शेणै
अनु. प्रतिमा आशेर
पृ. 92, रु.125/-
ISBN : 978-93-91494-54-4

ब्लेंक पेपर्स ब्लेंक पाल्म्स
(पुरस्कृत डोगरी पोयम्स, *कोरे काकल कोरियन तालियन*)
ले. दर्शन दर्शी
अनु. सुमन के. शर्मा
पृ.108, रु.150/-
ISBN : 978-93-5548-099-6

मेडिटेशन (पुरस्कृत कश्मीरी निबंध, *प्रतिबिंब*)
ले. मोहम्मद ज़मां आज़ुर्दा
अनु. तारिका प्रभाकर
पृ.104, रु.130/-
ISBN : 978-93-91494-18-6

गुरु नानक : ए रीडर
संपा. तेजवंत सिंह गिल
पृ. 260, रु.350/-
ISBN : 978-93-89467-51-2

सीताकांत महापात्र : ए रीडर
संपा. भगवान जयसिंह
पृ.320, रु.450/-
ISBN : 978-93-91017-21-7

सर्वानंद कौल प्रेमी (कश्मीरी विनिबंध)
ले. रतन लाल शांत
अनु. माखन लाल पंडिता
पृ.72, रु.50/-
ISBN : 978-93-91017-02-6

अब्दुल रहीम आमा (कश्मीरी विनिबंध)
ले. मरग़ूब बानिहाली
अनु. मोहम्मद ज़ाहिद
पृ.72, रु.50/-
ISBN : 978-93-91017-01-9

रहीम सीब सोपोरी (कश्मीरी विनिबंध)
ले. एम. अमीन शाकीब
अनु. आबिद अहमद
पृ.88, रु.50/-
ISBN : 978-93-91494-61-2

मीर ग़ुलाम रसूल नाज़की (कश्मीरी विनिबंध)
ले. अज़ीज़ हाजिनी
अनु. ले. एज़ाज़ मोहम्मद शेख
पृ.76, रु.50/-
ISBN : 978-93-91494-60-5

हरिभक्त कटुवल (नेपाली विनिबंध)
ले. जीवन नामदुंग
अनु. मोनिका राणा
पृ.88, रु.50/-
ISBN : 978-93-91494-47-6

थ्री प्ले बॉय प्रपंजन (तमिऴ नाटक)
अनु. पी. राजा
पृ.80, रु.125/-
ISBN : 978-93-90866-54-0

अब्बई (तमिऴ नाटक)
ले. इंकलाब, अनु. ए. मंगै
पृ.136, रु.190/-
ISBN : 978-93-5548-079-8

इन्स एंड आउट्स ऑफ़ इंडियन थियेटर
(एंथोलॉजी ऑफ़ एस्से ऑन कंटम्परेरी इंडियन थियेटर, संगोष्ठी पत्र)
संपा. एच.एस. शिवप्रकाश
पृ.208, रु.200/-
ISBN : 978-93-90866-07-6

सेलिब्रेटिंग द सिटी : कोलकाता इन इंडियन लिटरेचर (परिसंवाद पत्र)
संपा. सायंतन दासगुप्ता
पृ.280, रु.270/-
ISBN : 978-93-5548-111-5

प्लेज़ फ्रॉम अ फ्रेक्चर्ड लैंड (पंजाब विभाजन पर नाटकों का अनुवाद)
संपा. आतमजीत, अनु. अमीना ज़ेड चीमा, राणा नायर, स्वराज राज और विवेक सचदेवा
पृ. 360, रु.325/-
ISBN : 978-93-90866-46-5

जटायु एंड अदर पोएम्स
(गुजराती कविताएँ)
ले. और अनु. सितांशु यशश्चंद्र
पृ.204, रु.215/-
ISBN : 978-93-91494-84-1

द अनरीचेबल (ओड़िआ उपन्यास, *अपहांचा*)
ले. गोपीनाथ मोहंती
अनु. अनुजा खटुआ
पृ.72, रु.125/-
ISBN : 978-93-91494-52-0

सिलेक्टेड पोएम्स ऑफ़ शाह लतीफ़
(सिंधी कविताएँ)
अनु. लाखी एन. परयानी
पृ.140, रु.150/-
ISBN : 978-93-91494-85-8

नीलावन (तमिऴ उपन्यास)
ले. सा. कंदासामी
अनु. लता रामकृष्णन
पृ.172, रु.200/-
ISBN : 978-93-91494-53-7

आचार्यचूड़ामणि ऑफ़ शक्तिभद्र
(संस्कृत नाटक)
अनु. एस. रंगनाथ
पृ.88, रु.125/-
ISBN : 978-93-91494-23-0

ब्लॉसम ऑफ़ हार्मनी
(50 सिलेक्टेड असमिया लिरिक्स ऑफ़ भूपेन हाज़रिका)
अनु. कृष्णा दुलाल बरुआ
पृ.80, रु.125/-
ISBN : 978-93-91494-59-9

एपोकल वॉयस (अ कंपेरिजन ऑफ़ द लिव्स एंड राइटिंग्स ऑफ़ देवकोटा एंड निराला)
ले. मुरारी मधुसूदन ठाकुर
पृ.420, रु.350/-
ISBN : 978-93-5548-094-1

तीनी-वीनी बैलून एंड अदर स्टोरीज़
(इलस्ट्रेटेड चिल्ड्रन्स ओड़िआ स्टोरीज़)
ले. डैश बेनहर, अनु. बिक्रम के. दास
पृ.48, रु.100/-
ISBN : 978-93-90866-70-0

द वर्लपूल ऑफ़ रीडल्स्
(नवोदय योजना के अंतर्गत)
(अंग्रेज़ी कविता-संग्रह)
ले. नकुल कुंद्रा
पृ.112, रु.150/-
ISBN : 978-93-90866-78-6

ऑफ़ गॉडेसेस एंड वुमन (अंग्रेज़ी कविता-संग्रह)
(नवोदय योजना के अंतर्गत)
ले. श्वेता राव गर्ग
पृ.96, रु.125/-
ISBN : 978-93-91494-63-6

रिफ़्लेक्शन ऑन द एवोलूशनए ऑफ़ कश्मीरी लैंग्वेज एंड कल्चर (पुरस्कृत कश्मीरी निबंध, *मक़ालात*)
ले. मोहिउद्दीन हाजिनी
अनु. अमीन फ़याज़ी
पृ.184, रु.200/-
ISBN : 978-93-5548-357-7

मानसून : ए पोएम ऑफ़ लव एंड लोंगिंग (अंग्रेज़ी कविता)
ले. अभय के.
पृ. 68, रु.110/-
ISBN : 978-93-5548-280-8

इंडियन फ़ोक नैरेटिव्स (अनुवाद कार्यशाला सामग्री)
बाङ्ला में संकलन एवं
संपा. : रामकुमार मुखोपाध्याय
अंग्रेज़ी में संपा. संजुक्ता दासगुप्ता
पृ.759, रु.670/-
ISBN : 978-93-5548-112-2

एम.के. बिनोदिनी देवी (विनिबंध)
ले. एल. सोमी रॉय
पृ. 98, रु. 50/-
ISBN : 978-93-5548-290-7

सिलेक्टेड वर्क्स ऑफ़ व्यास कवि फकीर मोहन सेनापति (चयनित रचनाएँ)
संकलन और संपा. मोनिका दास
पृ. 366, रु. 420/-
ISBN : 978-93-5548-267-9

हर स्टोरी (अंग्रेज़ी कविता)
(नवोदय योजना के अंतर्गत)
ले. नेहा बंसल
पृ. 95, रु.100/-
ISBN : 978-93-5548-312-6
(पुनर्मुद्रण)

गोरा (बाङ्ला उपन्यास)
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. सुजीत मुखर्जी
पृ. 522, रु.280/-
ISBN : 978-81-260-1801-7

राजतरंगिणी
ले. कल्हण, अनु. आर.एस. पंडित
पृ. 826, रु.550/-
ISBN : 978-81-260-1236-6

हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन लिटरेचर (1911-1956)
ले. शिशिर कुमार दास
पृ. 928, रु.600/-
ISBN : 978-81-7201-798-9

दातू (पुरस्कृत कन्नड उपन्यास)
ले. एस.एल. भैरप्पा
अनु. प्रधान गुरुदत्त एवं एल.वी. शांताकुमारी
पृ.568, रु.450/-
ISBN : 978-81-260-5388-9

ए हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन लिटरेचर
ले. एम. के. नायक
पृ.344, रु.150/-
ISBN : 978-81-260-1872-7

कम्प्लीट वर्क्स ऑफ़ कालिदास-2
अनु. चंद्र राजन
पृ.416, रु.350/-
ISBN : 81-260-1484-9

कंटेम्पररी इंडियन शॉर्ट स्टोरीज़ इन इंग्लिश
संकलन : शिव के. कुमार
पृ.250, रु.150/-
ISBN : 978-93-86771-65-0

टेल्स टोल्ड बॉय मिस्टिक
ले. मनोज दास
पृ.312, रु.200/-
ISBN : 978-81-260-1175-9

वीर टिकेंद्रजीत रोड
ले. हिजाम गुनो सिंह
अनु. ख. कुंजो सिंह
रु.154/-
ISBN : 978-93-89467-20-8

लोरस ब्लूम्स इन द गार्डन ऑफ़ द ईस्ट (पुरस्कृत मणिपुरी कविता-संग्रह)
ले. एल. समरेंद्र
अनु. थ. रतनकुमार
पृ. 64, रु. 90/-
ISBN : 978-81-260-5235-6

ए हिस्ट्री ऑफ़ मणिपुरी लिटरेचर (अंग्रेज़ी)
ले. च. मनिहर सिंह
पृ.330, रु.230/-
ISBN : 978-81-260-4212-8

गुजराती

साम्प्रत गुजराती निबंध (1985-2009)
(गुजराती निबंधों का संकलन)
संपा. मणिलाल एच. पटेल
पृ.180, रु.215/-
ISBN : 978-93-90866-37-3

जोसेफ़ मेकवान
ले. मणिलाल एच. पटेल
पृ.72, रु.50/-
ISBN : 978-93-90866-21-2

आ प्राचीन वाद्य
(*द एन्सियंट लायेर* का अनुवाद)
ले. ओ.एन.वी. कुरुप
अनु. अशोक चावड़ा
पृ.208, रु.260/-
ISBN : 978-93-89778-66-3

भोगदंड
(पुरस्कृत कोंकणी कृति *भोगदंड* का अनुवाद)
ले. हेमा नायक
अनु. प्रतिभा एम. दवे
पृ.304, रु.325/-
ISBN : 978-93-90866-13-7

ओग्निस्मी सदिनुन अल्पख्यात गुजराती साहित्य
संक. दीपक मेहता
पृ.244, रु.280/-
ISBN : 978-93-91017-33-0

जयंत खत्री
ले. किरीट दुधाता
पृ.96, रु.50/-
ISBN : 978-93-91494-04-9

अग्नि हांसी (*आग की हांसी*, हिंदी)
ले. रामदरश मिश्र
अनु. आलोक गुप्त
पृ.104, रु.175/-
ISBN : 978-93-91017-87-3

दादू दयाल
ले. रामवक्ष
अनु. बिंदु भट्ट
पृ.96, रु.50/-
ISBN : 81-7201-596-8 (पुनर्मुद्रण)

गामित दंतकथाओं
अनु. रेमंड ए. चौहान
पृ.112, रु.175/-
ISBN : 81-260-1373-7

हिंदी

महिषासुर का मुँह
(पुरस्कृत ओड़िआ कहानी-संग्रह)
ले. विभूति पटनायक
अनु. दिनेश कुमार माली
पृ.190, रु.160/-
ISBN : 978-93-91494-05-6

तीन मलयाळम नाटक
अनु. एवं संपा. ए. अच्युतन
पृ.152, रु. 150/-
ISBN : 978-93-91494-92-6

विश्वनाथ प्रसाद तिवारी रचना-संचयन
संपा. रेवती रमन
पृ.429, रु.300/-
ISBN : 978-93-91494-24-7

शंकरदेव (विनिबंध)
(एक भारत श्रेष्ठ भारत योजना के अंतर्गत प्रकाशित)
ले. पोना महंत, अनु. कुंदन माली
पृ.120, रु.50/-
ISBN : 978-93-89467086

आकाश का चित्र और अन्य कहानियाँ
(पुरस्कृत असमिया कहानी-संग्रह)
ले. कुल सैकिया, अनु. दिनकर कुमार
पृ.100, रु.100/-
ISBN : 978-93-91494-91-9

कैलाश वाजपेयी (विनिबंध)
ले. ओम निश्चल
रु.300/-
ISBN : 978-81-950217-6-5

आधुनिक ईरानी कविताएँ
अनु. अज़ीज़ महदी
पृ.156, रु.150/-
ISBN : 978-93-91494-25-4

चलत चित्रव्यूह
(पुरस्कृत मराठी संस्मरण)
अरुण खोपकर, अनु. प्रकाश भातम्ब्रेकर
पृ.275, रु.220/-
ISBN : 978-93-91494-79-7

रेतगाथा
(*रेगिस्तान से संबंधित* कहानियाँ)
संकलन एवं संपा. पल्लव
पृ.291, रु.230/-
ISBN : 978-93-91494-16-2

ढलती धूप की तपिश
(पुरस्कृत डोगरी कहानियाँ)
ले. एवं अनु. कृष्ण शर्मा
पृ.112, रु.130/-
ISBN : 978-93-5548-174-0

गोविंद मिश्र रचना-संचयन
चयन एवं संपा. नंदकिशोर आचार्य
पृ.312, रु.250/-
ISBN : 978-93-5548-230-3

गुजराती दलित कविता-संग्रह
चयन एवं संपा. मालिनी गौतम
पृ. 200, रु.170/-
ISBN : 978-93-5548-229-7

पातकाई पर्वतमाला के पार
(असमिया कालजयी यात्रा-वृत्तांत)
ले. पूर्णकांत बुड़ागोहई
अनु. कार्तिक चंद्र दत्त
पृ. 328, रु.300/-
ISBN : 978-93-5548-175-7

प्रभाकर माचवे रचना-संचयन
चयन एवं संपा. राजेंद्र उपाध्याय
पृ. 416, रु.300/-
SBN : 978-93-5548-231-0

रामकुमार वर्मा रचना-संचयन
चयन एवं संपा. राजलक्ष्मी वर्मा
पृ. 396, रु.250/-
ISBN : 978-93-5548-204-4

भास्वती (पुरस्कृत ओड़िआ कृति)
ले. तरुणकांति मिश्र
अनु. राजेंद्र प्रसाद मिश्र
पृ.104, रु.120/-
ISBN : 978-93-5548-223-5

बंटी के सूरज दादा
(पुरस्कृत गुजराती बाल कहानी-संग्रह)
ले. पुष्पा अंताणी
अनु. रजनीकांत एस. शाह
पृ.52, रु.75/-
ISBN : 978-93-5548-100-9

सत्तर बाल कहानियाँ
(पुरस्कृत संस्कृत बाल कहानी-संग्रह)
ले. जनार्दन हेगड़े
अनु. मीरा द्विवेदी
पृ.116, रु.100/-
ISBN : 978-93-5548-105-4

मरियल पेड़
(पुरस्कृत मैथिली बाल कहानी-संग्रह)
ले. मुरलीधर झा
अनु. वैद्यनाथ झा
पृ.108, रु.100/-
ISBN : 978-93-5548-106-1

जंगल में मंगल
(पुरस्कृत डोगरी बाल उपन्यास)
ले. ओम गोस्वामी
अनु. यशपाल निर्मल
पृ.54, रु.75/-
ISBN : 978-93-5548-101-6

लू लू का आविष्कार
(बाल कहानी-संग्रह)
ले. दिविक रमेश
पृ.56, रु.75/-
ISBN : 978-93-5548-012-5

राजकुमार का सपना
(पुरस्कृत पंजाबी बाल कहानी-संग्रह)
ले. कुलबीर सिंह सूरी
अनु. जसबीर कौर
पृ.60, रु.75/-
ISBN : 978-93-5548-102-3

धमाल पंपाल के जूते
(बाल कहानी-संग्रह)
ले. प्रकाश मनु
पृ.152, रु.125/-
ISBN : 978-93-91017-04-0

जंगल एक अनोखा सा
(पुरस्कृत सिंधी बाल उपन्यास)
ले. एवं अनु. हुंदराज बलवानी
पृ.68, रु.75/-
ISBN : 978-93-91017-12-5

नन्हे मुन्नों की सरकार
(पुरस्कृत उर्दू बाल उपन्यास)
ले. असद रज़ा
अनु. फ़ारूक़ अर्गली
पृ. 56, रु.75/-
ISBN : 978-93-5548-107-8

ओयांताई (रंगमंच नाटक)
(स्पानी-हिंदी द्विभाषी नाटक)
अनु. विकास कुमार सिंह एवं रिशु शर्मा
समीक्षा : श्यामा प्रसाद गांगुली
पृ.140, रु.180/-
ISBN : 978-93-5548-220-4

धरती भी एक चिड़िया है
(नवोदय योजना के अंतर्गत कविता-संग्रह)
ले. गौरव पांडेय
पृ.148, रु.150/-
ISBN : 978-93-90866-42-2

नूह की नाव
(नवोदय योजना के अंतर्गत कविता-संग्रह)
ले. देवेश पथ सारिया
पृ.129, रु.130/-
ISBN : 978-93-5548-176-4

हारुमल इस्सरदास सदारंगाणी
(सिंधी लेखक एवं फ़ारसी विद्वान पर विनिबंध)
ले. मुरलीधर जेटली
पृ.120, रु.50/-
ISBN : 978-93-90866-92-2

विभाजनोत्तर सिंधी साहित्य का इतिहास
चयन वासदेव मोही
पृ.460, रु.500/-
ISBN : 978-93-90866-45-8

स्वातंत्रोयत्तर सिंधी ग़ज़ल-संग्रह
संपा. अर्जन हासिद
अनु. अर्जुन चावला, खीमन मुलानी एवं ढोलन राही
पृ.185, रु.250/-
ISBN : 978-93-89778-78-6
(पुनर्मुद्रण)

रामधारी सिंह दिनकर रचना-संग्रह
संपा. कुमार विमल
पृ. 560, रु. 300/-
ISBN : 978-93-86771-78-0
(पुनर्मुद्रण)

बाबरनामा
अनु. युगजीत नवलपुरी
पृ. 468, रु.250/-
ISBN: 978-93-87567-13-9
(पुनर्मुद्रण)

हरिवंश राय बच्चन रचना-संचयन
संपा. अजित कुमार
पृ. 546, रु.400/-
ISBN : 978-81-260-4767-3
(पुनर्मुद्रण)

प्रेमचंद रचना-संचयन
संपा. निर्मल वर्मा एवं
कमल किशोर गोयनका
पृ. 1052, रु.550/-
ISBN : 978-81-7201-663-0
(पुनर्मुद्रण)

हिंदी साहित्य का इतिहास
ले. विजयेंद्र स्नातक
पृ. 468, रु.250/-
ISBN : 978-81-260-2425-4
(पुनर्मुद्रण)

सुमित्रानंदन पंत रचना-संचयन
संपा. कुमार विमल
पृ. 484, रु.260/-
ISBN : 978-93-87562-15-3
(पुनर्मुद्रण)

रवींद्रनाथ के नाटक-खंड 1 (बाङ्ला नाटक, विसर्जन, चित्रांगदा, चिरकुमार सभा)
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. प्रफुल्लचंद्र ओझा 'मुक्त', हंसकुमार तिवारी एवं भारतभूषण अग्रवाल
पृ.264, रु.170/-
ISBN : 81-260-1401-6 (पुनर्मुद्रण)

रवींद्रनाथ के नाटक-खंड 2 (बाङ्ला नाटक राजा, डाकघर, मुक्तधारा, रक्तकराबी)
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. एस.एच. वात्स्यायन, प्रफुल्लचंद्र ओझा 'मुक्त', भारतभूषण अग्रवाल एवं हजारीप्रसाद द्विवेदी
पृ. 244, रु.160/-
ISBN : 81-260-1407-5 (पुनर्मुद्रण)

प्रसाद रचना-संचयन
संपा. विष्णु प्रभाकर एवं रमेशचंद्र शाह
पृ. 584, रु.310/-
ISBN : 81-7201-125-3 (पुनर्मुद्रण)

नागार्जुन रचना-संचयन
संपा. राजेश जोशी
पृ. 328, रु.200/-
ISBN : 978-81-260-1907-6
(पुनर्मुद्रण)

रेणु रचना-संचयन
संपा. भारत यायवर
पृ. 336, रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-0433-1
(पुनर्मुद्रण)

समकालीन हिंदी ग़ज़ल-संग्रह
संपा. माधव कौशिक
पृ. 240, रु.160/-
ISBN : 978-81-260-4019-3
(पुनर्मुद्रण)

रवींद्रनाथ की कहानी-1
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. रामसिंह तोमर
पृ. 364, रु.220/-
ISBN : 978-93-87567-06-1
(पुनर्मुद्रण)

रवींद्रनाथ की कहानी-2
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. कनिका तोमर
पृ. 272, रु.170/-
ISBN : 81-260-1409-1 (पुनर्मुद्रण)

फुलवाड़ी खंड-10
ले. विजयदान देथा
अनु. कैलाश कबीर
पृ. 208, रु.150/-
ISBN : 81-260-2049-0 (पुनर्मुद्रण)

रवींद्रनाथ की कविताएँ
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. हजारीप्रसाद द्विवेदी, रामधारी सिंह दिनकर, हंस कुमार तिवारी एवं भवानी प्रसाद मिश्र
पृ.304, रु.190/-
ISBN : 978-81-260-2489-6
(पुनर्मुद्रण)

समकालीन हिंदी आलोचना
(हिंदी में आलोचनात्मक लेखन)
संपा. परमानंद श्रीवास्तव
पृ. 492, रु.260/-
ISBN : 978-93-86771-77-3
(पुनर्मुद्रण)

अबुल कलाम आज़ाद
(उर्दू लेखक की जीवनी)
ले. अब्दुल क़वी दशनवी
अनु. जानकी प्रसाद शर्मा
पृ. 104, रु.100/-
ISBN: 978-81-260-1408-8
(पुनर्मुद्रण)

बौद्ध संग्रह (बौद्ध ग्रंथों से चयन)
संपा. नाज़िनाक्ष दत्ता
अनु. राममूर्ति त्रिपाठी
पृ. 144, रु.150/-
ISBN : 978-81-7201-344-4
(पुनर्मुद्रण)

भारतेंदु रचना-संचयन
संपा. गिरीश रस्तोगी
पृ. 720, रु.400/-
ISBN : 978-81-260-2937-2
(पुनर्मुद्रण)

बीसवीं सदी में उर्दू साहित्य
संपा. गोपीचंद नारंग
अनु. मोहम्मद याकूब आमिर
पृ. 400, रु.200/-
ISBN : 81-260-0889-X (पुनर्मुद्रण)

मेरी कविता मेरे गीत
ले. पद्मा सचदेव
पृ. 96, रु.60/-
ISBN : 81-7201-275-6 (पुनर्मुद्रण)

ओडीपस त्रयी
ले. सोफ़ोकल्स, अनु. कमल नसीम
पृ. 264, रु.200/-
ISBN : 81-260-0797-4 (पुनर्मुद्रण)

ओथेलो
ले. शेक्सपियर, अनु. दिवाकर प्रसाद
पृ. 124, रु.150/-
ISBN : 978-81-260-2150-5
(पुनर्मुद्रण)

पाकिस्तानी कहानियाँ
संपा. इंतज़ार हुसैन और आसिफ़ फारूक़ी
हिंदी अनु. अबुल बिस्मिल्लाह
पृ. 312, रु.200/-
ISBN : 978-81-260-1199-5
(पुनर्मुद्रण)

प्रतिनिधि कश्मीरी कहानियाँ
संक. अज़ीज़ हाज़नी
अनु. बीना बुदकी
पृ.106, रु.100/-
ISBN : 978-81-260-4742-0
(पुनर्मुद्रण)

हम अमीर लोग
(*रिच लाइक अस*, पुरस्कृत अंग्रेज़ी कृति)
ले. नयनतारा सहगल
अनु. चंद्र मौलि मणि
पृ. 230, रु.150/-
ISBN : 81-260-0867-9 (पुनर्मुद्रण)

रघुवीर सहाय
ले. पंकज चतुर्वेदी
पृ. 112, रु.50/-
ISBN : 978-81-260-4315-6
(पुनर्मुद्रण)

रामचंद्र शुक्ल संचयन
संपा. नामवर सिंह
पृ. 176, रु.100/-
ISBN : 978-81-260-2604-3
(पुनर्मुद्रण)

श्रेष्ठ हिंदी गीत संचयन
संपा. कन्हैयालाल नंदन
पृ. 480, रु.200/-
ISBN : 978-93-86771-62-9
(पुनर्मुद्रण)

ताश का देश
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. रणजीत साहा
पृ. 64, रु.100/-
ISBN : 978-81-260-0317-4
(पुनर्मुद्रण)

वैदिक संस्कृति का विकास
ले. तारकतीर्थ लक्ष्मणशास्त्री
अनु. मोरेश्वर दिनकर पराडकर
पृ. 380, रु.200/-
ISBN : 978-81-260-2170-3
(पुनर्मुद्रण)

विजयदान देथा रचना-संचयन
ले. विजय दान देथा
संपा कैलाश कबीर
पृ. 728, रु.400/-
ISBN : 978-81-260-2343-1
(पुनर्मुद्रण)

संरचनावाद उत्तर संरचनावाद एवं प्राच्य काव्यशास्त्र (पुरस्कृत उर्दू कृति)
ले. गोपी चंद नारंग
अनु. देवेश
पृ. 456, रु.225/-
ISBN : 81-260-0798-2 (पुनर्मुद्रण)

बीसवीं सदी की हिंदी कथा यात्रा खंड-1
संपा. कमलेश्वर
पृ.392, रु.300/-
ISBN : 978-81-260-5049-9
(पुनर्मुद्रण)

बीसवीं सदी की हिंदी कथा यात्रा खंड-2
संपा. कमलेश्वर
पृ. 498, रु.350/-
ISBN : 978-81-260-5050-5
(पुनर्मुद्रण)

बीसवीं सदी की हिंदी कथा यात्रा खंड-3
संपा. कमलेश्वर
पृ. 356, रु.275/-
ISBN : 978-81-260-5051-2
(पुनर्मुद्रण)

बीसवीं सदी की हिंदी कथा यात्रा खंड-4
संपा. कमलेश्वर
पृ.368, रु.300/-
ISBN : 978-81-260-5052-9
(पुनर्मुद्रण)

बीसवीं सदी की हिंदी कथा यात्रा खंड-5
संपा. कमलेश्वर
पृ. 444, रु.260/-
ISBN : 978-81-260-5053-6
(पुनर्मुद्रण)

समकालीन हिंदी कविता
संपा. परमानंद श्रीवास्तव
पृ.268, रु.115/-
ISBN : 978-81-260-2739-2
(पुनर्मुद्रण)

मीरा रचना-संचयन
संक. माधव हाडा
पृ. 208, रु.200/-
ISBN : 978-81-260-5346-9
(पुनर्मुद्रण)

कन्नड

सिद्धैया पुराणिक (विनिबंध)
ले. नागाबाई बुल्ला
पृ.88, रु.50/-
ISBN : 978-93-91017-11-8

श्रीरामानुज (विनिबंध)
ले. एम. नरसिम्हाचारी
अनु. एस. रंगनाथ
पृ.36, रु.50/-
ISBN : 978-93-91017-09-5

किराना (पुरस्कृत मराठी कहानी-संग्रह आलोक)
ले. आसाराम मारोतराव लोमेटे
अनु. कुमुदिनी भैरन्नावर
पृ.184, रु.190/-
ISBN : 978-93-91017-07-1

निन्ना स्पर्श स्पर्श
(पुरस्कृत संस्कृत कविता-संग्रह, तव स्पर्शे स्पर्शे)
ले. हर्षदेव माधव, अनु. एस. रंगनाथ
पृ.216, रु.215/-
ISBN : 978-93-91017-94-1

उन्नीकृष्णन पुथुर (विनिबंध)
ले. टी. बालकृष्णन
अनु. के. के. गंगाधरन
पृ. 88, रु.50/-
ISBN : 978-93-91494-70-4

कनासिना हूगलु
(*सपन फुलम* पुरस्कृत कोंकणी कहानी -संग्रह)
ले. मीना काकोडकर
अनु. गीता शेनॉय
पृ. 160, रु.180/-
ISBN : 978-93-91494-69-8

बी.सी. रामचंद्र शर्मा (विनिबंध)
ले. शूद्र श्रीनिवास
पृ. 132, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-031-6

भूमि (पुरस्कृत मराठी उपन्यास)
ले. आशा बगे
अनु. चंद्रकांत पोकाले
पृ.340, रु.300/-
ISBN : 978-93-5548-073-6

महादेवी वर्मा (विनिबंध)
ले. जगदीश गुप्त
अनु. बालचंद्र जयशेट्टी
पृ.216, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-062-0

गडी पलदावारु
(*अब ना बस्सों इह गाँव* पंजाबी उपन्यास)
ले. करतार सिंह दुग्गल
अनु. मालगुडी शिव
पृ.680, रु.550/-
ISBN : 978-93-5548-158-0

मानव ज़मीन (पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास, *मानब ज़मीन*)
ले. शीर्षेंदु मुखोपाध्याय
अनु. गीता विजय कुमार
पृ.912, रु.900/-
ISBN : 978-93-5548-159-7

एल. एस. शेषागिरी राव (विनिबंध)
ले. एन.एस. श्रीधर मूर्ति
पृ. 120, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-197-9

मारेथिट्टा वास्तुगलु
(पुरस्कृत मलयाळम् कविता-संग्रह, मारन्नु वेचा वास्तुक्कल और अन्य कविताएँ)
ले. के. सच्चिदानंदन
अनु. थेरली एन. शेखर
पृ.152, रु.170/-
ISBN : 978-93-5548-147-4

कवालु कोटे
(*कवल कोट्टम* पुरस्कृत तमिऴ उपन्यास)
ले. एस वेंकटेशन
अनु. वी. गोपालकृष्ण
पृ.952, रु.850/-
ISBN : 978-93-5548-061-3

के. एस. निसार अहमद (विनिबंध)
ले. एम. एस. रघुनाथ
पृ 112, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-288-4

श्यामा माधव (*श्यामा माधवम* पुरस्कृत मलयाळम् कविता)
ले. प्रभा वर्मा
अनु. अशोक कुमार
पृ. 192, रु.200/-
ISBN : 978-93-5548-089-7

अथाला (*अथंग* पुरस्कृत कोंकणी कहानी-संग्रह)
ले. जयंती नायक, अनु. दिनेश नायक
पृ. 240, रु.245/-
ISBN : 978-93-5548-283-9

ज्वालेगलु मट्टु मानव
(*मंतालु मनावुडु* पुरस्कृत तेलुगु कविता-संग्रह)
ले. सी. नारायण रेड्डी
अनु. मार्कण्डपुरम श्रीनिवास
पृ.96, रु.130/-
ISBN : 978-93-5545-298-3

कक्के हू नेराळल्ली नानु
(*लाबर्नम फ़ॉर माई हेड* पुरस्कृत अंग्रेज़ी कहानी-संग्रह)
ले. तेम्सुला आओ, अनु. सी. वस्त्राड
पृ.120, रु.150/-
ISBN : 978-93-5548-289-1
(पुनर्मुद्रण)

जीवनालीले
(गुजराती यात्रा वृत्तांत)
ले. काका साहब कालेलकर
अनु. सली रामचंद्र राव
पृ. 488, रु.400/-
ISBN : 978-93-91494-38-4

कोंकणी

सूर्या अनी मोर
(*सूरज और मोर* का अनुवाद)
ले. वेबस्टार डेविस जिरवा
अनु. कृपाल नायक
पृ. 112, रु.160/-
ISBN : 978-93-90866-53-3

समकालीन सिंधी कथा-संग्रह
(1980-2005)
ले. प्रेम प्रकाश
अनु. हेमा नायक
पृ. 296, रु.340/-
ISBN : 978-93-91017-35-4

रवींद्र केलेकर (कोंकणी विनिबंध)
ले. दिलीप बोरकर
पृ. 112, रु.50/-
ISBN : 978-93-91017-64-4

अग्निसाक्षी
(पुरस्कृत मलयाळम् उपन्यास)
ले. एन. ललिताम्बिका अंतरजनम
अनु. शरतचंद्र शेनॉय
पृ. 124, रु.180/-
ISBN : 978-93-91017-82-8

जिवाटल्लो
(पुरस्कृत कन्नड कविता- संग्रह)
ले. चिन्नवीर कनावि
अनु. मेल्विन रोड्रिग्स
पृ. 76, रु.150/-
ISBN : 978-93-91494-03-2

कल्ली रनाचे इतिहास
(*कल्लिकट्टु इतिहासम* पुरस्कृत तमिऴ उपन्यास)
ले. वैरामुत्तु
अनु. जी संध्या नायक
पृ.IV + 253, रु.300/-
ISBN : 978-93-91017-65-1

राजा राममोहन राय
ले. सौम्येंद्रनाथ टैगोर
अनु. अनंत अग्नि
पृ.58, रु.50/-
ISBN : 978-93-90866-05-2

लोक विसरालियत (पुरस्कृत कृति *लोग भूल गए हैं* का अनुवाद)
ले. रघुवीर सहाय
अनु. नयना अडारकर
पृ.100, रु.175/-
ISBN : 978-93-91494-15-5

नुस्टेन अनी हान्व
(*मासे अनी मी,* मराठी दुर्लभ कृति)
ले. गोपकृष्ण भावे
अनु. सखाराम बोरकर
पृ.VIII+79, रु.170/-
ISBN : 978-93-91017-81-1

परवाय चाल्ले दिगंतरा
ले. रस्किन बॉन्ड
अनु. सुधीर एम. ताड़कोडकर
पृ. 168, रु.225/-
ISBN : 978-93-91017-80-4

कश्मीरी

अमीन कामिल (विनिबंध)
ले. अज़ीज़ हाजिनी
पृ.85, रु.50/-
ISBN : 978-93-91017-23-1

मोहिउद्दीन हाजिनी
(शताब्दी संगोष्ठी पत्र)
संपा. शबनम तिलगामी
पृ.120, रु. 200/-
ISBN : 978-93-5548-172-6

सोलह जिंदगी ते दुमे कहानियी
(तमिऴ-कश्मीरी अनुवाद कार्यशाला)
(*एक भारत श्रेष्ठ भारत* योजना के अंतर्गत प्रकाशित)
संपादन : मुश्ताक़ अहमद मुश्ताक़
पृ.248, रु. 275/-
ISBN : 978-93-91017-41-5

असरारुल हक मजाज़ (विनिबंध)
ले. शारिब रुदौल्वी
उर्दू से कश्मीरी अनु. हसरत हुसैन
पृ.132, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-240-2

गुलाम मो. शाद (कश्मीरी विनिबंध)
ले. निसार नदीम
पृ.75, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-232-7

अज़ीज़ुल्लाह हक़्क़ानी (विनिबंध)
ले. बशर बशीर
पृ. 88, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-245-7

वानायो सिरी असरार
(कश्मीरी सूफ़ी कविता संकलन)
संपा. अज़ीज़ हाजिनी एवं अस्मत अरा
पृ. 246, रु.375/-
ISBN : 978-93-5548-132-0

द्रोव चरित
(भगवान द्रोव महाराज का मसनवी में जीवन चरित)
ले. नारायण जू खार
संक. गुलाम नबी आतश
पृ. 232, रु. 350/-
ISBN : 978-93-5548-164-1

ओंकार नाथ कौल (अंग्रेज़ी विनिबंध)
ले. पंकज भान
पृ. 80, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-238-9

भाषा विकास मंडल

द अदर इंडिया : व्यू फ्रॉम बिलो
संपा. उदय नारायण सिंह एवं राजर्षि सिंह
पृ.352, प्रथम संस्करण : 2021
रु. 300/-
ISBN : 978-93-91494-28-5

ढोल मुहुरी
संपा. दीनबंधु पंडा
पृ. 158, पहला संस्करण : 2021
रु.180/-
ISBN : 978-93-5548-133-7

मैथिली

स्लोडाउन (पुरस्कृत पंजाबी उपन्यास)
ले. नछत्तर
अनु. वैद्यनाथ झा
पृ.128, प्रथम संस्करण : 2021
रु.165/-
ISBN : 978-93-90866-90-8

देवातक घाटी (पुरस्कृत गुजराती यात्रा-वृत्तांत)
ले. भोलाभाई पटेल
अनु. टी. केदार कनन
पृ.156, पहला संस्करण : 2021
रु.200/-
ISBN : 978-93-90866-89-2

हिमालयमें
(पुरस्कृत कोंकणी यात्रा-वृत्तांत)
ले. रवींद्र केलकर
अनु. धीरेंद्र नारायण झा 'धीर'
पृ.84, प्रथम संस्करण : 2021
रु.200/-
ISBN : 978-93-90866-88-5

ब्रजबुली साहित्य गीतकाव्य
संपा. तारा कांत झा
पृ.136, प्रथम संस्करण : 2021
रु.200/-
ISBN : 978-93-90866-03-8

कनियांक अयाना (उर्दू कालजयी कृति *मिरात-उल-उर्स*)
ले. डिप्टी नज़ीर अहमद
अनु. मुश्ताक़ अहमद
पृ.168, पहला संस्करण : 2021
रु.200/-
ISBN : 978-93-90866-36-6

अमरनाथ झा (मैथिली विनिबंध)
ले. हेतुकर झा
अनु. अनिल कुमार सिंह झा
पृ.88, पहला संस्करण : 2021 रु.50/-
ISBN : 978-93-91017-91-0

प्रभास कुमार चौधरी (मैथिली विनिबंध)
ले. पंचानन मिश्र
पृ.92, पहला संस्करण : 2021 रु.50/-
ISBN : 978-93-91017-90-3

मनोहर राय सरदेसाई
(मैथिली में विनिबंध) ('एक भारत श्रेष्ठ भारत योजना' के अंतर्गत प्रकाशित)
ले. माधव बोरकार
अनु. चंद्रमणि झा
पृ.108, प्रथम संस्करण: 2021 रु.50/-
ISBN : 978-93-91017-98-9

श्री नारायण गुरु (मैथिली विनिबंध)
ले. टी. भास्करन
अनु. रामनारायण सिंह
पृ.130, प्रथम संस्करण : 2021
रु.50/-
ISBN : 978-93-91017-45-3

मायानंद मिश्र (हिंदी विनिबंध)
ले. देव शंकर नवीन
पृ.108, पहला संस्करण : 2021
रु.50/-
ISBN : 978-93-91017-70-5

कादंबरी (संस्कृत कालजयी कृति)
ले. बाणभट्ट
अनु. रमण झा
पृ.392, पहला संस्करण : 2021
रु.500/-
ISBN : 978-93-91017-53-8

विचित्रवर्ण
(पुरस्कृत ओड़िआ कहानी-संग्रह)
ले. रवि पटनायक
अनु. परमानंद लाभ
पृ.134, पहला संस्करण : 2021
रु.200/-
ISBN : 978-93-91017-77-4

नव-नीता (पुरस्कृत बाङ्ला गद्य-कविता)
ले. नबनीता देव सेन
अनु. शंकरदेव झा
पृ.976, पहला संस्करण : 2021
रु.1100/-
ISBN : 978-93-91017-37-8

बीछल सिंधी कथा
संपा. गोविंद मल्लही एवं कला राजसिंघानी
अनु. नरेंद्र नाथ झा
पृ.200, पहला संस्करण : 2021
रु.250/-
ISBN : 978-93-91494-19-3

ओसक बन्नो
('नवोदय योजना' के अंतर्गत प्रकाशित)
ले. त्रिपुरारी कुमार शर्मा
पृ.122, पहला संस्करण : 2021
रु.170/-
ISBN : 978-93-90866-43-4

क्रांतिकल (पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास)
ले. प्रफुल्ल रॉय
अनु. अजीत आज़ाद
पृ.152, पहला संस्करण : 2021
रु.200/-
ISBN : 978-93-5548-165-8

मनबोध (अंग्रेज़ी में विनिबंध)
ले. बासुकी नाथ झा
पृ.84, पहला संस्करण : 2021 रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-045-3

दुर्गक पाटन (पुरस्कृत कन्नड उपन्यास)
ले. टी.आर. सुब्बा राव
अनु. बीना ठाकुर
पृ.532, पहला संस्करण : 2021
रु.650/-
ISBN : 978-93-91017-62-0

के ध्यान दैता अची
(मराठी कालजयी कृति)
ले. हरि नारायण आप्टे
अनु. खुशीलाल झा
पृ.400, पहला संस्करण : 2021
रु.550/-
ISBN : 978-93-91494-78-0

नरभक्षी (पुरस्कृत पंजाबी उपन्यास)
ले. नानक सिंह
अनु. विवेकानंद झा
पृ.288, पहला संस्करण : 2021
रु. 350/-
ISBN : 978-93-91494-49-0

मैथिली साहित्यक 'व्यास' : उपेंद्रनाथ झा
संपा. बीना ठाकुर
पृ.112, पहला संस्करण : 2021
रु.175/-
ISBN : 978-93-91494-74-2

किशोर कथा (किशोर कहानियाँ)
संपा. विभूति भूषण बंद्योपाध्याय
अनु. प्रेम मोहन मिश्र
पृ.174, पहला संस्करण : 2021
रु. 250/-
ISBN : 978-93-91494-00-1

धार्तिक व्यथा
(पुरस्कृत असमिया कहानी-संग्रह)
ले. जोगेश दास
अनु. रवींद्र कुमार चौधरी
पृ.240, पहला संस्करण : 2021
रु.300/-
ISBN : 978-93-91494-94-0

साहित्यकार त्र्य : जयनारायण मल्लिक बैद्यनाथ मल्लिक बिदु आ न्यायाचार्य आनंद झा (संगोष्ठी पत्र)
संपा. बीना ठाकुर
पृ.156, पहला संस्करण : 2021
रु.250/-
ISBN : 978-93-91494-66-7

जीवन झा (मैथिली में विनिबंध)
ले. रामदेव झा
पृ.120, पहला संस्करण : 2021
रु.50/-
ISBN : 978-93-91494-41-4

वर्णरत्नाकरक महत्त्व ओ उपादेयता
(संगोष्ठी पत्र)
संपा बीना ठाकुर
पृ.130, पहला संस्करण : 2021
रु.200/-
ISBN : 978-93-91494-97-1

आधुनिक मैथिली साहित्य एवं पुनर्जागरण (संगोष्ठी पत्र)
संपा. बीना ठाकुर
पृ.146, पहला संस्करण : 2021
रु.225/-
ISBN : 978-93-91494-58-2

भोला लाल दास रचना-संचयन
संपा. देवेंद्र लाल कर्ण
पृ.248, पहला संस्करण : 2021
रु.300/-
ISBN : 978-93-91494-64-3

मैथिली भाषा साहित्यक ध्वजवाहक लक्ष्मण झा, बाबूसाहेब चौधरी ओ नागेंद्र कुमार (संगोष्ठी पत्र)
संपा. बीना ठाकुर
पृ.112, पहला संस्करण : 2021
रु.175/-
ISBN : 978-93-91494-82-7

एकता दुनिया हमारो
(पुरस्कृत राजस्थानी कहानी-संग्रह)
ले. सांवर दइया
अनु. रमेश
पृ.120, पहला संस्करण : 2021
रु.165/-
ISBN : 978-93-5548-016-3

कियेक कनालेन उपमा
(पुरस्कृत नेपाली कहानियाँ)
ले. लोकनाथ उपाध्याय
अनु. प्रदीप बिहारी
पृ.108, पहला संस्करण : 2021
रु.150/-
ISBN : 978-93-5548-015-6

अग्नि कलश
(पुरस्कृत पंजाबी कहानी-संग्रह)
ले. गुरबचन सिंह भुल्लर
अनु. वैद्यनाथ झा
पृ.160, पहला संस्करण : 2021
रु.200/-
ISBN : 978-93-5548-224-2

निशि कुटुंब (पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास)
ले. मनोज बसु
अनु. राजानंद झा
पृ.512, पहला संस्करण : 2021
रु.650/-
ISBN : 978-93-88468-13-8

देहारेमे अयियो उगेथ अची हमार जाच
(पुरस्कृत अंग्रेज़ी कहानी-संग्रह)
ले. रस्किन बॉन्ड
अनु. कमलानंद झा
पृ.124, पहला संस्करण : 2021
रु.650/-
ISBN : 978-93-88468-21-3

मैथिली गीत काव्यक विकास ओ परम्परा (संगोष्ठी पत्र)
संपा. बीना ठाकुर
पृ.168, पहला संस्करण : 2021
रु.250/-
ISBN : 978-93-91494-50-6

अमर कथा
(पुरस्कृत पंजाबी कहानी-संग्रह)
ले. गुलज़ार सिंह संधू
अनु. रंगनाथ दिवाकर
पृ. 112, रु.150/-
ISBN : 978-93-5548-272-3

केवो दोसारायित नहीं
(पुरस्कृत हिंदी कविता)
ले. कुँवर नारायण
अनु. अनमोल झा
पृ.172, रु.220/-
ISBN : 978-93-5548-272-0

सुभद्रा कुमारी चौहान
('एक भारत श्रेष्ठ भारत' योजना के अंतर्गत प्रकाशित विनिबंध)
ले. सुधा चौहान
अनु. अशोक कुमार झा 'अविचल'
पृ.100, रु.50/-
ISBN : 98-93-9107-99-6

ई आध्या गीत (ओ.एन.वी. कुरुप की चुनिंदा कविताएँ)
अनु. नारायण झा
पृ.176, रु.225/-
ISBN : 978-93-5548-199-3

उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'
(मैथिली विनिबंध)
ले. रमण झा
पृ.96, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-320-1

प्रेमचंद कहानी रचनावाली (भाग-1)
ले. कमल किशोर गोयनका
अनु. नरेंद्र नाथ झा
पृ.766, रु.1000/-
ISBN : 978-93-5548-319-5
(पुनर्मुद्रण)

आधुनिक मैथिली साहित्यक शिल्पी
मैथिली अनु. बीना ठाकुर
पृ. 132, रु.150/-
ISBN : 978-93-89778-91-5

मलयाळम्

एत्रा एत्रा पाकिस्तानुकल
(*कितने पाकिस्तान* पुरस्कृत हिंदी उपन्यास)
ले. कमलेश्वर
अनु. वी.डी. कृष्णन नम्पियार
पृ. 488, रु.415/-
ISBN : 978-93-90866-97-7

आरूधाम
(पुरस्कृत कोंकणी एकांकी 'चौरंग')
ले. पुंडलिक एन. नाइक
अनु. एन. बालकृष्ण माल्या
पृ. 120, रु.155/-
ISBN : 978-93-91017-16-3

कार्मेलीन (पुरस्कृत कोंकणी उपन्यास)
ले. दामोदर मावज़ो
अनु. राजेश्वरी जी. नायर
पृ. 360, रु.325/-
ISBN : 978-93-91017-17-0

कथुकल (पुरस्कृत तमिऴ उपन्यास)
ले. एम. वेंकटराम
अनु. शफी चेरुमाविलयि
पृ.160, रु.170/-
ISBN : 978-93-91017-44-6

कालेवला (फ़िनलैंड का महाकाव्य)
ले. इलियास लोनरोट
पृ. 968, रु.850/-
ISBN : 978-93-5548-160-3

एन.एन. पिल्लै (विनिबंध)
ले. राजीव गोपालकृष्णन
पृ. 112, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-207-5

पुथुस्सेरी रामचंद्रन (विनिबंध)
ले. नादुवट्टम गोपालकृष्णन
पृ. 104, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-355-3

चूड़िया पूवु चूडारुथु
('पुरस्कृत तमिऴ कहानी-संग्रह 'सूद्रक')
ले. नंजिलनादन
अनु. टी. एम. रघुराम
पृ. 184, रु. 200/-
ISBN : 978-93-91494-99-5

मणिपुरी

बाबरगी प्रार्थना
(पुरस्कृत बाङ्ला कविता-संग्रह)
ले. शंख घोष
अनु. एल. मणि सिंघा
पृ. 90, रु.110/-
ISBN : 978-93-5548-030-9

मणिपुर कौउबी इमा ओ (कविता-संग्रह)
('नवोदय योजना' के अंतर्गत)
ले. निरंजन उषाम
पृ. 148, रु.190/-
ISBN : 978-93-5548-206-8
(पुनर्मुद्रण)

फुंगवारी शिंगबुल (मणिपुरी लोककथाएँ और दंतकथाएँ)
चयन एवं संपा. बी.जयंत कुमार सरमा
पृ. 302, रु. 210/-
ISBN : 978-81-260-2911-2
(10वां पुनर्मुद्रण)

मराठी

रंजीत देसाई
ले. रफ़ीक सूरज
पृ. 108, रु.50/-
ISBN : 978-93-90866-29-8

अमृतलाल नगर
ले. श्रीलाल शुक्ल, अनु. गिरीश काशिद
पृ.104, रु.50/-
ISBN : 978-93-91017-89-7

यमन (कोंकणी पुरस्कृत अंग्रेज़ी)
ले. माधव बोरकर
अनु. गीतेश गजानन शिंदे
पृ.VIII+106, रु.175/-
ISBN : 978-93-91017-79-8

दिग्भ्रमित स्त्रियाँ (पुरस्कृत अंग्रेज़ी कृति डिस्ऑर्डर्ली वूमेन)
ले. मालती राव
अनु. अलका नाथरेकर कुलकर्णी
पृ.313, रु.330/-
ISBN : 978-93-89467-61-1

कृष्णमूर्ति पुराणिक
ले. एस.एम. कृष्णराव
अनु. जी.सी. कुलकर्णी
पृ.X+168, रु.50/-
ISBN : 978-93-91017-00-2

धुका जस दरयानमधुन
(*मबीन हगे कनिवेयासी,* पुरस्कृत कन्नड कृति)
ले. एच. एस. शिवप्रकाश
अनु. चंद्रकांत पाटिल
पृ.VII +56, रु.135/-
ISBN : 978-93-91017-56-9

रथ (*तेरु,* पुरस्कृत कन्नड)
ले. राघवेंद्र पाटिल
अनु. गोपाल महामुनि
पृ.160, रु.200/-
ISBN : 978-93-91017-57-6

बोलिभासेटिल आदिवासी कविता
(आदिवासी कविता का संकलन)
संकलन विनायक तुमराम
पृ.284, रु.300/-
ISBN : 978-93-91494-35-3

कलानुभव
ले. एम. हिरियन्ना
अनु. शैलजा वाडेकर
पृ. 142, रु.185/-
ISBN : 978-93-5548-049-1

मराठी दलित एकांकिका
(दलित एकांकी संकलन)
संकलन : दत्ता भगत
पृ. 200, रु. 225/-
ISBN : 978-81-260-2969-3
(पुनर्मुद्रण)

एन.ई.सी.ओ.एल.

द चिल्ड्रन ऑफ़ द माइटि रिवर
चयन एवं संपा. सुदीप्त खेरसा
अनु. आर.के. जितेंद्रजीत सिन्हा
पृ. 112, पहला संस्करण : 2021
रु.110/-
ISBN : 978-93-91494-34-6

मिथ्स एंड टेल्स ऑफ़ कोच-राजबंगशीस ऑफ़ वेस्टर्न असम
संपा. द्विजेंद्र नाथ भक्त
पृ.96, पहला संस्करण : 2021
रु.100/-
ISBN : 978-93-91494-26-1

तिवा फ़ोल्क टेल्स
संपा. जॅयकांत सरमा
पृ. 112, पहला संस्करण : 2021
रु.150/-
ISBN : 978-93-5548-120-7

ओरल स्टोरीज़ ऑफ़ टोटोस
चयन एवं संपा. केतकी दत्ता
पृ. 164, पहला संस्करण : 2021
रु.150/-
ISBN : 978-93-5548-046-0

रीसेंट ट्रेंड्स इन द ट्राइबल लिटरेचर ऑफ़ द नॉर्थ-ईस्ट इंडिया
संपा. कैरोलीन आर. मरक
पृ. 218, पहला संस्करण : 2021
रु. 225/-
ISBN : 978-93-91494-27-8

गारो - ए बर्ड आई व्यू
संपा. कैरोलीन आर. मरक
पृ.236, पहला संस्करण : 2021
रु.250/-
ISBN : 978-93-5548-046-0

नेपाली

इंद्र बहादुर राय (अंग्रेज़ी विनिबंध)
ले. मोनिका मुखिया
पृ.88, रु.50/-
ISBN : 978-81-950217-9-6

धरतीका गीतारू (*अर्थ सांग्स - स्टोरीज़ फ्रॉम नॉर्थ-ईस्ट इंडिया*)
ले. के.सी. बराल
अनु. गरिमा राय
पृ.141, रु.200/-
ISBN : 978-93-90866-77-9

अच्छा राय रसिक (नेपाली विनिबंध)
ले. प्रतापचंद्र प्रधान
पृ.103, रु.50/-
ISBN : 978-93-91494-55-1

जीवन थेंग (अंग्रेज़ी विनिबंध)
ले. बिजय बंतावा
पृ.65, रु.50/-
ISBN : 978-93-91494-31-5

आधुनिक भारतीय कविता संचयन 1950-2010 (हिंदी)
संपा. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी एवं रेवती रमण
नेपाली अनु. सुधीर छेत्री
पृ.252, रु.300/-
ISBN : 978-93-91494-40-7

भीलारुको भारती
संपा. भगवान दास पटेल
अनु. स्नेहलता राय
पृ.215, रु.250/-
ISBN : 978-93-91494-20-9

हरि प्रसाद गोरखा राइ
(नेपाली विनिबंध)
ले. सीताराम काफले
पृ.111, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-246-4

मौन ओंठ मुखर हृदय
(पुरस्कृत असमिया उपन्यास)
ले. येशे दोर्जे थोंगछी
हिंदी अनु. दिनकर कुमार
नेपाली अनु. युवराज काफले
पृ.192, रु.250/-
ISBN : 978-93-5548-118-4

मरुभूमि (*लीकांगला* पुरस्कृत मणिपुरी उपन्यास)
ले. एम. बोरकन्या
अनु. भवानी अधिकारी
पृ.168, रु.220/-
ISBN : 978-93-5548-247-1

बाल सुधा सागर (पुरस्कृत असमिया कहानी-संग्रह)
ले. शंकर देव ढकाल
अनु. उदय ठाकुर
पृ.80, रु.80/-
ISBN : 978-93-5548-255-6

बद्री नारायण प्रधान (नेपाली विनिबंध)
ले. जीवन राणा
पृ.76, रु. 50/-
ISBN : 978-93-5548-252-5

भारतीय नेपाली ग़ज़ल
चयन एवं संपा. मिलन बांतवा
पृ.336, रु.420/-
ISBN : 978-93-5548-266-2

एंथोलॉजी ऑफ़ मॉडर्न इंडियन पोएट्री : सिंधी (1950-2010)
संपा. वासदेव मोही
अनु. सुवास दीपक
पृ.199, रु.250/-
ISBN : 978-93-5548-363-8

लखी देवी सुंदस (नेपाली विनिबंध)
ले. बियना हांगखिम
पृ.107, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-349-2

शब्द वाटिका
('नवोदय योजना' के अंतर्गत)
ले. बिशोर राय
पृ.104, रु.150/-
ISBN: 978-93-90866-69-4
(पुनर्मुद्रण)

बाबूलाल प्रधान (नेपाली विनिबंध)
ले. चंद्रकुमार राय
पृ. 104, रु.50/-
ISBN : 978-93-90866-15-1

पूर्णा राय
ले. राजकुमार छेत्री
पृ. 96, रु.50/-
ISBN : 978-93-90866-09-0

शब्द वाटिका
ले. बिशोर राय
पृ. 104, रु.150/-
ISBN : 978-93-90866-69-4

हरिप्रसाद गोरखा राय
ले. सीताराम काफले
पृ. 112, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-246-4

भारतीय नेपाली ग़ज़ल
संकलन : मिलन बांतवा
पृ. 336, रु.420/-
ISBN : 978-93-5548-266-2

पंजाबी

जड़ वाला कटहल
(पुरस्कृत तमिळ कृति)
ले. समुत्तीराम
अनु. अनुराग शर्मा
पृ.136, रु.300/-
ISBN : 978-93-9107-20-0

दो पंक्तियों के बीच (कविता-संग्रह)
ले. राजेश जोशी
अनु. अमरजीत कौंके
पृ.120, रु.260/-
ISBN : 978-93-91017-27-9

जोगिंदर बाहरला (पंजाबी विनिबंध)
ले. सावल धामी (चरण पुष्पिंदर सिंह)
पृ.96, रु.50/-
ISBN : 978-93-91017-78-1

कदुगल (पुरस्कृत तमिळ उपन्यास)
ले. एम.वी. वेंकटराम
ले. सरबजीत कौर
पृ.172, रु.300/-
ISBN : 978-93-5548-074-3

पंजाबी दी दलित कहानी
चयन एवं संपा. बलदेव सिंह धालीवाल
पृ.336, रु.450/-
ISBN : 978-93-5548-081-1

भूले बिसरे चित्र (हिंदी कालजयी)
ले. भगवती चरण वर्मा
अनु. रशपिंदर रश्मी
पृ.652, रु.800/-
ISBN : 978-93-5548-086-6

गवाड़ (पुरस्कृत राजस्थानी उपन्यास)
ले. मधु आचार्य 'आशावादी'
अनु. मंगत बादल
पृ.100, रु.160/-
ISBN : 978-93-5548-075-0

गालिबाना (पुरस्कृत तमिळ कृति)
ले. पी. पद्मराजू
अनु. जसपाल कौर
पृ.176, रु.230/-
ISBN : 978-93-5548-091-0

गुरु नानक देव (संगोष्ठी पत्र)
चयन एवं संपा. मनमोहन
पृ.172, रु.300/-
ISBN : 978-93-5548-136-8

नाला सोपारा पोस्ट बॉक्स नंबर 203
(पुरस्कृत हिंदी उपन्यास)
ले. चित्रा मुद्गल
अनु. हरप्रीत कौर
पृ.236, रु.300/-
ISBN : 978-93-5548-093-4

चरण दास सिद्धु (पंजाबी विनिबंध)
ले. सतनाम सिंह जस्सल
पृ.112, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-097-2

विनायक (पुरस्कृत हिंदी उपन्यास)
ले. रमेश चंद्र शाह
अनु. तरसेम
पृ.312, रु.450/-
ISBN : 978-93-5548-080-4

इक्षुगंधा (पुरस्कृत संस्कृत कहानी-संग्रह)
ले. अभिराज राजेंद्र मिश्र
अनु. सतनाम सिंह जस्सल
पृ.80, रु.160/-
ISBN : 978-93-5548-024-8

ओड़िआ

उड़ान
(*द फ़्लाइट ऑफ़ पिजंस*, पुरस्कृत अंग्रेज़ी कृति)
ले. रस्किन बॉन्ड
अनु. सूर्य मिश्र
पृ. 134, रु.120/-
ISBN : 978-93-90866-99-1

आधुनिक ओड़िआ प्रबंध साहित्य (चयनित ओड़िआ निबंध)
चयन और संपा. बिजयानंद सिंह
पृ.328, रु.310/-
ISBN : 978-93-89778-56-4

किशोरी चरण चयनिका (किशोरीचरण की चयनित रचनाएँ)
संकलन एवं संपा. बिजयानंद सिंह
पृ.344, रु.210/-
ISBN : 978-93-90866-52-6

मोहना! हे मोहन! ओ अनन्यान्य कबिहा (पुरस्कृत तेलुगु कविता-संग्रह)
संक. के. शिवा रेड्डी
अनु. बाङ्ला नंदा
पृ.100, रु.130/-
ISBN : 978-93-90866-75-5

राजकिशोर पटनायक (अंग्रेज़ी विनिबंध)
ले. असीमा रंजन पारही
पृ.84, रु.50/-
ISBN : 978-93-90310-10-4

श्रीरामानुज (ओड़िआ विनिबंध)
ले. नरसिम्हाचारी
अनु. पंचानन मिश्र
पृ. 52, रु.50/-
ISBN : 978-93-90866-91-5

कलि-कथा : वाया बाईपास (पुरस्कृत हिंदी उपन्यास)
ले. अलका सरावगी
अनु. प्रवासिनी महाकुड
पृ. 254, रु. 240/-
ISBN : 978-93-90866-67-0

कृपासिंधु मिश्र चयनिका (कृपासिंधु मिश्र की चयनित रचनाएँ)
चयन एवं संपा. पी. के. स्वैन
पृ.344, रु.280/-
ISBN : 978-93-91494-83-4

चंद्रमणि दास (ओड़िआ विनिबंध)
ले. गोविंद चंद्र चंडी
पृ.96, रु.50/-
ISBN : 978-93-91017-51-4

महापात्र नीलमणि साहू (ओड़िआ विनिबंध)
ले. अर्चना नायक
पृ.98, रु.50/-
ISBN : 978-93-91494-77-3

ओड़िआ उपन्यास (ओड़िआ उपन्यास पर संगोष्ठी पत्रों का संकलन)
चयन एवं संपा : सबिता प्रधान
पृ. 306, रु.350/-
ISBN : 978-93-91017-50-7

गुरुचरण पटनायक चयनिका (गुरुचरण पटनायक की चुनिंदा रचनाएँ)
चयन एवं संपा. अमरेश पटनायक
पृ.248, रु.220/-
ISBN : 978-93-5548-000-2

एकात्रिको (प्रसिद्ध ओड़िआ कवि और आलोचक जगन्नाथ प्रसाद दास का चयनित लेखन)
चयन एवं संपा. संग्राम जेना
पृ.328, रु.230/-
ISBN : 978-93-89778-80-9

कुंतलकुमारी सबतंका निर्बचिता कबिता (कुंतलकुमारी सबत की चयनित कविताएँ)
चयन और संपा. सिसिरा बेहरा
पृ. 288, रु.210/-
ISBN : 978-93-90866-60-1

तरुण्यरा स्वरा (युवा ओड़िआ कवियों का. ओड़िआ कविता संचयन)
संकलन : प्रदीप कुमार बिस्वाल
पृ. 144, रु.200/-
ISBN : 978-93-91494-42-1

पल्लिकाबी नंदकिशोर चयनिका
(ओड़िआ में पल्लिकाबी नंदकिशोर की चयनित रचनाएँ)
चयन एवं संपा. बिजयानंद सिंह
पृ. 392, रु.300/-
ISBN : 978-93-5548-043-9

कालिंदीचरण पाणिग्रहीण का निर्बाचित कबिता (ओड़िआ में कालिंदीचरण पाणिग्रही की चयनित कविताएँ)
चयन एवं संपा. बिष्णुप्रिय ओट्टा
पृ. 226, रु.210/-
ISBN : 978-93-5548-182-5

रामप्रसाद सिंह (ओड़िआ विनिबंध)
ले. बिजॅय कुमार सतपथी
पृ. 98, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-153-5

मोहलग्न (ओड़िआ कविता-संग्रह)
('नवोदय योजना' के अंतर्गत)
ले. मृगेश वैष्णब पाणिग्रही
पृ. 88, रु.130/-
ISBN : 978-93-91494-76-6

राग पूर्वी (ओड़िआ कविता-संग्रह)
(नवोदय योजना के अंतर्गत)
ले. पूरबी सतपथी
पृ. 122, रु.170/-
ISBN : 978-93-91494-06-3

राजस्थानी

प्रेमजी प्रेम (राजस्थानी में विनिबंध)
ले. ओम नागर
पृ.111, रु.50/-
ISBN : 978-93-90866-85-4

यादवेंद्र शर्मा (राजस्थानी विनिबंध)
ले. आनंद वी. आचार्य
पृ.123, रु.50/-
ISBN : 978-93-90866-30-4

उमर दान ललस (राजस्थानी विनिबंध)
ले. गज सिंह राजपुरोहित
पृ. 75, रु.50/-
ISBN : 978-93-90866-93-9

समन बाई (राजस्थानी विनिबंध)
ले. धनंजय अमरावती
पृ. 63, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-004-0

गजानन वर्मा (राजस्थानी विनिबंध)
ले. श्याम महर्षि
पृ. 80, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-048-4

भीलों का भारत (*भीली महाभारत*, आदिवासी भाषाओं में भारतीय साहित्य)
ले. भगवान दास पटेल
अनु. सोहन दान चारण
पृ. 200, रु.250/-
ISBN : 978-93-90866-22-9

काल पहर घड़ियाँ
(पुरस्कृत पंजाबी कविता-संग्रह)
ले. वनीता
अनु. सत्यदेव सवितेंद्र
पृ. 167, रु.200/-
ISBN : 978-93-90866-06-9

आधुनिक भारतीय कविता-संग्रह
(सिंधी कविता 1950-2010)
संपा. वासदेव मोही
अनु. घनश्याम नाथ कच्छावा
पृ. 200, रु.250/-
ISBN : 978-93-91494-48-3

मोहन दास (पुरस्कृत हिंदी कहानी-संग्रह)
ले. उदय प्रकाश
राजस्थानी अनु. कीर्ति शर्मा
पृ. 94, रु.140/-
ISBN : 978-93-91494-51-3

विनायक (पुरस्कृत हिंदी उपन्यास)
ले. रमेश चंद्र शाह
अनु. कृष्ण कुमार 'आशु'
पृ. 272, रु.350/-
ISBN : 978-93-91494-46-9

ब्रह्मपुत्रक छेउ-छाउ
(पुरस्कृत नेपाली उपन्यास)
ले. लील बहादुर छेत्री
अनु. नमामि शंकर आचार्य
पृ. 223, रु.300/-
ISBN : 978-93-91494-39-1

लोक साहित्य : परंपरा और विकास
(संगोष्ठी पत्र)
संपा. सोहन दान चारण
पृ. 100, रु.150/-
ISBN : 978-93-91494-29-2

उपरा (पुरस्कृत मराठी उपन्यास)
ले. लक्ष्मण माने
अनु. उम्मेद धानिया
पृ. 147, रु.175/-
ISBN : 978-93-90866-14-4

आई कल्ही परसूँ
(पुरस्कृत मैथिली कहानी-संग्रह)
ले. राजमोहन झा
अनु. भगवान सैनी
पृ. 139, रु.190/-
ISBN : 978-93-5548-042-2

छावनी (पुरस्कृत गुजराती उपन्यास)
ले. धीरेंद्र मेहता
अनु. मनोज कुमार स्वामी
पृ. 167, रु.225/-
ISBN : 978-93-91494-21-6

संस्कृत

शांतिनिकेतन : भाग-1
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. भवानी प्रसाद भट्टाचार्य
पृ. 264, पहला संस्करण : 2021
रु. 400/-
ISBN : 978-93-90866-44-1

ततपतप्तपकास्य सत्यम
(पुरस्कृत पंजाबी नाटक)
ले. आत्मजीत सिंह
अनु. इंद्र मोहन सिंह
पृ. 60, पहला संस्करण : 2021
रु. 100/-
ISBN : 978-93-90866-51-9

आर.एन. दांडेकर (अंग्रेज़ी विनिबंध)
ले. एम. जी. धड़फले
पृ. 120, पहला संस्करण : 2021
रु. 50/-
ISBN : 978-93-91017-61-3

रामजी उपाध्याय (हिंदी विनिबंध)
ले. संजय कुमार
पृ. 114, पहला संस्करण : 2021
रु. 50/-
ISBN : 978-93-91017-29-3

महाकवि सातवाहन हाल
(हिंदी विनिबंध)
ले. अभिराज राजेंद्र मिश्र
पृ. 96, पहला संस्करण : 2021
रु.50/-
ISBN : 978-93-91017-69-9

प्रज्ञाभारती श्रीधरभास्करवर्णेकर
(संस्कृत विनिबंध)
ले. लीना रस्तोगी
पृ.102, पहला संस्करण : 2021
रु.50/-
ISBN : 978-93-90866-98-4

विदग्धविद्योदय दिवस (संगोष्ठी पत्र)
संपा. अभिराज राजेंद्र मिश्र
पृ. 292, पहला संस्करण : 2021
रु. 400/-
ISBN : 978-93-91017-15-6

श्री रामानुज के चयनित पाठ
(श्री रामानुज पर संकलन)
संपा. एस. रंगनाथ
पृ. 320, पहला संस्करण : 2021
रु. 350/-
ISBN : 978-93-91017-83-5

महामहोपाध्याय गोकुल नाथ उपाध्याय
(हिंदी विनिबंध)
ले. महेश झा
पृ. 76, पहला संस्करण : 2021
रु. 50/-
ISBN : 978-93-90866-76-2

कुमारिल भट्ट (हिंदी विनिबंध)
ले. रवींद्रनारायण झा
पृ. 84, पहला संस्करण : 2021
रु. 50/-
ISBN : 978-93-91017-46-0

कृष्णद्वैपायन व्यास (हिंदी विनिबंध)
ले. अभिराज राजेंद्र मिश्र
पृ. 86, पहला संस्करण : 2021
रु. 50/-
ISBN : 978-93-5548-020-0

ना कस्चिदपार (पुरस्कृत हिंदी कविता)
ले. कुंवर नारायण
अनु. अभिराज राजेंद्र मिश्र
पृ. 160, पहला संस्करण : 2021
रु. 250/-
ISBN : 978-93-5548-028-6

गंगाधर शास्त्री (हिंदी विनिबंध)
ले. रमाकांत पाण्डेय
पृ. 112, पहला संस्करण : 2021
रु. 50/-
ISBN : 978-93-5548-029-3

संस्कृतवाङ्मय में चित्रकूट
(संगोष्ठी पत्र)
संपा. अभिराज राजेंद्र मिश्र
सह-संपादक : योगेशचंद्र दुबे
पृ. 110, पहला संस्करण : 2021
रु.175/-
ISBN : 978-93-91017-93-4

रीविजिटिंग भाषा : पर्सपेक्टिव एंड पर्सेप्शन (संगोष्ठी पत्र)
संपा. सी. राजेंद्रन
पृ.196, पहला संस्करण : 2021
रु.280/-
ISBN : 978-93-5548-166-5

व्यासतीर्थचरितम् (संस्कृत विनिबंध)
ले. नारायण पुजारी
पृ.100, पहला संस्करण : 2021
रु. 50/-
ISBN : 978-93-5548-129-0

बालकथाशतकम् (खंड-1)
संपा. सम्पदानन्द मिश्र
पृ.67, पहला संस्करण : 2021
रु.150/-
ISBN : 978-93-5548-121-4

बालकथाशतकम् (खंड-2)
संपा. सम्पदानंद मिश्र
पृ.78, पहला संस्करण : 2021
रु.170/-
ISBN : 978-93-5548-125-2

बालकथाशताकम् (खंड-3)
संपा. सम्पदानंद मिश्र
पृ.107, पहला संस्करण : 2021
रु.230/-
ISBN : 978-93-5548-126-9

बालकथाशतकम् (खंड-4)
संपा. सम्पदानंद मिश्र
पृ.104, पहला संस्करण : 2021
रु.220/-
ISBN : 978-93-5548-128-3

(पुनर्मुद्रण)

संस्कृत साहित्य में स्त्रीविमर्श
अनु. राधावल्लभ त्रिपाठी
आनंदप्रकाश त्रिपाठी तथा
नौनिहाल गौतम
पृ. 256, रु.250/-
ISBN : 978-93-89778-90-8

संताली

श्रीरामानुज (अंग्रेज़ी विनिबंध)
ले. एम. नरसिम्हाचार्य
अनु. माधव चंद्र हाँसदा
पृ. 56, रु.50/-
ISBN : 978-93-91017-74-3

गोरा (बाङ्ला गौरव ग्रंथ - उपन्यास)
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. ताला टुडु
पृ. 512, रु.1000/-
ISBN : 978-93-91494-67-4

साबाह राजा
(*उलंग राजा*, पुरस्कृत बाङ्ला कविता-संग्रह)
ले. नीरेंद्र नाथ चक्रवर्ती
अनु. दशरथी माझी
पृ.52, रु.100/-
ISBN : 978-93-5548-140-5

मांझी रामदास टुडू 'रक्षा'
(संताली विनिबंध)
ले. सल्खु मुर्मू
पृ 96, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-155-9

तारम दहर रेयाग कथा
(पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास *पाथेर पांचाली* का संताली अनुवाद)
ले. विभूतिभूषण बंद्योपाध्याय
अनु. तपन टुडु
पृ. 284; रु.290/-
ISBN : 978-93-5548-148-1

अतो गडा
(*ओरु गिरमाट्टू नाडी* पुरस्कृत तमिऴ कविता-संग्रह)
ले. सिर्पी बालासुब्रमण्यम
अनु. नित्यानंद हेम्ब्रम
पृ. 80, रु.120/-
ISBN : 978-93-5548-154-2

आनंदमठ
(*आनंदमठ* पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास)
ले. बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय
अनु. श्याम चरण टुडु
पृ. 156, रु.210/-
ISBN : 978-93-5548-044-6

जितकर (कविता-संग्रह)
('नवोदय योजना' के अंतर्गत)
ले. बिजय मुर्मू
पृ.120, रु.170/-
ISBN : 978-93-89778-58-8

जावे ओरग (संताली नाटक)
ले. शारिका मांझी
पृ.80, रु.150/-
ISBN : 978-93-91494-62-9

सिंधी

नटसम्राट (पुरस्कृत मराठी नाटक)
ले. वी. वी. शिरवाडकर
अनु. किशोर लालवानी
पृ. 90, रु.150/-
ISBN : 978-93-90866-84-7

धर्मयुद्ध (पुरस्कृत राजस्थानी नाटक)
ले. अर्जुन देव चारण
अनु. रोशनी रोहरा
पृ. 176, रु.250/-
ISBN : 978-93-91494-93-3

जदीद सिंधी साहित्य में जमालियात
संपा. प्रेम प्रकाश
पृ. 316, रु.375/-
ISBN : 978-93-90866-86-1

मोहन कल्पना जून छूंड कहानियाँ
संपा. साहिब बिजानी
पृ. 244, रु.375/-
ISBN : 978-93-91494-32-2

तमिऴ

तंजई प्रकाश (विनिबंध)
ले. के. पंजागम
पृ. 112, रु.50/-
ISBN : 978-93-91017-58-3

ला.सा.रा. (विनिबंध)
ले. ला.सा.रा. सप्तऋषि
पृ. 128, रु.50/-
ISBN : 978-93-9101-13-2

एम. गोपालकृष्ण अय्यर (विनिबंध)
ले. उषा महादेवन
पृ. 128, रु.50/-
ISBN : 978-93-91017-40-8

ज्ञानकूटन (विनिबंध)
ले. अज़गियासिंगारी
पृ. 128, रु.50/-
ISBN : 978-93-91017-48-4

एम.एल. थंगप्पा (विनिबंध)
ले. पावन्नन
पृ. 128, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-215-0

सिरुवर नादगा कलंजियम
(बाल नाटक संग्रह)
संक. मू. मुरुगेश
पृ.320, रु.255/-
ISBN : 978-93-90866-11-3

थी. जानकीरमानिन थेरन्थेदुथा सिरुकाथाईगल
(थी. जानकीरमन की चुनिंदा कहानी-संग्रह)
संकलन : मालन
पृ.288, रु.240/-
ISBN : 978-93-91017-66-8

इलैयावर्गलिन पुदुक्कविथाईगल
(तमिऴ युवा कवियों की कविताओं का संकलन)
चयन एवं संक. तमिष़वन
पृ. 192, रु.175/-
ISBN : 978-93-9107-75-0

वल्लीकन्ननिन थेरन्थेदुथा सिरुकथाईगल
(वल्लीकन्नन की चुनिंदा कहानियों का संकलन)
संक. मेलम शिवसु
पृ. 288, रु.240/-
ISBN : 978-93-91017-95-8

तामिष़ कविथाईयियल
('तमिऴ काव्य एवं छंदशास्त्र' पर संगोष्ठी पत्र)
संक. एवं संपा. : आर. संबाथ
पृ. 608, रु.440/-
ISBN : 978-93-90866-27-4

ना. वानामालालाई नूतरंडु उरैयरंग कट्टुराईगल
(ना. वानामालालाई की शताब्दी पर आयोजित परिसंवाद के संगोष्ठी पत्र)
संक. आर. कामरासु
पृ. 288, रु.315/-
ISBN : 978-93-9107-30-9

पुलावरेरु अरिमथी थेनागनारिन थेर्नथेदुक्कप्पट्टा कविथायगल
(अरिमथी थेनागन की चुनिंदा कविताओं का संकलन)
संक. पुधुवई युगभारती
पृ. 176, रु.220/-
ISBN : 978-93-5548-032-3

तमिष़िल रयिल कथईगल
(तमिऴ कहानियों का संकलन)
चयन एवं संक. सा. कंदासामी
पृ. 336, रु.270/-
ISBN : 978-93-5548-189-4

थिरानैवम कोटपादुम
(संगोष्ठी पत्र संग्रह)
संक. एस. कार्लोस (तमिषवन)
पृ. 192, रु.180/-
ISBN : 978-93-5548-212-9

करुमई निरक कन्नन
(पुरस्कृत मलयाळम् कविता-संग्रह)
ले. प्रभा वर्मा
अनु. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम
पृ. 176, रु.170/-
ISBN : 978-93-91017-67-5

पारिजात (पुरस्कृत हिंदी उपन्यास)
ले. नसीरा शर्मा
अनु. साईसुब्बालक्ष्मी
पृ. 864, रु.1150/-
ISBN : 978-93-90866-58-8

करुंकुंद्रम (पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास)
ले. ममंग दई
अनु. कन्नैयन दक्षिणामूर्ति
पृ. 368, रु.290/-
ISBN :978-93-91017-05-7

भीलार्गलिन भारतम
ले. भगवानदास पटेल
अनु. पी. सरस्वती
पृ. 240, रु.270/-
ISBN : 978-93-9107-32-3

मुथुप्पादी सनांगलिन कढ़ाई
(पुरस्कृत कन्नड उपन्यास)
ले. बोलवार मोहम्मद कुन्ही
अनु. इरैयडियां (एन.दास)
पृ. 1152, रु.780/-
ISBN : 978-93-91494-96-4

कनामिहिर मेदु
(पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास)
ले. वाणी बसु
अनु. पी. भानुमति
पृ. 288, रु.315/-
ISBN : 978-93-91017-73-6

सापा भूमि (पुरस्कृत तेलुगु उपन्यास)
ले. बंदी नारायणस्वामी
तमिऴ अनु. इलंभारती
पृ. 368, रु.375/-
ISBN : 978-93-5548-138-2

राजिन्दर सिंह बेदियिन थेरंथेदुथा सिरुकाथाईगल
(राजिंदर सिंह बेदी का कहानी-संग्रह) उर्दू में चयन और संक. गोपी चंद नारंग द्वारा तमिऴ में अनुवाद जय रतन के अंग्रेज़ी संस्करण के माध्यम) एस. कनकराज
पृ. 432, रु.330/-
ISBN : 978-93-5548-139-9

तकषि़ शिवशंकर पिल्लै (विनिबंध)
ले. के.एस. रवि कुमार
अनु. टी. विजयलक्ष्मी
पृ. 128, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-098-9

कमला दास (विनिबंध)
ले. पी.पी. रवींद्रन
अनु. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम
पृ. 160, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-216-7

अनियुम मत्रा कढईगलुम
(पुरस्कृत ओड़िआ कहानी-संग्रह)
ले. गौरहरि दास
अनु. कुमारी एस. नीलकांतन
पृ. 286, रु.315
ISBN : 978-93-5548-144-3

वैक्कम मोहम्मद बशीर (विनिबंध)
ले. एम.एम. कारेसेरी
अनु. थोपिल मोहम्मद मीरान
पृ. 128, रु.50/-
ISBN : 978-93-91017-52-1

भरत गीतम्
प्रख्यात तमिऴ कवियों के देशभक्ति गीतों का चयन
पृ. 16, रु.40/-
ISBN : 978-93-91494-43-8

विदुथलाई इयक्का तमिष़ पडलगाल
(तमिळ स्वतंत्रता गीत)
संक. पोन. शौरिराजन
पृ. 128, रु.135/-
ISBN : 978-93-91017-96-5
(पुनर्मुद्रण)

तमिष़ इलक्किया वरलारु
(तमिऴ साहित्य का इतिहास)
ले. मू. वरदरासन
पृ. 456, रु.250/-
ISBN : 978-81-720-1164-4

अंदल
ले. के.ए. मनावलन
पृ. 96, रु.50/-
ISBN : 978-81-70-1633-6

कंबन
ले. एस महाराजन
अनु. के. मीनाक्षी सुंदरम
पृ. 96, रु.50/-
ISBN : 978-81-7201-636-0

का. अयोतिदास पंडिथर
ले. गौतम सन्नाह
पृ. 112, रु.50/-
ISBN : 978-81-260-2466-6

एव्वइयर
ले. पेरियाकरुप्पन (तमिष़न्नल)
पृ. 112, रु.50/-
ISBN : 978-81-260-0057-0

पुथुमाइप्पिथन
ले. वल्लीकन्नन
पृ. 96, रु.50/-
ISBN : 978-81-260-2370-8

ए.एस. गनानसंबंथन
ले. निर्मला मोहन
पृ. 128, रु.50/-
ISBN : 978-81-260-2370-8

मणिक्कावासकर (विनिबंध)
अनु. जी. वन्मिकानाथन
पृ. 96, रु.50/-
ISBN : 978-81-260-2884-9

सु. समुत्तिरम (विनिबंध)
ले. आर. कामरासु
पृ. 128, रु.50/-
ISBN : 978-81-260-4130-5

शुद्धानंद भारतियार (विनिबंध)
ले. सुभाष चंद्रबोस
पृ. 128, रु.50/-
ISBN : 978-81-260-1783-X

मनोनमणियम सुंदरमपिल्लै (विनिबंध)
ले. ना. वेलुसामी
पृ. 144, रु.50/-
ISBN : 978-81-260-1129-7

भगवान बुद्धर (जीवनी)
ले. धर्मानंद कोसंबी
तमिऴ अनु. : का. श्री श्री
पृ. 336, रु.270/-
ISBN : 978-93-87567-35-1

रुद्रमादेवी (तेलुगु ऐतिहासिक उपन्यास)
ले. नोरी नरसिम्हा शास्त्री
अनु. एन. दक्षिणामूर्ति
रु.570/-
ISBN : 978-93-5548-183-2

जीवन लीला (गुजराती यात्रा-वृत्तांत)
ले. काका कालेलकर
अनु. बी. एम. कृष्णासामी
पृ. 480, रु.385/-
ISBN : 978-93-88468-76-7

पावलरेरु पेरुन्चिथिरानार (विनिबंध)
ले. जे. जगतराचगन
पृ. 128, रु.50/-
ISBN : 978-93-87989-26-9

श्री रामानुसर (विनिबंध)
ले. एम. नरसिम्माचारी
अनु. सुंदर मुरुगन
पृ. 72, रु.50/-
ISBN : 978-93-88468-09-1

अब्राह्म पंडितार (विनिबंध)
ले. एन. मम्मथु
पृ. 112, रु.50/-
ISBN : 978-81-260-4203-6

एच.ए. कृष्णा पिल्लै (विनिबंध)
ले. वाई. ज्ञान चंद्र जॉनसन
पृ. 128, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-047-7

इरंदम इदम (मलयाळम् गौरव ग्रंथ)
ले. एम. टी. वासुदेवन नायर
अनु. आर. क्रुइंजिवेलन
पृ.423, रु.190/-
ISBN : 81-260-0893-8

सुंदरा रामास्वामी (विनिबंध)
ले. अरविंदन
पृ.128, रु.50/-
ISBN : 978-81-260-4979-0

जे. कृष्णमूर्ति (विनिबंध)
ले. शांता रामेश्वर राव
अनु. अक्कलुर रवि
पृ. 136, रु.50/-
ISBN : 978-81-260-5399-5

वी. राघवन (विनिबंध)
ले. नंदिनी रमानी
पृ. 104, रु.50/-
ISBN : 978-93-91494-45-2

त्यागराज (विनिबंध)
ले. वी. राघवन
पृ. 80, रु.50/-
ISBN : 978-93-91494-44-5

तेलुगु

रसानुभवम (कला अनुभव)
ले. मैसूर हिरियन्ना
अनु. एस.टी.जी. वसंतलक्ष्मी
पृ. 120, रु.175/-
ISBN : 978-93-5548-066-8

श्यामा माधवीयम
(पुरस्कृत मलयाळम् कविताएँ)
ले. प्रभा वर्मा
अनु. एल.आर.स्वामी
पृ. 192, रु.285/-
ISBN : 978-93-5548-184-9

देवुलापल्ली रामानुज राव (विनिबंध)
जे. चेन्नईया
पृ. 120, रु.50/-
ISBN : 978-93-91017-26-2

मल्लादी रामकृष्ण शास्त्री (विनिबंध)
ले. पी.एस. गोपालकृष्ण
पृ. 140, रु.50/-
ISBN : 978-93-91017-19-4

समाला सदाशिव (विनिबंध)
ले. जी. चेन्नाकेशव रेड्डी
पृ. 168, रु.50/-
ISBN : 978-93-91017-10-1

बालाला मांची कथालु
(तेलुगु में बाल कहानी संकलन)
संक. एवं संपा. वेलागा वेंकटप्पाय्या
पृ. 260, रु.250/-
ISBN : 978-93-91017-49-1

येक्कादेक्काडो पदेसिना वास्थुवुलु
(पुरस्कृत मलयाळम् कविता-संग्रह *मारनु वेचा वास्तुकल*)
ले. के. सच्चिदानंदन
अनु. एल.आर. स्वामी
पृ. 232, रु.250/-
ISBN : 978-93-91017-88-0

शंकरमबाड़ी सुंदराचारी (विनिबंध)
ले. वी.आर. रसानी
पृ. 156, रु.50/-
ISBN : 978-93-91017-59-0

तेलुगु गिरिजाना साहित्य
(तेलुगु जनजातीय कहानियों का संकलन)
संक. एवं संपा. शक्ति शिवरामकृष्ण
पृ. 300, रु.280/-
ISBN : 978-93-91017-24-8

तेनाली रामकृष्ण (विनिबंध)
ले. तडेपल्ली पतंजलि
पृ. 132 रु.50/-
ISBN : 978-93-91017-71-2

भूषणम (विनिबंध)
ले. जी. एस. चालामी
पृ. 132, रु.50/-
ISBN : 978-93-91494-98-8

तेलुगु साहित्य विवाद - भावजला अध्ययनम
(तेलुगु साहित्यिक आलोचना पर महत्त्वपूर्ण निबंधों का एक खंड)
संक. रचापलेम चंद्रशेखर रेड्डी
पृ. 192, रु.200/-
ISBN : 978-93-91017-97-2

गुंटुरु शेषेंद्र शर्मा (विनिबंध)
ले. आर. वी. एस. सुंदरम
पृ. 124, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-035-4

अवन्त्सा सोमसुंदर (विनिबंध)
ले. चंदू सुब्बाराव
पृ. 128, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-036-1

मा. गोखले
ले. पापिनेनी शिवशंकर
पृ. 128, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-033-0

नेदुनुरी गंगाधरम (विनिबंध)
ले. सन्निधानम नरसिम्हा शर्मा
पृ. 80, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-034-7

व्यास गुहाकु दारी
(साहित्य अकादेमी संवत्सर व्याख्यान : बत्तीस) 'व्यास गुहा का आरोहण'
ले. एस. एल. भैरप्पा
अनु. एस. वी. रामा राव
पृ. 24, रु.25/-
ISBN : 978-93-91494-57-5

कनकदासु (विनिबंध)
ले. टी.एन. नागरत्ना
अनु. जी.एस. मोहन
पृ. 112, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-141-2

इथाचेट्टु देवुदु (आदिवासी जीवन पर ओड़िआ फ़िक्शन - दादी बुद्ध)
ले. गोपीनाथ मोहंती
अनु. तुर्लापति राजेश्वरी
पृ. 96, रु.125/-
ISBN : 978-93-91494-047-0

श्रीनाथुडु (विनिबंध)
ले. जंधयाल जयकृष्ण बापूजी
पृ. 116, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-090-3

एन्नी पाकिस्तानुलु
(पुरस्कृत हिंदी उपन्यास *कितने पाकिस्तान* का अनुवाद)
ले. कमलेश्वर
अनु. श्री वाई.सी.पी. वेंकट रेड्डी
पृ. 416, रु. 360/-
ISBN : 978-93-5548-082-8

प्रमुख सम्पदाकुडु रचयिता गोरा शास्त्री
(गोरा शास्त्री की जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी में प्रस्तुत संगोष्ठी पत्र)
संपा. के. लक्ष्मण राव
पृ. 104, रु.140/-
ISBN : 978-93-5548-200-6

मखदूम मोहिउद्दीन (विनिबंध)
ले. सैय्यद जाफ़र
अनु. अम्मांगी वेणुगोपाल
पृ. 128, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-339-3
(पुनर्मुद्रण)

गुंटुरु शेषेंद्र शर्मा (विनिबंध)
ले. आर.वी.एस. सुंदरम
पृ. 124, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-035-4

उर्दू

कुल्लियात-ए-सुरूर जहानाबादी
चयन एवं संपा. अलिफ़ नाज़िम
पृ. 345, रु.450/-
ISBN : 978-93-90866-96-0

पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नाला सोपारा
(पुरस्कृत हिंदी उपन्यास)
ले. चित्रा मुदगल
अनु. अहसान अय्यूबी
पृ. 234, रु. 270/-
ISBN : 978-93-91017-39-2

कल्लिकडु की दास्तान
(पुरस्कृत तमिऴ उपन्यास *कल्लिकट्टू इतिहासम* का अनुवाद)
ले. वैरामुथु
अनु. हयात इफ़्तेख़ार
पृ. 308, रु. 350/-
ISBN : 978-93-91017-55-2

आलोक (पुरस्कृत मराठी कहानी-संग्रह)
(कार्यशाला के दौरान अनूदित)
ले. आसाराम लोमटे
संपा. साहेब अली
पृ. 235, रु. 270/-
ISBN : 978-93-91017-63-7

इक्षुगंधा (पुरस्कृत संस्कृत कहानी-संग्रह)
ले. अभिराज राजेंद्र मिश्र
अनु. अजय मालवीय
पृ. 75, रु. 120/-
ISBN : 978-93-91017-47-2

बालमुकुंद बेसब्र
ले. सैयद तकी आब्दी
पृ. 169, रु. 200/-
ISBN : 978-93-91017-31-6

पूर्णाहूति और दीगर कहानियाँ
(पुरस्कृत तेलुगु कहानी-संग्रह)
ले. पेद्दीभोटला सुब्बारमैया
अनु. नौशाद मंज़र
पृ. 243, रु. 275/-
ISBN : 978-93-5548-023-1

आनंद नारायण मुल्ला
(अंग्रेज़ी विनिबंध)
ले. ज़हीर अली
पृ. 98, रु. 50/-
ISBN : 978-93-5548-109-2

धुंध भरी वादियों से
(*मब्बिन हगे कनीवेयसी* पुरस्कृत कन्नड कविता-संग्रह)
ले. एच.एस. शिवप्रकाश
अनु. खलील मामून
पृ.146, रु.230/-
ISBN : 978-93-5548-085-9

धीमा (पुरस्कृत पंजाबी उपन्यास)
ले. नछत्तर
अनु. नदीम अहमद
पृ.152, रु.240/-
ISBN : 978-93-5548-013-2

एक नई दुनिया (अंग्रेज़ी उपन्यास)
ले. अमित चौधरी
अनु. फे. सीन. एजाज़
पृ.184, रु.290/-
ISBN : 978-93-5548-021-7

भामती (पुरस्कृत मैथिली उपन्यास)
ले. उषा किरण खान
अनु. एम. जहाँगीर वारसी
पृ. 240, रु.370/-
ISBN : 978-93-5548-305-8

गवाड़ (पुरस्कृत राजस्थानी उपन्यास)
ले. मधु आचार्य 'आशावादी'
अनु. नौशाद मंज़र
पृ.75, रु.135/-
ISBN : 978-93-5548-304-1

नियंत्रक-महालेखापरीक्षक द्वारा 31 मार्च 2022 को समाप्त वर्ष के लिए साहित्य अकादेमी के लेखाओं पर पृथक् लेखापरीक्षा प्रतिवेदन

1. हमने साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली के 31 मार्च 2022 के संलग्न तुलन-पत्र तथा समाप्ति वर्ष के आय एवं व्यय/प्राप्ति एवं भुगतान लेखा की लेखापरीक्षा नियंत्रक-महालेखापरीक्षक (कर्त्तव्य, शक्तियों एवं सेवा की शर्तें) अधिनियम, 1971 की धारा 20 (1) के अंतर्गत कर ली है। वर्ष 2023-24 तक की अवधि के लिए लेखापरीक्षा सौंपी गई थी। वित्तीय विवरणों में अकादेमी के तीन क्षेत्रीय कार्यालयों तथा दो बिक्री कार्यालयों के लेखे भी शामिल हैं। इन वित्तीय विवरणों को तैयार करने की ज़िम्मेदारी अकादेमी के प्रबंधन की है। हमारी ज़िम्मेदारी लेखापरीक्षा के आधार पर इन वित्तीय विवरणों पर विचार व्यक्त करने की है।
2. इस पृथक् लेखापरीक्षा प्रतिवेदन में भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की टिप्पणियाँ केवल उत्तम लेखा पद्धतियों, लेखा मानकों प्रकटीकरण नियमों आदि के वर्गीकरण, अनुपालन के संबंध में हैं। वित्तीय लेन-देन के लेखापरीक्षा की टिप्पणियाँ नियमों, विनियमों, कानून एवं कार्यान्वयन पहलुओं, यदि कोई है, का उल्लेख निरीक्षण प्रतिवेदन/नियंत्रक-महालेखापरीक्षक के लेखापरीक्षा प्रतिवेदन में पृथक् रूप से किया गया है।
3. हमने लेखापरीक्षा सामान्यतः भारत में स्वीकृत लेखापरीक्षण मानकों और लागू नियमों के अनुरूप की है। इन मानकों में अपेक्षित है कि लेखापरीक्षा इस प्रकार आयोजित तथा निष्पादित की जाए कि वित्तीय विवरण तथ्यों की गलतबयानी से मुक्त हों। वित्तीय विवरणों की लेखापरीक्षा वित्तीय विवरणों में दी गई राशियों तथा तथ्यों के समर्थन में प्रस्तुत साक्ष्यों के आधार पर की जाती है। लेखापरीक्षा में लेखा संबंधी नियमों तथा प्रबंधन की महत्त्वपूर्ण सूचनाओं के साथ-साथ वित्तीय विवरणों की प्रस्तुति का पूर्ण मूल्यांकन भी शामिल है। हमें विश्वास है कि हमारी लेखापरीक्षा हमारे विचारों को उचित आधार प्रदान करती है।
4. अपनी लेखापरीक्षा के आधार पर हम सूचित करते हैं कि :

   (i) हमारी सर्वोत्तम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार हमने अपनी लेखापरीक्षा के उद्देश्य से आवश्यक सूचनाएँ और स्पष्टीकरण प्राप्त कर लिए हैं।

   (ii) इस प्रतिवेदन से संबंधित तुलनपत्र, आय एवं व्यय खाता/प्राप्ति एवं भुगतान खाता को वित्त मंत्रालय द्वारा स्वीकृत प्रारूप के अनुरूप तैयार किया गया है।

   (iii) हमारे विचार से लेखापरीक्षा के दौरान लेखा पुस्तकों की जाँच करने पर प्रतीत होता है कि साहित्य अकादेमी में लेखा पुस्तकों तथा अन्य संबंधित दस्तावेज़ों को समुचित ढंग से रखा जा रहा है।

   (iv) आगे हम यह सूचित करते हैं कि-

<u>ए. सामान्य</u>

ए.1 वित्त मंत्रालय द्वारा निर्धारित खाते के सामान्य प्रारूप के अनुसार शुद्ध अधिशेष/घाटे के शेष को संग्रह/पूँजी निधि की अनुसूची-I में स्थानांतरित किया जाना चाहिए किंतु अकादेमी ने इसे रक्षित तथा अधिशेष निधि की अनुसूची-II में स्थानांतरित कर दिया है। इसे गत वर्ष भी इंगित किया गया था किंतु प्रबंधन द्वारा कोई सुधारात्मक कार्रवाई नहीं की गई।

ए.2 31 मार्च 2022 तक रु. 83.12 लाख की राशि विविध देनदारों द्वारा दी जानी बकाया है। यह राशि 1987-88 से 2021-22 की अवधि से संबंधित है। लंबे समय से लंबित देनदारों की समीक्षा की जानी चाहिए तथा यदि संदिग्ध हो तो आवश्यक कदम उठाए जाने चाहिए।

बी. सहायता अनुदान

वर्ष के दौरान प्राप्त सहायता अनुदान राशि 43.69 करोड़ रुपए है। इसमें गत वर्ष की 3.74 करोड़ रुपए की अव्ययित राशि शेष है। वर्ष के दौरान 8.38 करोड़ रुपए की आंतरिक प्राप्तियाँ भी हैं। कुल उपलब्ध निधि 55.81 करोड़ रुपए है तथा अकादेमी ने 47.88 करोड़ रुपए की राशि का उपयोग किया है तथा उसमें से वर्ष के अंत तक 7.93 करोड़ रुपए की अव्ययित राशि शेष है।

सी. प्रबंधन पत्र

लेखा परीक्षा प्रतिवेदन में जिन कमियों को शामिल नहीं किया गया है, उनके बारे में साहित्य अकादेमी को प्रबंधन पत्र के माध्यम से प्रभावी कार्रवाई के लिए अलग से बताया गया है।

(v) पूर्ववर्ती अनुच्छेदों में व्यक्त हमारे विचारों के संदर्भ में हम यह कहना चाहते हैं कि जिस तुलनपत्र, आय एवं व्यय लेखा तथा प्राप्ति एवं भुगतान लेखा का उपयोग इस प्रतिवेदन के लिए किया गया है, वे लेखा बहियों के साथ अनुबंधित हैं।

(vi) हमारे विचार और हमारी सर्वोत्तम सूचना तथा हमें दिए गए स्पष्टीकरणों के अनुसार, वित्तीय विवरण में दी गई महत्त्वपूर्ण सूचनाओं तथा अनुलग्नक में दिए गए अन्य तथ्यों के आधार पर, हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि यह रपट भारत में स्वीकृत लेखापरीक्षा मानकों और नियमों के अनुरूप है।

(क) यह साहित्य अकादेमी के 31 मार्च 2022 तक के कार्यकलापों के तुलनपत्र से संबंधित है; तथा

(ख) उसी तिथि को समाप्त वर्ष के अधिशेष के आय एवं व्यय लेखा से संबंधित है।

भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की ओर से

ह./-

(राजीव कुमार पाण्डेय)

महानिदेशक लेखापरीक्षा

(केन्द्रीय व्यय), नई दिल्ली

स्थान : नई दिल्ली

दिनांक : 20 सितंबर 2022

''प्रस्तुत प्रतिवेदन मूल रूप से अंग्रेज़ी में लिखित पृथक् लेखापरीक्षा प्रतिवेदन का हिंदी अनुवाद है। यदि इसमें कोई विसंगति परिलक्षित होती है तो अंग्रेज़ी में लिखित प्रतिवेदन मान्य होगा।''

अनुलग्नक

1. आंतरिक लेखापरीक्षा व्यवस्था की पर्याप्तता

अकादेमी का आंतरिक लेखापरीक्षा चार्टर्ड-अकाउंटेंट फ़र्म द्वारा मार्च 2022 तक किया गया है।

2. आंतरिक नियंत्रण व्यवस्था की पर्याप्तता

अकादेमी की आंतरिक नियंत्रण व्यवस्था को निम्नलिखित के कारण सुदृढ़ करने की आवश्यकता है -

(i) स्थायी परिसंपत्ति रजिस्टर का रख-रखाव उचित प्रकार से नहीं किया गया है। फ़र्नीचर एवं स्थावर तथा कम्प्यूटरों का नियमित रूप से वर्ष के दौरान स्थायी परिसंपत्तियों तथा माल सूची का प्रत्यक्ष सत्यापन नहीं गया।

(ii) व्यय नियंत्रण पंजिका का रख-रखाव नहीं किया गया है।

(iii) लेखा परीक्षा की आपत्तियों पर प्रबंधन की प्रतिक्रिया प्रभावी नहीं है क्योंकि लेखापरीक्षा पैरा नं. 29 अब तक बकाया है।

3. स्थायी परिसंपत्तियों के प्रत्यक्ष सत्यापन की व्यवस्था

भूमि, भवन तथा वाहन का मार्च 2021 तक तथा पुस्तकालय की पुस्तकों का 2019-20 की अवधि तक प्रत्यक्ष सत्यापन किया गया है। अन्य परिसंपत्तियों जैसे फ़र्नीचर एवं स्थावर सामग्री तथा कंम्प्यूटर एवं सहायक उपकरणों का प्रत्यक्ष सत्यापन केवल 2013-14 की अवधि तक का किया गया है।

4. सामान सूची के प्रत्यक्ष सत्यापन की व्यवस्था

लेखन-सामग्री तथा अन्य उपभोग्य वस्तुओं का प्रत्यक्ष सत्यापन केवल मार्च 2021 तक ही किया गया है।

5. देय राशि के भुगतान में नियमितता

लेखा के अनुसार 31 मार्च 2022 तक छह माह की अवधि से अधिक वाला कोई भुगतान नहीं था।

वार्षिक लेखा
2021-2022

लेखापरीक्षा प्रतिवेदन

तुलनपत्र	193
आय एवं व्यय लेखा	194
वित्तीय विवरण का अनुसूची निर्माण	195–219
प्राप्ति और भुगतान लेखा	220
सामान्य भविष्य निधि का प्राप्ति एवं भुगतान लेखा	230
सामान्य भविष्य निधि का तुलन-पत्र	231
सामान्य भविष्य निधि का आय एवं व्यय लेखा	232
सामान्य भविष्य निधि खाता निवेश और प्रोद्भूत ब्याज की अनुसूची	233
लेखा पर टिप्पणियाँ	236

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र विवरण यथातिथि 31 मार्च 2022

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुसूचियाँ	31 मार्च 2022	31 मार्च 2021
संग्रह निधि और दायित्व			
संग्रह निधि	1	10,000,000	10,000,000
आरक्षित और अधिशेष	2	(52,329,360)	(94,383,962)
नियत/अक्षय निधि	3	445,213,817	454,203,178
सुरक्षित ऋण और उधार	4	-	-
असुरक्षित ऋण और उधार	5	-	-
अस्थगित जमा दायित्व	6	95,437,945	83,658,494
चालू दायित्व और उपबंध	7	183,588,707	77,449,112
योग		**681,911,109**	**530,926,822**
परिसंपत्तियाँ			
स्थायी परिसंपत्तियाँ	8	109,851,044	213,553,310
नियत/अक्षय निधियों से निवेश	9	97,868,746	98,734,681
नियत	10	-	-
चालू परिसंपत्ति, ऋण, अग्रिम आदि	11	474,191,319	218,638,831
विविध व्यय			
(एक सीमा एक अवलेखित या समायोजित)			
योग		**681,911,109**	**530,926,822**
महत्त्वपूर्ण लेखा नीतियाँ	27		
प्रासंगिक दायित्व और लेखा पर टिप्पणियाँ	28		

	ह./–	ह./–	ह./–	ह./–
स्थान : नई दिल्ली	**(कुलदीप चंद्र)**	**(बाबुराजन एस.)**	**(संजय कुमार)**	**(के. श्रीनिवासराव)**
दिनांक : 10 जून 2022	*प्रवर लिपिक*	*उपसचिव, लेखा*	*उपसचिव, प्रशासन*	*सचिव*

साहित्य अकादेमी

आय और व्यय लेखा : 31 मार्च 2022 को समाप्त वर्ष के लिए

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुसूचियाँ	31 मार्च 2022	31 मार्च 2021
आय			
बिक्री/सेवाओं से प्राप्त आय	12	566,673	1,539,741
अनुदान/इमदाद राशि से प्राप्त आय	13	393,396,267	294,676,495
शुल्क/अंशदान प्राप्त	14	144,719	108,150
निवेश से प्राप्त आय	15	-	-
रॉयल्टी, प्रकाशन इत्यादि से प्राप्त आय	16	14,138,095	57,876,591
प्राप्त आय	17	1,986,841	2,138,497
अन्य आय	18	2,576,305	1,955,003
पूर्ण हुए कार्यों तथा किए जा रहे कार्यों के स्टॉक में उतार/चढ़ाव	19	4,112,672	(2,606,377)
योग (ए)		**416,921,572**	**355,688,099**
व्यय			
स्थापना व्यय	20	169,977,202	147,198,302
अन्य प्रशासनिक व्यय इत्यादि	21	89,733,355	93,467,468
संवर्धन एवं प्रचार–प्रसार की गतिविधियाँ	22	111,918,964	79,019,179
अनुदान, इमदाद आदि पर व्यय	23	135,449	92,205
वित्तीय प्रभार	24	-	-
योग (बी)		**371,764,970**	**319,777,154**
आय पर व्यय का आधिक्य (ए–बी)		45,156,602	35,910,945
पूर्व अवधि मदें	25	-	-
अतिरिक्त साधारण मदें–सेवानिवृत्ति/मूल्यह्रास	26	(3,102,000)	-
कुल योग अधिशेष के कारण/(घाटा) पूँजी निधि में अग्रेनीत		42,054,602	35,910,945
महत्त्वपूर्ण लेखा नीतियाँ	27		
प्रासंगिक दायित्व और लेखा पर टिप्पणियाँ	28		

	ह./–	ह./–	ह./–	ह./–
स्थान : नई दिल्ली	**(कुलदीप चंद्र)**	**(बाबुराजन एस.)**	**(संजय कुमार)**	**(के. श्रीनिवासराव)**
दिनांक : 10 जून 2022	*प्रवर लिपिक*	*उपसचिव, लेखा*	*उपसचिव, प्रशासन*	*सचिव*

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण, यथातिथि 31 मार्च 2022

अनुसूची–1

(राशि रुपये में)

विवरण		31 मार्च 2022	31 मार्च 2021
संग्रह निधि			
	वर्ष के आरंभ में शेष	10,000,000	10,000,000
जमा	संग्रह निधि में योगदान	-	-
	आय और व्यय लेखा से स्थानांतरित		
	कुल आय/(व्यय) का शेष	-	-
जमा	संग्रह निवेश पर प्राप्त कुल ब्याज	654,975	768,303
घटा	वर्ष के दौरान योजनागत संग्रह में स्थानांतरित	(654,975)	(768,303)
घटा	सामान्य आरक्षित में स्थानांतरित शेष	-	-
	योग (ए)	**10,000,000**	**10,000,000**
आय और व्यय लेखा			
	वर्ष के आरंभ में शेष	-	-
जमा	उक्त संग्रह/पूंजीगत निधि से स्थानांतरित शेष	-	-
	आय और व्यय लेखा से स्थानांतरित कुल आय/व्यय का शेष		
	आय और व्यय लेखा से	-	-
	एन.ई. से योजना में अस्थायी स्थानांतरण की छूट		-
	योग (बी)	-	-
	वर्ष के अंत में शेष (ए+बी)	**10,000,000**	**10,000,000**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2022

अनुसूची–2

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2022	31 मार्च 2021
आरक्षित और अधिशेष		
1. आरक्षित पूँजी		
पिछले लेखा के अनुसार	-	-
जमा : वर्ष के दौरान जमा राशि	-	-
घटा : वर्ष के दौरान कटौतियाँ	-	-
योग	-	-
2. आरक्षित पुनर्मूल्यांकन		
पिछले लेखा के अनुसार	-	-
जमा : वर्ष के दौरान जमा राशि	-	-
घटा : वर्ष के दौरान कटौतियाँ	-	-
योग	-	-
3. विशेष आरक्षित		
पिछले लेखा के अनुसार	-	-
जमा : वर्ष के दौरान जमा राशि	-	-
घटा : वर्ष के दौरान कटौतियाँ	-	-
योग	-	-
4. सामान्य आरक्षित		
आदिशेष	(94,383,962)	(130,294,907)
जमा : वर्ष के दौरान अधिकता / (घाटा)	42,054,602	35,910,945
जमा : संग्रह निधि से स्थानांतरित	-	-
जमा : पूर्व अवधि समायोजना	-	-
योग	(52,329,360)	(94,383,962)
योग	**(52,329,360)**	**(94,383,962)**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2022

अनुसूची–3

(राशि रुपये में)

विवरण	निधि–वार विच्छेद	31 मार्च 2022	31 मार्च 2021
नियत/अक्षय निधियाँ			
(ए) निधियों का आदि शेष		454,203,178	435,447,284
(बी) निधियों में बढ़ोतरी			
i दान/अनुदान			
अनुदान पूंजीकृत–स्थायी परिसंपत्ति		1,559,080	1,830,641
अनुदान पूंजीकृत–पूंजीगत कार्य प्रगति पर		-	23,099,468
ii खातों में निवेश की गई निधियों से प्राप्त आय		3,562,275	5,339,025
iii **अन्य बढ़ोतरियाँ**			
बैंक ब्याज		103,707	109,864
प्रकाशनों/वीडियो फ़िल्में/कागज		-	-
पुस्तकालय एवं भेंट की गई पुस्तकें		217,347	85,696
अन्य जमा/समायोजन		5,710,548	834,302
सा.भ.नि. अंशदान और ब्याज	संलग्न संलनक के अनुसार	21,104,965	22,355,475
एन.पी.एस. अंशदान		-	-
योग (बी)		32,257,922	53,654,471
योग (ए+बी)		**486,461,100**	**489,101,755**
(सी) निधियों के इस्तेमाल/व्यय के उद्देश्यों के लिए पूँजी व्यय			
i स्थायी परिसंपत्ति		-	-
कार (सकल) की बिक्री में हानि		-	
वर्ष के दौरान कटौतियाँ/समायोजन		-	-
वर्ष के दौरान मूल्यह्रास		7,375,953	9,616,650
अन्य		-	-
एनएसडीएल को भुगतान		-	-
अंतिम निकासी		18,460,733	6,050,000
पूर्ण एवं अंतिम सामायोजन		8,709,064	12,176,842
योग		**34,545,750**	**27,843,492**
ii **राजस्व खर्च**			
वेतन, मजदूरी और भत्ते इत्यादि		-	-
वर्ष के दौरान कटौतियाँ/समायोजन/स्थानांतरण		-	-
सा.भ.नि. अंशदानकर्ताओं को ब्याज		6,701,533	7,055,085
अन्य प्रशासनिक व्यय		-	-
योग		6,701,533	7,055,085
योग (सी)		**41,247,283**	**34,898,577**
वर्ष के अंत में कुल शेष (ए+बी–सी)		**445,213,817**	**454,203,178**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2022

(राशि रुपये में)

विवरण		निधि–वार विच्छेद		योग
	स्थायी परिसंपत्ति निधि	प्रकाशन निधि	सा.भ.नि.	31 मार्च 2022
नियत/अक्षय निधि		**चालू वर्ष**		
(ए) निधियों का आदि शेष	**213,553,310**	**132,558,485**	**108,091,383**	**454,203,178**
(बी) निधियों में बढ़ोतरी				
i **दान/अनुदान**	-	-	-	-
अनुदान पूंजीकृत–स्थायी परिसंपत्तियाँ	1,559,080	-	-	**1,559,080**
अनुदान पूंजीकृत–पूंजीगत कार्य प्रगति पर	-	-	-	-
ii खातों में निवेश की गई निधियों से प्राप्त आय	-	-	5,339,025	**5,339,025**
iii **अन्य बढ़ोतरियाँ**				
बेंक ब्याज	-	-	109,864	**109,864**
प्रकाशनों/वीडियो/फ़िल्में/कागज़	-		-	-
पुस्तकालय/भेंट की गई पुस्तकें	2,17,347	-	-	**2,17,347**
अन्य जमा/समायोजन	-	41,12,672	15,97,876	**57,10,548**
सा.भ.नि. अंशदान और ब्याज	-	-	2,11,04,965	**2,11,04,965**
एन.पी.एस. अंशदान एवं ब्याज	-	-	-	-
योग (बी)	**1,776,427**	**4,112,672**	**26,368,823**	**32,257,922**
योग (ए+बी)	**215,329,737**	**136,671,157**	**134,460,206**	**486,461,100**
(सी) निधियों के इस्तेमाल/व्यय के उद्देश्यों के लिए				
i **पूंजी व्यय**				
स्थायी परिसंपत्तियाँ	-	-	-	-
कार (सकल) की बिक्री में हानि	-	-	-	-
वर्ष के दौरान कटौतियाँ/समायोजन	-	-	-	-
वर्ष के दौरान मूल्यह्रास	7,375,953	-	-	**7,375,953**
अन्य जमा/समायोजन				
एनएसडीएल को भुगतान	-	-	-	-
अंतिम निकासी	-	-	18,460,733	**18,460,733**
पूर्ण एवं अंतिम समायोजन	-	-	8,709,064	**8,709,064**
योग	**7,375,953**	**-**	**27,169,797**	**34,545,750**
ii **राजस्व खर्च**				
वेतन, मजदूरी और भत्ते इत्यादि	-	-	-	-
वर्ष के दौरान कटौतियाँ/समायोजन/स्थानांतरण	-	-	-	-
सा.भ.नि. अंशदानकर्ताओं को ब्याज	-	-	6,701,533	**6,701,533**
अन्य प्रशासनिक व्यय	-	-	-	-
योग	**-**	**-**	**6,701,533**	**6,701,533**
योग (सी)	**7,375,953**	**-**	**33,871,330**	**41,247,283**
वर्ष के अंत में कुल शेष (ए+बी–सी)	**207,953,784**	**136,671,157**	**100,588,876**	**445,213,817**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2022

(राशि रुपये में)

विवरण		निधि–वार विच्छेद		योग
	स्थायी परिसंपत्ति निधि	प्रकाशन निधि	सा.भ.नि.	31 मार्च 2022
	गत वर्ष			
(ए) निधियों का आदि शेष	**198,154,155**	**135,164,862**	**102,128,267**	**435,447,284**
(बी) निधियों में बढ़ोतरी				
i **दान/अनुदान**	-	-	-	-
अनुदान पूंजीकृत–स्थायी परिसंपत्तियाँ	1,830,641	-	-	**1,830,641**
अनुदान पूंजीकृत–पूंजीगत कार्य प्रगति पर	23,099,468	-	-	**23,099,468**
ii खातों में निवेश की गई निधियों से प्राप्त आय	-	-	5,339,025	**5,339,025**
iii **अन्य बढ़ोतरियाँ**				
बैंक ब्याज	-	-	109,864	**109,864**
प्रकाशनों/वीडियो/फिल्में/कागज़	-		-	-
पुस्तकालय में भेंट की गई पुस्तकें	85,696	-	-	**85,696**
अन्य जमा/समायोजन	-	(2,606,377)	3,440,679	**834,302**
सा.भ.नि. का अंशदान और ब्याज	-	-	22,355,475	**22,355,475**
एन.पी.एस. अंशदान एवं ब्याज	-	-	-	-
योग (बी)	**25,015,805**	**(2,606,377)**	**31,245,043**	**53,654,471**
योग (ए+बी)	**223,169,960**	**132,558,485**	**133,373,310**	**489,101,755**
(सी) निधियों के इस्तेमाल/व्यय के उद्देश्यों के लिए				
i **पूंजी व्यय**				
स्थायी परिसंपत्तियाँ	-	-	-	-
कार (सकल) की बिक्री में हानि	-	-	-	-
वर्ष के दौरान कटौतियाँ/समायोजन	-	-	-	-
वर्ष के दौरान मूल्यह्रास	9,616,650	-	-	**9,616,650**
अन्य				-
एनएसडीएल को भुगतान	-	-	-	-
अंतिम निकासी	-	-	6,050,000	**6,050,000**
पूर्ण एवं अंतिम समायोजन	-	-	12,176,842	**12,176,842**
योग	**9,616,650**	**-**	**18,226,842**	**27,843,492**
ii **राजस्व खर्च**				
वेतन, मजदूरी और भत्ते इत्यादि	-	-	-	-
वर्ष के दौरान कटौतियाँ/समायोजन/स्थानंतरण	-		-	-
सा.भ.नि. के अशंदानकर्ताओं को ब्याज	-	-	7,055,085	**7,055,085**
अन्य प्रशासनिक व्यय	-	-	-	-
योग	**-**	**-**	**7,055,085**	**7,055,085**
(सी)	**9,616,650**	**-**	**25,281,927**	**34,898,577**
वर्ष के अंत में कुल शेष (ए+बी–सी)	**213,553,310**	**132,558,485**	**108,091,383**	**454,203,178**

साहित्य अकादेमी

अनुसूची–4

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2022

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2022	31 मार्च 2021
सुरक्षित ऋण और उधार		
1 केंद्र सरकार	-	-
2 राज्य सरकार (उल्लेख करें)	-	-
3 **वित्तीय संस्थाएँ**		
(क) आवधिक ऋण	-	-
(ख) ब्याज प्रोद्भूत और देय	-	-
4 **बैंक**		
(क) आवधिक ऋण	-	-
(ख) ब्याज प्रोद्भूत और देय	-	-
(ग) अन्य ऋण (उल्लेख करें)	-	-
(घ) ब्याज प्रोद्भूत और देय	-	-
5 अन्य संस्थाएँ और अभिकरण	-	-
6 डिबेंचर और बॉण्ड्स	-	-
7 अन्य (उल्लेख करें)	-	-
योग	-	-

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2022

अनुसूची–5

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2022	31 मार्च 2021
सुरक्षित ऋण और उधार		
1 केंद्र सरकार	-	-
2 राज्य सरकार (उल्लेख करें)	-	-
3 वित्तीय संस्थाएँ	-	-
4 बैंक :		
(क) आवधिक ऋण	-	-
(ख) अन्य ऋण (उल्लेख करें)	-	-
5 अन्य संस्थाएँ और अभिकरण	-	-
6 डिबेंचर और बॉण्ड्स	-	-
7 आवधिक जमा	-	-
8 अन्य (उल्लेख करें)	-	-
योग	-	-

अनुसूची–6

विवरण	31 मार्च 2022	31 मार्च 2021
आस्थगित जमा दायित्व :		
(क) पूँजीगत उपस्करों तथा अन्य परिसंपत्तियों के बंधकीकरण द्वारा सुरक्षित स्वीकृतियाँ	-	-
(ख) उपदान के प्रावधान	5,87,69,598	5,16,95,790.00
(ग) अवकाश भुनाने के प्रावधान	3,66,68,347	3,19,62,704.00
(घ) अन्य	-	-
योग	**9,54,37,945**	**8,36,58,494**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2022

अनुसूची– 7

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2022	31 मार्च 2021
चालू दायित्व और उपबंध		
(ए) चालू दायित्व		
1 स्वीकृति		
प्रतिभूति जमा (द्वारा)		
पुस्तकालय के सदस्य	11,431,892	11,081,992
अन्य	516,291	516,291
2 विभिन्न लेनदार		
(क) रॉयल्टी	-	-
(ख) अन्य	1,933,349	1,082,773
(ग) गतावधि चेक व्युत्क्रमण	191,133	73,010
3 प्राप्त अग्रिम		
(क) ग्राहकों से अग्रिम	59,308,067	192,545
4 प्रोद्भूत ब्याज पर देय नहीं :		
(क) सुरक्षित ऋण / उधार	-	-
(ख) असुरक्षित ऋण / उधार	-	-
5 कानूनी दायित्व :		
(क) अतिशोध्य	-	-
(ख) अन्य	655,931	382,915
6 अन्य चालू दायित्व :		
(क) सा.भ.नि. लेखा	311,088	311,088
(ख) देय पेंशन	785,021	90,440
(ग) देय वेतन	-	-
(घ) अन्य कॉण्ट्रा भुगतान	-	-
7 अव्ययित अनुदान शेष	79,349,972	37,420,319
योग (ए)	**154,482,744**	**51,151,373**

साहित्य अकादेमी

जारी– अनुसूची–7

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2022

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2022	31 मार्च 2021
चालू दायित्व और उपबंध		
(बी) प्रावधान		
1. कर लगाने के लिए	-	-
2. प्रोद्भूत रॉयल्टी के लिए	3,563,531	6,500,000
3. अधिवर्षिता / पेंशन	2,100,000	2,100,000
4. संचित अवकाश भुनाना	247,695	247,695
5. व्यापार वारंटी / दावे	-	-
6. अन्य देय लेखापरीक्षा शुल्क	225,470	263,310
7. अन्य–व्यावसायिक शुल्क देय	41,300	-
8. उपदान के प्रावदान	1,46,77,874	1,16,51,314
9. अवकाश भुनाने के प्रावधान	284,400	-
10. पेंशनभोगियों को चिकित्सा सुविधा	-	-
योग (बी)	**29,105,963**	**26,297,739**
योग (ए+बी)	**183,588,707**	**77,449,112**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2022

अनुसूची–8

(राशि रुपये में)

क्र. सं.	विवरण	दर	कुल ब्लॉक					मूल्यह्रास				कुल ब्लॉक	
			वर्ष के प्रारंभ में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के दौरान परिवर्तन (180 दिन से अधिक	वर्ष के दौरान परिवर्तन (180 दिन से कम	वर्ष के दौरान कटौतियाँ/ स्थानांतरित	वर्ष के अंत में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के प्रारंभ में	वर्ष के दौरान परिवर्धन	वर्ष के दौरान कटौतियाँ	वर्ष के अंत तक कुल योग	चालू वर्ष के अंत तक का कुल योग	पिछले वर्ष के अंत तक का कुल योग
ए.	**स्थायी परिसंपत्ति**												
1	भूमि	-	8,695,884	-	-	-	8,695,884	-	-	-	-	8,695,884	8,695,884
2	भवन	10%	46,250,559	-	-	-	46,250,559	31,435,534	1,481,502	-	1,481,502	13,333,523	14,815,025
3	सयंत्र और तंत्र	15%	159,285	-	-	-	159,285	52,301	16,048	-	16,048	90,936	106,984
4	वाहन	15%	2,413,155	-	-	-	2,413,155	1,739,305	101,078	-	101,078	572,772	673,850
5	फ़र्नीचर और जुड़नार	15%	42,681,751	-	-	-	42,681,751	32,684,529	1,030,878	-	1,030,878	8,966,344	9,997,222
6	कार्यालय उपकरण	15%	30,582,129	114,302	73,194	-	30,769,625	26,522,624	631,561	-	631,561	3,615,440	4,059,505
7	कंप्यूटर/परिधीय	40%	20,853,586	122,500	1,151,044	5,300	22,121,830	19,472,523	831,634	1,060	830,574	1,818,733	1,381,063
8	विद्युतीय प्रस्थान	10%	926,558	-	-	61,420	865,138	733,081	19,348	-	19,348	112,709	193,477
9	पुस्तकालय में पुस्तकें	40%	45,674,514	-	103,340	3,040,580	42,737,274	37,563,774	3,264,964	-	3,264,964	1,908,536	8,110,740
10	पुस्तकालय पुस्तकें–भेंट स्वरूप	0%	470,705	-	217,347	-	688,052	-	-	-	-	688,052	470,705
	योग		**198,708,126**	**236,802**	**1,544,925**	**3,107,300**	**197,382,553**	**150,203,671**	**7,377,013**	**1,060**	**7,375,953**	**39,802,929**	**48,504,455**
बी.	**पूंजीगत कार्य प्रगति पर**		165,048,855	-	-	95,000,740	70,048,115	-	-	-	-	70,048,115	165,048,855
	कुल योग		**165,048,855**	-	-	**95,000,740**	**70,048,115**	-	-	-	-	**70,048,115**	**165,048,855**
	योग (ए+बी)		**363,756,981**	**236,802**	**1,544,925**	**98,108,040**	**267,430,668**	**150,203,671**	**7,377,013**	**1,060**	**7,375,953**	**109,851,044**	**213,553,310**
	गत वर्ष												
	स्थायी परिसंपत्तियाँ		196,791,789	230,405	1,685,932	-	198,708,126	140,587,021	9,616,650	-	150,203,671	48,504,455	56,204,768
	पूंजीगत कार्य प्रगति पर		141,949,387	23,600,000	-	500,532	165,048,855	-	-	-	-	165,048,855	141,949,387
	गत वर्ष का कुल योग		**338,741,176**	**23,830,405**	**1,685,932**	**500,532**	**363,756,981**	**140,587,021**	**9,616,650**	-	**150,203,671**	**213,553,310**	**198,154,155**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2022

जारी–अनुसूची–8

(राशि रुपये में)

क्र. सं.	विवरण	दर	कुल ब्लॉक					मूल्यह्रास				कुल ब्लॉक	
			वर्ष के प्रारंभ में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के दौरान परिवर्तन (180 दिन से अधिक	वर्ष के दौरान परिवर्तन (180 दिन से कम	वर्ष के दौरान कटौतियाँ/ स्थानांतरित	वर्ष के अंत में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के प्रारंभ में	वर्ष के दौरान परिवर्धन	वर्ष के दौरान कटौतियाँ	वर्ष के अंत तक कुल योग	चालू वर्ष के के अंत तक का कुल योग	पिछले वर्ष के अंत तक का कुल योग
1	**भूमि**												
	फ्रीहोल्ड	0%	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	पट्टे पर दिया	0%	8,695,884	-	-	-	8,695,884	-	-	-	-	8,695,884	8,695,884
	कुल योग (1)		**8,695,884**	**-**	**-**	**-**	**8,695,884**	**-**	**-**		**-**	**8,695,884**	**8,695,884**
2	**भवन**												
	फ्रीहोल्ड भूमि पर	10%	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	पट्टे की भूमि पर	10%	10,025,384	-	-	-	10,025,384	4,916,822	510,856	-	5,427,678	4,597,706	5,108,562
	स्वामित्व फ़्लैट्स/परिसर	10%	36,225,175	-	-	-	36,225,175	26,518,712	970,646	-	27,489,358	8,735,817	9,706,463
	कुल योग (2)		**46,250,559**	**-**	**-**	**-**	**46,250,559**	**31,435,534**	**1,481,502**	**-**	**32,917,036**	**13,333,523**	**14,815,025**
3	**संयंत्र मशीनरी और उपकरण**		-										
	तकनीकी उपकरण	15%	159,285	-	-	-	159,285	52,301	16,048	-	68,349	90,936	106,984
	कुल योग (3)		**159,285**	**-**	**-**	**-**	**159,285**	**52,301**	**16,048**	**-**	**68,349**	**90,936**	**106,984**
4	**वाहन**			-									
	मोटर, कार/स्कूटर	15%	2,413,155	-	-	-	2,413,155	1,739,305	101,078	-	1,840,383	572,772	673,850
	कुल योग (4)		**2,413,155**	**-**	**-**	**-**	**2,413,155**	**1,739,305**	**101,078**	**-**	**1,840,383**	**572,772**	**673,850**
5	**फर्नीचर**												
	फ़र्नीचर	10%	35,424,229	-	-	-	35,424,229	26,160,441	926,379	-	27,086,820	8,337,409	9,263,788
	स्थायी कैबिनेट्स, अलमारियाँ आदि	10%	133,309	-	-	-	133,309	22,986	11,032	-	34,018	99,291	110,323
	वोल्टेज स्टेबलाइजर्स, यूपीएस सिस्टम	15%	57,849	-	-	-	57,849	17,168	6,102	-	23,270	34,579	40,681
	जल वितरक	15%	39,667	-	-	-	39,667	12,508	4,074	-	16,582	23,085	27,159
	जल शोधक	15%	24,298	-	-	-	24,298	6,743	2,633	-	9,376	14,922	17,555
	एयर कूलर	15%	35,872	-	-	-	35,872	9,955	3,888	-	13,843	22,029	25,917
	एयर कंडीशनर	15%	6,966,527	-	-	-	6,966,527	6,454,728	76,770	-	6,531,498	435,029	511,799
	कुल योग (5)		**42,681,751**	**-**	**-**	**-**	**42,681,751**	**32,684,529**	**1,030,878**	**-**	**33,715,407**	**8,966,344**	**9,997,222**
6	**कार्यालय उपकरण**					-							
	कार्यालय उपकरण	15%	30,057,019	114,302	73,194	-	30,244,515	26,394,821	571,965	-	26,966,786	3,277,729	3,662,198
	फैक्स मशीन, स्कैनर	15%	25,263	-	-	-	25,263	7,765	2,625	-	10,390	14,873	17,498
	उपस्थिति मशीन	15%	194,848	-	-	-	194,848	40,966	23,082	-	64,048	130,800	153,882
	फ़ोटो कॉपियर	15%	175,000	-	-	-	175,000	37,406	20,639	-	58,045	116,955	137,594
	सीसीटीवी कैमरे	15%	109,999	-	-	-	109,999	35,574	11,164	-	46,738	63,261	74,425
	मोबाइल फ़ोन	15%	20,000	-	-	-	20,000	6,092	2,086	-	8,178	11,822	13,908
	कुल योग (6)		**30,582,129**	**114,302**	**73,194**	**-**	**30,769,625**	**26,522,624**	**631,561**	**-**	**27,154,185**	**3,615,440**	**4,059,505**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2022

जारी– अनुसूची–8

(राशि रुपये में)

क्र. सं.	विवरण	दर	कुल ब्लॉक					मूल्यह्रास				कुल ब्लॉक	
			वर्ष के प्रारंभ में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के दौरान परिवर्तन (180 दिन से अधिक	वर्ष के दौरान परिवर्तन (180 दिन से कम	वर्ष के दौरान कटौतियाँ/ स्थानांतरित	वर्ष के अंत में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के प्रारंभ में	वर्ष के दौरान परिवर्धन	वर्ष के दौरान कटौतियाँ	वर्ष के अंत तक कुल योग	चालू वर्ष के के अंत तक का कुल योग	पिछले वर्ष के अंत तक का कुल योग
7	**कंप्यूटर/परिधीय**												
	कंप्यूटर एवं कंप्यूटर परिधीय	40%	20,349,136	122,500	1,151,044	5,300	21,617,380	19,095,194	780,786	1,060	19,874,920	1,742,460	1,253,942
	कंप्यूटर सॉफ्टवेयर	40%	504,450	-	-	-	504,450	377,329	50,848	-	428,177	76,273	127,121
	कुल योग (7)		**20,853,586**	**122,500**	**1,151,044**	**5,300**	**22,121,830**	**19,472,523**	**831,634**	**1,060**	**20,303,097**	**1,818,733**	**1,381,063**
8	**विद्युतीय अधिष्ठान**												
	विद्युतीय अधिष्ठान	10%	926,558	-	-	61,420	865,138	733,081	19,348	-	752,429	112,709	193,477
	कुल योग (8)		**926,558**	-	-	**61,420**	**865,138**	**733,081**	**19,348**	-	**752,429**	**112,709**	**193,477**
9	**पुस्तकालय पुस्तकें**						-						
	पुस्तकालय पुस्तकें	40%	45,674,514	-	103,340	3,040,580	42,737,274	37,563,774	3,264,964	-	40,828,738	1,908,536	8,110,740
	कुल योग (9)		**45,674,514**	-	**103,340**	**3,040,580**	**42,737,274**	**37,563,774**	**3,264,964**	-	**40,828,738**	**1,908,536**	**8,110,740**
10	पुस्तकालय पुस्तकें/उपहार	0%	470,705	-	217,347	-	688,052	-	-	-	-	688,052	470,705
	कुल योग (10)		**470,705**	-	**217,347**	-	**688,052**	-	-	-	-	**688,052**	**470,705**
	कुल योग		**198,708,126**	**236,802**	**1,544,925**	**3,107,300**	**197,382,553**	**150,203,671**	**7,377,013**	**1,060**	**157,579,624**	**39,802,929**	**48,504,455**
बी.	**पूंजीगत कार्य प्रगति पर**		-				-						
	अन्य		3,128,097	-	-	3,128,097	-	-	-	-	-	-	3,128,097
	शौचालय		1,091,413	-	-	1,091,413	-	-	-	-	-	-	1,091,413
	मॉडयूलर वर्कस्टेशन		3,975,868	-	-	3,975,868	-	-	-	-	-	-	3,975,868
	ए.सी. प्लांट पुस्तकालय		5,556,495	-	-	5,556,495	-	-	-	-	-	-	5,556,495
	प्रोर्टबल शौचालय		207,625	-	-	207,625	-	-	-	-	-	-	207,625
	किताब घर एवं चार दीवार निर्माण आदि बेंगळूरु		3,450,300	-	-	1,034,195	2,416,105	-	-	-	-	2,416,105	3,450,300
	सिविल कार्य (कोलकाता)		974,369	-	-	974,369	-	-	-	-	-	-	974,369
	डक्टेबल ए.सी.		3,358,570	-	-	3,358,570	-	-	-	-	-	-	3,358,570
	द्वारका स्थित भवन निर्माण		124,699,468	-	-	57,067,458	67,632,010	-	-	-	-	67,632,010	124,699,468
	दिल्ली जल बोर्ड की पानी की लाइन का स्थानांतरण		235,452	-	-	235,452	-	-	-	-	-	-	235,452
	दिल्ली बीएसईएस विद्युत आपूर्ति लाइन का स्थानांतरण		1,649,084	-	-	1,649,084	-	-	-	-	-	-	1,649,084
	गैस आधारित स्प्रिंकलर सिस्टम		16,722,114	-	-	16,722,114	-	-	-	-	-	-	16,722,114
	कुल योग		**165,048,855**	-	-	**95,000,740**	**70,048,115**	-	-	-	-	**70,048,115**	**165,048,855**
	चालू वर्ष का योग		**363,756,981**	**236,802**	**1,544,925**	**98,108,040**	**267,430,668**	**150,203,671**	**7,377,013**	**1,060**	**157,579,624**	**109,851,044**	**213,553,310**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2022

अनुसूची–9

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2022			31 मार्च 2021		
नियत/अक्षय निधियों से निवेश	**राजस्व**	**सा.भ.नि./एन.पी.एस.**	**योग**	**राजस्व**	**सा.भ.नि./एन.पी.एस.**	**योग**
1 सरकारी प्रतिभूतियों से			-	-	-	-
2 अन्य स्वीकृत प्रतिभूतियाँ			-	-	-	-
3 शेयर			-	-	-	-
4 डिबेंचर और बॉण्ड्स			-	-	-	-
5 समानुषंगी और संयुक्त उद्यम			-	-	-	-
6 **अन्य**			-	-	-	-
– आवधिक जमा–संग्रह निधि/सा.भ.नि.	10,000,000	87,699,070	97,699,070	10,000,000	88,574,518	98,574,518
– आई.डी.बी.आई. फ्लैक्सी बॉण्ड	-	-	-	-	-	-
– आवधिक जमा–नई पेंशन योजना	-	169,676	169,676	-	160,163	160,163
योग	**10,000,000**	**87,868,746**	**97,868,746**	**10,000,000**	**88,734,681**	**98,734,681**

अनुसूची–10

विवरण	31 मार्च 2022			31 मार्च 2021		
निवेश–अन्य	**राजस्व**	**सा.भ.नि./एन.पी.एस.**	**योग**	**राजस्व**	**सा.भ.नि./एन.पी.एस.**	**योग**
1 सरकारी प्रतिभूतियों से	-	-	-	-	-	-
2 अन्य स्वीकृत प्रतिभूतियाँ	-	-	-	-	-	-
3 शेयर	-	-	-	-	-	-
4 डिबेंचर तथा बॉण्ड्स	-	-	-	-	-	-
5 समानुषंगी तथा संयुक्त उद्यम	-	-	-	-	-	-
6 अन्य (उल्लेख करें)	-	-	-	-	-	-
योग	**-**	**-**	**-**	**-**	**-**	**-**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2022

अनुसूची–11ए

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2022			31 मार्च 2021		
चालू परिसंपत्तियाँ, ऋण, अग्रिम आदि	राजस्व	सा.भ.नि./एन.पी.एस.	योग	राजस्व	सा.भ.नि./एन.पी.एस.	योग
(ए) चालू परिसंपत्तियाँ						
1 वस्तुसूची						
(क) स्टोर एंड स्पेयर्स	-	-	-	-	-	-
(ख) लूज टूल्स	-	-	-	-	-	-
(ग) प्रकाशन एवं कागज का स्टॉक	-					
तैयार माल	-	-	-	-	-	-
अकादेमी प्रकाशन	131,056,393	-	131,056,393	121,781,830	-	121,781,830
अपरोक्ष प्रकाशन	115,405	-	115,405	119,630	-	119,630
वीडियो फिल्में एवं सी.डी.	728,100	-	728,100	724,400	-	724,400
कार्य प्रगति पर	-	-	-	-	-	-
कच्चा माल	-	-	-	-	-	-
कागज़ : अपने पास	1,641,810	-	1,641,810	5,832,945	-	5,832,945
कागज़ : मुद्रणलयों में	3,129,449	-	3,129,449	4,099,680	-	4,099,680
2 विविध लेनदार						
(क) छः माल की अवधि से अधिक बकाया ऋण	8,312,236	-	8,312,236	6,666,013	-	6,666,013
(ख) अन्य	2,523,487	-	2,523,487	7,802,681	-	7,802,681
3 हाथ में शेष धन या बकाया राशि						
(जिसमें चेक/ड्राफ्ट रसीदी टिकट और अग्रदाय शामिल है)	636,289	-	636,289	580,660	-	580,660
4 बैंक में शेष धन						
(क) अनुसूचित बैंकों के साथ :						
–चालू खातों पर	-	-	-	-	-	-
–जमा खातों पर	-	-	-	-	-	-
–बचत खातों पर	78,713,683	7,112,225	85,825,908	36,839,659	8,249,491	45,089,150
(ख) गैर–अनुसूचित बैंकों के साथ :						
–चालू खातों पर	-	-	-	-	-	-
–जमा खातों पर	-	-	-	-	-	-
–बचत खातों पर	-	-	-	-	-	-
5 डाकघर बकाया राशि	-	-	-	-	-	-
बचत खातों में						
योग (ए)	**226,856,852**	**7,112,225**	**233,969,077**	**184,447,498**	**8,249,491**	**192,696,989**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2022

अनुसूची–11बी

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2022			31 मार्च 2021		
ऋण, अग्रिम तथा अन्य परिसंपत्तियाँ आदि (जारी)	राजस्व	सा.भ.नि./एन.पी.एस.	योग	राजस्व	सा.भ.नि./एन.पी.एस.	योग
(बी) ऋण, अग्रिम तथा अन्य परिसंपत्तियाँ						
1 **ऋण**						
(क) स्टॉफ	798,435	-	798,435	1,253,985	-	1,253,985
(ख) अन्य व्यक्ति/संस्था, जो सामान गतिविधियों कार्यों में संलग्न है	-	-	-	-	-	-
(ग) **अन्य**–सा.भ.नि. अग्रिम	-	2,421,874	2,421,874	-	5,254,807	5,254,807
2 **अग्रिम और अन्य राशियों जिन्हें नकदी अथवा सदृश अथवा उसके समतुल्य मूल्य के लिए वसूला जाना है**						
(क) पूंजी खातों पर	-	-	-	-	-	-
(ख) पूर्व भुगतान	-	-	-	-	-	-
(ग) **अन्य**						
स्रोतों से कर कटौती	20,954	1,783	22,737	359,794	811,220	1,171,014
प्रतिभूति जमा	4,712,643	-	4,712,643	4,687,643	-	4,687,643
पूर्व भुगतान खर्चे	43,306	-	43,306	567,371	-	567,371
संयुक्त सेवाएँ वसूली योग्य	1,497,698	-	1,497,698	-	-	-
अन्य वसूली योग्य	-	-	-		-	-
–कर्मचारियों को अग्रिम	134,212	-	134,212	42,555	-	42,555
–बाहरी पार्टी को अग्रिम	6,839,666	-	6,839,666	4,838,500	-	4,838,500
–पूंजीगत अग्रिम	217,482,640	-	217,482,640	-	-	-
3 **प्रोदभूत आय**						
(क) नियत/अक्षय निधियों से निवेश पर	3,084,783	3,184,248	6,269,031	3,084,783	5,041,184	8,125,967
(ख) निवेशों पर–अन्य	-	-	-	-	-	-
(ग) ऋणों तथा अग्रिमों पर	-	-	-	-	-	-
4 **प्राप्त करने योग्य दावे**						
(क) वसूली योग्य–सा.भ.नि.	-	-	-	-	-	-
योग (बी)	**234,614,337**	**5,607,905**	**240,222,242**	**14,834,631**	**11,107,211**	**25,941,842**
(योग) (ए+बी)	**461,471,189**	**12,720,130**	**474,191,319**	**199,282,129**	**19,356,702**	**218,638,831**

साहित्य अकादेमी

अनुसूची–12

31 मार्च 2022 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय लेखा के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2022	31 मार्च 2021
बिक्री/सेवाओं से प्राप्त आय		
1. **बिक्री से प्राप्त आय**		
(क) सभागार रखरखाव प्राप्ति	100,847	5,000
(ख) फ़ोटोकॉपी शुल्क	13,633	5,626
(ग) भारतीय साहित्य पर ऑनलाइन सामग्री की बिक्री	452,193	1,529,115
योग	**566,673**	**1,539,741**

अनुसूची–13

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2022	31 मार्च 2021
अनुदान/इमदाद (अटल अनुदान और प्राप्त इमदाद)		
1. भारत सरकार–संस्कृति मंत्रालय द्वारा	193,200,000	178,008,000
–अकादेमी सेल–राजस्व वेतन	165,062,000	133,840,000
–अकादेमी सेल–राजस्व सामान्य	-	-
–अकादेमी सेल–राजस्व एन.ई.	78,370,000	23,016,000
–अकादेमी सेल–पूंजीगत परिसंपत्तियों का सृजन	253,000	1,125,000
–अकादेमी सेल–टीएसपी राजस्व सामान्य	-	13,115,000
–अकादेमी सेल–स्वच्छता कार्य योजना	-	985,000
–विशेष सेल–शंघाई कॉरपोरेशन ऑर्गेनाइजेशन (एस.सी.ओ.)	-	-
–विशेष सेल–सुभाषचन्द्र बोस	-	-
–विशेष सेल–भारत महोत्सव–स्पेन	-	-
–विशेष सेल–भारत महोत्सव–नेपाल	-	-
–विशेष सेल–रामानुजाचार्य की जन्मशतवार्षिकी	-	-
2 राज्य सरकार	-	-
3 सरकारी अभिकरण	-	-
4 संस्थाएँ/कल्याणकारी निकाय	-	-
5 अंतरराष्ट्रीय संगठन	-	-
6 अन्य		
जमा : वर्ष के प्रारंभ में अव्ययित शेष	37,420,319	6,937,923
घटा : वर्ष के अंत में अव्ययित शेष	(79,349,972)	(37,420,319)
घटा : वर्ष के दौरान स्थायी परिसंपत्तियों पर ख़र्च की गई पूंजीकृत अनुदान राशि	(1,559,080)	(1,830,641)
घटा : वर्ष के दौरान पूंजीगत कार्य की प्रगति/अग्रिम में ख़र्च की गई पूंजीकृत अनुदान राशि	-	(23,099,468)
घटा : संस्कृति मंत्रालय को अनुदान वापस	-	-
योग	**393,396,267**	**294,676,495**

साहित्य अकादेमी

अनुसूची–14

31 मार्च 2022 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2022	31 मार्च 2021
शुल्क / अंशदान		
1. प्रवेश शुल्क	-	-
2. वार्षिक शुल्क / अंशदान	-	-
3. संगोष्ठी / कार्यक्रम शुल्क	-	-
4. परामर्श शुल्क	-	-
5. **अन्य**		
पुस्तकालय सदस्यता शुल्क	1,44,719	1,08,150
बुक क्लब सदस्यता शुल्क	-	-
योग	**1,44,719**	**1,08,150**

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2022 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची–15

(राशि रुपये में)

विवरण	अक्षय निधि से निवेश	
	31 मार्च 2022	31 मार्च 2021
निवेश से प्राप्त आय		
1. **ब्याज**		
(क) सरकारी प्रतिभूतियों पर	-	-
(ख) अन्य बॉण्ड / डिबेंचर	-	-
2. **लाभांश**		
(क) शेयरों पर	-	-
(ख) म्युचुअल फ़ंड प्रतिभूतियों पर	-	-
3. **किराए**	-	-
4. **अन्य**		
बैंक की एफ.डी. आर. निवेश से प्राप्त ब्याज राशियाँ	36,65,982	54,48,889
घटा : सा.भ.नि. पूंजी में स्थानांतरित	(36,65,982)	(54,48,889)
योग	-	-

विवरण	अक्षय निधि से निवेश	
	31 मार्च 2022	31 मार्च 2021
निवेश से प्राप्त आय		
1. **ब्याज**		
(क) सरकारी प्रतिभूतियों पर	-	-
(ख) अन्य बॉण्ड / डिबेंचर	-	-
2. **लाभांश**		
(क) शेयरों पर	-	-
(ख) म्युचुअल फ़ंड प्रतिभूतियों पर	-	-
3. **किराए**	-	-
4. **अन्य**		
घटा : आर्टिस्ट वेलफेयर पूंजी में स्थानांतरित		
योग	-	-
योग	-	-

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2022 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची–16

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2022	31 मार्च 2021
रॉयल्टी, प्रकाशनों इत्यादि से प्राप्त आय		
1 रॉयल्टी से प्राप्त आय	-	19,983
2 अकादेमी प्रकाशनों से प्राप्त आय	14,138,095	57,856,608
योग	**14,138,095**	**57,876,591**

अनुसूची–17

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2022	31 मार्च 2021
प्राप्त ब्याज		
1 **सशर्त जमा**		
(क) अनुसूचित बैंकों के साथ	421,905	393,398
(ख) गैर–अनुसूचित बैंकों के साथ	-	-
(ग) संस्थाओं के साथ	-	-
(घ) अन्य–संग्रह निधि	654,975	768,303
2 **बचत खातों पर**		
(क) अनुसूचित बैंक के साथ	661,056	421,527
(ख) गैर–अनुसूचित बैंकों के साथ	-	-
(ग) डाक घर के बचत खाते	-	-
(घ) अन्य	-	-
3 **ऋणों पर**		
(क) कर्मचारी / स्टॉफ़	248,905	555,269
(ख) अन्य	-	-
4 **ऋणदाताओं पर ब्याज तथा अन्य प्राप्तियाँ**		
(क) सा.भ.नि. / सी.पी.एफ. पर ब्याज	-	-
(ख) आयकर रिफ़ंड पर ब्याज	-	-
योग	**1,986,841**	**2,138,497**

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2022 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची–18

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2022	31 मार्च 2021
अन्य आय		
1 **परिसंपत्तियों की बिक्री/निपटान से प्राप्त आय**		
(क) निजी परिसंपत्तियाँ		-
(ख) परिसंपत्तियाँ जो कि अनुदान अथवा निःशुल्क प्राप्त हुई	-	-
(ग) ग़ैर उपभोज्य सामग्री (स्थायी परिसंपत्ति) की बिक्री	-	-
(घ) पुस्तकालय की खोई हुई पुस्तकों के मूल्य की वसूली	8,417	43,526
2 निर्यात को प्रोत्साहन	-	-
3 विविध सेवाओं के लिए शुल्क	-	-
4 **विविध आय**		
(क) अन्य विधि प्राप्तियाँ	2,214,388	884,074
(ख) कर्मचारियों का सी.जी.एच.एस. अंशदान	353,500	398,950
(ग) कर्मचारियों का एन.पी.एस. ग़ैर वापसी योग्य अंशदान	-	-
(घ) सरदार पटेल अनुवाद प्राप्ति	-	-
(ङ) अतिरिक्त प्रावधान लिखित वापस	-	628,453
(च) नेपाल में भारत उत्सव	-	-
योग	**2,576,305**	**1,955,003**

अनुसूची–19

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2022	31 मार्च 2021
पूर्ण हुए कार्यों तथा किए जा रहे कार्यों के स्टॉक में (उतार/चढ़ाव)		
(ए) अंत शेष माल		
–तैयार सामान (पुस्तकें)	131,899,898	122,625,860
–कच्चा माल (काग़ज़)	4,771,259	9,932,625
(बी) आदि शेष माल		
–तैयार सामान (पुस्तकें)	122,625,860	123,109,791
–कच्चा माल (काग़ज़)	9,932,625	12,055,071
कुल (उतार)/चढ़ाव (ए–बी)	**4,112,672**	**(2,606,377)**

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2022 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची–20

(राशि रुपये में)

विवरण		31 मार्च 2022	31 मार्च 2021
स्थापना व्यय			
(क)	वेतन, मज़दूरी और भत्ते	120,472,841	117,811,402
(ख)	नई पेंशन योजना हेतु योगदान	7,201,154	3,138,453
(ग)	कर्मचारियों की सेवा–निवृत्ति पर हुए ख़र्च तथा आवाधिक लाभ	39,501,267	22,936,999
(घ)	**अन्य**		
	–चिकित्सा सुविधाएँ	2,467,124	2,613,707
	–अवकाश यात्राा सुविधा	334,816	697,741
	योग	**169,977,202**	**147,198,302**

अनुसूची– 21

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2022	31 मार्च 2021
अन्य प्रशासनिक व्यय		
(क) लेखा परीक्षा एवं लेखा शुल्क	75,000	150,000
(ख) मुद्रण एवं लेखन सामग्री	1,041,223	834,129
(ग) दूरभाष एवं डाक–व्यय	2,689,871	2,256,703
(घ) पेंशन	49,598,084	42,307,779
(ङ) अन्य आकस्मिक व्यय	435,861	820,667
(च) वाहन अनुरक्षण	200,059	130,509
(छ) किराया, परिकर एवं कर	29,140,165	29,318,509
(ज) अन्य संयुक्त सेवाएँ	635,026	12,608,217
(झ) कानूनी शुल्क	2,795,420	1,004,951
(ञ) यात्रा ख़र्च	432,209	329,553
(त) व्यवसायिक शुल्क	281,341	274,092
सा.भ.नि. ब्याज प्राप्ति में कमी	2,409,096	3,432,359
योग	**89,733,355**	**93,467,468**

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2022 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2022	31 मार्च 2021
वेतन, मजदूरी और भत्ते		
(क) मूल वेतन	70,628,700	76,598,674
(ख) ग्रेड पे	-	-
(ग) महँगाई भत्ता	21,100,263	11,879,141
(घ) मकान किराया	18,563,166	18,336,769
(ङ) यात्रा भत्ता	7,429,317	7,408,110
(च) बच्चों का शिक्षा भत्ता	1,219,161	1,348,689
(छ) व्यक्तिगत वेतन	7,700	14,800
(ज) वर्दी भत्ता	185,000	205,000
(झ) नकद भत्ता	16,800	12,600
(ञ) स्टाफ़ वेतन एवं भत्ते–कार्यालय का सुधार	41,600	1,973,575
(ट) वेतन बकाया	1,281,134	34,044
कुल योग	**120,472,841**	**117,811,402**
पेंशन		
(क) पेंशन	34,581,409	32,554,162
(ख) पेंशनभोगियों को महँगाई भत्ता	11,187,150	7,926,057
(ग) पेंशनभोगियों को चिकित्सा भत्ता	813,667	872,082
(घ) अतिरिक्त पेंशन	1,151,567	955,478
(ङ) पेंशनभोगियों को चिकित्सा सुविधा	1,864,291	-
कुल योग	**49,598,084**	**42,307,779**
कर्मचारी की सेवानिवृत्ति लाभ पर व्यय		
(क) उपदान	19,303,361	7,783,298
(ख) पारिवारिक पेंशन सहित पेंशन	8,875,277	11,962,408
(ग) अवकाश नकदीकरण	10,880,619	3,191,293
(घ) अर्धवेतन अवकाश	442,010	-
कुल योग	**39,501,267**	**22,936,999**
किराया, परिकर एवं कर		
(क) वार्षिक रखरखाव अनुबंध	1,487,787	959,741
(ख) बिजली / पानी शुल्क	2,783,030	2,289,055
(ग) किराया	24,869,348	26,069,713
कुल योग	**29,140,165**	**29,318,509**

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2022 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची–22

(राशि रुपये में)

विवरण		चालू वर्ष (2021–2022)				गत वर्ष (2020–2021)			
	गतिविधियों का संवर्द्धन एवं प्रसार	**सामान्य**	**एन.ई.**	**टी.एस.पी.**	**योग**	**सामान्य**	**एन.ई.**	**टी.एस.पी.**	**योग**
ए	**अकादेमी सेल**								
01	बाल साहित्य पुरस्कार	3,906,675	390,266	106,138	**4,403,079**	1,180,350	113,424	35,780	**1,329,554**
02	राजभाषा कार्यक्रम	293,660	-	-	**293,660**	227,161	-	-	**227,161**
03	भाषाओं का विकास	-	-	3,177,488	**3,177,488**	-	-	926,769	**926,769**
04	फ़ैलोशिप	526,798	-	-	**526,798**	113,210	-	-	**113,210**
05	साहित्यिक समारोह एवं कार्यक्रम	18,377,002	1,181,548	1,335,040	**20,893,590**	1,591,671	1,664,052	400,649	**3,656,372**
06	आधुनिकीकरण एवं सुधार	10,310,334	-	-	**10,310,334**	10,686,959	19,000	-	**10,705,959**
07	बिक्री संवर्द्धन (विज्ञापन) इत्यादि	5,431,077	105,989	-	**5,537,066**	5,442,918	113,147	-	**5,556,065**
08	प्रकाशन योजनाएँ	25,072,529	339,861	327,815	**25,740,205**	29,874,672	522,542	106,932	**30,504,146**
09	क्षेत्रीय साहित्यिक अध्ययन योजना	18,889	-	-	**18,889**	101,823	-	-	**101,823**
10	लेखकों को दी जानेवाली सेवाएँ	18,610,157	992,920	463,593	**20,066,670**	4,241,231	260,601	213,647	**4,715,479**
11	अनुवाद योजनाएँ	9,959,385	716,810	163,494	**10,839,689**	7,460,928	364,436	139,417	**7,964,781**
12	पुस्तकालय और सूचना सेवाओं में सुधार	1,138,987	-	-	**1,138,987**	713,600	-	-	**713,600**
13	युवा पुरस्कार	7,032,020	712,129	190,444	**7,934,593**	2,036,308	75,442	52,669	**2,164,419**
14	टैगोर नेशनल फैलोशिप	117,607	-	-	**117,607**	-	-	-	-
15	योग	4,091	-	-	**4,091**	2,288	-	-	**2,288**
16	महात्मा गाँधी की 150वीं जन्मशतवार्षिकी	-	-	80,365	**80,365**	114,390	-	-	**114,390**
17	शंघाई कॉरपोरेशन ऑर्गेनाइजेशन (एस.ओ.एस.)	30,336	-	-	**30,336**	8,686,634	-	-	**8,686,634**
18	अंतरराष्ट्रीय साहित्योत्सव	64,934	-	-	**64,934**	-	-	-	-
	कुल योग	**100,894,481**	**4,439,523**	**5,844,377**	**111,178,381**	**72,474,143**	**3,132,644**	**1,875,863**	**77,482,650**
बी	**एस.ए.पी.–स्वच्छता कार्य योजना**								
19	एस.ए.पी.–स्वच्छता कार्य योजना	506,663	-	-	**506,663**	785,449	-	-	**785,449**
	विशेष सेल		-	-	-				
01	भारत महोत्सव–इज़राइल	-	-	-	-	-	-	-	-
02	भारत महोत्सव–स्पेन	-	-	-	-	-	-	-	-
03	भारत महोत्सव–थाइलैण्ड	-	-	-	-	-	-	-	-
04	भारत महोत्सव–नेपाल								
05	नेताजी सुभाषचंद्र बोस	233,920			**233,920**	751,080	-	-	**751,080**
	कुल योग	**101,635,064**	**4,439,523**	**5,844,377**	**111,918,964**	**74,010,672**	**3,132,644**	**1,875,863**	**79,019,179**

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2022 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची–23

(राशि रुपये में)

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
अनुदान, इमदाद आदि पर ब्याज		
(क) संस्थाओं/संगठनों को दिए गए अनुदान		
(ख) संस्थाओं/संगठनों को दी गई इमदाद		
–राज्य अकादेमियों तथा अन्य संस्थाओं को सहायता	1,35,449	92,205
–राज्य अकादेमियों तथा अन्य संस्थाओं को सहायता के लिए एन.ई.	-	-
(ग) विभिन्न परियोजनाओं/योजनाओं के अंतर्गत भुगतान	-	-
योग	**1,35,449**	**92,205**

अनुसूची–24

(राशि रुपये में)

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
वित्त शुल्क		
(क) स्थायी ऋण पर	-	-
(ख) अन्य ऋणों पर (बैंक शुल्क सम्मिलित)	-	-
(ग) अन्य (उल्लेख करें)	-	-
योग	**-**	**-**

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2022 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची–25

(राशि रुपये में)

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
पूर्व अवधि मदें		
पूर्व अवधि आय	-	-
घटा :		
पूर्व अवधि व्यय	-	-
योग	**-**	**-**

अनुसूची–26

(राशि रुपये में)

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
असाधारण मदें		
पूर्व अवधि मूल्यह्रास		
सेवानिवृत्ति लाभों के लिए प्रावधान (गैर–वित्त पोषित)	31,02,000	
(क) सेवानिवृत्ति उपदान वाई.टी.डी. मार्च–2019 के लिए प्रावधान	-	-
(ख) सेवानिवृत्ति अवकाश नकदीकरण वाई.टी.डी. मार्च–2019 के लिए प्रावधान	-	-
योग	**31,02,000**	-

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2022 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

प्राप्तियाँ	अनुलग्नक	चालू वर्ष 2021–22	गत वर्ष 2020–21	भुगतान	अनुलग्नक	चालू वर्ष 2021–2022	गत वर्ष 2020–21
1. आदि शेष				**1. व्यय**			
(क) हाथ रोकड़		580,660	693,910	(क) स्थापना व्यय	10	152,092,073	198,405,381
(चैक / ड्राफ्ट और टिकट सहित)				(ख) प्रशासनिक व्यय	11	89,181,448	51,693,272
(ख) बैंक में जमा							
चालू खातों में		-	-	**2. विभिन्न योजनाओं / परियोजनाओं के अंतर्गत भुगतान**			
जमा खातों में		-	-	(क) परियोजनाएँ / योजनाएँ			
बचत खातों में		36,839,659	6,244,013	–अकादेमी राजस्व	12	98,847,847	91,845,462
				–राज्य अकादेमियों तथा अन्य संस्थाओं को सहायता	12	135,449	92,205
2. प्राप्त अनुदान				–अकादेमी सेल–राजस्व एन.ई.	12	4,501,941	3,146,398
(क) भारत सरकार–संस्कृति मंत्रालय द्वारा				–अकादेमी सेल–टीएसपी. राजस्व सामान्य	12	5,842,377	1,886,989
–अकादेमी सेल–राजस्व वेतन		193,200,000	178,008,000	–अकादेमी सेल–स्वच्छता कार्य योजना	12	506,663	877,095
–अकादेमी सेल–राजस्व सामान्य		165,062,000	133,840,000	–अकादेमी सेल–शंघाई कॉरपोरेशन ऑरगनाइज़ेशन (एस.सी.ओ.)	12	-	-
–अकादेमी सेल–राजस्व एन.ई.		-	-	–विशेष सेल–भारत महोत्सव	12	-	-
–अकादेमी सेल–पूंजीगत परिसंपत्तियों का सृजन		78,370,000	23,016,000	–विशेष सेल–संत श्रीरामानुजाचार्य की जन्मशतवार्षिकी	12	-	-
–अकादेमी सेल–टी.एस.पी. राजस्व सामान्य		-	-	–विशेष सेल–नेताजी सुभाषचंद्र बोस	12	233,920	751,080
–अकादेमी सेल–स्वच्छता कार्य योजना		253,000	1,125,000				
–अकादेमी सेल–शंघाई कॉरपोरेशन ऑरगनाइज़ेशन (एस.सी.ओ.)		-	13,115,000				
				3. निवेश और जमा की गई राशियाँ			
–विशेष सेल–नेताजी सुभाषचंद्र बोस				(क) नियत / अक्षय निधियों से		-	-
–विशेष सेल–भारत महोत्सव–स्पेन		-	985,000	(ख) स्वपूंजियों से (निवेश–अन्य)		189,100,000	108,638,000
–विशेष सेल–भारत महोत्सव–नेपाल		-	-				
–विशेष सेल–संत श्रीरामानुजाचार्य की जन्मशतवार्षिकी		-	-				
(ख) संस्कृति मंत्रालय से अतिरिक्त पूंजी प्राप्त		-	-	**4. स्थायी परिसंपत्तियों पर व्यय तथा पूंजी पर आधारित कार्य प्रगति पर**			
(ग) राज्य सरकार द्वारा		-	-	(क) स्थायी परिसंपत्तियों की ख़रीद	13	1,556,892	1,830,641
(घ) अन्य स्रोतों द्वारा		-	-	(ख) कार्य प्रगति पर व्यय की गई पूंजी	13	-	23,600,000
3. निवेशों से आय							
(क) नियत / अक्षय निधियों		-	-	**5. कार्य प्रगति पर धन / ऋणों की वापसी**			
(ख) स्वपूंजी (अन्य निवेश)	1	-	-	(क) संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार को		-	-
				(ख) राज्य सरकार को		-	-
4. प्राप्त ब्याज				(ग) अन्य पूंजी उपलब्ध कराने वालों को		-	-
(क) बैंकों में जमा राशि पर ब्याज	1	1,737,936	814,925				
(ख) ऋण, अग्रिम आदि	1	248,905	555,269				
5. अन्य आय				**6. वित्त शुल्क (ब्याज)**			
(क) माल / सेवाओं की बिक्री से आय	2	566,673	1,539,741	**7. अन्य भुगतान**			
(ख) फीस एवं अंशदान से आय	3	143,019	108,150	(क) स्टाफ को अग्रिम राशि	14	-	-
(ग) रॉयल्टी, प्रकाशन आदि से आय	4	14,121,825	52,958,627	(ख) प्रतिभूति जमा राशि दी	15	25,000	-
(घ) विविध आय / प्राप्तियाँ	5	2,616,455	1,072,131	(ग) अन्य (वसूली योग्य)	16	125,844,637	6,939,881
6. उधार ली गई राशि		-	-				
				8. अंत शेष			
7. कोई अन्य प्राप्तियाँ				(क) हाथ में रोकड़		636,289	580,660
(क) स्टॉफ द्वारा चुकाए गए ऋण	6	455,550	442,510	(चैक / ड्राफ्ट और टिकटों सहित)			
(ख) लौटाने योग्य जमा राशि	7	351,200	270,750	(ख) बैंक में शेष			
(ग) कोट्रा प्राप्तियाँ और भुगतान	8	-	312,694	1. चालू खातों में			-
(घ) अन्य भुगतान योग्य	9	63,571,337	2,886,472	2. जमा खातों में			-
(ङ) अन्य लघु अवधि जमा परिपक्व		189,100,000	108,638,000	3. बचत खातों में		78,713,683	36,839,659
(च) दिल्ली बीएसईएस विद्युत आपूर्ति लाइन की शिफ्टिंग		-	500,532				
योग		**747,218,219**	**527,126,723**	**योग**		**747,218,219**	**527,126,723**

ह./–	ह./–	ह./–	ह./–
(कुलदीप चंद्र)	**(बाबुराजन एस.)**	**(संजय कुमार)**	**(के. श्रीनिवासराव)**
प्रवर लिपिक	*उपसचिव, लेखा*	*उपसचिव, प्रशासन*	*सचिव*

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 10 जून 2022

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2022 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
ब्याज प्राप्त	1		
संग्रह निधि पर ब्याज		-	-
कुल योग		-	-
सावधि जमा पर ब्याज		1,076,880	393,398
बैंक बचत खाते पर ब्याज		661,056	421,527
कुल योग		**1,737,936**	**814,925**
अग्रिम पर ब्याज		248,905	555,269
आयकर वापसी पर ब्याज		-	-
कुल योग		**248,905**	**555,269**
योग		**1,986,841**	**1,370,194**
माल और सेवाओं की बिक्री से प्राप्त व्यय	2		
बिक्री/सेवाओं से प्राप्त आयय			
सभागार रखरखाव प्राप्ति		100,847	5,000
फ़ोटो कॉपी शुल्क		13,633	5,626
इंडियन लिटरेचर (जेएसटीओआर)		452,193	1,529,115
ऑनलाइन साहित्य सामग्री की बिक्री से प्राप्ति		-	-
योग		**566,673**	**1,539,741**
शुल्क और सदस्यता से प्राप्त आय	3		
पुस्तकालय सदस्यता शुल्क व्यय		143,019	108,150
बुक क्लब सदस्यता		-	-
योग		**143,019**	**108,150**
रॉयल्टी, प्रकाशन इत्यादि से प्राप्त व्यय	4		
रॉयल्टी से प्राप्त व्यय		-	19,983
अकादेमी प्रकाशनों से प्राप्त आय		14,121,825	52,938,644
योग		**14,121,825**	**52,958,627**
विविध प्राप्तियाँ	5		
खोई पुस्तक पर पुस्तकालय द्वारा वसूली		8,317	43,526
विविध प्राप्तियाँ		2,254,638	629,655
पूर्व अवधि प्राप्तियाँ		-	-
सीजीएचएस में कर्मचारी योगदान की वसूली		353,500	398,950
एनपीएस खाते में गैर प्रतिदेय राशि का नियोक्ता द्वारा दिया गया योगदान		-	-
नेपाल में भारत उत्सव (प्राप्तियाँ)		-	-
योग		**2,616,455**	**1,072,131**

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2022 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
स्टाफ द्वारा चुकाए गए ऋण	6		
स्टाफ कंप्यूटर अग्रिम		3,500	6,000
स्टाफ वाहन अग्रिम		3,600	4,800
त्यौहार अग्रिम		112,400	-
स्टाफ को गृह निर्माण अग्रिम		336,050	431,710
योग्य		**455,550**	**442,510**
प्रतिदेय जमा राशियाँ	7		
वर्ष के दौरान पुस्तकालय सदस्यता से प्राप्त		398,600	291,000
वर्ष के दौरान पुस्तकालय सदस्यता को प्रतिदेय		(47,400)	(50,250)
वर्ष के दौरान प्राप्त बयान राशि		-	30,000
वर्ष के दौरान प्रतिदेय बयाना राशि		-	-
योग		**351,200**	**270,750**
कॉट्रा (बैंक) प्राप्ति और भुगतान टीडीएस/आयकर	8		
प्राप्ति		12,587,973	15,710,959
भुगतान		(12,587,973)	(15,710,959)
कुल योग		-	-
जीएसटी			
प्राप्ति		-	280,136
भुगतान		-	(112,568)
कुल योग		-	**167,568**
जीएसटी (टीडीएस)			
प्राप्ति		-	542,788
भुगतान		-	(398,889)
कुल योग		-	**143,899**
एन.पी.एस.			
प्राप्ति		17,158,007	6,276,906
भुगतान		(17,158,007)	(6,276,906)
कुल योग		-	-
सा.भ.नि.			
प्राप्ति		-	-
भुगतान		-	-
कुल योग		-	-
जी.एस.एल.आई.सी.			
प्राप्ति		1,716,812	1,248,948
भुगतान		(1,716,812)	(1,247,721)
कुल योग		-	**1,227**

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2022 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
एल.आई.सी.			
प्राप्ति		203,603	369,069
भुगतान		(203,603)	(369,069)
कुल योग		-	-
सा.भ.नि. ऋण की वसूली			
प्राप्ति		2,248,200	3,599,145
भुगतान		(2,248,200)	(3,599,145)
कुल योग		-	-
योग		-	**312,694**
अन्य देय			
देनदारों से प्राप्त अग्रिम	9		
वर्ष के दौरान प्राप्त भुगतान		59,115,522	-
वर्ष के दौरान निपटाये गए अग्रिम		-	-
कुल योग		**59,115,522**	-
वर्ष के दौरान देनदारों से वसूली			
वर्ष के दौरान देय		14,468,694	-
वर्ष के दौरान निपटाये गए		(10,835,723)	-
कुल योग		**3,632,971**	-
बाहरी पार्टियों से प्राप्त अग्रिम			
वर्ष के दौरान छोड़े गए		-	-
वर्ष के दौरान स्वीकृत तथा निपटाये गए		-	-
कुल योग		-	-
अकादेमी कार्यक्रम तथा गतिविधियों के लिए कर्मचारियों को अग्रिम			
वर्ष के दौरान छोड़े गए			4,929,686
वर्ष के दौरान स्वीकृत तथा निपटाये गए		-	(2,069,642)
कुल योग		-	**2,860,044**
वसूली योग्य कर			
वसूली योग्य आयकर		341,529	-
वर्ष के दौरान आयकर की वापसी		-	-
कुल योग		**341,529**	-
विविध लेनदार			
वर्ष के दौरान देय		6,722,374	2,452,893
वर्ष के दौरान निपटाये गए		(6,241,059)	(2,426,465)
कुल योग		**481,315**	**26,428**

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2022 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
अन्य चालू दायित्व			
वर्ष के दौरान देय		-	-
वर्ष के दौरान निपटाये गए		-	-
कुल योग		-	-
योग		**63,571,337**	**2,886,472**
स्थापना व्यय	10		
स्टाफ वेतन और भत्ते			
वेतन, मजदूरी और भत्ते			
मूल वेतन		70,628,700	76,346,588
महँगाई भत्ता		20,566,699	11,879,141
मकान किराया भत्ता		18,563,166	18,336,769
यात्रा भत्ता		7,385,423	7,408,110
बच्चों का शिक्षा भत्ता		1,219,161	1,348,689
व्यक्तिगत वेतन		7,700	14,800
वर्दी भत्ता		185,000	205,000
नकद भत्ता		16,800	12,600
स्टाफ वेतन और भत्ते–कार्यालय का सुधार		41,600	1,973,575
एन.पी.एस. को अंशदान		7,170,474	3,138,453
वेतन बकाया		1,240,427	34,044
कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति और सेवांत हितलाभ पर व्यय			
उपदान		9,202,993	13,144,297
पारिवारिक पेंशन सहित पेंशन		8,875,277	11,120,952
अर्धवेतन अवकाश		442,010	-
अवकाश नकदीकरण		3,744,703	5,934,259
अवकाश चिकित्सा सुविधाएँ		2,467,124	4,502,584
अवकाश यात्रा रियायत		334,816	697,741
योग		**152,092,073**	**156,097,602**
प्रशासनिक व्यय	11		
लेखा परीक्षा तथा लेखा शुल्क		-	357,060
प्रकाशन एवं लेखन सामग्री		1,041,223	834,129
टेलीफ़ोन तथा डाक शुल्क		2,975,185	2,256,703
अनय आकस्मिक व्यय		435,798	818,334
वाहनों का रखरखाव		200,059	129,401
पेंशन			
पेंशन		34,509,409	32,554,162
पेंशनभोगियों के लिए महंगाई भत्ता		10,831,751	7,926,057
पेंशनभोगियों को चिकित्सा भत्ता		805,667	872,082
अतिरिक्त पेंशन		1,151,567	955,478
पेंशनभोगियों को चिकित्सा सुविधा		1,888,291	-

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2022 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
किराया, दरें और कर			
वार्षिक रखरखाव अनुबंध		1,408,911	1,823,733
बिजली/पानी का शुल्क		2,764,090	2,289,055
किराया		24,430,057	26,538,450
अन्य संयुक्त सेवाएँ		862,674	14,934,311
कानूनी शुल्क		2,795,420	1,164,951
यात्रा खर्चे		432,209	329,553
व्यावसायिक शुल्क		240,041	217,592
स.भ.नि. ब्याज आय की कमी		2,409,096	-
योग		**89,181,448**	**94,001,051**
संवर्धन एवं प्रचार–प्रसार की गतिविधियाँ	12		
सामान्य			
01 बाल साहित्य पुरस्कार		4,056,675	1,283,376
02 बनारस स्कूल परियोजना		-	-
03 राजभाषा कार्यक्रम		293,660	255,266
04 भाषाओं का विकास		-	-
05 फ़ेलोशिप		526,798	113,210
06 साहित्यिक समारोह एवं कार्यक्रम		18,342,826	2,159,671
07 आधुनिकीकरण एवं सुधार		10,081,710	12,165,162
08 बिक्री संवर्द्धन (विज्ञापन) इत्यादि		5,361,467	5,728,843
09 प्रकाशन योजनाएँ		23,506,005	38,772,964
10 क्षेत्रीय साहित्यिक अध्ययन योजना		18,889	147,020
11 लेखकों को दी जानेवाली सेवाएँ		18,610,157	11,120,031
12 अनुवाद योजनाएँ		9,669,207	8,248,494
13 पुस्तकालय तथा सूचना सेवाओं में सुधार		1,131,465	890,892
14 युवा पुरस्कार		7,032,020	2,147,308
15 इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन पोएटिक		-	-
16 भारतीय अनुवाद		-	-
17 टैगोर राष्ट्रीय फैलोशिप		117,607	-
18 योग		4,091	2,288
19 महात्मा गाँधी की 150वीं जन्मशतवार्षिकी		-	124,303
20 अंतरराष्ट्रीय साहित्य उत्सव		64,934	-
21 शंघाई कॉरपोरेशन ऑर्गनिज़ेशन (एस.सी.ओ.)		30,336	8,686,634
कुल योग		**98,847,847**	**91,845,462**
राज्य अकादेमियों तथा अन्य संस्थाओं को सहायता			
राज्य अकादेमियों को सहायता		135,449	92,205
राज्य अकादेमियों को सहायता तथा अन्य संस्थानों के लिए एन.ई.		-	-
कुल योग		**135,449**	**92,205**

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2022 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

	विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
	एन.ई.			
01	बाल साहित्य पुरस्कार		390,266	113,424
02	बनारस विद्यालय परियोजना		-	-
03	राजभाषा महोत्सव		-	-
04	भाषाओं का विकास		-	-
05	फैलोशिप		-	-
06	साहित्यिक समारोह एवं कार्यक्रम		1,170,978	1,677,806
07	आधुनिकीकरण एवं सुधार		-	19,000
08	बिक्री (विज्ञापन) इत्यादि का संवर्द्धन		105,989	113,147
09	प्रकाश योजनाएँ		412,849	522,542
10	क्षेत्रीय साहित्यिक अध्ययन योजनाएँ		-	-
11	लेखकों को सेवाएँ		992,920	260,601
12	अनुवाद योजनाएँ		716,810	364,436
13	पुस्तकालयों का उन्नयन		-	-
14	युवा पुरस्कार		712,129	75,442
15	इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन पोएटिक		-	-
16	भारतीय अनुवाद		-	-
17	टैगोर नेशनल फैलोशिप		-	-
18	योग		-	-
19	महात्मा गाँधी की 150वीं जन्मशतवार्षिकी		-	-
20	रवींद्रनाथ ठाकुर की 150वीं जन्मशतवार्षिकी तथा कॉफी टेबल पुस्तक का प्रकाशन		-	-
21	सरदार पटेल अनुवाद परियोजना		-	-
	कुल योग		**4,501,941**	**3,146,398**
	टी.एस.पी.			
01	बाल साहित्य पुरस्कार		106,138	35,780
02	बनारस विद्यालय परियोजना		-	-
03	राजभाषा महोत्सव		-	-
04	भाषाओं का विकास		3,177,488	926,769
05	फ़ैलोशिप		-	-
06	साहित्यिक समारोह एवं कार्यक्रम		1,335,040	411,775
07	आधुनिकीकरण एवं सुधार		-	-
08	बिक्री (विज्ञान) इत्यादि का संवर्द्धन		-	-
09	प्रकाशन योजनाएँ		325,815	106,932
10	क्षेत्रीय साहित्यिक अध्ययन परियोजनाएँ		-	-
11	लेखकों को सेवाएँ		463,593	213,647
12	अनुवाद योजनाएँ		163,494	139,417
13	पुस्तकालयों का उन्नयन		-	-
14	युवा पुरस्कार		190,444	52,669
15	इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन पोएटिक		-	-

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2022 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

	विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
16	भारतीय अनुवाद		-	-
17	टैगोर नेशनल फैलोशिप		-	-
18	योग		-	-
19	महात्मा गाँधी की 150वीं जन्मशतवार्षिकी		80,365	-
20	रवींद्रनाथ ठाकुर की 150वीं जन्मशतवार्षिकी तथा कॉफी टेबल पुस्तक का प्रकाशन		-	-
21	सरदार पटेल अनुवाद परियोजना		-	-
	कुल योग		**5,842,377**	**1,886,989**
	एस.ए.पी.			
	स्वच्छता कार्य योजना		506,663	877,095
	कुल योग		**506,663**	**877,095**
	विशेष सेल–नेताजी सुभाषचंद्र बोस			
	नेताजी सुभाषचंद्र बोस		233,920	751,080.00
	कुल योग		**233,920**	**751,080**
	विशेष सेल–भारत महोत्सव			
	भारत महोत्सव–इज़राइल		-	-
	भारत महोत्सव–स्पेन		-	-
	भारत महोत्सव–थाईलैंड		-	-
	भारत महोत्सव–नेपाल		-	-
	कुल योग		**-**	-
	विशेष सेल–श्रीरामानुजाचार्य की जन्मशतवार्षिकी			
	श्रीरामानुजाचार्य की 1000वीं जन्मशतवार्षिकी		-	-
	कुल योग		**110,068,197**	**98,599,229**
	स्थायी परिसंपत्तियों की खरीद	13		
	भूमि		-	-
	भवन		-	-
	सयंत्र और तंत्र		-	1,651,699
	वाहन		-	-
	फर्नीचर और जुड़नार		-	-
	कार्यालय उपकरण		187,496	-
	कंप्यूटर / परिधीय		1,270,944	-
	विद्युतीय संस्थापन	-	-	-
	पुस्तकालय की पुस्तकें		98,452	178,942
	योग		**1,556,892**	**1,830,641**
	पूंजीगत कार्य प्रगति पर व्यय			
	पूंजीगत कार्य प्रगति पर		-	23,600,000
	कुल योग		**-**	**23,600,000**
	योग		**1,556,892**	**25,430,641**

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2022 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

	विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
	स्टॉफ़ (परिसंपत्तियों) को प्रदत्त ऋण	14		
	स्टॉफ़ कंप्यूटर अग्रिम		-	-
	स्टॉफ़ वाहन अग्रिम		-	-
	स्टॉफ़ भवन निर्माण अग्रिम		-	-
	योग		-	-
	वसूली योग्य प्रतिभूति जमा	15		
	प्राप्ति योग्य प्रतिभूति जमा		570,000	-
	वर्ष के दौरान जमा राशि		545,000	-
	वर्ष के दौरान जमा राशि प्रतिदाय		-	-
	योग		**25,000**	-
	अन्य प्राप्ति योग्य	16		
	देनदारों द्वारा दिए गए अग्रिम			
	वर्ष के दौरान प्राप्त भुगतान		-	-
	वर्ष के दौरान निपटाये गए अग्रिम		-	-
	योग		-	-
	बाहरी पार्टी को दिया गया अग्रिम			
	वर्ष के दौरान दिए गए अग्रिम		7,692,503	6,030,178
	वर्ष के दौरान स्वीकृत तथा निपटाये गए		(5,982,402)	(4,034,682)
	योग		**1,710,101**	**1,995,496**
	अग्रिम पूंजी			
	वर्ष के दौरान दिए गए अग्रिम		132,398,005	-
	वर्ष के दौरान स्वीकृत तथा निपटाये गए		(9,916,105)	-
	योग		**122,481,900**	-
	अकादेमी कार्यक्रम तथा गतिविधियों के लिए कर्मचारियों को अग्रिम			
	वर्ष के दौरान दिए गए अग्रिम		7,673,278	-
	वर्ष के दौरान स्वीकृत तथा निपटाये गए		(7,522,871)	-
	योग		**150,407**	-
	अस्थायी स्थानांतरण			
	भुगतान		195,806,214	76,282,989
	प्राप्ति		(195,806,214)	(76,282,989)
	योग		-	-
	ब्याज प्रोद्भूत			
	वर्ष के दौरान देय		-	-
	वर्ष के दौरान दिए गए		-	-
	योग		-	-

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2022 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

	विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
	वसूली योग्य कर			
	वसूली योग्य आयकर		-	18,265
	वर्ष के दौरान प्रतिदाय आयकर		-	-
	योग		-	18,265
	विविध लेनदार			
	वर्ष के दौरान देय		-	-
	वर्ष के दौरान निपटाये गए		-	-
	योग		-	-
	अन्य चालू दायित्व			
	वर्ष के दौरान देय		132,824,268	124,808,644
	वर्ष के दौरान निपटाये गए		(133,011,890)	(123,314,883)
	योग		**(187,622)**	**1,493,761**
	जी.एस.टी.			
	प्राप्ति		1,121,339	-
	भुगतान		(935,589)	-
	योग		**185,750**	-
	जी.एस.टी. (टी.डी.एस.)			
	प्राप्ति		(385,989)	-
	भुगतान		576,734	-
	योग		**190,745**	-
	सा.भ.नि.			
	प्राप्ति		-	(14,767,000)
	भुगतान		-	1.81,99,359
	योग		-	**3,432,359**
	एन.पी.एस.		1,71,58,007	62,76,906
	प्राप्ति		(1,71,58,007)	(62,76,906)
	भुगतान		-	-
	योग		-	-
	संयुक्त सेवा वसूली योग्य		12,70,050	-
	सयुक्त सेवा वसूली योग्य			
	पूर्वदत्त व्यय		-	
	वर्ष के दौरान जारी		43,306	-
	वर्ष के दौरान निपटाये गए		-	-
	कुल योग		**43,306**	-
	योग		**125,844,637**	**6,939,881**

साहित्य अकादेमी

सामान्य भविष्य निधि का प्राप्ति और भुगतान लेखा : यथातिथि 01–04–2021 से 31–03–2022

2020–2021	प्राप्तियाँ	2021–2022		2020–2021	भुगतान	2021–2022	
	आदि बैंक शेष				**सा.भ.नि. खाता**		
4,713,964	केनरा बैंक	8,144,836		6,050,000	अंतिम निकासी	16,441,000	
103,563	स्टेट बैंक ऑफ इंडिया	104,655	**8,249,491**	-	अग्रिम का अंतिम निकासी में परिवर्तन	-	
4,817,527				12,176,842	पूर्ण एवं अंतिम निबटान	8,709,064	**25,150,064**
				18,226,842			
	सा.भ.नि. लेखा						
14,780,775	कर्मचारियों का अंशदान	14,403,432			**राष्ट्रीय पेंशन योजना**		
3,591,145	सा.भ.नि. से अग्रिमों का भुगतान	-		-	एन.पी.एस. में निवेश	-	
7,055,085	उपभोक्ताओं का ब्याज जमा	-	**14,403,432**	-	कर्मचारी को एन.पी.एस. का प्रतिदाय	-	
25,427,005				-	अकादेमी को एन.पी.एस. का प्रतिदाय	-	
	ग्राहकों का अग्रिम						
-	वर्ष के दौरान ग्राहकों को पुनः दी गई अग्रिम राशि	2,248,200			**ग्राहकों को अग्रिम**		
-	कर्मचारी अंशदान	-		2,560,000	वर्ष के दौरान ग्राहकों को दी गई अग्रिम राशि	1,435,000	
-	आवधिक जमा पर ब्याज	-	**2,248,200**	-	साहित्य अकादेमी में स्थानांतरित	-	**1,435,000**
-			-	**2,560,000**			
	प्राप्त ब्याज				**निवेश**		
2,310,971	सा.भ.नि. के निवेश पर ब्याज–केनरा बैंक	376,371		3,000,000	वर्ष के दौरान सा.भ.नि. खाते में किए गए निवेश	-	
3,028,054	सा.भ.नि. के निवेश पर ब्याज–यूको बैंक	-		5,030,397	सा.भ.नि. निवेश पर प्राप्त ब्याज	-	
109,864	बैंक बचत खातों पर ब्याज	103,707		-	वर्ष के दौरान एन.पी.एस. में निवेश	-	-
-	आई.डी.बी.आई. फलैक्सी बॉण्ड	-	**480,078**	**8,030,397**			
5,448,889					**साहित्य अकादेमी से वसूली योग राशि**		
	निवेश			4,649	स्रोत पर काटा गया कर	127	127
5,000,000	वर्ष के दौरान निकाली गई निवेश राशि–सा.भ.नि.	5,907,120		**4,649**			
-	वर्ष के दौरान निकाली गई निवेश राशि–एन.पी.एस.	-					
-	वर्ष के दौरान निकाली गई निवेश राशि–आई.डी.बी.आई.	-					
-	फलैक्सी बॉण्ड	-	**5,907,120**		**अन्य व्यय**		
5,000,000				7,055,085	सा.भ.नि. ग्राहक को दिया गया आकलित ब्याज		
				-	बैंक शुल्क	-	-
	साहित्य अकादेमी में स्थानांतरित			**7,055,085**			
3,433,043	साहित्य अकादेमी में स्थानांतरित	2,409,096	**2,409,096**				
3,433,043					**बैंक अंत शेष**		
				8,144,836	केनरा बैंक	7,112,226	
				104,655	स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया	-	**7,112,226**
				8,249,491			
44,126,464	**योग**		**33,697,417**	**44,126,464**	**योग**		**33,697,417**

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 10 जून 2022

ह./–	ह./–	ह./–	ह./–
(कुलदीप चंद्र)	**(बाबुराजन एस.)**	**(संजय कुमार)**	**(के. श्रीनिवासराव)**
प्रवर लिपिक	*उपसचिव, लेखा*	*उपसचिव, प्रशासन*	*सचिव*

साहित्य अकादेमी

सामान्य भविष्य निधि का तुलन–पत्र : यथातिथि 31–03–2022

2020–2021	दायित्व	2021–2022		2020–2021	परिसम्पत्तियाँ	2021–2022	
	सा. भ. नि. खाता				**निवेश (लागत पर)**		
105,408,242	01–04–2021 को शेष	**109,536,875**			आवधिक जमा एवं बॉण्ड (निम्नांकित बैंकों के साथ)		
	वर्ष के दौरान परिवर्धन :			160,163	केनरा बैंक, नई दिल्ली–नई पेंशन योजना	169,676	
14,780,775	कर्मचारियों का सा.भ.नि. में अंशदान	14,403,432		39,835,401	केनरा बैंक, नई दिल्ली–सा.भ.नि.	37,074,962	
519,615	अन्य परिवर्धन	-		48,739,117	यूको बैंक, नई दिल्ली–सा.भ.नि.	50,624,108	
7,055,085	ग्राहकों के खाते में ब्याज जमा	6,701,533		**88,734,681**			**87,868,746**
22,355,475		**21,104,965**					
	वर्ष के दौरान कटौती :				**निवेशों पर प्रोदभूत ब्याज–सा.भ.नि.**		
6,050,000	अंतिम निकासी	16,441,000		1,887,665	01–04–2021 को शेष	5,030,397	
-	अग्रिमों का अंतिम निकासी में परिवर्तन	2,019,733		5,030,397	जमा : वर्ष के दौरान प्रोदभूत ब्याज	3,183,125	
12,176,842	पूर्ण और अंतिम भुगतान	8,709,064		1,887,665	घटा : परिपक्वता पर प्राप्त ब्याज	5,030,397	
18,226,842		27,169,797		**5,030,397**			**3,183,125**
109,536,875			**103,472,043**		**निवेशों पर प्रोदभूत ब्याज–एन.पी.एस**		
				1,311	01–04–2021 को शेष	10,787	
	नई पेंशन योजना			10,787	जमा : 2021–22 के दौरान प्रोदभूत ब्याज	1,123	
152,384	01–04–2021 को शेष	**152,384**		1,311	घटा : परिपक्वता पर ब्याज	10,787	
	वर्ष के दौरान परिवर्धन :			**10,787**			**1,123**
-	अकादेमी का नई पेंशन योजना में अंशदान	-					
-	कर्मचारियों का नई पेंशन योजना में अंशदान	-			**ग्राहकों को अग्रिम**		
-	एन.पी.एस. आवधिक पर अर्जित/प्राप्त ब्याज	-		5,751,792	01–04–2021 को शेष	5,254,807	
-		-		3,094,160	जमा : वर्ष के दौरान स्वीकृत	1,435,000	
	वर्ष के दौरान कटौती :			-	घटा : अग्रिमों का अंतिम निकासी में परिवर्तन	2,019,733	
-	01–04–2021 को पी.एफ.आर.डी.ए. में शेष	-		3,591,145	घटा : वर्ष के दौरान वसूल की गई राशि	2,248,200	
-	घटा : राशि पी.एफ.आर.डी.ए. में स्थानांतरित	-		**5,254,807**			**2,421,874**
		-					
	परिवर्धन			806,571	**अन्य अग्रिम–टी.डी.एस.**		
-	जमा : साहित्य अकादेमी के लिए वापसी योग्य अंशदान	-		4,649	01–04–2021 को शेष	-	
-	जमा : साहित्य अकादेमी के कर्मचारियों को वापसी योग्य अंशदान	-		**811,220**	जमा : वर्ष के दौरान स्रोत पर टैक्स कटौती	1,783	
-		-					**1,783**
152,384		-	**152,384**	8,144,836	**बैंक शेष**		
				104,655	एस.बी. खाता सं. 01100/401527 एसबीआई, नई दिल्ली	-	
	ब्याज (अनुपयुक्त) लेखा			**8,249,491**	एस.बी. खाता सं. 3264, केनरा बैंक, नई दिल्ली	7,112,225	
(3,432,359)	01–04–2020 का शेष	(1,597,876)					**7,112,225**
3,440,679	जमा : अंशदान में अधिशेष स्थानांतरण	1,597,876					
1,606,196	घटा : आय पर व्यय का आधिक्य	3,035,551	**(3,035,551)**				
(1,597,876)							
108,091,383	**योग**		**100,588,876**	**108,091,383**	**योग**		**100,588,876**

	ह./–	ह./–	ह./–	ह./–
स्थान : नई दिल्ली	**(कुलदीप चंद्र)**	**(बाबुराजन एस.)**	**(संजय कुमार)**	**(के. श्रीनिवासराव)**
दिनांक : 10 जून 2022	*प्रवर लिपिक*	*उपसचिव, लेखा*	*उपसचिव, प्रशासन*	*सचिव*

साहित्य अकादेमी

सामान्य भविष्य निधि का आय और व्यय लेखा : यथातिथि 31–03–2022

2020–2021	व्यय	2021–2022		2020–2021	आय	2021–2022	
					निवेश पर ब्याज		
7,055,085	सा.भ.नि. के ग्राहकों को ब्याज दिया गया	67,01,533		53,39,025	बचत खाते पर प्राप्त ब्याज	35,62,275	
-	बैंक शुल्क	-		1,09,864	बचत खाते पर प्राप्त ब्याज	1,03,707	
-	अन्य कटौतियाँ	-		-	अन्य अधिशेष	-	
7,055,085			**67,01,533**	**54,48,889**			**36,65,982**
					आय पर व्यय का आधिक्य		
				16,06,196	घाटे को स्थानांतरित किया	30,35,551	
							30,35,551
7,055,085	**योग**		**67,01,533**	**7,055,085**	**योग**		**67,01,533**

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 10 जून 2022

ह./–
(कुलदीप चंद्र)
प्रवर लिपिक

ह./–
(बाबुराजन एस.)
उपसचिव, लेखा

ह./–
(संजय कुमार)
उपसचिव, प्रशासन

ह./–
(के. श्रीनिवासराव)
सचिव

साहित्य अकादेमी

सामान्य भविष्य निधि खाता निवेश और प्रोद्भूत ब्याज की अनुसूची : यथातिथि 31 मार्च 2022

निवेश									ब्याज		
क्र. सं.	एफ़.डी.संख्या	क्रय तिथि	परिपक्वता तिथि	ब्याज दर%	31-03-2022 को ब्याज का अंकित मूल्य	परिपक्वता मूल्य	प्राप्ति योग्य सकल ब्याज	31-03-2021 तक प्रोद्भूत	2021-2022 के दौरान प्रोद्भूत	प्रोद्भूत ब्याज पर टी.डी.एस. कटौती	31-03-2022 को कुल प्रोद्भूत ब्याज
	नई पेंशन योजना केनरा बैंक, नई दिल्ली में आवधिक जमा										
3	एफ.डी.आर. सं. 2417401000282/51	09/02/2022	2/9/2023	5.2%	169676.00	178673.00	8997.00	-	1,123	-	1,123
	योग 1				**169,676**	**178,673**	**8,997**	**-**	**1,123**	**-**	**1,123**
	सा.म.नि. की राशि यूको बैंक, नई दिल्ली में आवधिक जमा										
1	एफ.डी.आर. सं. 18250310055601	30/12/2020	03/04/2022	5.00%	15,056,975	16,200,367	1143392.00	-	785,188	-	785,188
2	एफ.डी.आर. सं. 18250310055618	30/12/2020	03/04/2022	5.00%	1,826,157	1,944,246	118089.00	-	94,232	-	94,232
3	एफ.डी.आर. सं.18250310055625	26/12/2020	6/30/2023	5.00%	15,041,866	16,179,850	1137984.00	-	785,008	-	785,008
4	एफ.डी.आर. सं.18250310055632	26/12/2020	6/30/2023	5.00%	1,824,408	1,941,852	117444.00	-	94,214	-	94,214
5	एफ.डी.आर. सं.18250310055649	28/12/2020	3/31/2022	5.00%	15,049,420	16,190,107	1140687.00	-	782,876	-	782,876
6	एफ.डी.आर. सं.18250310055656	28/12/2020	3/31/2022	5.00%	1,825,282	1,943,048	117766.00	-	93,956	-	93,956
	योग 2				**50,624,108**	**54,399,470**	**3,775,362**	**-**	**2,635,474**	**-**	**2,635,474**
	सा.म.नि. की राशि केनरा बैंक, नई दिल्ली में आवधिक जमा										
1	एफ.डी.आर. सं. 2417401000282/61	2/2/2021	2/2/2023	5.00%	11,334,315	11,911,746	577431.00	-	288,716	1,783	286,933
2	एफ.डी.आर. सं. 2417401000282/62	2/2/2021	2/2/2023	5.00%	11,334,315	11,911,746	577431.00	-	288,716	-	288,716
3	एफ.डी.आर. सं. 2417401000282/63	2/2/2021	2/2/2023	5.25%	11,334,315	11,911,746	577431.00	-	288,716	-	288,716
4	एफ.डी.आर. सं. 2417401000282/75	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
5	एफ.डी.आर. सं. 2417303000243/8	28/10/2021	5/26/2022	4.40%	3,072,017	3,150,856	78839.00	-	59,531	-	59,531
6	एफ.डी.आर. सं. 2417303000097/148	-	-	-	-	-	0.00	-	-	-	-
7	एफ.डी.आर. सं. 2417301000097/146	-	-	-	-	-	0.00	-		-	-
	योग 3			-	**37,074,962**	**38,886,094**	**1,811,132**	**-**	**925,678**	**1,783**	**923,895**
	कुल योग (1+2+3)			-	**87,868,746**	**93,464,237**	**5,595,491**	**-**	**3,562,275**	**1,783**	**3,560,492**

31-03-2022 को समाप्त वर्ष के लिए वित्तीय लेखा के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

31-03-2022 को समाप्त वर्ष के लिए
वित्तीय लेखा के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

भूमिका

भारत की 'नेशनल एकेडेमी ऑफ़ लेटर्स' साहित्य अकादेमी साहित्यिक संवाद, प्रकाशन और उसका देशभर में प्रसार करने वाली केंद्रीय संस्था है तथा सिर्फ़ यही ऐसी संस्था है, जोकि भारत की चौबीस भाषाओं, जिसमें अंग्रेज़ी भी सम्मिलित है, में साहित्यिक क्रिया-कलापों का पोषण करती है। इसका विधिवत् उद्घाटन भारत सरकार द्वारा 12 मार्च 1954 को किया गया था। भारत सरकार के जिस प्रस्ताव में अकादेमी का यह विधान निरूपित किया गया था, उसमें अकादेमी की यह परिभाषा दी गई है—भारतीय साहित्य के सक्रिय विकास के लिए कार्य करने वाली एक राष्ट्रीय संस्था, जिसका उद्देश्य उच्च साहित्यिक मानदंड स्थापित करना, भारतीय भाषाओं में साहित्यिक मानदंड स्थापित करना, भारतीय भाषाओं में साहित्यिक गतिविधियों को समन्वित करना एवं उनका पोषण करना तथा उनके माध्यम से देश की सांस्कृतिक एकता का उन्नयन करना होगा। हालाँकि अकादेमी की स्थापना सरकार द्वारा की गई है, फिर भी यह भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत एक स्वायत्तशासी संस्था के रूप में कार्य करती है। संस्था पंजीकरण अधिनियम 1860 के अंतर्गत इस संस्था का 1955-56 का पंजीकरण सं. 927 दिनांक 7 जनवरी 1956 को किया गया।

साहित्य अकादेमी का प्रधान कार्यालय रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110001 में स्थित है। इसके अतिरिक्त अकादेमी के कोलकाता, बेंगळूरु, मुंबई में तीन क्षेत्रीय कार्यालय तथा चेन्नै में एक उप-कार्यालय है।

अनुसूची-27—महत्त्वपूर्ण लेखा नीतियाँ

1. लेखा परिपाटी

वित्तीय विवरण ऐतिहासिक मूल्य परिपाटी तथा लेखा की प्रोद्भवन पद्धति के आधार पर तैयार किए गए हैं।

2. वस्तुसूची मूल्यांकन

(2.1) पुस्तकों के स्टॉक का मूल्यांकन उनके मुद्रित मूल्य की 40 प्रतिशत राशि पर किया गया है।

(2.2) पुस्तकों के स्टॉक का मूल्यांकन उनकी न्यूनतम लागत तथा कुल विश्वसनीय मूल्य पर किया गया है। लागत उनके तौल के औसत मूल्य या लागत पर आधरित है।

3. स्थायी परिसंपत्तियाँ

(3.1) स्थायी परिसंपत्तियाँ अर्जन की लागत पर आधारित हैं, जिसमें आवक भाड़ा, कर और परिकर तथा अर्जन से संबंधित आनुषंगिक एवं प्रत्यक्ष व्यय भी सम्मिलित हैं। निर्माण से संबंधित परियोजनाओं के संदर्भ में, पूर्व प्रचालन व्यय (जिनमें परियोजनाओं के पूर्ण होने पर दिए गए ऋणों पर ब्याज शामिल है), पूँजी परिसंपत्तियों के मूल्य का भाग हैं।

(3.2) ग़ैर-अनुवीक्षण अनुदानों (संग्रह निधि के अलावा) द्वारा प्राप्त स्थायी परिसंपत्तियों की पूँजी का मूल्य निर्धारण तदनुरूप जमा आरक्षित पूँजी पर आधारित है।

4. मूल्यह्रास

(4.1) मूल्यह्रास को आयकर के 1961 के अधिनियम में विनिर्दिष्ट लिखित मूल्यों/दरों के अनुरूप किया गया है, इसमें पुस्तकालय की पुस्तकों पर छूट है, जिन पर मूल्यह्रास की दर 10 प्रतिशत है।

(4.2) वर्ष के दौरान स्थायी परिसंपत्तियों की बढ़ोतरी के संदर्भ में, मूल्यह्रास को परिसंपत्तियों की ब्लॉक पद्धति के आधार पर विचार गया।

(4.3) वर्ष के दौरान स्थायी परिसंपत्तियों को कटौतियों के संदर्भ में, मूल्यह्रास को दर्शाए जाने की आवश्यता नहीं।

5. विविध व्यय

आस्थगित राजस्व व्यय गत 5 वर्षों के प्रारंभ से नहीं लिखा गया।

6. बिक्री के लिए लेखा

बिक्री में उत्पाद शुल्क और बिक्री का कुल लाभ, रियायत तथा व्यापार छूट शामिल हैं।

7. सरकारी अनुदान/इमदाद

(7.1) वह सरकारी अनुदान जो कि संगठन की प्रवृत्ति (या प्रकृति) के हैं, जिन पर पूँजी लागत द्वारा परियोजनाओं को चलाया जाता है उन्हें पूँजी राजस्व माना गया है।

(7.2) विशिष्ट स्थायी परिसंपत्तियों पर दिए गए अनुदान के संदर्भ में, उन्हें उनसे संबंधित परिसंपत्तियों में लागत पर कटौती में दर्शाया गया है।

(7.3) सरकारी अनुदानों/इमदादों को लेखा उगाही के आधर पर किया गया है।

8. विदेशी मुद्रा संचालन

(8.1) विदेशी मुद्रा में किया गया संव्यवहार, जिस तिथि पर लेन-देन दिया गया है, उस तिथि की विनिमय दर पर तय किया गया है।

(8.2) चालू परिसंपत्तियों, विदेशी मुद्र ऋण तथा चालू दायित्वों को वर्ष के अंत तक चलनेवाली विनिमय दरों में परिवर्तित किया गया है तथा यदि विदेशी मुद्रा दायित्व स्थायी परिसंपत्तियों से संबंधित हैं तो उन्हें प्राप्त लाभ/हानि में स्थायी परिसंपत्तियों की लागत में समायोजित किया गया है और अन्य मामलों में उन्हें राजस्व माना गया है।

9. पट्टा

पट्टों के किराए पट्टों की शर्तों के आधर पर ख़र्च किए गए हैं।

10. सेवा-निवृत्ति लाभ

(10.1) किसी कर्मचारी की मृत्यु/सेवा-निवृत्ति पर देय उपदान के प्रति देयता प्रत्येक वित्तीय वर्ष के अंत में किए गए बीमांकिक मूल्यांकन के आधार पर प्रदान की जाती है।

(10.2) प्रत्येक वित्तीय वर्ष के अंत में किए गए बीमांकिक मूल्यांकन के आधार पर कर्मचारियों को संचित अवकाशों के लाभों को भुनाने का भी प्रावधान है।

अनुसूची-28–प्रासंगिक दायित्व और लेखा पर टिप्पणियाँ

1. प्रासंगिक दायित्व

(1.1) संगठन (अथवा व्यक्ति) के विरुद्ध किए गए दावों को ऋणों की पावती के रूप में नहीं दर्शाया गया है–रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)

(1.2) निम्नांकित विवादास्पद मांगे :
आयकर–रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)
जी.एस.टी.–रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)
नगरपालिका कर–रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)

(1.3) संगठन द्वारा पार्टियों को दिए गए आदेशों का अनुपालन न किए जाने के विरुद्ध दावे–रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)।

2. पूँजीगत प्रतिबद्धताएँ

पूँजी लेखा में उन अनुबंधों का अनुमानित मूल्य जो निष्पादित किए जाने हैं तथा जो (कुल अग्रिम) रु. 1831.71 लाख (गत वर्ष 2008.49 लाख) है को उपलब्ध नहीं कराया गया है।

3. पट्टा दायित्व

भविष्य में प्लॉट और यंत्रों की वित्तीय पट्टे पर की जानेवाली देख-रेख पर व्यय की जानेवाली राशि–रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य) उपलब्ध नहीं कराई गई है।

4. 31-3-2022 को अक्षय निधि/उद्दिष्ट पूंजियों के निवेश का समाधान निम्न प्रकार किया गया :

निधि का नाम	अनुसूची सं.	राशि	निधियों का नाम	अनुसूची	राशि
संग्रह निधि	1	₹ 1,00,00,000	तदनुरूप निवेश	9	₹ 1,00,00,000
स्थायी परिसंपत्ति निधि	3	₹ 20,79,53,784	स्थायी परिसंपत्तियाँ	8	₹ 10,98,51,044
प्रकाशन निधि	3	₹ 13,66,71,157	स्टॉफ़ प्रकाशन	11ए	₹ 13,66,71,157
सा.भ.नि./एन.पी.एस.	3	₹ 10,05,88,876	आवधिक जमा	9	₹ 8,78,68,746
			बैंक शेष	11ए	₹ 71,12,225
			निवेश पर प्रोद्भूत ब्याज	11बी	₹ 31,84,248
			सा.भा.नि. अग्रिम	11बी	₹ 24,21,874
			अग्रिम पूँजी	11बी	₹ 9,50,00,740
			असाधारण मूल्यह्रास	25	₹ 31,02,000
			अन्य अग्रिम	11बी	₹ 1,783
कुल योग		**45,52,13,817**	**कुल योग**		**45,52,13,817**

5. चालू परिसंपत्तियाँ, ऋण और अग्रिम

संगठन का मानना है कि सामान्य व्यापार के संदर्भ में चालू परिसंपत्तियों, ऋणों और अग्रिमों से उतना ही उगाही योग्य पैसा है, जितना कि तुलन-पत्र के कुल योग में दर्शाया गया है।

6. सेवानिवृत्ति लाभ

भारतीय चार्टर्ड अकाउंटेंड संस्थान द्वारा जारी 'कर्मचारी लाभ' पर लेखा मानक-15 का अनुपालन न करने के संबंध में सीएजी लेखा परीक्षा अवलोकन का अनुपालन करने के संबंध में, अकादेमी ने वित्त वर्ष 2018-19 से उक्त लेखा मानकों के अनुरूप सेवानिवृत्ति लाभों अर्थात् ग्रेच्युटी और अवकाश नकदीकरण पर अपनी देयता की मान्यता की दिशा में अपनी नीति में परिवर्तन किया है।

तदनुसार, उसने इसके अंतर्गत दिए गए विवरणों के अनुसार बीमांकिक मूल्यांकन के आधार पर ग्रेच्युटी और अवकाश नकदीकरण के प्रति अपनी सेवानिवृत्ति लाभ देयता को मान्यता दी है। 31 मार्च 2022 को समाप्त वित्त वर्ष के लिए बीमांकक मूल्यांकन के प्रासंगिक सार को पुनः प्रस्तुत किया गया है।

ग्रेच्युटी प्रचालन

2.3 : लाभ और हानि के विवरण में मान्यता प्राप्त व्यय :

अवधि	01-04-2021 से 31-03-2022 तक	01-4-2020 से 31-03-2021 तक
ब्याज लागत	44,34,297	48,09,567
वर्तमान सेवा लागत	32,19,781	28,49,358
पिछली सेवा लागत	0	0
योजना परिसंपत्तियों पर अपेक्षित लाभ	(92,02,993)	(0)
अवधि के दौरान मान्यता प्राप्त बीमांकिक लाभ/हानि	(1,16,49,283)	1,30,19,924
लाभ और हानि के विवरण में मान्यता प्राप्त व्यय	(1,93,03,361)	53,60,999

3.4 : वर्तमान देयता (*कंपनी अधिनियम, 2013 की अनुसूची III के अनुसार अगले वर्ष भुगतान अपेक्षित) :

अवधि	01-04-2021 से 31-04-2022 तक	01-04-2020 से 31-03-2021 तक
वर्तमान देयता (अल्प अवधि)*	1,46,77,874	1,16,51,314
गैर वर्तमान देयता (दीर्घ अवधि)	5,87,69,598	5,16,95,790
कुल देयता	7,34,47,472	6,33,47,104

3.7 : तुलन पत्र में देयता का समाधान :

अवधि	01-04-2021 से 31-03-2022 तक	01-4-2020 से 31-03-2021 तक
सकल लाभ को देयता/(परिसंपत्ति) परिभाषित	6,33,47,104	6,87,08,103
लाभ और हानि में पहचाने जाने वाले व्यय	1,93,03,361	(53,60,999)
लाभ प्रदत्त (यदि कोई)	(92,02,993)	(0)
सकल लाभ को देयता/(परिसंपत्ति) परिभाषित इतिशेष	7,34,47,472	6,33,47,104

अवकाश नकदीकरण प्रचालन

2.3 : लाभ और हानि के विवरण में मान्यता प्राप्त व्यय :

अवधि	01-04-2021 से 31-03-2022 तक	01-4-2020 से 31-03-2021 तक
ब्याज लागत	26,24,869	28,16,876
वर्तमान सेवा लागत	24,65,547	21,06,148
योजना परिसंपत्तियों पर अपेक्षित लाभ	40,90,044	(0)
अवधि के दौरान मान्यता प्राप्त बीमांकिक लाभ/हानि	61,35,544	(76,65,990)
लाभ और हानि के विवरण में मान्यता प्राप्त व्यय	1,12,25,960	(27,42,966)

3.4 : वर्तमान देयता (*कंपनी अधिनियम, 2013 की अनुसूची III के अनुसार अगले वर्ष भुगतान अपेक्षित):

अवधि	01-04-2021 से 31-03-2022 तक	01-04-2020 से 31-03-2021 तक
वर्तमान देयता (अल्प अवधि)*	79,65,693	55,35,420
गैर वर्तमान देयता (दीर्घ अवधि)	3,66,68,347	3,19,62,704
कुल देयता	4,46,34,040	3,74,98,124

3.6 : तुलन पत्र में देयता का समाधान :

अवधि	01-04-2021 से 31-03-2022 तक	01-4-2020 से 31-03-2021 तक
सकल लाभ को देयता/(परिसंपत्ति परिभाषित)	3,74,98,124	4,02,41,090
लाभ और हानि पहचाने जानवाले व्यय	1,12,25,960	(27,42,966)
लाभ प्रदत्त (यदि कोई)	(40,90,044)	(0)
सकल लाभ को देयता/(परिसंपत्ति) परिभाषित इतिशेष	4,46,34,040	3,74,98,124

7. कराधान

अकादेमी को अपने कार्यक्रम और गतिविधियों के कार्यान्वयन के लिए संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पूर्णतः वित्त-पोषित किया जाता है। आयकर अधिनियम 1961 के अनुच्छेद 12ए के तदनुसार, अकादेमी की आय को कर से छूट दी गई है। आयकर अधिनियम 1961 के अंतर्गत कर योग्य आय न होने को ध्यान में रखते हुए आयकर का प्रावधान आवश्यक नहीं है।

8. विदेशी मुद्रा संव्यवहार

(8.1)	आयात के मूल्य की सी.आई.एफ. के आधार पर गणना :	शून्य
	तैयार सामान, कच्चा माल एवं अवयव (परागमन सहित)	
	तथा पूँजीगत सामान की ख़रीद	
	भंडार, अतिरिक्त और उपभोज्य	
(8.2)	विदेशी मुद्रा में व्यय :	
(क)	विदेशों में पुस्तक मेलों तथा अन्य साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन–	
	राजस्व योजना के अंतर्गत	शून्य
(ख)	वित्तीय संस्थाओ/बैंकों को विदेशी मुद्रा में भेजी गई रकम और ब्याज भुगतान	शून्य
(ग)	रॉयल्टी और यू.ए.आई. भुगतान	₹ 1,97,471/-
(घ)	अन्य व्यय : कानूनी तथा व्यावसायिक व्यय	शून्य
	विविध व्यय	शून्य
	माल भाड़ा	शून्य
	यात्रा व्यय	शून्य
(8.3)	अर्जन :	
	एफ.ओ.बी. के आधार पर निर्यात मूल्य	शून्य

9. अनुदान उपयोग

अकादेमी संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा पूर्णतः वित्त पोषित है। इसके अतिरिक्त, यह अपने प्रकाशन और बैंक ब्याज आदि की बिक्री के माध्यम से कुछ राजस्व भी उत्पन्न करती है। 31 मार्च 2022 को प्राप्त वर्ष के लिए प्राप्ति एवं भुगतान खाते के आधार पर अकादेमी द्वारा प्राप्त अनुदानों/वित्तीय सहायता की संक्षिप्त स्थिति इस प्रकार है :

विवरण	राजस्व वेतन (₹)	राजस्व सामान्य (₹)	राजस्व सी.सी.ए.(₹)	राजस्व एन.ई.(₹)	टी.एस.पी. (₹)	एस.सी.ओ. (₹)	विशेष सेल नेताजी सुभाष चंद्र बोस	योग (₹)
01/04/2021 को अव्ययित आदिशेष	–	3,69,38,494	–	–	–	2,47,905	2,33,920	3,74,20,319
संस्कृति मंत्रालय से प्राप्त अनुदान	19,32,00,000	16,50,62,000	7,83,70,000	–	–	2,53,000	–	43,68,85,000
अन्य प्राप्तियाँ	–	2,77,94,032	4,56,68,792	45,01,941	58,42,377	5,758	–	8,38,12,900
योग ए	**19,32,00,000**	**22,97,94,526**	**12,40,38,792**	**45,01,941**	**58,42,377**	**5,06,663**	**2,33,920**	**55,81,18,219**
व्यय	15,20,92,073	18,81,64,744	15,56,892	45,01,941	58,42,377	5,06,663	55,000	35,27,19,690
अन्य भुगतान	–	33,87,737	12,24,81,900	–	–	–	1,78,920	12,60,48,557
योग बी	**15,20,92,073**	**19,15,52,481**	**12,40,38,792**	**45,01,941**	**58,42,377**	**5,06,663**	**2,33,920**	**47,87,68,247**
31/03/2022 को अव्ययित अंत शेष	4,11,07,927	3,82,42,045	–	–	–	–	–	7,93,49,972

10. गत वर्ष के तदनुरूप आँकड़ों को जहाँ भी आवश्यक हो पुनर्वर्गीकृत/पुनर्व्यवस्थित किया गया है, जिससे उन्हें चालू वर्ष के आँकड़ों के साथ तुलनीय बनाया जा सके।

11. अनुसूची 1 से 28 जिसमें, प्राप्ति और भुगतान, सा.भ.नि., तुलन पत्र, सा.भ.नि. प्राप्ति और भुगतान, 31.03.2022 को समाप्त वर्ष के तुलन-पत्र के संलग्नक एवं अभिन्न अंग हैं तथा आय और व्यय लेखा भी इसी तिथि को समाप्त वर्ष का संलग्नक एवं अभिन्न अंग है।

12. वित्त वर्ष 2020-21 के लिए अपने एसएआर में सी एंड एजी के अवलोकन के अनुसार अचल संपत्तियों के प्रगमन में पूँजीगत कार्य को अचल संपत्तियों के बजाय चालू परिसंपत्तियों के तहत पूँजीगत अग्रिम के रूप में दिखाया जाना चाहिए। इसके अनुसार रु. 16,50,48,855/- में से रु. 9,50,00,740/- की राशि चालू परिसंपत्तियों के अंतर्गत पूँजीगत अग्रिम खाते में स्थानांतरित कर दी गई है और सीपीडब्ल्यूडी बेंगळूरु और नई दिल्ली से सीडब्ल्यूआईपी के अंतर्गत यूटिलाइजेशन सर्टिफ़िकेट (उपयोग प्रमाण-पत्र) के रूप में रखी जा रही शेष राशि रु. 7,00,48,115/- वित्त वर्ष 2021-22 के दौरान प्राप्त हुई है।

13. वित्त वर्ष 2020-21 के लिए अपने एसएआर में सी एंड एजी के अवलोकन के अनुसार विगत वर्ष के इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं से संबंधित मूल्यह्रास और रु. 31.02 लाख के लाइब्रेरी पुस्तकों को विगत वर्ष के तुलन-पत्र में मान्यता नहीं दी गई थी, परिणामस्वरूप न्यून व्यय और अचल संपत्ति को अपव्यय कर दिया गया था। इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं और लाइब्रेरी पुस्तकों के विगत वर्ष से संबंधित मूल्यह्रास को मान्यता प्राप्त असाधारण वस्तुओं, अनुसूची 25 के अंतर्गत रखने का विचार किया गया है।

	ह/-	ह/-	ह/-	ह/-
स्थान : नई दिल्ली	**कुलदीप चंद्र**	**बाबुराजन एस.**	**संजय कुमार**	**के. श्रीनिवासराव**
दिनांक : 10 जून 2022	(प्रवर लिपिक)	(उपसचिव, लेखा)	(उपसचिव, प्रशासन)	(सचिव)

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय
रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह, मार्ग
नई दिल्ली 110 001
दूरभाष : 011-23386636/27/28
फ़ैक्स : 091-11-23382428
ई-मेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in

विक्रय कार्यालय
स्वाति, मंदिर मार्ग
नई दिल्ली 110 001
दूरभाष : 011-23745297, 23364204
फ़ैक्स : 091-011-23364207
ई-मेल : sales@sahitya-akademi.gov.in

क्षेत्रीय कार्यालय

कोलकाता
4, डी.एल. ख़ान मार्ग
कोलकाता 700 025
दूरभाष : 033-24191683, 24191706
फ़ैक्स : 091-33-24191684
ई-मेल : rs.rok@sahitya-akademi.gov.in

मुंबई
172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग
दादर, मुंबई 400 014
दूरभाष : 022-24135744,24131948
फ़ैक्स : 091-22-24147650
ई-मेल : rs.rom@sahitya-akademi.gov.in

बेंगळूरु
सेंट्रल कॉलेज परिसर
डॉ. बी.आर. आंबेडकर वीथी, बेंगळुरु 560001
दूरभाष : 080-22245152, 22130870
फ़ैक्स : 091-81-22121932
ई-मेल : rs.rob@sahitya-akademi.gov.in

चेन्नै
मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग (द्वितीय तल), 443(304)
अन्नासलाइ, तेनामपेट, चेन्नै 600018
दूरभाष : 044-24311741
फ़ैक्स : 091-44-2251466
ई-मेल : chennaioffice@sahitya-akademi.gov.in

शब्द ही एकमात्र रत्न है जो मेरे पास है
शब्द ही एकमात्र वस्त्र हैं जिन्हें मैं पहनता हूँ
शब्द ही एकमात्र आहार है जो मुझे जीवित रखता है
शब्द ही एकमात्र धन है जिसे मैं लोगों में बाँटता हूँ

–संत तुकाराम